चन्द्रकान्ता सन्तति
बाबू देवकीनन्दन खत्री

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

पाँचवाँ भाग

पहिला बयान

बेचारी किशोरी को चिता पर बैठा कर जिस समय दुष्टा धनपति ने आग लगाई उसी समय बहुत से आदमी जो उसी जंगल में किसी जगह छिपे हुए थे हाथों में नंगी तलवारें लिए 'मारो मारो' कहते हुए उन लोगों पर आ टूटे। उन लोगों ने सबसे पहले किशोरी को चिता पर से खैंच लिया और इसके बाद धनपति के साथियों को पकड़ने लगे।

पाठक समझते होंगे कि ऐसे समय में इन लोगों के आ पहुँचने और जान बचने से किशोरी खुश हुई होगी और इन्द्रजीतसिंह से मिलने की कुछ उम्मीद भी उसे हो गई होगी मगर नहीं, अपने बचाने वाले को देखते ही किशोरी चिल्ला उठी और उसके दिल का दर्द पहिले से भी ज्यादे बढ़ गया। किशोरी ने आसमान की तरफ देख कर कहा, "मुझे तो विश्वास हो गया था कि इस चिता में जल कर ठंढे ठंढे बैकुण्ठ चली जाऊँगी क्योंकि इसकी आँच कुँअर इन्द्रजीतसिंह की जुदाई की आँच से ज्यादा गर्म न होगी, मगर हाय, इस बात का गुमान भी न था कि यह दुष्ट आ पहुँचेगा और मैं एक सचमुच की तपती हुई भट्टी में झोंक दी जाऊँगी। मौत तू कहाँ है? तू कोई वस्तु है भी या नहीं, मुझे तो इसी में शक है।"

वह आदमी जिसने ऐसे समय में पहुँच कर किशोरी को बचाया माधवी का दीवान अग्निदत्त था, जिसके चंगुल में फँस कर किशोरी ने राजगृह में बहुत दुःख उठाया था और कामिनी की मदद से—जिसका नाम कुछ दिनों तक किन्नरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था—छुट्टी मिली थी। किशोरी को अपने मरने की कुछ भी परवाह न थी और वह अग्निदत्त की सूरत देखने की वनिस्वत मौत को लाख दर्जे उत्तम समझती थी, यही सवब था कि इस समय उसे अपनी जान बचने का रंज हुआ।

अग्निदत्त और उसके आदमियों ने किशोरी को तो बचा लिया मगर जब उसके दुश्मनों को अर्थात् धनपति और उसके साथियों को पकड़ने का इरादा किया तो लड़ाई गहरी हो पड़ी। मौका पाकर धनपति भाग गई और गहन वन में किसी झाड़ी के अन्दर छिप कर उसने अपनी जान बचाई। उसके साथियों में से एक भी न बचा, सब मारे गये अग्निदत्त भी केवल दो ही आदमियों के साथ बच गया। उस संगदिल ने रोती और चिल्लाती हुई बेचारी किशोरी को जबर्दस्ती उठा लिया और एक तरफ का रास्ता लिया।

पाठक आश्चर्य करते होंगे कि अग्निदत्त को तो राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने राजगृह में गिरफ्तार करके चुनार भेज दिया था, वह यकायक यहाँ कैसे आ पहुँचा? इसलिए अग्निदत्त का थोड़ा सा हाल इस जगह लिख देना हम मुनासिब समझते हैं।

राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने दीवान अग्निदत्त को गिरफ्तार करके अपने बीस सवारों के पहरे में चुनारगढ़ रवाना कर दिया और एक चीठी भी सब हाल की महाराज सुरेन्द्रसिंह को लिख कर उन्हीं लोगों के मार्फत भेजी। अग्निदत्त हथकड़ी डाल घोड़े पर सवार कराया गया और उसके पैर रस्सी से घोड़े की जीन के साथ बांध दिए गए, घोड़े की लम्बी बागडोर दोनों तरफ से दो सवारों ने पकड़ ली और सफर शुरू किया। तीसरे दिन जब वे लोग सोन नदी के पास पहुँचे अर्थात् जब वह नदी दो कोस बाकी रह गई तब उन लोगों पर डाका पड़ा। पचास आदमियों ने चारों तरफ से घेर लिया। घण्टे भर की लड़ाई में राजा वीरेन्द्रसिंह के कुल आदमी मारे गये, खबर पहुँचाने के लिए भी एक आदमी न बचा और अग्निदत्त को उन लोगों के हाथों से छुट्टी मिली। वे डाकू सब अग्निदत्त के तरफदार और उन लोगों में से थे जो गयाजी में फसाद मचाया करते और उन लोगों की जानें लेते और घर लूटते थे जो दीवान अग्निदत्त के विरुद्ध जाने जाते। इस तरह अग्निदत्त को छुट्टी मिली और बहुत दिन तक इस डाके की खबर राजा वीरेन्द्रसिंह या उनके आदमियों को न मिली।

यद्यपि दीवान अग्निदत्त के हाथ से गया की दीवानी जाती रही और वह एक साधारण आदमी की तरह मारा मारा फिरने लगा तथापि वह अपने साथी डाकुओं में मालदार गिना जाता था क्योंकि उसके पास जुल्म की कमाई हुई बहुत दौलत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और वह उस दौलत को राजगृह से थोड़ी दूर पर एक मढ़ी में जो पहाड़ी के ऊपर थी रखता था, जिसका हाल दस बारह आदमियों के सिवाय और किसी को भी मालूम न था। उस दौलत को निकालने में अग्निदत्त ने विलम्ब न किया और उसे अपने कब्जे में लाकर साथी डाकुओं के साथ अपनी धुन में चारो तरफ घूमने तथा इस बात की टोह लेने लगा कि राजा वीरेन्द्रसिंह की तरफ क्या क्या होता है।

थोड़े ही दिन बाद मौका समझ कर वह रोहतासगढ़ के चारो तरफ घूमने लगा और जिस तरह किशोरी से मिला उसका हाल आप ऊपर पढ़ हीं चुके हैं।

जिस जगह अग्निदत्त किशोरी से मिला था उससे थोड़ी ही दूर पर एक पहाड़ी थी जिसमें कई खोह और गार थे। वह किशोरी को उठा कर उस पहाड़ी पर ले गया। रोते और चिल्लाते चिल्लाते किशोरी बेहोश हो गई थी। अग्निदत्त ने उसे खोह के अन्दर ले जा कर लेटा दिया और आप बाहर चला आया।

पहर रात जाते जाते जब किशोरी होश में आई तो उसने अपने को अजब हालत में पाया। ऊपर नीचे चारों तरफ पत्थर देख कर वह समझ गई कि मैं किसी खोह में हूँ। एक तरफ चिराग जल रहा था। गुलाब के फूल से भी नाजुक किशोरी की अवस्था इस समय बहुत ही नाजुक थी। अग्निदत्त की याद से उसे घड़ी घड़ी रोमांच होता था, उसके धड़कते हुए कलेजे में अजब तरह का दर्द था और इस सोच ने उसे बिल्कुल ही निकम्मा कर रक्खा था कि देखें चाण्डाल अग्निदत्त के पहुँचने पर मेरी क्या दुर्दशा होती है। घण्टों की मेहनत में बड़ी कोशिश करके उसने अपने होश हवास दुरुस्त किए और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। उसने इस इरादे को तो पक्का कर ही लिया था कि अगर अग्निदत्त मेरे पास आवेगा तो पत्थर पर सर पटक कर अपनी जान दे दूँगी, मगर यह भी सोचती थी कि पत्थर पर सर पटकने से जान नहीं जा सकती, किसी तरह खोह के बाहर निकल कर ऐसा मौका ढूँढ़ना चाहिए कि अपने को इस पहाड़ के नीचे गिरा कर बखेड़ा तय कर दिया जाय, जिसमें हमेशा के लिये इस खिचाखिची से छुट्टी मिले।

किशोरी चिराग बुझाने के लिए उठी ही थी कि सामने से पैर की चाप मालूम हुई। वह डर कर उसी तरफ देखने लगी कि एकाएक अग्निदत्त पर नजर पड़ी। देखते ही वह काँप गई, ऐसा मालूम हुआ कि रगों में खून की जगह पारा भर गया। वह अपने को किसी तरह सम्हाल न सकी और जमीन पर बैठ कर रोने लगी। अग्निदत्त सामने आकर खड़ा हो गया और बोला —

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अग्नि० । तुमने मुझको बड़ा ही धोखा दिया, अपने साथ मेरी लड़की को

भी मुझसे जुदा कर दिया। अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि मेरी स्त्री पर क्या बीती और वीरेन्द्रसिंह ने उसके साथ क्या सलूक किया, और यह सब तुम्हारी बदौलत हुआ।

किशोरी०। फिर भी मैं कहती हूँ कि मुझे सता कर तुम सुख न पाओगे।

अग्नि०। इस समय तुम्हें पाकर मैं बहुत खुश हूँ, दीन दुनिया की फिक्र जाती रही, आगे जो होगा देखा जायगा।

किशोरी०। मैं तुमसे वादा करती हूँ कि यदि मुझे छोड़ दोगे तो मैं राजा वीरेन्द्रसिंह से कह कर तुम्हारा कसूर माफ करा दूँगी और तुम्हारा जीविका निर्वाह के लिए भी बन्दोबस्त हो जायगा, नहीं तो याद रखना तुम्हारी स्त्री भी........

अग्नि०। जो तुम कहोगी सो मैं समझ गया। मेरी स्त्री पर चाहे जो बीते इसकी परवाह नहीं, न मुझे वीरेन्द्रसिंह का डर है। मुझे दुनिया में तुमसे बढ़ कर कोई चीज नहीं दिखाई देती है। देखो तुम्हारे लिए मैंने कितना दुःख भोगा और भोगने को तैयार हूँ, क्या अब भी तुमको मुझ पर तरस नहीं आता! मैं कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हें अपनी जान से ज्यादा प्यार करूँगा यदि मेरी होकर रहोगी।

किशोरी०। अरे दुष्ट चाण्डाल, खबर्दार फिर ऐसी बात मुँह से न निकालियो।

अग्नि०। चाहे जो हो, मैं तुम्हें किसी तरह नहीं छोड़ सकता!

किशोरी०। जान जाय तो जाय मगर तेरी हवा अपने बदन से लगने न दूँगी।

अग्नि०। (हँस कर) देखूँ तो तू अपने को मुझसे क्योंकर बचाती है।

इतना कह कर अग्निदत्त किशोरी को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। किशोरी घबड़ा कर उठ खड़ी हुई और दूर हट गई। थोड़ी देर तक तो इस तंग जगह में दौड़ घूम कर किशोरी ने अपने को बचाया मगर कहाँ तक? आखिर मर्द के सामने औरत की क्या पेश जा सकती थी! अग्निदत्त को क्रोध आ गया। उसने किशोरी को पकड़ लिया और ज़मीन पर पटक दिया।

दूसरा बयान

पाठक अभी भूले न होंगे कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह कहाँ हैं। हम ऊपर लिख आए हैं कि उस मकान में जो तालाव के अन्दर बना हुआ था कुँअर इन्द्रजीतसिंह दो औरतों को देख कर ताज्जुब में आ गए। कुमार उन औरतों का नाम नहीं जानते थे मगर पहिचानते जरूर थे, क्योंकि उन्हें राजगृही में माधवी के यहाँ देख चुके थे और जानते थे कि ये दोनों माधवी की लौंडियाँ हैं, परन्तु यह जानने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए कुमार व्याकुल हो रहे थे कि ये दोनों यहाँ क्योंकर आईं. क्या इस औरत से जो इस मकान की मालिक है और उस माधवी से कोई सम्बन्ध है ? इसी समय उन दोनों औरतों के पीछे पीछे वह औरत भी आ पहुँची जिसने इन्द्रजीतसिंह के ऊपर सहूसान किया था और जो उस मकान की मालिक थी। अभी तक इस औरत का नाम मालूम नहीं हुआ मगर आगे इससे काम बहुत पड़ेगा इसलिए जब तक इसका असल नाम मालूम न हो कोई बनावटी नाम रख दिया जाय तो उत्तम होगा, मेरी समझ में तो कमलिनी नाम कुछ बुरा न होगा।

जिस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह की निगाह उन दोनों औरतों पर पड़ी वे हैरान होकर उनकी तरफ देखने लगे, उसी समय दौड़ती हुई कमलिनी भी आई और दूर ही से बोली—

कमलिनी०। कुमार, इन दोनों हरामखोरियों का कोई मुलाहिजा न कीजिएगा और न किसी तरह की जुबान ही दीजिएगा, अपनी जान बचाने के लिए ही दोनों आपके पास आई हैं।

इन्द्र०। क्या मामला है, ये दोनों कौन हैं ?

कम०। ये दोनों माधवी की लौंड़ियाँ हैं, आपकी जान लेने आई थीं, मेरे आदमियों के हाथ गिरफ्तार हो गईं।

इन्द्र०। तुम्हारे आदमी कहाँ हैं ? मैंने तो इस मकान में सिवाय तुम्हारे किसी को भी नहीं देखा !

कम०। बाहर निकल कर देखिये मेरे सिपाही मौजूद हैं जिन्होंने इसे गिरफ्तार किया।

इन्द्र०। अगर ये गिरफ्तार हो कर आई हैं तो इनके हाथ पैर खुले क्यों हैं ?

कम०। इसके लिए कोई हर्ज नहीं, ये मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं जब तक कि मैं जागती हूँ या अपने होश में हूँ।

इन्द्र०। (उन दोनों की तरफ देख कर) तुम क्या कहती हो ?

एक०। (कमलिनी की तरफ इशारा करके) ये जो कुछ कहती हैं ठीक है परन्तु आप वीर पुरुष हैं, आशा है कि हम लोगों का अपराध क्षमा करेंगे।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह इन बातों को सुन कर सोच में पड़ गये। उन्हें उन दोनों औरतों की और कमलिनी की बातों का विश्वास न हुआ, बल्कि यकीन हो गया कि ये लोग किसी तरह का धोखा दिया चाहती हैं। आधी घड़ी तक सोचने के बाद कुमार बंगले के बाहर निकले तो देखा क्या कि सामने के बाहर लगभग बीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिपाही खड़े आपुस में कुछ बातें कर रहे और घड़ी घड़ी इसी तरफ देख रहे हैं। कुमार वहाँ से लौट आये और कमलिनी की तरफ देख कर बोले—

इन्द्र०। खैर जो तुम्हारे जी में आये करो, हम इस बारे में कुछ नहीं कह सकते।

कम०। करना क्या है, इन दोनों का सिर काटा जायगा।

इन्द्र०। खुशी तुम्हारी। मैं जरा इस तालाब के बाहर जाना चाहता हूँ।

कम०। क्यों?

इन्द्र०। यह समय मजेदार है, जरा मैदान की हवा खाऊँगा और उस घोड़े की भी खबर लूँगा जिस पर सवार होकर आया था।

कम०। इस मकान की छत पर चढ़ने से अच्छी और साफ हवा आपको मिल सकती है, घोड़े के लिए चिन्ता न करें, या फिर ऐसा ही है तो सवेरे जाइयेगा।

न मालूम क्या सोच कर इन्द्रजीतसिंह चुप हो रहे। कमलिनी ने उन दोनों औरतों का हाथ पकड़ा और धमकाती हुई न जाने कहाँ ले गई, इसका हाल कुमार को न मालूम हुआ और न उन्होंने जानने का उद्योग ही किया।

यद्यपि उस औरत अर्थात् कमलिनी ने कुमार की जान बचाई थी तथापि उन्हें विश्वास हो गया कि कमलिनी ने दोस्ती की राह पर यह काम नहीं किया बल्कि किसी मतलब से किया। उस मकान में गुलदस्ते के नीचे से जो चीठी कुमार ने पाई थी उसके पढ़ने से कुमार होशियार हो गये थे तथा समझ गए थे कि यह मुझे मकर में लाया चाहती और किशोरी के साथ भी किसी तरह की बुराई किया चाहती है। इसमें कोई शक नहीं कि कुमार इसे चाहने लगे थे और जान बचाने का बदला चुकाने की फिक्र में थे मगर उस चीठी के पढ़ते ही उनका रंग बदल गया और वे किसी दूसरी ही धुन में लग गए।

कुमार चाहते तो शायद यहाँ से निकल भागते क्योंकि उस औरत की तरफ से होशियार हो चुके थे मगर इस काम में उन्होंने यह समझ कर जल्दी न की कि इस औरत का कुछ हाल मालूम करना चाहिए और जानना चाहिए कि यह कौन है। पर कमलिनी को कुमार के दिल की क्या खबर थी, उसने तो सोच रक्खा था कि मैंने कुमार पर अहसान किया है और वे किसी तरह पर मुझसे बदगुमान न होंगे।

कुमार के पास इस समय सिवाय कपड़ों के कोई चीज ऐसी न थी जिससे वे अपनी हिफाजत करते या समय पड़ने पर मतलब निकाल सकते।

कुछ दिन बाकी था जब कुमार उस मकान की छत पर चढ़ गए और चारो तरफ के पहाड़ जंगल तथा मैदान की बहार देखने लगे। कुमार को यह जगह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत ही पसन्द आई और उन्होंने दिल में कहा कि यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो सब बखेड़ों से छुट्टी पा कर किशोरी के साथ कुछ दिनों तक इस मकान में जरूर रहेंगे। थोड़ी देर तक प्रकृति की शोभा देख कर दिल बहलाते रहे, जब सूर्य अस्त हो गया तो कमलिनी भी वहाँ पहुँची और कुमार के पास खड़ी होकर बातचीत करने लगी।

कम०। यहाँ से अच्छी बहार दिखाई देती है।

कुमार०। ठीक है मगर यह छटा मेरे दिल को किसी तरह नहीं बदल सकती।

कम०। सो क्यों ?

कुमार०। तरह तरह की फिक्रों और तरद्दुदों ने मुझे दुखी कर रक्खा है, बल्कि यहाँ आने और तुम्हारे मिलने से तरद्दुद और भी ज्यादे हो गया।

कम०। यहाँ आकर कौन सी फिक्र बढ़ गई ?

कुमार०। यह तो तब कह सकता हूँ जब कुछ तुम्हारा हाल मालूम हो, अभी तो मैं यह भी नहीं जानता कि तुम कौन और कहाँ की रहने वाली हो और इस मकान में आ के रहने का सबब क्या है।

कम०। कुमार, मुझे आपसे बहुत कुछ बातें कहनी हैं। इसमें कोई शक नहीं कि मेरे बारे में आप तरह तरह की बातें सोचते होंगे, कभी मुझे खैरख्वाह तो कभी बदख्वाह समझते होंगे, बल्कि बदख्वाह समझने का मौका ही ज्यादे मिलता होगा। अक्सर उन लोगों ने जो मुझे जानते हैं, मुझे शैतान और खूनी समझ रक्खा है और इसमें उनका कोई कसूर भी नहीं। मैं उन लोगों का जिक्र इस समय केवल इसीलिए करती हूँ कि शायद उन लोगोंने जो केवल दो तीन ऐयार मात्र हैं, कुछ चर्चा आपसे की हो।

कुमार०। नहीं, मैंने किसी से कभी तुम्हारा जिक्र नहीं सुना।

कम०। खैर ऐसा मौका न पड़ा होगा, पर मेरा मतलब यह है कि जब तक मैं अपने मुँह से कुछ न कहूँगी मेरे बारे में कोई भी अपनी राय ठीक नहीं कर सकता और....

इतने ही में सीढ़ी पर किसी के पैर की धमधमाहट मालूम हुई जिसे सुन कर दोनों चौंके और उसी तरफ देखने लगे।

कुमार०। इस मकान में तो केवल तुम्हीं रहती हो !

कम०। नहीं और भी कई आदमी रहते हैं, मगर वे लोग उस समय नहीं थे जब आप आए थे।

दो लौंडियाँ आती हुई दिखाई पड़ीं। एक के हाथ में छोटा सा गालीचा था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरी के हाथ में शमादान और तीसरी पानदान लिए हुए थी। गालीचा बिछा दिया गया, शमादान और पानदान रख कर लौंडियाँ हाथ जोड़े सामने खड़ी हो गईं। कमलिनी के कहने से कुमार गालीचे पर बैठ गए और कमलिनी भी पास बैठ गई। इस समय इन तीनों लौंडियों का वहाँ पहुँच कर बातचीत में बाधा डालना कुमार को बहुत बुरा मालूम हुआ क्योंकि वे बड़े ही गौर से कमलिनी की बातें सुन रहे थे और इस बीच में उनके दिल की अजीब हालत थी। कुमार ने कमलिनी की तरफ देख के कहा, "हाँ तुम अपनी बातों का सिलसिला मत तोड़ो।"

कम०। (लौंडियों की तरफ देख कर) अच्छा तुम लोग जाओ, बहुत जल्द खाने का बन्दोबस्त करो।

कुमार०। अभी खाने के लिए जल्दी न करो।

कम०। खैर ये लोग अपना काम पूरा कर रक्खें, आप जब चाहें भोजन करें।

कुमार०। अच्छा हाँ तब ?

कम०। (डब्बे से पान निकाल कर) लीजिए पान खाइए।

कुमार ने पान हाथ में रख लिया और पूछा, "हाँ तब ?"

कम०। पान खाइए, आप डरिए मत, इसमें बेहोशी की दवा नहीं मिली है, हाँ अगर आप ऐसा खयाल करें भी तो कोई बेमौका नहीं।

कुमार०। (हँस कर) इसमें कोई शक नहीं कि इतनी खैरख्वाही करने पर भी मैं तुम्हारी तरफ से बदगुमान हूँ मगर तुम्हारी बातें अजब ढंग पर चल रही हैं। (पान खाकर) अब जो हो, जब तुमने मेरी जान बचाई है तो कब हो सकता है कि तुम अपने हाथ से मुझे जहर दो।

कम०। (हँस कर) कुमार, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि आप मुझ पर शक करें। माधवी की दोनों लौंडियों का मामला भी जो अभी थोड़ी देर हुआ आप देख चुके हैं मुझ पर शक करने का मौका आपको देगा। मगर नहीं, आप पूरा विश्वास रखिए कि मैं आपके साथ कभी बुराई न करूँगी। कई आदमी मेरी शिकायत आपसे करेंगे, आप ही के कई ऐयार असल हाल न जानने के कारण मेरे दुश्मन हो जायेंगे, मगर सिवाय कसम खाकर कहने के और किस तरह आपको विश्वास दिलाऊँ कि मैं आपकी खैरख्वाह हूँ। आप यह भी सोच सकते हैं कि मैं आपके साथ इतनी खैरख्वाही क्यों कर रही हूँ ? दुनिया का कायदा है कि बिना मतलब कोई किसी का काम नहीं करता और मैं भी दुनिया के बाहर नहीं हूँ, अस्तु मैं भी आपसे बहुत कुछ उम्मीद करती हूँ मगर उसे जुबान से कह नहीं सकती। अभी आपको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझसे वर्षों तक काम पड़ेगा, जब आप हर तरह से निश्चिन्त हो जायँगे, आपकी किशोरी जो इस समय रोहतासगढ़ में कैद है आपको मिल जायगी, इसके अतिरिक्त एक और भी भारी काम आपके हाथ से हो लेगा तब कहीं मेरी मुराद पूरी होगी अर्थात् उस समय मुझे जो कुछ आपसे माँगना होगा माँगूँगी। आप मेरी बात याद रखिएगा कि आप ही के ऐयार मेरे दुश्मन होंगे और अन्त में झख मार के मुझ ही से दोस्ती के तौर पर उन्हें सलाह लेनी पड़ेगी। आप यह भी न समझिए कि मैं आज ही कल से आपकी तरफदार बनी हूँ, नहीं बल्कि मैं महीनों से आपका काम कर रही हूँ और इस सबब से सैकड़ों आदमी मेरे दुश्मन हो रहे हैं। दुश्मनों ही के डर से मैं इस तालाब में छिप कर बैठी रहती हूँ क्योंकि जिन्हें इसका भेद मालूम नहीं है वे इस मकान के अन्दर पैर नहीं रख सकते। आप मुझे अकेली समझते होंगे मगर मैं अकेली नहीं हूँ, लौंडी सिपाही और ऐयार मिला कर इस गई गुजरी हालत में भी पचास आदमी मेरी तावेदारी कर रहे हैं।

कुमार०। वे लोग कहाँ हैं?

कम०। उनमें से कई आदमियों को तो आप इसी जगह बैठे देखेंगे, बाकी सभों को मैंने काम पर भेजा है। जब मैं आपकी खैरख्वाह हूँ तो किशोरी की मदद भी जरूर ही करनी पड़ेगी, इसलिए मेरी एक ऐयारा रोहतासगढ़ किले के अन्दर भी घुस कर बैठी है और किशोरी के हाल चाल की खबर दिया करती है, अभी कल ही उसने एक चीठी भेजी थी, (कमर से चीठी निकाल कर और कुमार के हाथ में देकर) लीजिए यही चीठी है, पहिले आप इसे पढ़ लीजिए फिर और कुछ कहूँगी।

कुमार हाथ में चीठी लेकर गौर से पढ़ने लगे। यह वही चीठी थी जिस पर पहिले कुमार की निगाह पड़ चुकी थी और जिसे एक गुलदस्ते के नीचे से निकाल कर कुमार पढ़ चुके थे। कुमार ने चोरी से उस चीठी को पढ़ने का हाल कमलिनी से कहना मुनासिब न समझा और उसे इस तौर पर पढ़ गए जैसे पहली दफे वह चीठी उनके हाथ में पड़ी हो। परन्तु इस समय इस तरह कमलिनी के हाथ से इस चीठी को पाकर कुमार का ख्याल बिल्कुल बदल गया और कमलिनी उनकी दुश्मन नहीं है इस बात को वे अच्छी तरह समझ गए, मगर साथ ही साथ उनके दिल में एक दूसरी ही तरह की उत्कण्ठा बढ़ गई और वे यह जानने के लिए व्याकुल हो गए कि कमलिनी और इसकी ऐयारा ने रोहतासगढ़ किले में पहुँच कर क्या किया!

पाठक, शायद आप इस चीठी का मजमून भूल गए होंगे मगर आप उसे याद करें या पुनः पढ़ जायँ क्योंकि उसके एक एक [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलिनी से कुमार पूछना चाहते हैं।

कुमार०। मैं नहीं कह सकता और न मुझे मालूम ही है कि तुम इतनी भलाई मेरे साथ क्यों कर रही हो, तो भी मैं उम्मीद करता हूं कि तुम इस समय मुझे चिन्ता में डाल कर दुःख न दोगी बल्कि जो मैं पूछूंगा उसका ठीक ठीक जवाब दोगी।

कम०। आप मेरी तरफ से किसी तरह का बुरा ख्याल न रक्खें। आज मैं इस बात पर मुस्तैद हूं कि अगर आपको कष्ट न हो तो रात भर जाग के बहुत कुछ हाल जो अब तक आपको मालूम नहीं है और आपके मतलब का है आपसे कहूं और जो जो सवाल आप करें उसका जवाब दूं।

कुमार०। मुझे तुम्हारे इस कहने से बड़ी खुशी हुई, अच्छा पहिले इस बात का जवाब दो कि तुम्हारी वह ऐयारा जो रोहतासगढ़ में है और इस चीठी के पढ़ने से जिसका नाम तारा मालूम होता है, रोहतासगढ़ में किस तौर पर है? जहां तक मैं सोचता हूं वह भेष बदल कर नौकरी करती होगी?

कम०। नहीं, उसने नौकरी नहीं की बल्कि वहां इस तौर पर छिप कर रहती है कि वहां के किसी आदमी को उसका पता लग जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है।

कुमार०। अच्छा तो उसने यह क्या लिखा है कि—'किशोरी का आशिक भी यहां मौजूद है'?

कम०। यह कटाक्ष माधवी के दीवान अग्निदत्त पर है, क्योंकि हम लोगों के हिसाब से वह किशोरी पर आशिक है। सच्चा आशिक आपकी तरह नहीं है मगर बेईमान ऐयारों की तरह पर जरूर आशिक है।

कुमार०। नहीं नहीं, उसे तो हमारे आदमियों ने गिरफ्तार करके चुनार भेज दिया है!

कम०। आपका यह खयाल गलत है। वह चुनार नहीं पहुंचा, न मालूम किस तरह उसने अपनी जान बचा ली है। इसका हाल आपको लश्कर में जाने या किसी को चुनारगढ़ भेजने से मालूम होगा।

कुमार०। तो क्या वह भी रोहतासगढ़ पहुंच गया?

कम०। पहुंच ही गया तभी तो तारा ने लिखा है।

कुमार०। अच्छा तो ये लाली और कुन्दन कौन हैं?

कम०। आपको और मेरी दुश्मन, इन दोनों को मामूली दुश्मन न समझिएगा।

कुमार०। इसमें किशोरी के आशिक के बारे में लिखा है कि 'उसे किशोरी से बहुत कुछ उम्मीद भी है'। इसका मतलब क्या है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । सो ठीक अभी मालूम नहीं हुआ ।

कुमार० । यह जवाब तुमने बड़े खुटके का दिया ।

कम० । (हँस कर) आप चिन्ता न करें, किशोरी तन मन धन आपको समर्पण कर चुकी है, वह किसी दूसरे की न होगी ।

कुमार० । खैर जब खुलासा हाल मालूम ही नहीं है तो जो कुछ सोचा जाय मुनासिब है । इसमें लिखा है कि 'किशोरी ने भी पूरा धोखा खाया'—सो क्या ?

कम० । इसका भी हाल अभी नहीं मालूम हुआ, शायद आज कल में कोई दूसरी चीठी आवेगी तो मालूम होगा, बल्कि और भी जो कुछ लिखा है इशारा ही भर है, असल में क्या बात है सो मैं नहीं कह सकती !

कुमार० । अच्छा अब मैं तुम्हारा पूरा हाल जानना चाहता हूँ और इसी के साथ रोहतासगढ़ में रहने वाली लाली और कुन्दन का वृतान्त भी तुम्हारी जुबानी सुनना चाहता था ।

कम० । मैं सब हाल आपसे कहूँगी और इसके अलावे एक ऐसे भेद की खबर भी आपको दूँगी कि आप खुश हो जाँयगे, मगर इसके लिए आपको तीन चार दिन और सब्र करना चाहिए, इसी बीच में तारा भी रोहतासगढ़ से आ जायेगी या मैं खुद उसे बुलवा लूँगी ।

कुमार० । इन सब बातों को जानने के लिए मैं बहुत बेचैन हो रहा हूँ, कृपा करके जो कुछ तुम्हें कहना हो अभी कहो ।

कम० । नहीं नहीं, आप जल्दी न करें मेरा दो चार दिन के लिए टालना भी आप ही के फायदे के लिए है । आप यह न समझें कि मैं आपको जान बूझ कर यहाँ अटकाया चाहती हूँ । आप यदि मुझ पर भरोसा रक्खें और मुझे अपना दुश्मन न समझें तो यहाँ रहें । मैं लौंडियों की तरह आपकी ताबेदारी करने को तैयार हूँ, और यदि मुझ पर एतबार न हो तो अपने लश्कर चले जायें, चार पाँच दिन के बाद मैं स्वयं आपसे मिल कर सब हाल कहूँगी ।

कुमार० । बेशक मैं तुम्हारे बारे में तरह तरह की बातें सोचता था और तुम पर विश्वास करना मुनासिब नहीं समझता था मगर अब तुम्हारी तरफ से मुझे किसी तरह का खुटका नहीं है । तुम्हारी बातों का मेरे दिल पर बड़ा ही असर हुआ । इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम सिवाय भलाई के मेरे साथ बुराई कभी न करोगी । मैं जरूर यहाँ रहूँगा और जब तक अपने दिल का शक अच्छी तरह न मिटा लूँगा न जाऊँगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । अहोभाग्य ! (हँस कर) मगर ताज्जुब नहीं कि इसी बीच में आपके ऐयार लोग यहाँ पहुँच कर मुझे गिरफ्तार कर लें !

कुमार० । क्या मजाल !

तीसरा बयान

कुमार कई दिनों तक कमलिनी के यहाँ मेहमान रहे जिसने बड़ी खातिरदारी और नेकनीयती के साथ इन्हें रक्खा। इस मकान में कई लौंडियाँ भी थीं जो दिलोजान से कुमार की खिदमत किया करती थीं, मगर कभी कभी वे सब दो दो पहर के लिए न मालूम कहाँ चली जाया करती थीं।

एक दिन शाम के वक्त उस मकान की छत पर कमलिनी और कुमार बैठे बातें कर रहे थे, इसी बीच में कुमार ने पूछा—

कुमार० । कमलिनी, अगर किसी तरह का हर्ज न हो तो इस मकान के बारे में कुछ कहो। इन पुतलियों की तरफ जो इस मकान के चारों कोनों में तथा इस छत के बीचोबीच में है जब मेरी निगाह पड़ती है तो ताज्जुब से अजब हालत हो जाती है।

कम० । बेशक इन्हें देख आप ताज्जुब करते होंगे। यह मकान एक तरह का छोटा सा तिलिस्म है जो इस समय बिल्कुल मेरे आधीन है, मगर यहाँ का हाल बिना मेरे कहे थोड़े ही दिनों में आपको पूरा पूरा मालूम हो जायगा।

कुमार० । उन दोनों औरतों के साथ जो माधवी की लौंडियाँ थीं तुमने क्या सलूक किया ?

कम० । अभी तो वे दोनों कैद हैं।

कुमार० । माधवी का भी कुछ हाल मालूम हुआ है ?

कम० । उसे आपके लश्कर और रोहतासगढ़ के चारो तरफ घूमते कई दफे मेरे आदमियों ने देखा है। जहाँ तक मैं समझती हूँ वह इस धुन में लगी है कि किसी तरह आप दोनों भाई और किशोरी उसके हाथ लगें और वह अपना बदला ले।

कुमार० । अभी तक रोहतासगढ़ का कुछ हाल नहीं मालूम हुआ, न लश्कर का कोई समाचार मिला।

कम० । मुझे भी इस बात का ताज्जुब है कि मेरे आदमी किस काम में फँसे हुए हैं क्योंकि अभी तक एक ने भी लौट कर खबर न दी। (चौंक कर और मैदान की तरफ देख के) मालूम होता है इस समय कोई नया समाचार मिलेगा। मैदान की तरफ देखिए, दो आदमी एक बोझ लिए इसी तरफ आते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिखाई दे रहे हैं, ताज्जुब नहीं कि ये मेरे ही आदमियों में से हों।

कुमार०। (मैदान की तरफ देख कर) हाँ ठीक है, इसी तरफ आ रहे हैं, उस गट्ठर में शायद कोई आदमी है।

कम०। बेशक ऐसा ही है, (हँस कर) नहीं तो क्या मेरे आदमी माल असबाब चुरा कर लावेंगे! देखिए वे दोनों कितनी तेजी के साथ आ रहे हैं। (कुछ अटक कर) अब मैंने पहिचाना, बेशक इस गठरी में माधवी होगी।

थोड़ी देर तक दोनों आदमी चुपचाप उसी तरफ देखते रहे, जब वे लोग इस मकान के पास पहुँचे तो कमलिनी ने कुमार से कहा—

कम०। मुझे आज्ञा दीजिए तो जाकर इन लोगों को यहाँ लाऊँ।

कुमार०। क्या बिना तुम्हारे गये वे लोग यहाँ नहीं आ सकते?

कम०। जी नहीं, जब तक मैं खुद उन्हें किश्ती पर चढ़ा कर यहाँ न लाऊँ वे लोग नहीं आ सकते, वे क्या कोई भी नहीं आ सकता।

कुमार०। क्या हर एक के लिए जब वह इस मकान में आना या जाना चाहे तो तुम्हीं को तकलीफ करनी पड़ती है? मैं समझता हूँ कि जिस आदमी को तुम एक दफे भी किश्ती पर चढ़ा कर ले जाओगी उसे रास्ता मालूम हो जायगा।

कम०। अगर ऐसा हो होता तो मैं इस मकान में बेखटके क्योंकर रह सकती थी। आप जरा नीचे चलें, मैं इसका सबब आपको बतला देती हूँ।

कुमार खुशी खुशी उठ खड़े हुए और कमलिनी के साथ नीचे उतर गए। कमलिनी उन्हें उस कोठरी में ले गई जो नहाने के काम में लाई जाती थी और जिसे कुमार देख चुके थे। उस कोठरी में दीवार के साथ एक आलमारी थी जिसे कमलिनी ने खोला। कुमार ने देखा कि उस दीवार के साथ चाँदी का एक मुट्ठा जो हाथ भर से छोटा न होगा लगा हुआ है। इसके सिवाय और कोई चीज उसमें नहीं थी।

कम०। मैं पहिले ही आपसे कह चुकी हूँ कि इस तालाब में चारो ओर लोहे का जाल पड़ा हुआ है।

कुमार०। हाँ ठीक है मगर उस रास्ते में जाल न होगा जिधर से तुम किश्ती लेकर आती जाती हो।

कम०। ऐसा ख्याल न कीजिए, उस रास्ते में भी जाल है, मगर उसे यहाँ आने का दर्वाजा कहना चाहिए, जिसकी ताली यह है। देखिये अब आप अच्छी तरह समझ जाँयगे। (उस चाँदी के मुट्ठे को कई दफे घुमा कर) अब उतनी दूर का या उस रास्ते का जाल जिधर से किश्ती लेकर मैं आती जाती हूँ हट गया,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानों दर्वाजा खुल गया, अब मैं क्या कोई भी जिसको आने जाने का रास्ता मालूम है किश्ती पर चढ़ के आ जा सकता है। जब मैं इसको उलटा घुमाऊँगी तो वह रास्ता बन्द हो जायगा अर्थात् वहाँ भी जाल फैल जायगा, फिर किश्ती आ नहीं सकती।

कुमार०। (हँस कर) बेशक यह एक अच्छी बात है।

इसके बाद कमलिनी किश्ती पर सवार होकर तालाब के बाहर गईं और उन दोनों आदमियों को गठरी सहित सवार करा के मकान में ले आई तथा तालाब में आने का रास्ता उसी रीति से जैसे कि हम ऊपर लिख चुके हैं बन्द कर दिया। इस समय वहाँ कई लौंडियाँ भी मौजूद थीं, उन्होंने कमलिनी के इशारे से छत के ऊपर रोशनी का बन्दोबस्त कर दिया और सब कोई छत के ऊपर चले गए। कुमार के पास ही कमलिनी गालीचे पर बैठ गई और वे दोनों आदमी भी गठरी सामने रख कर बैठ गये। इस छत की जमीन चिकने पत्थर की बहुत साफ और सुथरी बनी हुई थी, अगर नजाकत की तरफ ख्याल न किया जाय तो फर्श या बिछावन बिछा कर वहाँ बैठने की कोई जरूरत न थी।

कम०। कुमार देखिए इन दोनों आदमियों को मैंने माधवी को गिरफ्तार करने को भेजा था, मालूम होता है कि ये लोग अपना काम पूरा कर आए हैं और इस गठरी में शायद माधवी ही को लाए हैं। (दोनों आदमियों की तरफ देख कर) क्यों जी, माधवी ही है या किसी दूसरे को लाए हो?

एक०। जी माधवी को ही लाए हैं।

कम०। गठरी खोलो, जरा इसकी सूरत देखूँ।

उन दोनों ने गठरी खोली, कमलिनी और कुमार ने बड़े चाव से माधवी की सूरत देखी परन्तु यकायक कमलिनी चौंकी और बोली, "क्या यह जख्मी है?"

एक०। जी हाँ, मुझे उम्मीद नहीं कि इसकी जान बचेगी क्योंकि चोट भारी खाई है।

कुमार०। इसे किसने जख्मी किया है?

एक०। किसी औरत ने रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहखाने में इसे चोट पहुँचाई है।

कुमार०। (कमलिनी की तरफ देख कर) क्या रोहतासगढ़ में कोई तिलिस्मी तहखाना भी है?

कम०। जी हाँ, पर उसका भेद बहुत आदमियों को मालूम नहीं है, बल्कि जहाँ तक मैं समझती हूँ वहाँ का राजा दिग्विजयसिंह भी पूरा पूरा हाल न जानता होगा। वहाँ का मामला भी बड़ा ही विचित्र है, किसी समय मैं आपसे उसका हाल कहूँगी।

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक०। मगर अब उस तहखाने की रंगत बदल गई।

कम० । सो क्या ?

एक० । (कुमार की तरफ इशारा करके) आपके ऐयारों ने उसमें अपना दखल कर लिया, बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि रोहतासगढ़ ही ले लिया ।

कम० । (कुमार की तरफ देख कर) मुबारक हो, खबर अच्छी आई है ।

कुमार० । बेशक इस खबर ने मुझे खुश कर दिया, ईश्वर करे तुम्हारा द्वारा भी जल्द आ जाय और किशोरी का कुछ हाल मालूम हो । (माधवी को गौर से देख और चौंक कर) यह क्या ? माधवी की दाहिनी कलाई दिखाई नहीं देती !

कम० । (हँस कर) इसका हाल आपको नहीं मालूम ?

कुमार० । कुछ नहीं ।

कम० । पूरा हाल तो मुझे भी नहीं मालूम, मगर इतना सुना है कि कहीं गयाजी में इससे और इसके दीवान अग्निदत्त की लड़की कामिनी से लड़ाई हो गई थी । उसी लड़ाई में यह अपनी दाहिनी कलाई खो बैठी । यह भी सुनने में आया है कि यह लड़ाई उसी मकान में हुई थी जिसमें आप लोग रहते थे और इसमें कमला भी शामिल थी ।

कमलिनी की यह बात सुन कर कुमार को वे ताज्जुब की बातें याद आ गईं जो बीमारी की हालत में गयाजी में महल के अन्दर कई दफे रात के समय देखने में आई थीं और जब कि अन्त में कोठरी के अन्दर एक लाश और औरत की कलाई पाई गई थी ।

कुमार० । हाँ अब याद आया, वह मामला भी बड़ा ही विचित्र हुआ था, अभी तक उसका ठीक ठीक पता न लगा ।

कम० । क्या हुआ था जरा मैं भी सुनूँ ?

कुमार ने वह सब हाल कहा और जो कुछ देखने और सुनने में आया था वह भी बताया ।

कम० । कमला से मुलाकात हो तो कुछ और सुनने में आवे (दोनों आदमियों की तरफ देख कर) पहिले माधवी को यहाँ से ले जाओ, लौंडियों के हवाले करो और कह दो कि इसे कैदखाने में रक्खें और होश में लाकर इसका इलाज करें, इसके बाद आओ तो तुम्हारी जुबानी वहाँ का सब हाल सुनें । शाबाश, तुम लोगों ने बेशक अपना काम पूरा किया जिससे मैं बहुत ही खुश हूँ !

"बहुत अच्छा" कह कर दोनों आदमी माधवी को वहाँ से उठा कर नीचे ले गए और इधर कमलिनी और कुमार में बातचीत होने लगी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । (मुस्कुरा कर) लीजिए आपकी मुराद पूरा हुआ चाहती है, पहले ही पहिल यह खुशखबरी मेरे ही सबब से आपको मिली है, सब से भारी ईनाम मुझी को मिलना चाहिए ।

कुमार० । बेशक ऐसी ही बात है, मेरे पास कोई ऐसी चीज तो नहीं है जो तुम्हारी नजर के लायक हो, खैर इसके बदले में मैं खुद अपने को तुम्हारे हाथ में देता हूँ कि

कम० । वाह, क्या खूब !

कुमार० । सो क्यों ?

कम० । आपको अपने बदन पर अख्तियार ही क्या है, यह तो किशोरी की मिलकियत है !

कुमार लाजवाब हो गए और हँस कर चुप हो रहे । कमलिनी बड़ी ही खूबसूरत थी, इसके साथ ही साथ उसकी अच्छी चालचलन मुरौवत अहसान और नेकियों ने कुमार को अपना तावेदार बना लिया था । उसकी एक एक बात पर कुमार प्रसन्न होते और दिल में बराबर उसकी तारीफ करते थे ।

कुमार० । कमलिनी, मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ मगर ईश्वर के लिए सच सच जवाब देना, बात बना कर टालने की सही नहीं ।

कम० । कहिए तो सही क्या बात है ? रंग बेढंग मालूम होता है !

कुमार० । अगर सच जवाब देने का वादा करो तो पूछूं नहीं तो व्यर्थ मुँह क्यों दुखाऊँ !

कम० । आपकी नजाकत तो औरतों से भी बढ़ गई, जरा सी बात कहने में मुँह दुखा जाता है, दम फूलने लगता है । खैर पूछिये, मैं वादा करती हूँ कि सच्चा जवाब दूँगी, अगर कहिए तो कागज पर लिख दूँ !

कुमार० । (मुस्कुरा कर) यह तो तुम वादा कर ही चुकी हो कि अपना हाल पूरा पूरा मुझसे कहोगी मगर इस समय मैं तुमसे केवल इतना ही पूछता हूँ कि तुम्हारा कोई वली वारिस भी है या नहीं ! तुम्हारे व्यवहारों से स्वतन्त्रता मालूम होती है और यह भी जाना जाता है कि तुम कुँआरी हो ।

कम० । यह सवाल जवाब देने योग्य नहीं है (मुस्कुरा कर) परन्तु क्या किया जाय, वादा करके चुप रहना भी मुनासिब नहीं । वास्तव में मैं स्वतन्त्र हूँ । कुँआरी तो हूँ परन्तु शीघ्र ही मेरी शादी होने वाली है ।

कुमार० । कब और कहाँ ?

कम० । यह दूसरा सवाल है, इसका सच्चा जवाब देने के लिए मैंने वादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[illegible] नहीं किया है, इसलिए आप इसका उत्तर न पा सकेंगे।

कुमार०। अगर इसका भी जवाब दो तो क्या कोई हर्ज है।

कम०। हाँ हर्ज है, बल्कि नुकसान है।

कुमार चुप हो रहे और जिद करना मुनासिब न जाना मगर यह सुन कर कि 'शीघ्र ही मेरी शादी होने वाली है' कुमार को कुछ रंज हुआ। क्यों रंज हुआ? इसमें कुमार की हानि ही क्या थी? क्या कुछ दूसरा इरादा था? नहीं नहीं, कुमार यह नहीं चाहते थे कि हम ही इससे शादी करें, वे किशोरी के सच्चे प्रेमी थे, मगर खूबसूरती के अतिरिक्त कमलिनी के अहसानों ने कुमार को ताबेदार बना लिया था और अभी उन्हें कमलिनी से बहुत कुछ उम्मीदें थी तथा यह भी सोचते थे कि ऐसी तर्कीब निकल आवे जिससे इस अहसान का बदला चुक जाय। मगर इन बातों से कुमार के रंज होने का मतलब नहीं खुला। खैर जो हो पहिले यह तो मालूम हो कि कमलिनी है कौन!

वे दोनों आदमी भी छत पर आ पहुँचे जो माधवी को लाये थे, हाथ जोड़ कर सामने बैठ गए। कमलिनी ने उनसे खुलासा हाल कहने के लिए कहा और उन दोनों में से एक ने इस तरह कहना शुरू किया :—

दोनों०। हम दोनों हुक्म के मुताबिक यहाँ से जाकर माधवी को खोजने लगे मगर उसका पता गयाजी और राजगृही के इलाकों में कहीं न लगा। लाचार होकर रोहतासगढ़ किले के पास पहुँचे और पहाड़ी के चारों तरफ घूमने लगे। कभी कभी रोहतासगढ़ की पहाड़ी के ऊपर भी जाते और घूम घूम कर पता लगाते कि वहाँ क्या हो रहा है। एक दिन रोहतासगढ़ पहाड़ी के ऊपर घूमते फिरते यकायक हम दोनों एक खोह के मुहाने पर जा पहुँचे और वहाँ कई आदमियों के धीरे धीरे बातचीत करने की आवाज सुन कर एक झाड़ी में जहाँ से उन लोगों की आवाज साफ सुनाई देती थी छिप रहे। अन्दाज से मालूम हुआ कि वे लोग कई आदमी हैं और उन्हीं के साथ एक औरत भी है। नीचे लिखी बातें हम लोगों ने सुनीं—

एक०। न मालूम हम लोगों को कब तक यहाँ अटकना और राह देखना पड़ेगा।

दूसरा०। अब हम लोगों को यहाँ ज्यादे दिन न रहना पड़ेगा, या तो काम हो जायगा या खाली ही लौट कर चले जाने की नौबत आवेगी।

तीसरा०। रंग तो ऐसा ही नजर आता है, भाई जो हो हमें तो यही विश्वास होता है कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग तहखाने में घुस गये क्योंकि पहले कभी एक आदमी तहखाने में आता जाता दिखाई नहीं देता था, बल्कि मैं तो यहाँ तक कह सकता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूं कि कल उस कब्रिस्तान में हम लोगों ने जिसे देखा था वह कोई ऐयार ही था।

चौथा० । खैर और दो तीन दिन में मालूम हो जायगा ।

औरत० । तुम लोगों का काम चाहे जब हो मगर मेरा काम तो आज ही चाहता है। माधवी और तिलोत्तमा को मैंने खूब ही धोखा दिया है । उसी कब्रिस्तान की राह से मैं उन दोनों को तहखाने में ले जाऊंगी ।

एक० । अब तुम्हें वहां जाना चाहिए, शायद माधवी वहां पहुंच गई हो ।

औरत० । हां अब जाती हूं पर अभी समय नहीं हुआ ।

दूसरा० । दम भर पहिले ही पहुंचना अच्छा है ।

यह बातें सुन कर मैं उन लोगों को पहिचान गया, रामू वगैरह धनपति के सिपाही लोग और औरत चमेली थी ।

इतना सुनते ही कमलिनी ने रोका और पूछा, "जिस खोह के मुहाने पर लोग बैठे थे वहां कोई सलई का पेड़ भी है ?"

इसके जवाब में उन दोनों ने कहा, "हां हां दो पेड़ सलई के वहां थे उनके सिवाय और दूर दूर तक कहीं सलई का पेड़ दिखाई नहीं दिया ।"

कम० । बस मैं समझ गई, वह खोह का मुहाना भी तहखाने से निकलने का रास्ता है, शायद धनपति ने अपने आदमियों को कह रक्खा होगा कि मैं किशोरी को लिए हुए इसी राह से निकलूंगी तुम लोग मुस्तैद रहना इसी से वे लोग वहां बैठे थे ।

एक० । शायद ऐसा ही हो ।

कुमार० । धनपति कौन है ?

कम० । उसे आप नहीं जानते, ठहरिए इन लोगों का हाल सुन लूं तो कहूं (उन दोनों की तरफ देख कर) हां तब क्या हुआ ?

उसने फिर यों कहना शुरू किया :—

"थोड़ी ही देर में चमेली वहां से उठी और एक तरफ को रवाना हुई, हम दोनों भी उसके पीछे पीछे चले और सुबह की सुफेदी निकलना ही चाहती थी कि उस कब्रिस्तान के पास पहुंच गये जो तहखाने में जाने का दर्वाजा है । हम दोनों एक आड़ की जगह में छिप रहे और तमाशा देखने लगे, उसी समय माधवी और तिलोत्तमा भी वहां आ पहुंचीं । तीनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं जिसे दूर होने के सबब मैं बिल्कुल न सुन सका, आखिर वे तीनों तहखाने में घुस गईं और पहरों गुजर जाने पर भी बाहर न निकलीं, हम दोनों यह निश्चय कर चुके थे कि जब तक वे तहखाने से न निकलेंगी यहां से न टलेंगे । सबेरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थाया बल्कि धीरे धीरे तीन पहर दिन बीत गया। आखिर हम दोनों तहखाने में घुसने के इरादे से कब्रिस्तान में गये। वहाँ पहुँच कर हमारे साथी ने कहा, "आखिर हम लोग दिन भर परेशान हो ही चुके हैं, अब शाम हो लेने दो तो तहखाने में चलें।" मैंने भी यही मुनासिब समझा और हम दोनों आदमी वहाँ से लौटा ही चाहते थे कि तहखाने का दर्वाजा खुला और चमेला दिखाई पड़ी, हम दोनों को भी चमेली ने देखा और पहिचाना मगर उसको ठहरने या कुछ कहने का साहस न हुआ। वह कुछ परेशान मालूम होती थी और खून से भरा हुआ एक छूरा उसके हाथ में था। हम दोनों ने भी उसको कुछ टोकना मुनासिब न समझा और यह विचार कर कि शायद कोई और भी इस तहखाने से निकले, एक कब्र की आड़ में छिप कर बिचली कब्र अर्थात् तहखाने के दर्वाजे की तरफ देखने लगे। चमेला हम लोगों के देखते देखते भाग गई और थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा।

"थोड़ी देर बाद हम लोगों ने दूर से राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार पण्डित बद्रीनाथ को आते देखा। वह तहखाने के दर्वाजे पर पहुँचे ही थे कि अन्दर से तिलोत्तमा निकली और पण्डित बद्रीनाथ ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद ही एक बूढ़ा आदमी तहखाने से निकला और पण्डित बद्रीनाथ से बातें करने लगा। हम लोगों को कुछ कुछ वे बातें सुनाई देती थीं। इतना मालूम हो गया कि तहखाने के अन्दर खून हुआ है और इन दोनों ने तिलोत्तमा को दोषी ठहराया है, मगर हम लोगों ने खून से भरा हुआ छूरा हाथ में लिये चमेला को देखा था इसलिये विश्वास था कि अगर तहखाने में कोई खून हुआ है तो जरूर चमेला के ही हाथ से हुआ, तिलोत्तमा निर्दोष है।

"पण्डित बद्रीनाथ और वह बूढ़ा आदमी तिलोत्तमा को लेकर फिर तहखाने में घुस गये। हम लोगों ने भी वहाँ अटकना मुनासिब न समझा और थोड़ी ही देर बाद हम लोग भी तहखाने में घुस गये तथा तहखाने की पचासों कोठरियों में घूमने और देखने लगे कि यहाँ क्या होता है। बद्रीनाथ थोड़ी ही देर बाद तहखाने के बाहर निकल गये और हम लोगों ने तिलोत्तमा को एक खम्भे के साथ बंधे हुए पाया। हम्माम वाली कोठरी में माधवी को पड़े हुए पाकर हम लोग बड़े खुश हुए और उसे उठा कर ले भागे फिर न मालूम पीछे क्या हुआ और किस पर क्या गुजरी।*

---

* यहाँ पर तो पाठक समझ ही गये होंगे कि तहखाने में बड़ी मूरत के सामने जो औरत बलि दी गई थी वह माधवी की ऐयारा तिलोत्तमा थी और माधवी की लाश को ले भागने वाले ये ही दोनों कमलिनी के नौकर थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलिनी० । ताज्जुब नहीं कि वहाँ के दस्तूर के मुताबिक तिलोत्तमा क
दे दी गई हो !

एक० । जो हो ।

इतने ही में नीचे से एक लौंडी दौड़ी हुई आई और हाथ जोड़ कर कमलि
से बोली, "तारा आ गई, तालाब के बाहर खड़ी हैं !"

तारा के आने की खबर सुन कर कमलिनी बहुत खुश हुई और खुशी
मारे कुँअर इन्द्रजीतसिंह की घबराहट का तो ठिकाना ही न रहा क्योंकि तारा
की जुबानी रोहतासगढ़ का हाल और बेचारी किशोरी की खबर सुनने वाले
और इसी के बाद कमलिनी का असल भेद उन्हें मालूम होने को था।

कम० । (कुमार की तरफ देख कर) जिस तरह इन दोनों आदमियों को
तालाब के बाहर से लाई हूँ उसी तरह तारा को भी लाना पड़ेगा ।

कुमार० । हाँ हाँ उसे बहुत जल्द लाओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ

कम० । आप क्यों तकलीफ करते हैं । बैठिये मैं उसे अभी लाती हूँ । (
आदमियों की तरफ देख कर) चलो तुम दोनों को भी तालाब के बाहर पहुँचा

लाचार कुमार उसी जगह बैठे रहे । उन दोनों आदमियों को साथ लेकर
लिनी वहाँ से चली गई तथा थोड़ी देर में तारा को लेकर आ पहुँची ।
इन्द्रजीतसिंह को देख कर तारा चौंकी और बोली—

तारा० । क्या कुमार यहाँ विराज रहे हैं !

कम० । हाँ कई दिनों से यहाँ हैं और तुम्हारी राह देख रहे हैं । तुम्हारी जु
रोहतासगढ़ और किशोरी तथा लाली और कुन्दन का असल भेद और हाल सु
लिए बड़े बेचैन हो रहे हैं । आओ मेरे पास बैठ जाओ और कहो क्या हाल है

तारा० । (ऊँची साँस लेकर) अफसोस, मैं इस समय बैठ नहीं सकती औ
कुछ वहाँ का हाल ही कह सकती हूँ क्योंकि हम लोगों का यह समय बड़
अमूल्य है । कुमार को यहाँ देख मैं बहुत खुश हुई, अब वह काम बखूबी नि
जायगा ! (कुमार की तरफ देख कर) बेचारी किशोरी इस समय बड़े ही संक
पड़ी हुई हैं । अगर आप उनकी जान बचाना चाहते हैं तो इस समय मुझसे
न पूछिए, बस तुरत उठ खड़े होइए और जहाँ मैं चलती हूँ चले चलिए, हाँ
बन पड़ा तो रास्ते में मैं वहाँ का हाल आपसे कहूँगी । (कमलिनी की तरफ
कर) आप भी चलिए और कुछ आदमी अपने साथ लेती चलिए मगर सब
घोड़े पर सवार और लड़ाई के सामान से दुरुस्त रहें ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । ऐसा ही होगा ।

कुमार० । (खड़े होकर) मैं तैयार हूँ ।

तीनों आदमी छत के नीचे उतरे और तारा के कहे मुताबिक कार्रवाई की गई ।

सुबह की सुफेदी आसमान पर निकलना ही चाहती है । आओ देखें हमारा बहादुर नौजवान कुँअर इन्द्रजीतसिंह किस ठाठ से मुश्की घोड़े पर सवार मैदान की तरफ घोड़ा फेंके चला जा रहा है और उसकी पेटी से लटकती हुई जड़ाऊ नयाम (म्यान) की तलवार किस तरह उछल उछल कर घोड़े के पेट में थपकियाँ मार रही मानों उसकी चाल की तेजी पर शाबाशी दे रही है । कुमार के आगे आगे घोड़े पर सवार तारा जा रही है, कुमार के पीछे सब्ज घोड़े पर कमलिनी सवार और घोड़े की तेजी को बढ़ा कर कुमार के बराबर हुआ चाहती है उसके पीछे दस दिलावर और बहादुर सवार घोड़ा फेंके चले जा रहे हैं और इस जंगली मैदान के सन्नाटे को घोड़ों के टापों की आवाज से तोड़ रहे हैं ।

चौथा बयान

हम ऊपर लिख आए हैं कि देवीसिंह को साथ लेकर शेरसिंह कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए रोहतासगढ़ से रवाना हुए । शेरसिंह इस बात को तो जानते थे कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह फलानी जगह हैं परन्तु उन्हें तालाब के गुप्त भेदों की कुछ भी खबर न थी । राह में आपुस में बातचीत होने लगी ।

देवी० । लाली का भेद कुछ मालूम न हुआ ।

शेर० । अफसोस, उसके और कुन्दन के बारे में मुझसे बड़ी भारी भूल हुई, ऐसा धोखा खाया कि शर्म के मारे कुछ कह नहीं सकता ।

देवी० । इसमें शर्म की क्या बात है, ऐसा कोई ऐयार दुनिया में न होगा जिसने कभी धोखा न खाया हो, हम लोग कभी धोखा देते हैं कभी स्वयं धोखे में आ जाते हैं, फिर इसका अफसोस कहाँ तक किया जाय !

शेर० । आपका कहना बहुत ठीक है, खैर इस बारे में मैंने जो कुछ मालूम किया है उसे कहता हूँ ! यद्यपि थोड़े दिनों तक मैंने रोहतासगढ़ से अपना सम्बन्ध छोड़ दिया था तथापि मैं कभी कभी वहाँ आया करता और गुप्त राहों से महल के अन्दर जाकर वहाँ की खबर भी लिया करता था । जब किशोरी वहाँ फँस गई तो अपनी भतीजी कमला के कहने से मैं वहाँ दूसरे तीसरे बराबर जाने लगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाली और कुन्दन को मैंने महल में देखा, यह न मालूम हुआ कि ये दोनों कौन हैं। बहुत कुछ पता लगाया मगर कुछ काम न चला, परन्तु कुन्दन के चेहरे पर तब मैं गौर करता तो मुझे शक होता कि वह सरला है।

देवी०। सरला कौन ?

शेर०। वही सरला जिसे तुम्हारी चम्पा ने चेली बना कर रक्खा था और जो उस समय चम्पा के साथ थी जब उसने एक खोह के अन्दर माधवी के ऐयार की लाश काटी थी।

देवी०। हाँ वह छोकरी, मुझे अब याद आया, मालूम नहीं कि आज कल वह कहाँ है। खैर तब क्या हुआ ? तुमने समझा कि वह सरला है मगर उस खोह का और लाश काटने का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ !

शेर०। वह हाल स्वयं सरला ने कहा था, वह मेरे आपुस वालों में से है, इत्तिफाक से एक दिन मुझसे मिलने के लिये रोहतासगढ़ आई थी तब सब हाल मैंने सुना था, मगर मुझे यह नहीं मालूम कि आज कल कहाँ है।

देवी०। अच्छा तब क्या हुआ ?

शेर०। एक दिन यही भेद खोलने की नीयत से मैं रात के समय रोहतासगढ़ महल के अन्दर गया और छिप कर सरला के सामने जाकर बोला, "मैं पहिचान गया कि तू सरला है, फिर तू अपना भेद मुझसे क्यों छिपाती है ?" इसके जवाब में कुन्दन ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

मैं०। शेरसिंह।

सरला०। मुझे जब तक निश्चय न हो कि तुम शेरसिंह ही हो मैं अपना भेद कैसे कहूँ ?

मैं०। क्या तू मुझे नहीं पहिचानती ?

सरला०। क्या जाने कोई ऐयार सूरत बदल के आया हो, अगर तुम पहिचान गए कि मैं सरला हूँ तो कोई ऐसी छिपी हुई बात कहो जो मैंने तुमसे कही हो।

इसके जवाब में मैं वही खोह वाला अर्थात् लाश काटने वाला किस्सा कह गया और अन्त में मैं बोला कि यह हाल स्वयम् तूने मुझसे बयान किया था।

उस किस्से को सुन कर कुन्दन हँसी और बोली, "हाँ अब मैं समझ गई। मैं चम्पा के हुक्म से यहाँ का हाल चाल लेने आई थी और अब किशोरी के छुड़ाने की फिक्र में हूँ, मगर लाली मेरे काम में बाधा डालती है, कोई ऐसी तर्कीब बताइये जिसमें लाली मुझसे दबे और डरे !"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं उस समय यह कह वहाँ से चला आया कि अच्छा सोच कर इसका जवाब दूँगा।

देवी०। तब क्या हुआ ?

शेर०। मैं वहाँ से रवाना हुआ और पहाड़ी के नीचे उतरते समय एक विचित्र बात मेरे देखने और सुनने में आई।

देवी०। वह क्या ?

शेर०। जब मैं अंधेरी रात में पहाड़ी के नीचे उतर रहा था तो जंगल में मालूम हुआ कि दो तीन आदमी जो पगडण्डी के पास ही हैं आपुस में बातें कर रहे हैं। मैं पैर दबाता हुआ उनके पास गया और छिप कर बातें सुनने लगा, मगर उस समय उनकी बातें समाप्त हो चुकी थीं केवल एक आखिरी बात सुनने में आई।

देवी०। फिर क्या हुआ।

शेर०। एक ने कहा—'भरसक तो लाली और कुन्दन दोनों उन्हीं में से हैं, नहीं तो लाली तो जरूर इन्द्रजीतसिंह की दुश्मन है। मगर इसकी पहिचान तो सहज ही में हो सकती है। केवल 'किसी के खून से लिखी हुई किताब' और 'आँचल पर गुलामी की दस्तावेज' इन दोनों जुमलों से अगर वह डर जाय तो हम समझ जायँगे कि बीरेन्द्रसिंह की दुश्मन है। खैर बूझा जायगा, पहिले महल में जाने का मौका भी तो मिले। इसके बाद और कुछ सुनने में न आया और वे लोग उठ कर न मालूम कहाँ चले गए। दूसरे दिन मैं फिर कुन्दन के पास गया और उससे बोला कि 'तू लाली के सामने 'किसी के खून से लिखी हुई किताब और 'आँचल पर गुलामी की दस्तावेज' का जिक्र करके देख क्या होता है'!

देवी०। फिर क्या हुआ ?

शेर०। तीन चार दिन बाद जब मैं कुन्दन के पास गया तो उसकी जुबानी मालूम हुआ कि कुन्दन के मुँह से वे बातें सुन कर लाली बहुत डरी और उसने कुन्दन का मुकाबला करना छोड़ दिया। मगर मुझे थोड़े ही दिनों में मालूम हो गया कि कुन्दन सरला न थी, उसने मुझे धोखा दिया और चालाकी से मेरी जुबानी कई भेद मालूम करके अपना काम निकाल लिया। मुझे इस बात की बड़ी शर्म है कि मैंने अपने दुश्मन को अपना समझा और धोखा खाया।

देवी०। अक्सर ऐसा धोखा हो जाया करता है, खैर लाली तो अभी हमलोगों के कैद ही में है कहीं जाती नहीं, रही कुन्दन, सो इन्द्रजीतसिंह को लेकर लौटने पर कोई तर्कीब ऐसी जरूर निकाली जायगी जिसमें बाकी लोगों का असल हाल मालूम हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी तरह की बातें करते हुए दोनों ऐयार चलते गये। रात को एक जगह दो तीन घण्टे आराम किया और फिर चल पड़े। सवेरा होते होते ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक छोटा सा टीला ऐसा था जिस पर चढ़ने से दूर दूर तक की जमीन दिखाई देती थी तथा वहाँ से कमलिनी का तालाब वाला मकान भी बहुत दूर न था। दोनों ऐयार उस टीले पर चढ़ गये और मैदान की तरफ देखने लगे। यकायक शेरसिंह ने चौंक कर कहा, "अहा, हम लोग क्या अच्छे मौके पर आये हैं! देखो वह कुंअर इन्द्रजीतसिंह और वह औरत जिसने उन्हें फंसा रक्खा है घोड़े पर सवार इसी तरफ चले आ रहे हैं!!"

देवी०। हाँ ठीक तो है, उनके साथ और भी कई सवार हैं।

शेर०। मालूम होता है उस औरत ने उन्हें अच्छी तरह अपने वश में कर लिया है। बेचारे इन्द्रजीतसिंह क्या जानें कि यह उनकी दुश्मन है। चाहे जो हो, इस समय इन लोगों को आगे न बढ़ने देना चाहिए।

देवी०। सबके आगे एक औरत घोड़े पर सवार आ रही है। मालूम होता है कि उन लोगों को रास्ता दिखाने वाली यही है।

शेर०। बेशक ऐसा ही है, तभी तो सब कोई उसके पीछे पीछे चल रहे हैं। पहिले उसी को रोकना चाहिये, मगर घोड़ों की चाल बहुत तेज है।

देवी०। कोई हर्ज नहीं हम दोनों आदमी घोड़े की राह पर अड़ कर खड़े हो जायँ और अपने को घोड़े से बचाने के लिए भी मुस्तैद रहें, अच्छी नस्ल का घोड़ा यकायक आदमी के ऊपर टाप न रक्खेगा, वह लोगों को राह में देख जरूर अड़ेगा या झिझकेगा, बस उसी समय घोड़े की बाग थाम लेंगे।

दोनों ऐयारों ने बहुत जल्द अपनी राय ठीक कर ली और दोनों आदमी एक साथ घोड़ों की राह में अड़ के खड़े हो गये। बात की बात में वे लोग भी आ पहुँचे। तारा का घोड़ा रास्ते में आदमियों को खड़ा देख कर झिझका और अड़ कर बगल की तरफ घूमना चाहा, उसी समय देवीसिंह ने फुर्ती से लगाम पकड़ ली। इस समय तारा का घोड़ा लाचार रुक गया और उसके पीछे आने वालों को भी रुकना पड़ा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह शेरसिंह को तो नहीं जानते थे मगर देवीसिंह को उन्होंने पहिचान लिया और समझ गये कि ये लोग मेरी ही खोज में घूम रहे हैं, आखिर देवीसिंह के पास आये और बोले:—

कुमार०। यद्यपि आप सब काम मेरी भलाई ही के लिए करते होंगे परन्तु इस समय हम लोगों को रोका सो अच्छा न किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवी० । क्या मामला है कुछ कहिए तो ?

कुमार० । (जल्दी से घबड़ाए हुए ढंग से) बेचारी किशोरी एक आफत में फँसी हुई है उसी को बचाने जा रहे हैं ।

देवी० । किस आफत में फँसी है ?

कुमार० । इतना कहने का मौका नहीं है ।

देवी० । यह औरत आपको अवश्य धोखा देगी जिसके साथ आप जा रहे हैं ।

कुमार० । ऐसा नहीं हो सकता, यह बड़ी ही नेक और मेरी हमदर्द है ।

इतना सुनते ही कमलिनी आगे बढ़ आई और देवीसिंह से बोली—

कम० । मैं खूब जानती हूँ कि आप लोगों को मेरी तरफ से शक है तथापि मुझे कहना ही पड़ता है कि इस समय आप हम लोगों को न रोकें नहीं तो पछताना पड़ेगा । यदि आप लोगों को मेरी और कुमार की बात का विश्वास न हो तो मेरे सवारों में से दो आदमी घोड़ों पर से उतर पड़ते हैं, उनके बदले में आप दोनों आदमी घोड़ों पर सवार होकर साथ चलें और देख लें कि हम आपके खैरख्वाह हैं या बदख्वाह ।

देवी० । हाँ बेशक यह अच्छी बात है और मैं इसे मंजूर करता हूँ ।

कमलिनी के इशारा करते ही दो सवारों ने घोड़ों की पीठ खाली कर दी । उनके बदले में देवीसिंह और शेरसिंह सवार हो गए और फिर उसी तरह सफर शुरू हुआ । इस समय कुछ कुछ सूरज निकल चुका था और सुनहरी धूप ऊँचे ऊँचे पेड़ों के ऊपर वाले हिस्सों पर फैल चुकी थी ।

आधे घण्टे और सफर करने के बाद वे लोग उस जगह पहुँचे जहाँ घनपति ने किशोरी को जला कर खाक कर डालने के लिए चिता तैयार की थी और जहाँ से दीवान अग्निदत्त लड़ भिड़ कर किशोरी को ले गया था । इस समय भी वह चिता कुछ बिगड़ी हुई सूरत में तैयार थी और इधर उधर बहुत सी लाशें पड़ी हुई थीं, उस जगह पहुँच कर तारा ने घोड़ा रोका और इसके साथ ही सब लोग रुक गये । तारा ने कमलिनी की तरफ देख कर कहा—

तारा० । बस इसी जगह मैं आप लोगों को लाने वाली थी क्योंकि इसी जगह घनपति के बहुत से आदमी मौजूद थे और यहीं वह किशोरी को लेकर आने वाली थी । (लाशों की तरफ देख कर) मालूम होता है यहाँ बहुत खून खराबा हुआ है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । तूने कैसे जाना कि किशोरी को लेकर घनपति इसी जगह आने

वाली थी और धनपति को तूने कहाँ छोड़ा था ?

नारा० । रात के समय छिप कर धनपति के आदमियों की बात मैंने सुनी थी जिससे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ था और धनपति को मैंने उसी खोह के मुहाने पर छोड़ा था जो रोहतासगढ़ तहखाने से बाहर निकलने का रास्ता है और जहाँ सलई के दो पेड़ लगे हैं। उस समय बेहोश किशोरी धनपति के कब्जे में थी और धनपति के कई आदमी भी मौजूद थे। उन लोगों की बातें सुनने से मुझे विश्वास हो गया था कि वे लोग किशोरी को लिए हुए इसी जगह आवेंगे। (एक लाश की तरफ देख के और चौंक के) देखिए पहिचानिए।

कम० । बेशक यह धनपति का नौकर है। (और लाशों को भी अच्छी तरह देख कर) बेशक धनपति यहाँ तक आई थी पर किसी से लड़ाई हो गई जो इन लाशों को देखने से जाना जाता है, मगर इनमें बहुत सी लाशें ऐसी हैं जिन्हें मैं नहीं पहिचानती। न मालूम इस लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, धनपति गिरफ्तार हो गई या भाग गई, और किशोरी किसके कब्जे में पड़ गई ! (कुमार की तरफ देख कर) शायद आपके सिपाही या ऐयार लोग यहाँ आए हों ?

कुमार० । नहीं, (देवीसिंह की तरफ देख कर) आप क्या ख्याल करते हैं ?

देवी० । ख्याल तो मैं बहुत कुछ करता हूँ, इसका हाल कहाँ तक पूछिएगा मगर इन लाशों में हमारे तरफ वालों की कोई लाश नहीं है जिससे मालूम हो कि वे लोग यहाँ आये होंगे।

सब लोग इधर उधर घूमने और लाशों को देखने लगे। यकायक देवीसिंह एक ऐसी लाश के पास पहुँचे जिसमें जान बाकी थी और वह धीरे धीरे कराह रहा था। उसके बदन में कई जगह जख्म लगे हुए थे और कपड़े खून से तर थे। देवीसिंह ने कुमार की तरफ देख के कहा, "इसमें जान बाकी है, अगर बच जाय और कुछ बातचीत कर सके तो बहुत कुछ हाल मालूम होगा।"

कई आदमी उस लाश के पास जा मौजूद हुए और उसे होश में लाने की फिक्र करने लगे। उसके जख्मों पर पट्टी बाँधी गई और ताकत देने वाली दवा भी पिलाई गई। घोड़े नंगी पीठ करके दम लेने हरारत मिटाने और चरने के लिए लम्बी बागडोरों से बाँध कर छोड़ दिए गए।

आधे घण्टे बाद उस आदमी को होश आया और उसने कुछ बोलने का इरादा किया मगर जैसे ही उसकी निगाह कमलिनी पर पड़ी वह काँप उठा और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई। उसके दिल का हाल कमलिनी समझ गई और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके पास जाकर मुलायम आवाज में बोली, "बाँकेसिंह डरो मत, मैं वादा करती हूँ कि तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूँगी, हाँ होश में आओ और मेरी बात का जवाब दो।"

कमलिनी की बात सुन कर उसके चेहरे की रंगत बदल गई, डर की निशानी जाती रही, और यह भी जाना गया कि वह कमलिनी की बातों का जवाब देने के लिए तैयार है।

कम०। किशोरी को लेकर धनपति यहाँ आई थी ?

बाँके०। (सिर हिला कर धीरे से) हाँ मगर.........

कम०। मगर क्या ?

बाँके०। उसने किशोरी को जला देना चाहा था मगर एकाएक अग्निदत्त और उसके साथी लोग आ पहुँचे और लड़ भिड़ कर किशोरी को ले गये, हम लोग उन्हीं के हाथ से जख्मी........

बाँकेसिंह ने इतनी बातें धीरे धीरे और रुक रुक कर कहीं क्योंकि जख्मों से ज्यादे खून निकल जाने के कारण वह बहुत ही कमजोर हो रहा था, यहाँ तक कि बात पूरी न कर सका और गश में आ गया। इन लोगों ने उसे होश में लाने के लिए बहुत कुछ उद्योग किया मगर दो घण्टे तक होश न आया। इस बीच में देवीसिंह ने उसे कई दफे दवा पिलाई।

देवी०। इसमें कोई शक नहीं कि यह बच जायगा।

शेर०। (देवीसिंह की तरफ देख कर) हमने (कमलिनी की तरफ इशारा करके) इनके बारे में भी धोखा खाया, वास्तव में यह कुमार के साथ नेकी कर रही हैं।

देवी०। बेशक यह कुमार की दोस्त हैं, मगर तुमने इनके बारे में कई बातें ऐसी कहीं थीं कि अब भी........

कुमार०। नहीं नहीं देवीसिंहजी, मैं इन्हें अच्छी तरह आजमा चुका हूँ, सच तो यों है कि इन्हीं की बदौलत आज आप लोगों ने मेरी सूरत देखी !

इसके बाद कुमार ने शुरू से अपना किस्सा देवीसिंह से कह सुनाया और कमलिनी की बड़ी तारीफ की।

कम०। आप लोगों ने मेरे बारे में बहुत सी बातें सुनी होंगी और वास्तव में मैंने जो जो काम किये हैं वे ऐसे नहीं कि कोई मुझ पर विश्वास कर सके, हाँ जब आप लोग मेरा असल भेद जान जायँगे तो अवश्य कहेंगे कि तुम्हारे हाथ से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी कोई बुरा काम नहीं हुआ। अभी कुमार को भी मेरा हाल मालूम नहीं, समय मिलने पर मैं अपना विचित्र हाल आप लोगों से कहूँगी और उस समय आप लोग कहेंगे कि बेशक शेरसिंह और उनकी भतीजी कमला ने मेरे बारे में धोखा खाया।

शेर०। (ताज्जुब में आकर) आप मुझे और मेरी भतीजी कमला को क्योंकर जानती हैं?

कम०। मैं आप लोगों को बहुत अच्छी तरह जानती हूँ, हाँ आप लोग मुझे नहीं जानते और जब तक स्वयम् अपना हाल मैं न कहूँ जान भी नहीं सकते।

इसके बाद कुमार ने, देवीसिंह से शेरसिंह का हाल पूछा और उन्होंने सब हाल कहा। इसी समय उस जख्मी ने आँखें खोलीं और पीने के लिये पानी माँगा जिसका इलाज ये लोग कर रहे थे।

अबकी दफे बाँकेसिंह अच्छी तरह होश में आया और कमलिनी के पूछने पर उसने इस तरह बयान किया :—

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि अग्निदत्त किशोरी को ले गया क्योंकि मैं उसे बखूबी पहिचानता हूँ मगर यह नहीं मालूम कि किशोरी की तरह धनपति भी उसके पंजे में फँस गई या निकल भागी, क्योंकि लड़ाई खतम होने के पहिले ही मैं जख्मी होकर गिर पड़ा था। मैं जानता था कि अग्निदत्त बहुत से बदमाशों और लुटेरों के साथ यहाँ से थोड़ी दूर एक पहाड़ी पर रहता है और इसी सबब से धनपति को मैंने कहा भी था कि इस जगह आपका अटकना मुनासिब नहीं मगर होनहार को क्या किया जाय! (हाथ जोड़ कर) महारानी, न मालूम क्यों आपने हम लोगों को त्याग दिया? आज तक इसका ठीक पता हम लोगों को न लगा।"

बाँकेसिंह की आखिरी बात का जवाब कमलिनी ने कुछ न दिया और उससे उस पहाड़ी का पूरा पता पूछा जहाँ अग्निदत्त रहता था। बाँकेसिंह ने अच्छी तरह वहाँ का पता दिया। कमलिनी ने अपने सवारों में से एक को बाँकेसिंह के पास छोड़ा और बाकी सभों को साथ ले वहाँ से रवाना हुई। इस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह की क्या अवस्था थी इसे अच्छी तरह समझना जरा कठिन था। कमलिनी की नेकी, किशोरी की दशा, इश्क की खिंचाखिंची और अग्निदत्त की कार्रवाई के सोच विचार में ऐसे मग्न हुए कि थोड़ी देर के लिये तनोबदन की भी सुध भुला दी केवल इतना जानते रहे कि कमलिनी के पीछे पीछे किसी काम के लिए कहीं जा रहे हैं। सूरज अस्त होने के बाद ये लोग पहाड़ी के नीचे पहुँचे जिस पर अग्निदत्त रहता था और जहाँ खोह के अन्दर किशोरी की अन्तिम अवस्था ऊपर के बयान में लिख आये हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन लोगों का दिल इस समय ऐसा न था कि इस पहाड़ी के नीचे पहुँच कर किसी जरूरी काम के लिए भी कुछ देर तक अटकते। घोड़ों को पेड़ों से बाँध तुरत चढ़ने लगे और बात की बात में पहाड़ी के ऊपर जा पहुँचे। सबसे पहिले जिस चीज पर इन लोगों की निगाह पड़ी वह एक लाश थी जिसे इन लोगों में से कोई भी नहीं पहिचानता था और इसके बाद भी बहुत सी लाशें देखने में आईं जिससे इन लोगों का दिल छोटा हो गया और सोचने लगे कि देखें किशोरी से मुलाकात होती है या नहीं।

इस पहाड़ी के ऊपर एक छोटी सी मढ़ी बनी हुई थी जिसमें बीस पचीस आदमी रह सकते थे और इसी के बगल में एक गुफा थी जो बहुत लम्बी और अंधेरी थी। पाठक, यह वही गुफा थी जिसमें बेचारी किशोरी दुष्ट अग्निदत्त के हाथ से बेबस होकर जमीन पर गिर पड़ी थी।

इस पहाड़ी के ऊपर बहुत सी लाशें पड़ी हुई थीं, किसी का सिर कटा हुआ था, किसी को तलवार ने जनेवा काट गिराया था, कोई कमर से दो टुकड़े था, किसी का हाथ कट कर अलग हो गया था, किसी के पेट को खंजर ने फाड़ डाला था और आंत बाहर निकल पड़ी थी, मगर किसी जीते आदमी का नाम निशान वहाँ न था। ऐसी अवस्था देख कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह बहुत घबराये और उन्हें किसी के मिलने से नाउम्मीदी हो गई। ऐयारों ने बटुए से सामान निकाल कर बत्ती जलाई और खोह के अन्दर घुस कर देखा तो वहाँ भी एक लाश के सिवाय और कुछ न दिखाई पड़ा। निगाह पड़ते ही देवीसिंह ने पहिचान लिया कि यह अग्निदत्त की लाश है। एक खंजर उसके कलेजे में अभी तक चुभा हुआ मौजूद था, केवल उसका कब्जा बाहर था और दिखाई दे रहा था, उसके पास ही एक लपेटा हुआ कागज पड़ा था। देवीसिंह ने वह कागज उठा लिया और दोनों ऐयार उस लाश को बाहर लाये।

सभों ने अग्निदत्त की लाश को देखा और ताज्जुब किया।

शेर०। इस हरामजादे को इसके कुकर्मों की सजा न मालूम किसने दी!

कमलिनी०। हाय, इस कम्बख्त की बदौलत बेचारी किशोरी पर न मालूम क्या क्या आफतें आईं और अब वह कहाँ या किस अवस्था में है।

देवी०। (चीठी दिखा कर) इसकी लाश के पास यह चीठी भी मिली है, शायद इससे कुछ पता चले।

कम०। हाँ हाँ, इसे पढ़ो तो सही देखें क्या लिखा है।

सभों का ध्यान उस चीठी पर गया। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने वह चीठी लेनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंह के हाथ से ले ली और पढ़ कर सभों को सुनाया, यह लिखा था :—

"आखिर हरामजादी किशोरी मेरे हाथ लगी! इसमें कोई शक नहीं कि अब यह अपने किये का फल भोगेगी। इसकी शैतानी ने मुझे जीते जी मार डाला था मगर मैंने भी पीछा न छोड़ा। कम्बख्त अग्निदत्त की क्या हकीकत थी जो मेरे हाथ से अपनी जान बचा ले जाता। मैं उन लोगों को ललकारता हूँ जो अपने को बहादुर दिलेर और राजा मानते हैं! कहाँ हैं वीरेन्द्रसिंह इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह जो अपनी बहादुरी का दावा रखते हैं? आवें और मेरा चरण छू कर माफी माँगें। कहाँ हैं उनके ऐयार जो अपने को विधाता ही समझ बैठे हैं, आवें और मेरे ऐयारों के सामने सिर झुकावें। मुझे विश्वास है कि उन लोगों में से कोई न कोई किशोरी को खोजता यहाँ जरूर आवेगा और इसीलिए मैं यह चीठी लिख कर यहाँ रक्खे जाता हूँ कि ऊपर लिखे व्यक्ति या उनके साथी और मददगार लोग चाहे जो कोई भी हों अपनी अपनी जान बचावें क्योंकि उनकी मौत आ चुकी है और अब वे लोग मेरे हाथ से किसी तरह बच नहीं सकते। कोई यह न कहे कि मैं छिप कर अपना काम करता हूँ और किसी को अपनी सूरत नहीं दिखाता। जिसको मेरी सूरत देखनी हो मेरे घर चला आवे, मगर होशियार रहे क्योंकि मेरे सामने आने वाले की भी वही दशा होगी जो यहाँ वालों की हुई। लो मैं अपना पता भी बताये देता हूँ, जिसको आना हो मेरे पास चला आवे। यहाँ से पाँच कोस पूरब एक नाला है उसी के किनारे दक्खिन रुख दो कोस तक चले जाने के बाद मेरा मकान दिखाई पड़ेगा!

—बहादुरों का दादागुरु।"

इस चीठी ने सभों को अपने आपे से बाहर कर दिया। मारे क्रोध के कुँअर इन्द्रजीतसिंह की आँखें कबूतर के खून की तरह सुर्ख हो गईं। देवीसिंह और शेरसिंह दाँत पीसने लगे।

कुमार०। चाहे जो हो मगर इस हरामजादे से मुकाबिला किये बिना मैं किसी तरह आराम नहीं कर सकता!

देवी०। बेशक इसकी इस ढिठाई की सजा दी जायगी।

कुमार०। अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है, चल कर उसे ढूँढ़ना चाहिये।

कम०। बेशक उसने बड़ी बेअदबी की, उसे जरूर सजा देनी चाहिये। मगर आप लोग बुद्धिमान हैं, मुझे विश्वास है कि बिना समझे बूझे किसी काम में जल्दी न करेंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुमार० । ऐसे समय में विलम्ब करना अपनी बहादुरी में बट्टा लगाना है ।

कम० । आप इस समय क्रोध में हैं इसलिए ऐसा कहते हैं, नहीं तो आप स्वयं पहिले किसी ऐयार को भेजना मुनासिब समझते । इतनी बड़ी शेखी के साथ पत्र लिखने वाले को मैं सच्चा नहीं समझ सकती । खुल्लमखुल्ला आप लोगों का मुकाबला करना हँसी खेल है ? क्या यह केवल उन्हीं आदमियों का काम है जो दगावाज नहीं बल्कि सच्चे बहादुर हैं ? कभी नहीं कभी नहीं, बेशक वह कोई बेईमान और हरामजादा आदमी है । इसके अतिरिक्त आप जरा इस रात के समय और अपने घोड़ों की हालत पर तो ध्यान दीजिये कि अब वे एक कदम भी चलने लायक नहीं रहे ।

यद्यपि कुमार और उनके ऐयार इस समय बड़े क्रोध में थे, परन्तु कमलिनी की सच्ची हमदर्दी के साथ मीठी मीठी बातों ने उन्हें ठण्डा किया और इस लायक बनाया कि वे नेक और बद को सोच सकें । कमलिनी के आदमियों के साथ और ऐयारों के बटुए में बहुत कुछ खाने का सामान था । पहाड़ी के नीचे एक छोटा सा चश्मा बह रहा था, वहाँ से जल मँगवाया गया और सभों ने कुछ खाकर जल पीया, इसके बाद फिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये ।

देवी० । जिस मकान का इस चीठी में पता दिया गया है यदि वहाँ न जाना चाहिये तो यहाँ रहना भी मुनासिब नहीं, क्योंकि वे दगावाज लोग इस जगह से भी बेफिक्र न होंगे । मेरी राय तो यही है कि शेरसिंह के साथ कुमार विजयगढ़ जाँय और मैं उस मकान की खोज में जाकर देखूँ कि वहाँ क्या है ।

कम० । आपका कहना बहुत ठीक है, मैं भी यही मुनासिब समझती हूँ, इस बीच में मुझे भी दो एक दुश्मनों का पता लगा लेने का मौका मिलेगा, क्योंकि जहाँ तक मैं समझती हूँ यह एक ऐसे आदमी का काम है जिसे सिवाय मेरे आप लोग नहीं जानते और न इस समय उसका नाम आप लोगों के सामने लेना ही मैं मुनासिब समझती हूँ ।

कुमार० । क्या नाम बताने में कोई हर्ज है ?

कमलिनी० । बेशक हर्ज है, हाँ यदि मेरा गुमान ठीक निकला तो अवश्य उन लोगों का नाम बताऊँगी और पता भी दूँगी ।

कुमार० । खैर, मगर जो कुछ राय आप लोगों ने दी है उसके अनुसार चलने में कई दिन व्यर्थ लग जायँगे, इसलिये मेरी राय कुछ दूसरी ही है ।

देवी० । वह क्या ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुमार० । मैं खुद आपके साथ उस मकान की तरफ चलता हूँ जिसका पता इस चीठी में दिया गया है । यदि केवल उस मकान के अन्दर रहने वाले हमारे दुश्मन हैं तो हिम्मत हारने की कोई जरूरत नहीं, इसी समय उन्हें जीत कर किशोरी को छुड़ा लाऊँगा, और यदि उन लोगों के पास फौज होगी तो जरूर मकान के वाहर टिकी हुई होगी जिसका पता लगाना कुछ कठिन न होगा, उस समय जो कुछ आप लोग राय देंगे किया जायगा ।

इसी तरह की वातचीत करने में पहर रात बीत गई । आखिर वही निश्चय ठहरा जो कुमार ने सोचा था अर्थात् इसी समय सब कोई उस मकान की तरफ जाने के लिए मुस्तैद हुए और पहाड़ी के नीचे उतर आये । पेड़ों के साथ बागडोर से बँधे हुए घोड़े यहीं पर चर रहे थे जो अपने सवारों को देख कर हिनहिनाने लगे जिससे जाना गया कि वे इस समय फिर सफर को तैयार हैं और पहर भर चरने और आराम करने से उनकी थकावट कम हो चुकी है । सब लोग घोड़ों पर सवार होकर वहाँ से रवाना हुए ।

जो कुछ उस चीठी में लिखा था वह ठीक मालूम होने लगा अर्थात् पूरब पाँच कोस चले जाने के बाद एक नाला मिला और उसी के किनारे किनारे दो कोस दक्खिन जाने के बाद एक मकान की सुफेदी दिखाई पड़ी । मालूम होता था कि यह मकान अभी नया बना है या आज ही कल में इसके ऊपर चूना फेरा गया है। रात दो पहर से ज्यादा जा चुकी थी, चन्द्रमा अपनी कला से आकाश के बीच में दिखाई दे रहे थे, शीतल किरणें चारो तरफ फैली हुई थीं और मालूम होता था कि जमीन पर चाँदी का पत्र जड़ा हुआ है । ये लोग घना जंगल पीछे छोड़ आये थे और इस जगह पेड़ बहुत कम और छोटे छोटे थे, उस मकान के चारो तरफ दो सौ बिगहे के लगभग साफ मैदान था ।

अच्छी तरह जाँच करने और खयाल दौड़ाने से मालूम हो गया कि इस जगह पर फौज नहीं है और न लड़ाई का कुछ सामान ही है, अगर कुछ है तो उसी मकान के अन्दर होगा । आखिर थोड़ी देर तक सोच विचार कर ये लोग मकान के पास पहुँचे ।

यह मकान बहुत बड़ा न था, लगभग पचास गज के लम्बा और इसी कदर चौड़ा होगा । इसकी ऊँचाई भी पैंतीस गज से ज्यादे न होगी । चारो तरफ दीवारें साफ थीं, न तो किसी तरफ कोई दर्वाजा था और न कोई खिड़की । लोग चारो तरफ घूमे मगर अन्दर जाने का रास्ता न मिला, आखिर सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोड़ों पर से उतर कर एक तरफ खड़े हो गये, देवीसिंह ने कमन्द फेंका और उसके सहारे से दीवार पर चढ़ कर देखना चाहा कि अन्दर क्या है।

ऊपर की दीवार बहुत चौड़ी थी। सभों ने देखा, कि देवीसिंह दीवार पर खड़े होकर अन्दर की तरफ बड़े गौर से देख रहे हैं। यकायक देवीसिंह खिलखिला कर हँसे और बिना कुछ कहे उस मकान के अन्दर कूद पड़े।

यह देख सभों को ताज्जुब हुआ, कमलिनी ने तारा के कान में कुछ कहा जिसके जवाब में उसने सिर हिला दिया। थोड़ी देर तक देवीसिंह की राह देखी गई, आखिर उसी कमन्द के सहारे शेरसिंह चढ़ गये और उनकी भी वही अवस्था देखने में आई अर्थात् कुछ देर तक गौर से देखने के बाद देवीसिंह की तरह हँस कर शेरसिंह भी उस मकान के अन्दर कूद गए।

अब तो कुमार के आश्चर्य का कोई हद न रहा, वे ताज्जुब में आकर सोचने लगे कि यह क्या मामला है और इस मकान के अन्दर क्या है जिसे देख दोनों ऐयारों ने ऐसा किया? "जो हो, अब मैं भी ऊपर चढ़ूँगा और देखूँगा कि क्या है!"—कह कर कुमार भी उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ने को तैयार हुए, मगर कमलिनी ने हाथ पकड़ लिया और कहा, "ऐसा नहीं हो सकता, अभी हमारे कई आदमी मौजूद हैं पहले इन्हें जा लेने दीजिए।" लाचार कुमार को रुकना पड़ा। कमलिनी ने अपने उन सवारों की तरफ देखा जो उसके साथ आये थे और कहा, "तुम लोगों में से एक आदमी ऊपर जाकर देखो कि क्या है?"

हुक्म पाकर उसी कमन्द के सहारे एक आदमी ऊपर गया और उसकी भी वही दशा हुई, दूसरा गया वह भी कूद पड़ा, तीसरा गया वह भी न लौटा, यहाँ तक कि कमलिनी के कुल आदमी इसी तरह उस मकान के अन्दर जा दाखिल हुए। कमलिनी ने बहुत रोका और मना किया मगर कुमार ने उसकी बात पर ध्यान न दिया, वे भी उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये और अपने साथियों की तरह गौर से थोड़ी देर तक देखने के बाद हँसते हुए मकान के अन्दर कूद पड़े।

अब सवेरा हो गया, आसमान पर पूरब तरफ सूर्य की लालिमा दिखाई देने लगी, कमलिनी ने हँस कर अपनी ऐयारा तारा की तरफ देखा, वह गर्दन हिला कर हँसी और बोली, "चलिए अब देर करने की कोई जरूरत नहीं।"

बाकी घोड़े उसी तरह उसी जगह छोड़ दिये गये, दो घोड़ों पर कमलिनी और तारा सवार हुईं और हँसती हुई एक तरफ को चली गईं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाँचवाँ बयान

अब हम फिर रोहतासगढ़ की तरफ मुड़ते हैं और वहाँ राजा वीरेन्द्रसिंह के ऊपर जो जो आफतें आई उन्हें लिख कर इस किस्से के बहुत से भेद जो अभी तक छिपे पड़े हैं खोलते हैं। हम ऊपर लिख आये हैं कि रोहतासगढ़ फतह करने के बाद राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह उसी किले में जाकर मेहमान हुए, वहीं एक छोटी सी कमेटी की गई तथा उसी समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाने और उन्हें ले आने के लिए शेरसिंह और देवीसिंह रवाना किए गए।

उन दोनों के चले जाने के बाद यह राय ठहरी कि यहाँ का हाल चाल और रोहतासगढ़ फतह होने का समाचार चुनारगढ़ महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास भेजना चाहिए। यद्यपि यह खबर उन्हें पहुँच गई होगी तथापि किसी ऐयार को वहाँ भेजना मुनासिब है और इस काम के लिए भैरोसिंह चुने गए। राजा वीरेन्द्रसिंह ने अपने हाथ से पिता को पत्र लिखा और भैरोसिंह को तलब करके चुनारगढ़ जाने के लिए कहा।

भैरो०। मैं चुनारगढ़ जाने के लिए तो तैयार हूँ परन्तु दो बातों की हवस जी में रह जायेगी।

वीरेन्द्र०। वह क्या ?

भैरो०। एक तो फतह की खुशी का इनाम बँटने के समय मैं न रहूँगा, इसका...

बीरेन्द्र०। यह हवस तो अभी पूरी हो जायगी, दूसरी क्या है ?

तेज०। यह लड़का बहुत ही लालची है, यह नहीं सोचता कि यदि मैं न रहूँगा तो मेरे बदले का इनाम मेरे पिता तो पावेंगे !

भैरो०। (हाथ जोड़ कर और तेजसिंह की तरफ देख कर) यह उम्मीद तो हुई है, परन्तु इस समय मैं आपसे भी कुछ इनाम लिया चाहता हूँ।

वीरेन्द्र०। अवश्य ऐसा होना चाहिए क्योंकि तुम्हारे लिए हम और ये एक समान हैं।

तेज०। आप और भी शह दीजिए जिसमें यदि और कुछ न मिल सके तो मेरा ऐयारी का बटुआ ही ले ले।

भैरो०। मेरे लिए वही बहुत है।

बीरेन्द्र०। दो रुव सस्ते में छूटते हो, बटुआ देने में उज्र न करो !

तेज०। जब आपही इसकी मदद पर हैं तो लाचार होकर देना ही पड़ेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा वीरेन्द्रसिंह ने अपना खास सन्दूक मँगाया और उसमें से एक जड़ाऊ

डिब्बा जिसके अन्दर न मालूम क्या चीज थी निकाल बिना खोले भैरोंसिंह को दे दिया। भैरोंसिंह ने इनाम पाकर सलाम किया और अपने पिता तेजसिंह की तरफ देखा, उन्हें भी लाचार होकर ऐयारी का बटुआ, जिसे वे हरदम अपने पास रखते थे भैरोंसिंह के हवाले करना ही पड़ा।

राजा वीरेन्द्रसिंह ने भैरोंसिंह से कहा, "इनाम तो तुम पा चुके, अब बताओ तुम्हारी दूसरी हवस क्या है जो पूरी की जाय?"

भैरो०। मेरे जाने के बाद आप यहाँ के तहखाने की सैर करेंगे, अफसोस यही है कि इसका आनन्द मुझे कुछ भी न मिलेगा।

वीरेन्द्र०। खैर इसके लिए भी हम वादा करते हैं कि जब तुम चुनारगढ़ से लौट आओगे तब यहाँ के तहखाने की सैर करेंगे, मगर जहाँ तक हो सके तुम जल्द लौटना।

भैरोंसिंह सलाम करके विदा हुए मगर दो ही चार कदम आगे बढ़े थे कि तेजसिंह ने पुकारा और कहा, "सुनो सुनो, बटुए में से एक चीज मुझे ले लेने दो क्योंकि वह मेरे ही काम की है।"

भैरो०। (लौट कर बटुआ तेजसिंह के सामने रख कर) बस अब मैं यह बटुआ न लूँगा, जिसके लोभ से मैंने बटुआ लिया जब वही आप निकाल लेंगे तो इसमें रही क्या जायगा!

वीरेन्द्र०। नहीं जी ले जाओ, अब तेजसिंह उसमें से कोई चीज न निकालने पायेंगे, जो चीज यह निकालना चाहते हैं तुम भी उस चीज को रखने योग्य पात्र हो!

भैरोंसिंह ने खुश होकर बटुआ उठा लिया और सलाम करने के बाद तेजी के साथ वहाँ से रवाना हो गये।

पाठक तो समझ ही गए होंगे कि इस बटुए में कौन सी ऐसी चीज थी जिसके लिए इतनी खिचा खिची हुई! खैर शक मिटाने के लिए हम उस भेद को खोल ही देना मुनासिब समझते हैं। इस बटुए में वे ही तिलिस्मी फूल थे जो चुनारगढ़ के इलाके में तिलिस्म के अन्दर से तेजसिंह के हाथ लगे थे और जिसे किसी प्राचीन वैद्य ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था।

अब हम भैरोंसिंह के चले जाने के बाद, तीसरे दिन का हाल लिखते हैं। शिवजयसिंह अपने कमरे में मसहरी पर लेटा लेटा न मालूम क्या क्या सोच रहा है, आधी रात से ज्यादे जा चुकी है मगर अभी तक उसकी आँखों में नींद नहीं है, दर्वाजे के तरफ मुँह किए हुए मालूम होता है कि किसी के आने की राह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देख रहा है क्योंकि किसी तरह की जरा सी भी आहट आने पर चौंक जाता है और चैतन्य होकर दर्वाजे की तरफ देखने लगता है। यकायक चौखट के अन्दर पैर रखते हुए एक वृद्ध बाबाजी की सूरत दिखाई पड़ी। उनकी अवस्था अस्सी वर्ष से ज्यादे होगी, नाभी तक लम्बी दाढ़ी और सर के फैले हुए बाल रूई की तरह सुफेद हो रहे थे, कमर में केवल एक कोपीन पहिने और शेर की खाल ओढ़े कमरे के अन्दर आ पहुँचे। उन्हें देखते ही राजा दिग्विजयसिंह उठ खड़े हुए और मुस्कुराते हुए दण्डवत करके बोले, "आज बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए हैं, समय टल जाने पर सोचता था कि शायद आज आना न हो!"

बाबाजी ने आशीर्वाद देकर कहा—"राह में एक आदमी से मुलाकात हो गई इसी से विलम्ब हुआ।"

इस समय कमरे में एक सिंहासन मौजूद था। दिग्विजयसिंह ने उसी सिंहासन पर साधू को बैठाया और स्वयम् नीचे फर्श पर बैठ गया, इसके बाद यों बातचीत होने लगी—

साधू०। कहो क्या निश्चय किया?

दिग्वि०। (हाथ जोड़ कर) किस विषय में।

साधू०। यही वीरेन्द्रसिंह के विषय में।

दिग्वि०। सिवाय ताबेदारी कबूल करने के और कर ही क्या सकता हूँ?

साधू०। सुना है तुम उन्हें तहखाने की सैर कराना चाहते हो? क्या यह बात सच है?

दिग्वि०। मैं उन्हें रोक ही क्योंकर सकता हूँ?

साधू०। ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। तुम्हें मेरी बातों का विश्वास है कि नहीं?

दिग्वि०। विश्वास क्यों न होगा? आपको मैं गुरु के समान मानता हूँ और आज तक जो कुछ मैंने किया आप ही की सलाह से किया।

साधू०। केवल यही आखिरी काम बिना मुझसे राय लिए किया सो उसमें यहाँ तक धोखा खाया कि राज्य से हाथ धो बैठे!

दिग्वि०। बेशक ऐसा ही हुआ, खैर अब जो आज्ञा हो किया जाय।

साधू०। मैं नहीं चाहता कि तुम वीरेन्द्रसिंह के ताबेदार बनो, इस समय वे तुम्हारे कब्जे में हैं और तुम उन्हें हर तरह से कैद कर सकते हो।

दिग्वि०। (कुछ सोच कर) जैसी आज्ञा, परन्तु मेरा लड़का अभी तक उनके कब्जे में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधू० । उसे यहाँ लाने के लिए बीरेन्द्रसिंह का आदमी जा ही चुका है, बीरेन्द्रसिंह वगैरह के गिरफ्तार होने की खबर जब तक चुनार पहुँचेगी उसके पहिले ही कुमार वहाँ से रवाना हो जायगा। फिर वह उन लोगों के कब्जे में नहीं फँस सकता, उसका ले आना मेरा जिम्मा।

दिग्वि० । हर एक बातों को विचार लीजिए, मैं आज्ञानुसार चलने को तैयार हूँ।

इसके बाद घण्टे भर तक साधू महाराज और राजा दिग्विजयसिंह में बातें होती रहीं जिसे यहाँ लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। पहर रात रहे बाबाजी वहाँ से विदा हुए।

उसके दूसरे ही दिन राजा वीरेन्द्रसिंह को खबर मिली कि लाली का पता नहीं लगता, न मालूम वह किस तरह कैद से निकल कर भाग गई, उसका पता लगाने के लिए कई जासूस चारो तरफ रवाना किये गये।

अब महाराज दिग्विजयसिंह की नीयत खराब हो गई और वे इस बात पर उतारू हो गए कि राजा वीरेन्द्रसिंह उनके लड़के और दोस्तों को गिरफ्तार कर लेना चाहिए, लाली गिरफ्तार नहीं मार डालनी चाहिए।

राजा वीरेन्द्रसिंह तहखाने में जाकर वहाँ का हाल देखा और जाना चाहते थे मगर दिग्विजयसिंह हीले हवाले में दिन काटने लगा। आखिर यह निश्चय हुआ कि कल तहखाने में अवश्य चलना चाहिए। उसी दिन रात को दिग्विजयसिंह ने राजा वीरेन्द्रसिंह की फिर ज्याफत की और खाने की चीजों में बेहोशी की दवा मिलाने का हुक्म अपने ऐयार रामानन्द को दिया। बेचारे राजा वीरेन्द्रसिंह इन बातों से बिल्कुल बेखबर थे और उनके ऐयारों को भी ऐसी उम्मीद न थी, आखिर नतीजा यह हुआ कि रात को भोजन करने के बाद सभी पर दवा ने असर किया। उस समय तेजसिंह चौंके और समझ गये कि दिग्विजयसिंह ने दगा दिया मगर अब क्या हो सकता था? थोड़ी देर बाद राजा वीरेन्द्रसिंह, कुँअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, ज्योतिषीजी और तारासिंह वगैरह बेहोश होकर जमीन पर लेट गये और बात की बात में हथकड़ियों और बेड़ियों से बेबस कर उसी तिलिस्मी तहखाने में कैद कर दिए गये। उस तहखाने से बाहर निकलने के लिए जो दो रास्ते थे उनका हाल पाठक जान ही गये हैं क्योंकि ऊपर उसका बहुत कुछ हाल लिखा जा चुका है। उन दोनों रास्तों में से एक रास्ता जिससे हमारे ऐयार लोग और कुँअर आनन्दसिंह गये थे तब्बी बन्द कर दिया गया मगर दूसरा रास्ता जिधर से कुन्दन (धनपति) किशोरी को लेकर निकल गई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी ज्यों का त्यों रहा क्योंकि उसकी खबर राजा दिग्विजयसिंह को न थी, रास्ते का हाल वह कुछ भी न जानता था।

राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके लड़के और साथी लोग जब कैदखाने में भेज दिये गये उस समय राजा वीरेन्द्रसिंह के थोड़े से फौजी आदमी जो उनके साथ किले में आ चुके थे यह दगाबाजी देख कर जान देने के लिए तैयार हो गये उन्होंने राजा दिग्विजयसिंह के बहुत से आदमियों को मारा और जब तक जीते रहे मालिक के नमक का ध्यान उनके दिल में बना रहा, पर आखिर कहाँ तक लड़ सकते थे, शेष में सब के सब बहादुरी के साथ लड़ कर बैकुण्ठ चले गये राजा दिग्विजयसिंह ने किले का फाटक बन्द करवा दिया, सफीलों पर तोपें चढ़वा दीं और राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर से जो पहाड़ के नीचे था लड़ाई का हुक्म दिया। राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में दो सर्दार मौजूद थे जो अभी तक रोहतासगढ़ में नहीं आये थे, एक नाहरसिंह और दूसरे फतहसिंह, ये दोनों सेनापति थे।

पाठक, देखिए जमाने ने कैसा पलटा खाया! किशोरी की धुन में कुंअर इन्द्रजीतसिंह अपने दो ऐयारों के साथ ऐसी जगह जा फँसे कि उनका पता लगना भी मुश्किल है, इधर राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह की यह दशा हुई, अगर भैरोसिंह चीठी लेकर चुनार न भेज दिये गये होते तो वह भी फँस जाते। आप भूले न होंगे कि रामनारायण और चुन्नीलाल चुनारगढ़ में हैं और पन्नालाल को राजा बीरेन्द्रसिंह गयाजी में छोड़ आये हैं, राजगृह भी उन्हीं के सुपुर्द है, वे किसी तरह वहाँ से टल नहीं सकते, क्योंकि वह शहर नया फतह हुआ है और वहाँ एक सर्दार का हर दम बने रहना बहुत ही मुनासिब है।

जिस समय रोहतासगढ़ किले से तोप की आवाज आई, दोनों सेनापति बहुत घबराए और पता लगाने के लिए जासूसों को किले में भेजा, मगर उनके लौट आने पर दिग्विजयसिंह की दगाबाजी का हाल दोनों सेनापतियों को मालूम हो गया, उन्होंने उसी समय इस हाल की चीठी लिख दो सवार चुनारगढ़ रवाना किये और इसके बाद सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

छठवाँ बयान

आज बहुत दिनों के बाद हम कमला को आधी रात के समय रोहतासगढ़ पहाड़ी के ऊपर पूरब तरफ वाले जंगल में घूमते देख रहे हैं। यहाँ से किले की दीवार बहुत दूर और ऊँचे पर है। कमला न मालूम किस फिक्र में है या क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढूंढ़ रही है। यद्यपि रात चांदनी थी परन्तु ऊंचे ऊंचे और घने पेड़ों के कारण जंगल में एक प्रकार से अन्धकार ही था। घूमते घूमते कमला के कानों में किसी के पैर की आहट मालूम हुई, वह रुकी और एक पेड़ की आड़ में खड़ी होकर दाहिनी तरफ देखने लगी जिधर से आहट मिली थी। दस पन्द्रह कदम की दूरी से दो आदमी जाते हुए दिखाई पड़े, बाल और चाल से दोनों औरतें मालूम पड़ीं। कमला भी पैर दबाएं और अपने को हर तरफ से छिपाए उन्हीं दोनों के पीछे पीछे धीरे धीरे रवाना हुई। लगभग आध कोस के बाद ऐसी जगह पहुँची जहाँ पेड़ बहुत कम थे बल्कि उसे एक प्रकार से मैदान ही कहना चाहिए। थोड़ी थोड़ी दूर पर पत्थर के बड़े बड़े अनगढ़ ढोंके पड़े हुए थे जिनकी आड़ में कई आदमी छिप सकते थे। सघन पेड़ों की आड़ में से निकल कर मैदान में कई कदम जाने के बाद वे दोनों अपने ऊपर से स्याह चादर उतार कर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गईं। कमला ने भी अपने को बड़ी चालाकी से उन दोनों के करीब पहुँचाया और एक पत्थर की आड़ में छिप कर उन दोनों की बातचीत सुनना चाहा। चन्द्रमा अपनी पूर्ण किरणों से उदय हो रहे थे और निर्मल चाँदनी इस समय अपना पूरा जोबन दिखा रही थी, हर एक चीज अच्छी तरह और साफ नजर आती थी। जब वे दोनों औरतें चादर उतार कर पत्थर की चट्टान पर बैठ गईं तब कमला ने उनकी सूरत देखी। बेशक वे दोनों नौजवान औरतें थीं जिनमें से एक तो बहुत ही हसीन थी और दूसरी के विषय में कह सकते हैं कि शायद उसकी लौंडी या ऐयार हो।

कमला बड़े गौर से उन दोनों औरतों की तरफ देख रही थी कि इतने ही में सामने से एक लम्बे कद का आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा जिसे देख कमला चौंकी और उस समय तो कमला का कलेजा बेहिसाब धड़कने लगा जब वह आदमी उन दोनों औरतों के पास आकर खड़ा हो गया और उनसे डपट कर बोला, "तुम दोनों कौन हो?" उस आदमी का चेहरा चन्द्रमा के सामने था, विमल चाँदनी उसके नक्शे को अच्छी तरह दिखा रही थी, इसीलिये कमला ने उसे तुरन्त पहिचान लिया और उसे विश्वास हो गया कि वह लम्बे कद का आदमी वही है जो खंडहर वाले तहखाने के अन्दर शेरसिंह से मिलने गया था और जिसे देख उनकी अजब हालत हो गई थी तथा जिद्द करने पर भी उन्होंने न बताया कि यह आदमी कौन है।

कमला ने अपने धड़कते हुए कलेजे को बाएँ हाथ से दबाया और गौर से देखने लगी कि अब क्या होता है। यद्यपि कमला उन दोनों औरतों से बहुत दूर न थी और इस रात के सन्नाटे में उनकी बातचीत बखूबी सुन सकती थी तथापि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने अपने को बड़ी सावधानी से उस तरफ लगाया और सुनना चाहा कि दो औरतों और लम्बे व्यक्ति में क्या बातचीत होती है।

उस आदमी के डपटते ही ये दोनों औरतें चैतन्य होकर खड़ी हो गईं और उनमें से एक ने जो सर्दार मालूम होती थी जवाब दिया—

औरत०। (अपने कमर से खंजर निकाल कर) हम लोग अपना परिचय नहीं दे सकतीं और न हमें यही पूछने से मतलब है कि तुम कौन हो?

आदमी०। (हँस कर) क्या तू समझती है कि मैं तुझे नहीं पहिचानता? मुझे खूब मालूम है कि तेरा नाम गौहर है, मैं तेरी सात पुश्त को जानता हूँ मगर आजमाने के लिये पूछता था कि देखें तू अपना सच्चा हाल मुझे कहती है या नहीं! क्या कोई अपने को भूतनाथ से छिपा सकता है।

'भूतनाथ' नाम सुनते ही वह औरत घबड़ा गई, डर से बदन काँपने लगा और खंजर उसके हाथ से गिर पड़ा। उसने मुश्किल से अपने को सम्हाला और हाथ जोड़ कर बोली, "बेशक मेरा नाम गौहर है, मगर........"

भूत०। तू यहाँ क्यों घूम रही है? शायद इस फिक्र में है कि इस किले में पहुँच कर आनन्दसिंह से अपना बदला लें!

गौहर०। (डरी हुई आवाज से) जी हाँ।

भूत०। पहिले भी तो तू उन्हें फँसा चुकी थी मगर उनका ऐयार देवी उन्हें छुड़ा ले गया। हाँ तेरी छोटी बहिन कहाँ है?

गौहर०। वह तो गया की रानी माधवी के हाथ से मारी गई।

भूत०। कब?

गौहर०। जब वह इन्द्रजीतसिंह को फँसाने के लिए चुनारगढ़ के जंगल में गई थी तो मैं भी अपनी छोटी बहिन को साथ लेकर आनन्दसिंह की धुन में उस जंगल में गई हुई थी। दुष्टा माधवी ने व्यर्थ ही मेरी बहिन को मार डाला। जब वह जंगल काटा गया तो बीरेन्द्रसिंह के आदमी लोग उसकी लाश उठा कर चुनार ले गए थे मगर (अपनी साथिन की तरफ इशारा करके) बड़ी चालाकी से यह ऐयारा उस लाश को उठा लाई थी।*

भूत०। हाँ ठीक है, अच्छा तो तू इस किले में घुसा चाहती है और आनन्दसिंह की जान लिया चाहती है।

गौहर०। यदि आप अप्रसन्न न हों तो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति पहिला भाग, चौथा बयान।

भूत० । मैं क्यों अप्रसन्न होने लगा ? मुझे क्या गरज पड़ी है कि मना करूँ। जो तेरा जी चाहे कर । अच्छा अब मैं जाता हूँ लेकिन एक दफे फिर तुमसे मिलूँगा ।

वह आदमी तुरत चला गया और देखते देखते नजरों से गायब हो गया । इसके बाद उन दोनों औरतों में बातचीत होने लगी ।

गौहर० । गिल्लन, इसकी सूरत देखते ही मेरी जान निकल गई थी, न मालूम यह कम्बख्त कहाँ से आ गया ।

गिल्लन० । तुम्हारी तो बात ही दूसरी है, मैं ऐयारा होकर अपने को सम्हाल न सकी, देखो अभी तक कलेजा धड़ धड़ करता है ।

गौहर० । मुझको तो यही डर लगा हुआ था कि कहीं वह मुझे आनन्दसिंह से बदला लेने के बारे में मना न करे ।

गिल्लन० । सो तो उसने न किया मगर एक दफे मिलने के लिए कह गया है, अच्छा अब यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं ।

वे दोनों औरतें अर्थात् गौहर तथा गिल्लन वहाँ से चली गईं और कमला ने भी एक तरफ का रास्ता लिया । दो घण्टे के बाद कमला उस कब्रिस्तान में पहुँची जो रोहतासगढ़ के तहखाने में आने जाने का रास्ता था। इस समय चन्द्रमा अस्त हो चुका था और कब्रिस्तान में भी सन्नाटा था। कमला बीच वाली कब्र के पास गई और तहखाने में जाने के लिए दर्वाजा खोलने लगी मगर खुल न सका । आधे घंटे तक वह इसी फिक्र में लगी रही पर कोई काम न चला, लाचार उठ खड़ी हुई और कब्रिस्तान के बाहर की तरफ चली । फाटक के पास पहुँचते ही वह अटकी क्योंकि सामने की तरफ थोड़ी ही दूर पर कोई चमकती हुई चीज उसे दिखाई पड़ी जो इसी तरफ बढ़ी आ रही थी । आगे जाने पर मालूम हुआ कि यह बिजली की तरह चमकने वाली चीज एक नेजा है जो किसी औरत के हाथ में है । वह नेजा कभी तो तेजी के साथ चमकता है और इस सबब से दूर दूर तक चीजें दिखाई देती हैं और कभी उसकी चमक बिलकुल ही जाती रहती है और यह भी नहीं मालूम होता है कि नेजा या नेजे को हाथ में रखने वाली औरत कहाँ है । थोड़ी देर में वह औरत इस कब्रिस्तान के बहुत पास आ गई और नेजे की चमक ने कमला को उस औरत की सूरत शक्ल अच्छी तरह दिखा दी । उस औरत का रंग स्याह था, सूरत डरावनी और बड़े बड़े दो तीन दाँत मुँह के बाहर निकले हुए थे, काली साड़ी पहिने हुए वह औरत पूरी राक्षसी मालूम होती थी । यद्यपि कमला ऐयारा और बहुत दिलेर थी मगर इसकी सूरत देखते ही थरथर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काँपने लगी। उसने चाहा कि कब्रिस्तान के बाहर निकल कर भाग जाय मगर इतना डर गई थी कि पैर न उठा सकी। देखते ही देखते वह भयंकर मूर्ति कमला के सामने आ कर खड़ी हो गई और कमला को डर के मारे काँपते देख फिर बोली, "डर मत होश ठिकाने कर, और जो कुछ मैं कहती हूँ ध्यान देकर सुन।

सातवाँ बयान

रोहतासगढ़ फतह होने की खबर लेकर भैरोसिंह चुनार पहुँचे और उसके दो ही तीन दिन बाद राजा दिग्विजयसिंह की बेईमानी की खबर लिए हुए सवार भी जा पहुँचे। इस समाचार के पहुँचते ही चुनारगढ़ में खलबली पड़ गई। फौज के साथ ही साथ रिआया भी राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान को दिल से चाहती थी क्योंकि उनके जमाने में अमीर और गरीब सभी खुश थे। आलिम और कारीगरों की कदर की जाती थी, अदना से अदना भी अपनी फरियाद राजा के कान तक पहुँचा सकता था, उद्योगियों और व्यापारियों को दर्बार से मदद मिलती थी, ऐयार और जासूस लोग छिपे छिपे रिआया के दुःख सुख का हाल मालूम करते और राजा को हर तरह की खबर पहुँचाते थे। शादी व्याह में इज्जत के माफिक हर एक को मदद मिलती थी और इसी से रिआया भी तन मन धन राजा के लिये अर्पण करने को तैयार मिलती थी। राजा वीरेन्द्र-सिंह कैद हो गये इस खबर को सुनते ही रिआया जोश में आ गई और इस फिक्र में हुई कि जिस तरह हो राजा को छुड़ाना चाहिए।

रोहतासगढ़ के बारे में क्या करना चाहिए और दुश्मनों पर क्योंकर फतह पाना चाहिए यह सब सोचने विचारने के पहिले महाराज सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह ने भैरोसिंह, रामनारायण और चुन्नीलाल को हुक्म दिया कि तुम लोग तुरत रोहतास-गढ़ जाओ और जिस तरह हो सके अपने को किले के अंदर पहुँचा कर राजा वीरेन्द्रसिंह को रिहा करो, हम दोनों में से भी कोई आदमी मदद लेकर शीघ्र पहुँचेगा।

हुक्म पाते ही तीनों ऐयार तेज और मजबूत घोड़ों पर सवार हो रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए और दूसरे दिन शाम को अपनी फौज में पहुँचे। राजा वीरेन्द्रसिंह की आधी फौज अर्थात् पचास हजार फौज तो पहाड़ी के नीचे किले के दर्वाजे की तरफ खड़ी हुई थी और बाकी आधी फौज पहाड़ी के चारो तरफ इसलिये फैला दी गई थी कि राजा दिग्विजयसिंह को बाहर से किसी तरह की मदद न पहुँचने पावे। पाँच पाँच सात सात सौ बहादुरों को लेकर नाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रई दफे पहाड़ी पर चढ़ा और किले के दर्वाजे तक पहुंचना चाहा मगर किले के बुर्जों पर से आए हुए तोपों के गोलों ने उन्हें वहां तक पहुंचने न दिया और हर दफे लौटना पड़ा। जाहिर में तो ये लोग सामने की तरफ अड़े हुए थे और घड़ी घड़ी हमला करते थे, मगर नाहरसिंह के हुक्म से पांच पांच सात सात करके जंगल ही जंगल रात के समय छिपे हुए रास्तों से बहुत से सिपाही जासूस और सुरंग खोदने वाले पहाड़ पर चढ़ गये थे तथा बराबर चढ़े चले जाते थे और उम्मीद की जाती थी कि दो या तीन दिन में हजार दो हजार आदमी पहाड़ के ऊपर हो जायेंगे। तब नाहरसिंह छिप कर अकेला पहाड़ पर चढ़ जायगा और अपने आदमियों को बटोर कर किले के दर्वाजे पर हमला करेगा। पहाड़ पर पहुंच कर सुरंग खोदने वाले सुरंग खोद कर बारूद के जोर से किले का फाटक तोड़ने की धुन में लगे हुए थे और इन बातों को खबर राजा दिग्विजयसिंह को बिल्कुल न थी।

भैरोसिंह ने पहुँच कर यह सब हाल सुना और खुश होकर सेनापतियों की तारीफ की तथा कहा कि 'यद्यपि पहाड़ के ऊपर का घना जंगल ऐसा बेढब है कि मुसाफिरों को जल्दी रास्ता नहीं मिल सकता तथापि हमारे आदमी यदि ऊँचाई की तरफ ध्यान न देकर चढ़ना शुरू करेंगे तो लुढ़कते पुड़कते किले के पास पहुँच ही जायेंगे। खैर आप लोग जिस काम में लगे हैं लगे रहिए, हम तीनों ऐयार पहाड़ पर जाते हैं और किसी तरह किले के अन्दर पहुँचने का बन्दोबस्त करते हैं।'

पहर रात बीत गई थी जब भैरोसिंह रामनारायण और चुन्नीलाल पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। भैरोसिंह कई दफे उस पहाड़ी पर जा चुके थे और उस जंगल में अच्छी तरह घूम चुके थे इसलिये इन्हें भूलने और धोखा खाने का डर न था। ये लोग बेधड़क पहाड़ पर चले गए और रोहतासगढ़ के रास्ते वाले कब्रिस्तान में ठीक उस समय पहुँचे जिस समय कमला धड़कते हुए कलेजे के साथ उस राक्षसी के सामने खड़ी थी जिसके हाथ में बिजली की तरह चमकता हुआ नेजा था। जिस समय वह नेजा चमकता था देखने वाले की आँख चौंधिया जाती थी। भैरोसिंह ने दूर से चमकते हुए नेजे को देखा और उसके साथी दोनों ऐयार भी डर कर खड़े हो गए। भैरोसिंह चाहते थे कि जब वह औरत वहाँ से चली जाय तो कब्रिस्तान में जायें मगर वे ऐसा न कर सके क्योंकि नेजे की चमक में उन्होंने कमला की सूरत देखी जो इस समय जान से हाथ धो कर उस राक्षसी के सामने खड़ी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम ऊपर कई जगह इशारा कर आए हैं कि भैरोसिंह कमला को चाहते थे

और वह भी इनसे मुहब्बत रखती थी। इस समय कमला को एक राक्षसी
सामने देख उसकी मदद न करना भैरोसिंह से कब हो सकता था ? वे लपक
कमला के पास पहुँचे। दो ऐयारों को साथ लिए भैरोसिंह को अपने पास
देख कर कमला का जी ठिकाने हुआ और उसने जल्दी से भैरोसिंह का
पकड़ के कहा—"खूब पहुँचे !"

भैरो०। तुम यहाँ क्यों खड़ी हो और तुम्हारे सामने यह औरत कौन है

कमला०। मैं इसे नहीं पहिचानती।

राक्षसी०। मेरा हाल कमला से क्यों पूछते हो मुझसे पूछो। इस समय
देख कर मैं बहुत खुश हुई, मैं भी इसी फिक्र में थी कि किसी तरह भैरो
मुलाकात हो।

भैरो०। तुमने मुझे क्योंकर पहिचाना, क्योंकि आज तक मैंने तुम्हें
नहीं देखा !

इतना सुन कर वह औरत बड़ी जोर से हँसी और उसने नेजे को हिला
हिलाने के साथ ही नेजे में चमक पैदा हुई और उसकी डरावनी हँसी से
गूँज उठा, इसके बाद उस औरत ने कहा—

राक्षसी०। ऐसा कौन है जिसे मैं नहीं पहिचानती होऊँ ? खैर इन बा
कोई मतलब नहीं, यह कहो कि अपने मालिकों के छुड़ाने की क्या फिक्र कर
हो ? दिग्विजयसिंह दो ही तीन दिन में तुम्हारे मालिक को मार कर नि
हुआ चाहता है।

भैरोसिंह उस राक्षसी से बातें करने को तैयार थे परन्तु यह नहीं जा
कि वह इनकी दोस्त है या दुश्मन और उससे अपने भेदों को छिपाना चाहिए
नहीं। वह सोच ही रहे थे कि इसकी बातों का क्या जवाब दिया जाय कि
में कई आदमियों के आने की आहट मालूम हुई। उस औरत ने घूम कर
तो चार आदमियों को इसी तरफ आते पाया। उन पर निगाह पड़ते ही
क्रोध में आकर गरजी और नेजे को हिलाती हुई उसी तरफ लपकी। नेजे
चमक ने उन चारों की आँखें बन्द कर दीं। औरत ने बड़ी फुर्ती से उन
को नेजे से घायल किया। हिलाने के साथ ही साथ उस नेजे में गजब की
पैदा होती थी, मालूम होता था कि आँखों के आगे बिजली दौड़ गई। वे
देख भी न सके कि उनको मारने वाला कौन या कहाँ पर है। मालूम हो
कि वह नेजा जहर में बुझाया हुआ था क्योंकि वे चारो जख्मी होकर जमीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरे कि फिर उठने की नौबत न आई।

इस तमाशे को देख कर भैरोसिंह डरे और सोचने लगे कि इस औरत के हाथ में तो बड़ा विचित्र नेजा है। इससे तो यह बात की बात में सैकड़ों आदमियों का नाश कर सकती है, कहीं ऐसा न हो कि हम लोगों को भी सतावे।

उन चारों को जख्मी करने बाद वह औरत फिर भैरोसिंह की तरफ लौटी। उसने अपने नेजे को आड़ा किया अर्थात् उसे इस तरह थामा कि उसका एक सिरा बाईं तरफ और दूसरा दाहिनी तरफ रहे, तब तीनों ऐयारों और कमला को नेजे का धक्का देकर एक साथ पीछे की तरफ हटाना चाहा। वह नेजा एक साथ चारों के बदन में लगा, उसके छूते ही बदन में एक तरह की झनझनाहट पैदा हुई और सब आदमी बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़े।

जब उन चारों अर्थात् भैरोसिंह रामनारायण चुन्नीलाल और कमला की आँखें खुलीं तो उन्होंने अपने को किले के अन्दर राजमहल के पिछवाड़े की तरफ एक दीवार की आड़ में पड़े पाया। उस समय सुबह की सुफेदी आसमान पर धीरे धीरे अपना दखल जमा रही थी।

आठवां बयान

बहुत दिनों से कामिनी का हाल कुछ भी न मालूम हुआ, आज उसकी सुध लेना भी मुनासिब है। आपको याद होगा कि जब कामिनी को साथ लेकर कमला अपने चाचा शेरसिंह से मिलने के लिए उजाड़ खंडहर और तहखाने में गई थी तो वहाँ से विदा होते समय शेरसिंह ने कमला से कहा था कि 'कामिनी को मैं ले जाता हूँ अपने एक दोस्त के यहाँ रख दूंगा, जब सब तरह का फसाद मिट जायगा तब यह भी अपनी मुराद को पहुँच जायगी"। अब हम उसी जगह से कामिनी का हाल लिखना शुरू करते हैं।

गयाजी से थोड़ी दूर पर लालगंज नाम से मशहूर एक गांव फल्गू नदी के किनारे ही पर है। उसी जगह के एक नामी जमींदार के यहाँ जो शेरसिंह का दोस्त था कामिनी रक्खी गई थी। वह जमींदार बहुत ही नेक और रहमदिल था तथा उसने कामिनी को बड़ी हिफाजत से अपनी लड़की के समान खातिर करके रक्खा, मगर उस जमींदार का एक नौजवान और खूबसूरत लड़का भी था जो कामिनी पर आशिक हो गया। उसके हाव भाव और कटाक्ष को देख कर कामिनी को उसकी नीयत का हाल मालूम हो गया। वह कुंअर आनन्दसिंह के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम में अच्छी तरह रंगी हुई थी इसलिए उसे इस लड़के की चालढाल बहुत ही
मालूम हुई। ऐसी अवस्था में उसने अपने दिल का हाल किसी से कहना मु
सिब न समझा बल्कि इरादा कर लिया कि जहाँ तक जल्द हो सके इस म
को छोड़ ही देना मुनासिब है और अन्त में लाचार होकर उसने ऐसा ही कि

एक दिन मौका पाकर आधी रात के समय कामिनी उस घर से बाहर
निकली और सीधे रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुई। इस समय वह तरह तरह
की बातें सोच रही थी। एक दफे उसके दिल में आया कि बिना कुछ सोचे विचा
वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में चले चलना ठीक होगा मगर साथ ही यह भी सोच
कि यदि कोई सुनेगा तो मुझे अवश्य ही निर्लज्ज कहेगा और आनन्दसिंह
आँखों में मेरी कुछ इज्जत न रहेगी।

इसके बाद उसने सोचा कि जिस तरह हो कमला से मुलाकात करनी चाहि
मगर कमला से मुलाकात क्योंकर हो सकती है? न मालूम अपने काम की
में वह कहाँ कहाँ घूम रही होगी? हाँ अब याद आया, जब मैं कमला के
शेरसिंह से मिलने के लिए उस तहखाने में गई थी तो शेरसिंह ने उससे कहा
कि मुझसे मिलने की जब जरूरत हो तो इसी तहखाने में आना। अब मुझे
उसी तहखाने में चलना चाहिए, वहाँ कमला या शेरसिंह से जरूर मुलाकात हो
और वहाँ दुश्मनों के हाथ से भी निश्चिन्त रहूँगी। जब तक कमला से मुला
न हो वहाँ टिके रहने में भी कोई हर्ज नहीं है, वहाँ खाने के लिए जंगली फ
और पीने के लिए पानी की भी कोई कमी नहीं।

इन सब बातों को सोचती हुई बेचारी कामिनी उसी तहखाने की तरफ रवा
हुई और अपने को छिपाती हुई जंगल ही जंगल चल कर तीसरे दिन पहर रा
जाते जाते वहाँ पहुँची। रास्ते में जंगली फल और चश्मे के पानी के सिवाय औ
कुछ उसे न मिला और न उसे किसी चीज की इच्छा ही थी।

वह खंडहर कैसा था और उसके अंदर तहखाने में जाने के लिए छिपा हु
रास्ता किस ढंग का बना हुआ था यह पहिले लिखा जा चुका है, पुनः यहाँ लिख
की कोई आवश्यकता नहीं है। कमला या शेरसिंह से मिलने की उम्मीद में उ
खंडहर और तहखाने को कामिनी ने अपना घर बनाया और तपस्विनियों क
तरह कुँअर आनन्दसिंह के नाम की माला जपती हुई दिन बिताने लगी। वह
सी जरूरी चीजों के अतिरिक्त ऐयारी के सामान से भरा हुआ एक बाँस का पेटा
शेरसिंह का रक्खा हुआ उस तहखाने में मौजूद था जो कामिनी के हाथ लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यद्यपि कामिनी कुछ ऐयारी जानती थी परन्तु इस समय उसे ऐयारी के सामान की विशेष जरूरत न थी, हाँ शेरसिंह की जायदाद में से एक कुप्पी तेल की कामिनी ने बेशक खर्च की क्योंकि चिराग जलाने की नित्य ही आवश्यकता पड़ती थी।

कमला और शेरसिंह से मिलने की उम्मीद में कामिनी ने उस तहखाने में रहना स्वीकार किया परन्तु कई दिन बीत जाने पर भी किसी से मुलाकात न हुई। एक दिन सूरत बदल कर कामिनी तहखाने से निकली और खंडहर के बाहर बैठ सोचने लगी कि किधर जाय और क्या करे। एकाएक कई आदमियों के बातचीत की आवाज उसके कानों में पड़ी और मालूम हुआ कि वे लोग आपस में बातचीत करते हुए इसी खंडहर की तरफ आ रहे हैं। थोड़ी ही देर में चार आदमी भी दिखाई पड़े। उस समय कामिनी अपने को बचाने के लिये खंडहर के अन्दर घुस गई और राह देखने लगी कि वे लोग आगे बढ़ जायँ तो फिर निकलूँ मगर ऐसा न हुआ क्योंकि बात की बात में वे चारों आदमी एक लाश उठाए हुए उसी खंडहर के अन्दर आ पहुँचे।

इस खंडहर में अभी तक कई कोठरियाँ मौजूद थीं यद्यपि उनकी अवस्था बहुत ही खराब थी, किवाड़ के पल्ले तक उनमें न थे, जगह जगह पर कंकड़ पत्थर इत्यादि के ढेर लगे हुए थे, परन्तु मसाले की मजबूती पर ध्यान दे के आँधी पानी अथवा तूफान में भी बहुत आदमी उन कोठरियों में रह कर अपनी जान की हिफाजत कर सकते थे। खंडहर के चारो तरफ की दीवार यद्यपि कहीं कहीं से टूटी हुई थी तथापि बहुत ही मजबूत और चौड़ी थी। कामिनी एक कोठरी में घुस गई और छिप कर देखने लगी कि वे चारों आदमी उस खंडहर में आकर क्या करते और उस लाश को कहाँ रखते हैं।

लाश उठाये हुए चारों आदमी इस खंडहर में आकर इस तरह घूमने लगे जैसे हर एक कोठरी दालान बल्कि यहाँ की बित्ता बित्ता भर जमीन उन लोगों की देखी हुई हो। चूने पत्थर के ढेरों में घूमते और रास्ता निकालते हुए वे लोग एक कोठरी के अन्दर घुस गए जो इस खंडहर भर में सब कोठरियों से छोटी थी और दो घण्टे तक बाहर न निकले, इसके बाद जब वे लोग बाहर आये तो खाली हाथ थे अर्थात् लाश न थी, शायद उस कोठरी में गाड़ या रख आये हों।

जब वे आदमी खंडहर से बाहर हो मैदान की तरफ चले गये बल्कि बहुत दूर निकल गये तब कामिनी भी कोठरी में से निकली और चारों तरफ देखने लगी। उसे आज तक यही विश्वास था कि इस खंडहर का हाल शेरसिंह कमला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे और उस लम्बे आदमी के सिवाय जो शेरसिंह से मिलने के लिए यहाँ आता था किसी पाँचवें को मालूम नहीं है मगर आज की कैफियत देख कर उसका ख्याल बदल गया और वह तरह तरह के सोच विचार में पड़ गई। थोड़ी देर बाद वह उसी कोठरी की तरफ बढ़ी जिसमें वे लोग लाश छोड़ गये थे मगर क्यों कोठरी में ऐसा अंधकार था कि अन्दर जाने का साहस न पड़ा। आखिर अपने तहखाने में गई और शेरसिंह के पेटारे में से एक मोमबत्ती निकाल कर और जला कर बाहर निकली। पहिले उसने रोशनी के आगे हाथ की आड़ देकर चारो तरफ देखा और फिर उस कोठरी की तरफ रवाना हुई। जब कोठरी के दरवाजे पर पहुँची तो उसकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जिसे देखते ही चौंकी और डर कर दो कदम पीछे हट गई मगर उसकी होशियार आँखों ने तुरन्त पहचान लिया कि वह आदमी असल में मुर्दे से भी बढ़ कर है अर्थात् पत्थर की एक खड़ी मूरत है जो सामने की दीवार के साथ चिपकी हुई है। आज के पहिले इस कोठरी के अन्दर कामिनी नहीं आई थी इस लिए वह हर एक तरफ अच्छी तरह गौर से देखने लगी परन्तु उसे इस बात का खटका बराबर लगा रहा कि कहीं वे चारों आदमी फिर न आ जायँ।

कामिनी को उम्मीद थी कि इस कोठरी के अन्दर वह लाश दिखाई देगी जिसे चारों आदमी उठा कर लाये थे मगर कोई लाश दिखाई न पड़ी, आखिर उसने ख्याल किया कि शायद वे लोग लाश की जगह मूरत को लाए हों जो सामने दीवार के साथ खड़ी है। कामिनी उस कोठरी के अन्दर घुस कर मूरत के पास जा खड़ी हुई और उसे अच्छी तरह देखने लगी। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ जब उसने अच्छी तरह जाँच करने पर निश्चय कर लिया कि यह मूरत दीवार के साथ है अर्थात् इस तरह पर जड़ी हुई है कि बिना टुकड़े टुकड़े हुए किसी तरह दीवार से अलग नहीं हो सकती। कामिनी की चिन्ता और बढ़ गई। अब उसे इसमें किसी तरह का शक न रहा कि वे चारों आदमी जरूर किसी की लाश उठा लाये थे इस मूरत को नहीं, मगर वह लाश गई कहाँ? क्या जमीन खा गई या किसी चूने के ढेर के नीचे दबा दी गई! नहीं मिट्टी या चूने के नीचे वह लाश दाबी नहीं गई, अगर ऐसा होता तो जरूर देखने में आता, उन लोगों ने जो कुछ किया इसी कोठरी के अन्दर किया।

कामिनी उस मूरत के पास बड़ी देर तक सोचती रही, आखिर वहाँ से लौटी और धीरे धीरे अपने तहखाने में आकर बैठ गई, वहाँ एक ताक (आले) पर चिराग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल रहा था इसलिए मोमवत्ती बुझाकर बिछौने पर जा लेटी और फिर सोचने लगी।

इसमें कोई शक नहीं कि वे लोग कोई लाश उठा कर लाए थे मगर वह लाश कहाँ गई। खैर इससे कोई मतलब नहीं मगर अब यहाँ रहना भी कठिन हो गया क्योंकि यहाँ कई आदमियों की आमदरफ्त शुरू हो गई, शायद कोई मुझे देख ले तो मुश्किल होगी, अब होशियार हो जाना चाहिए क्योंकि मुझे बहुत कुछ काम करना है। कमला या शेरसिंह भी अभी तक न आए, अब उनसे भी मुलाकात होने की कोई उम्मीद न रही, अच्छा दो तीन दिन और यहाँ रह कर देखा चाहिए कि वे लोग फिर आते हैं या नहीं।

कामिनी इन सब बातों को सोच ही रही थी कि एक आवाज उसके कान में आई। उसे मालूम हुआ कि किसी औरत नें दर्दनाक आवाज में यह कहा, "क्या दुःख ही भोगने के लिए मेरा जन्म हुआ था।" यह आवाज ऐसी दर्दनाक थी कि कामिनी का कलेजा काँप गया। इस छोटी ही उम्र में वह भी बहुत तरह के दुःख भोग चुकी थी और उसका कलेजा जख्मी हो चुका था इसलिए बर्दाश्त न कर सकी, आँखें भर आईं और आँसू की बूँदें टपाटप गिरने लगीं। फिर आवाज आई, "हाय मौत को भी मौत आ गई!" अबकी दफे कामिनी बेतरह चौंकी और यकायक बोल उठी, "इस आवाज को तो मैं पहिचानती हूँ, जरूर उसी की आवाज है!"

कामिनी उठ खड़ी हुई और सोचने लगी कि यह आवाज किधर से आई? बन्द कोठरी में आवाज आना असम्भव है, कहीं खिड़की सूराख या दीवार में दरार हुए बिना आवाज किसी तरह नहीं आ सकती। वह कोठरी में हर तरफ घूमने और देखने लगी। यकायक उसकी निगाह एक तरफ की दीवार के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी और वहाँ एक सूराख जिसमें आदमी का हाथ बखूबी जा सकता था दिखाई पड़ा। कामिनी ने सोचा कि बेशक इसी सूराख में से आवाज आई है। वह सूराख की तरफ देखने लगी, फिर आवाज आई—"हाय, न मालूम मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है!"

अब कामिनी को विश्वास हो गया कि यह आवाज उसी सूराख में से आई है। वह बहुत ही बेचैन हुई और धीरे धीरे कहने लगी, "बेशक यह उसी की आवाज है। हाय मेरी प्यारी बहिन किशोरी, मैं तुझे क्योंकर देखूँ और किस तरह मदद करूँ? इस कोठरी के बगल में जरूर कोई दूसरी कोठरी है जिसमें तू कैद है मगर न मालूम उसका रास्ता किधर से है? मैं क्योंकर तुझ तक पहुँचूँ और इस आफत से तुझे छुड़ाऊँ? इस कोठरी को मजबूत संगीन दीवार भी ऐसी मजबूत है कि मेरे उद्योग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सेंध भी नहीं लग सकती। हाय अब मैं क्या करूँ ? भला पुकार के देखूँ सही कि आवाज भी उसके कानों तक पहुँचती है या नहीं" ?

कामिनी ने मोखे से (सूराख) की तरफ मुँह करके कहा, "क्या मेरी बहिन किशोरी की आवाज आ रही है ?"

जवाब०। हाँ, क्या तू कामिनी है ? बहिन कामिनी, क्या तू भी मेरी तरह इस मकान में कैद है ?

कामिनी०। नहीं बहिन मैं कैद नहीं हूँ, मगर....

कामिनी और कुछ कहा ही चाहती थी कि धमधमाहट की आवाज सुन रुक गई और डर कर सीढ़ी की तरफ देखने लगी। उसे मालूम हुआ कि कोई आ रहा है।

नौवाँ बयान

गिल्लन को साथ लिए हुए बीबी गौहर रोहतासगढ़ किले के अन्दर जा पहुँची। किले के अन्दर जाने में किसी तरह का जाल फैलाना न पड़ा और न किसी तरह की कठिनाई हुई। वह बेधड़क किले के उस फाटक पर चली आई जो शिवालय के की तरफ था और छोटी खिड़की के पास खड़ी होकर खिड़की (छोटा दरवाजा) खोलने के लिए दर्बान को पुकारा, जब दर्बान ने पूछा, "तू कौन है ?" तो जवाब दिया कि 'मैं शेरअलीखाँ की लड़की गौहर हूँ'।

उन दिनों शेरअलीखाँ नामी पटने का सूबेदार था। वह शख्स बड़ा ही जवाँमर्द और बुद्धिमान था साथ ही इसके दगाबाज भी कुछ कुछ था मगर इसे राजनीति का एक अंग मानता था। उसके इलाके भर में जो कुछ उसका रोआब था इसे कहाँ तक कहा जाय, दूर दूर तक के आदमी उसका नाम सुन कर काँप जाते थे। उसके पास फौज तो केवल पाँच ही हजार थी मगर वह उससे पचीस हजार फौज का काम लेता था क्योंकि उसने अपने ढंग के आदमी चुन चुन कर अपनी फौज में भरती किए थे। गौहर उसी शेरअलीखाँ की लड़की थी और वह गौहर की मौसेरी बहिन थी जो चुनारगढ़ के पास वाले जंगल में माधवी के हाथ से मारी गई थी।

शेरअलीखाँ अपनी जोरू को बहुत चाहता था और उसी तरह अपनी लड़की गौहर को भी हद से ज्यादे प्यार करता था। गौहर को दस वर्ष की छोड़ कर उसकी माँ मर गई थी। माँ के गम में गौहर दीवानी सी हो गई। लाचार दिल बहलाने के लिए शेरअलीखाँ ने गौहर को आजाद कर दिया और वह थोड़े से आदमियों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,3M60,2 M12

को साथ लेकर दूर दूर तक सैर करती फिरती थी। पाँच वर्ष तक वह इसी अवस्था में रही, इसी बीच में आजादी मिलने के कारण उसकी चालचलन में भी फर्क पड़ गया था। इस समय गौहर की उम्र पन्द्रह वर्ष की है। शेरअलीखाँ दिग्विजयसिंह का दिली दोस्त था और दिग्विजयसिंह भी उसका बहुत भरोसा रखता था।

गौहर का नाम सुनते ही दर्वान चौंका और उसने उस अफसर को इत्तिला दी जो कई सिपाहियों को साथ लेकर फाटक की हिफाजत पर मुस्तैद था। अफसर तुरत फाटक पर आया और उसने पुकार कर पूछा, "आप कौन हैं ?"

गौहर०। मैं शेरअलीखाँ की लड़की गौहर हूँ।

अफसर०। इस समय आपको संकेत वताना चाहिए।

गौहर०। हाँ वताती हूँ,—'जोगिया'।

'जोगिया' सुनते ही अफसर ने दर्वाजा खोलने का हुक्म दिया और गिल्लन को साथ लिए हुए गौहर किले के अन्दर पहुँच गई। मगर गौहर विल्कुल नहीं जानती थी कि थोड़ी ही दूर पर एक लम्बे कद का आदमी दीवार के साथ चिपका खड़ा है और उसकी वातें जो दर्वान के साथ हो रही थीं सुन रहा है।

जव गौहर किले के अन्दर चली गई उसके आधे घण्टे वाद एक लम्बे कद का आदमी जिसे अव भूतनाथ कहना उचित है उसी फाटक पर पहुँचा और दर्वाजा खोलने के लिए उसने दर्वान को पुकारा।

दर्वान०। तुम कौन हो ?

भूत०। मैं शेरअलीखाँ का जासूस हूँ।

दर्वान०। संकेत वताओ।

भूत०। 'जोगिया'।

दर्वाजा तुरत खोल दिया गया और भूतनाथ भी किले के अंदर जा पहुँचा। गौहर वही परिचय देती हुई राजमहल तक चली गई। जव उसके आने की खवर राजा दिग्विजयसिंह को दी गई उस समय रात बहुत कम बाकी थी और दिग्विजयसिंह मसहरी पर वैठा हुआ राजकीय विषयों में तरह तरह की वातें सोच रहा था। गौहर के आने की खवर सुनते ही दिग्विजयसिंह ताज्जुव में आकर उठ खड़ा हुआ, उसे अन्दर आने की आज्ञा दी, वल्कि खुद भी दर्वाजे तक इस्तकवाल के लिए आया और बड़ी खातिरदारी से उसे अपने कमरे में ले गया। आज पाँच वर्ष वाद दिग्विजयसिंह ने गौहर को देखा, इस समय इसकी खूवसूरती और उठती हुई जवानी गजव करती थी। उसे देखते ही दिग्विजयसिंह की तबीयत डोल गई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर शेरअलीखाँ के डर से रंग न बदल सका।

दिग्विजय०। इस समय आपका आना क्योंकर हुआ और यह दूसरी औरत आपके साथ कौन है ?

गौहर०। यह मेरी ऐयारा है। कई दिन हुए केवल आपसे मिलने के लिये सौ सिपाहियों को साथ लेकर मैं यहाँ आ रही थी, इत्तिफाक से वीरेन्द्रसिंह के जालिम आदमियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। मेरे साथियों में से कई मारे गए और कई कैद हो गए। मैं भी चार दिन तक कैद रही, आखिर इस चालाक ऐयारा ने जो कैद होने से बच गई थी मुझे छुड़ाया। इस समय सिवाय इसके कि मैं रोहतास किले में आ घुसूँ और कोई तदबीर जान बचाने की न सूझी। सुना है कि वीरेन्द्रसिंह वगैरह आजकल आपके यहाँ कैद हैं।

दिग्विजय०। हाँ वे लोग आज कल यहाँ कैद हैं। मैंने यह खबर आपके पिता को भी लिखी है।

गौहर०। हाँ मुझे मालूम है। वे भी आपकी मदद को आने वाले हैं, उनका इरादा है कि वीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर जो इस पहाड़ी के नीचे है छापा मारें।

दिग्विजय०। हाँ मुझे तो एक उन्हीं का भरोसा है।

यद्यपि शेरअलीखाँ के डर से दिग्विजयसिंह गौहर के साथ अदब का बर्ताव करता रहा मगर कम्बख्त गौहर को यह मंजूर न था। उसने यहाँ तक हावभाव और चुलबुलापन दिखाया कि दिग्विजयसिंह की नीयत बदल गई और वह एकान्त खोजने लगा।

गौहर तीन दिन से ज्यादे अपने को बचा न सकी। इस बीच में उसने अपना मुँह काला करके दिग्विजयसिंह को काबू में कर लिया और दिग्विजयसिंह से बात की प्रतिज्ञा करा ली कि वीरेन्द्रसिंह वगैरह जितने आदमी यहाँ कैद हैं उन का सिर काट कर किले के कंगूरों पर लटका दिया जायगा और इसका बन्दोबस्त भी होने लगा। मगर इसी बीच में भैरोसिंह रामनारायण और चुन्नीलाल ने जो किले के अन्दर पहुँच गए थे वह धूम मचाई कि लोगों की नाक में दम कर दिया और मजा तो यह कि किसी को कुछ पता न लगता था कि यह कार्रवाई कौन कर रहा है।

दसवाँ बयान

वीरेन्द्रसिंह के तीनों ऐयारों ने रोहतासगढ़ के किले के अन्दर पहुँच कर अंधेर मचाना शुरू किया। उन लोगों ने निश्चय कर लिया कि अगर दिग्विजय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मारे मालिकों को न छोड़ेगा तो ऐयारी के कायदे के बाहर काम करेंगे और रोहतासगढ़ को सत्यानाश करके छोड़ेंगे।

जिस दिन दिग्विजयसिंह की मुलाकात गौहर से हुई थी उसके दूसरे ही दिन दरबार के समय दिग्विजयसिंह को खबर पहुँची कि शहर में कई जगह हाथ के लिखे हुए कागज दीवारों पर चिपके हुए दिखाई देते हैं जिनमें लिखा है—"वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग इस किले में आ पहुँचे। यदि दिग्विजयसिंह अपनी भलाई चाहें तो चौबीस घंटे के अन्दर राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह को छोड़ दें, नहीं तो देखते देखते रोहतासगढ़ सत्यानाश हो जायगा और यहाँ का एक आदमी जीता न बचेगा।"

राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का हाल दिग्विजयसिंह अच्छी तरह जानता था। उसे विश्वास था कि उन लोगों का मुकाबला करने वाला दुनिया में कोई नहीं है। विज्ञापन का हाल सुनते ही वह काँप उठा और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। इस विज्ञापन की खबर बात की बात शहर भर में फैल गई, मारे डर के वहाँ की रियाआ का दम निकला जाता था। सब कोई अपने राजा दिग्विजयसिंह की शिकायत करते थे और कहते थे कि कम्बख्त ने बेफायदे राजा वीरेन्द्रसिंह से वैर बांध कर हम लोगों की जान ली।

तीनों ऐयारों ने तीन काम बांट लिए। रामनारायण ने इस बात का जिम्मा लिया कि किसी लोहार के यहाँ चोरी करके बहुत सी कीलें इकट्ठी करेंगे और रोहतासगढ़ में जितनी तोपें हैं सभों में कील ठोंक देंगे,* चुन्नीलाल ने वादा किया कि तीन दिन के अन्दर रामानन्द ऐयार का सिर काट कर शहर के चौमुहाने पर रक्खेंगे, और भैरोंसिंह ने तो रोहतासगढ़ ही को चौपट करने का प्रण किया था।

हम ऊपर लिख आए हैं कि जिस समय कुन्दन (धनपति) ने तहखाने में से किशोरी को निकाल ले जाने का इरादा किया था तो बारह नम्बर की कोठरी में पहुँचने के पहले तहखाने के दर्वाजे में ताला लगा दिया था, मगर रोहतासगढ़ दखल होने के बाद तहखाने वाली किताब की मदद से जो दारोगा के पास रहा करती थी वे दर्वाजे पुनः खोल लिए गए थे और इसलिए दीवानखाने की राह से तहखाने में फिर आमदरफ्त शुरू हो गई थी।

एक दिन आधी रात के बाद राजा दिग्विजयसिंह के पलंग पर बैठी हुई गौहर ने इच्छा प्रकट की कि मैं तहखाने में चल कर राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह को देखा

* तोप में रञ्जक देने की जो प्याली होती है उसके छेद में कील ठोंक देने से तोप बेकाम हो जाती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहती हूँ ? राजा दिग्विजयसिंह उसकी मुहब्बत में चूर हो रहे थे, दीनदुनिया की खबर भूले हुए थे, तहखाने के कायदे पर ध्यान न दे कर गौहर को तहखाने में ले चले।

अभी पहिला दर्वाजा भी खोला न था कि यकायक भयानक आवाज आई। मालूम हुआ कि मानों हजारों तोपें एक साथ छूटी हैं, तमाम किला हिल उठा। गौहर बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी, दिग्विजयसिंह भी खड़ा न रह सका।

जब दिग्विजयसिंह को होश आया छत पर चढ़ गया और शहर की तरफ देखने लगा। शहर में बेहिसाब आग लगी हुई थी, सैकड़ों घर जल रहे थे, अग्निदेव ने अपना पूरा दखल जमा लिया था, आग के बड़े बड़े शोले आस्मान की तरफ उठ रहे थे। यह हाल देखते ही दिग्विजयसिंह ने सर पीटा और कहा, "यह सब फसाद बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का है! बेशक उन लोगों ने मेगजीन में आग लगा दी और वह भयंकर आवाज मेगजीन के उड़ने की ही थी। हाय सैकड़ों घर तबाह हो गये होंगे! इस समय वह कम्बख्त साधू अगर मेरे सामने होता तो मैं उसकी दाढ़ी नोच लेता जिसके बहकाने से बीरेन्द्रसिंह वगैरह को कैद किया!"

दिग्विजयसिंह घबड़ा कर राजमहल के बाहर निकला और तब उसे निश्चय हो गया कि जो कुछ उसने सोचा था ठीक है। नौकरों ने खबर दी कि न मालूम किसने मेगजीन में आग लगा दी जिसके सबब से सैकड़ों घर तबाह हो गए, उसी समय शहर में आग लग गई जो अभी तक बुझाए नहीं बुझती। इस खबर के सुनते ही दिग्विजयसिंह अपने कमरे में लौट गया और बदहवास होकर गद्दी पर गिर पड़ा।

बेशक यह सब काम बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का था। इस आगलगी में रामनारायण को भी तोपों में कीलें ठोंकने का खूब मौका हाथ लगा। रामानन्द दीवान घबड़ा कर घर से बाहर निकला और तहकीकात करने के लिए अकेला ही घर की तरफ चला। रास्ते में चुन्नीलाल ने हाथ पकड़ लिया और कहा, "दीवान जी बन्दगी!" बेमौके की बन्दगी से रामानन्द कुढ़ उठा और उसने चुन्नीलाल पर तलवार चलाई। चुन्नीलाल उछल कर दूर जा खड़ा हुआ और उस वार को बचा गया, मगर चुन्नीलाल के वार ने रामानन्द का काम तमाम कर दिया, उसकी भुजाली रामानन्द की गर्दन पर ऐसी बैठी कि सर कट कर दूर जा गिरा।

अब हमको यह भी लिखना चाहिए कि भैरोसिंह ने किस तरह मेगजीन में आग लगाई। भैरोसिंह ने एक मोमबत्ती ऐसी तैयार की जो केवल दो घण्टे तक जल सकती थी अर्थात् उसमें दो घण्टे से ज्यादे देर तक जलने लायक मोम न था और उस मोमबत्ती के बीचोबीच में आतिशबाजी का एक अनार बनाया जिसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...थी मोमवती जव जल जाय तो आप से आप अनार में आग लगे। जव इस ...ह की मोमवत्ती तैयार हो गई तो उसने अपने दोनों साथियों से कहा कि 'मैं ...जीन में आग लगाने जाता हूँ, अपनी फिक्र आप कर लूँगा। तुम लोग किसी ...ी जगह जाकर छिपो जहाँ मैदान या किले की मजवूत दीवार हो, मगर इसके ...ले शहर में आग लगा दो'। इसके वाद भैरोंसिह मेगजीन के पास पहुँचे और ... फिक्र में लगे कि मौका मिले तो कमन्द लगा कर उसके अन्दर जांय।

यह इमारत वहुत बड़ी तो न थी मगर मजवूत थी, दीवार वहुत चौड़ी और ...ची थी, फाटक वहुत बड़ा और लोहे का था, पहरे पर पचास आदमी नंगी ...लवार लिए हर वक्त मुस्तैद रहते थे। इस मेगजीन के चारो तरफ से कोई ...दमी आग लेकर जाने नहीं पाता था।

चन्द्रमा अस्त हो गया और पिछली रात की अँधेरी चारो तरफ फैल गई, ...द्रादेवी की हुकूमत में सभी पड़े हुए थे यहाँ तक कि पहरेवालों की आँखें भी झिपी ...ती थीं, उस समय मौका पाकर भैरोंसिह ने मेगजीन के पिछली तरफ कमन्द ...गाई। दीवार के ऊपर चढ़ जाने वाद कमन्द खैंच ली और फिर उसी के सहारे ...तर गए। मेगजीन के अन्दर हजारों थैले वारूद के गँजे हुए पड़े थे, तोप के गोलों ...का ढेर लगा हुआ था, वहुत सी तोपें भी पड़ी हुई थीं। भैरोंसिह ने यह मोमबत्ती ...लाई और वारूद के थैलों के पास जमीन पर लगा कर खड़ी कर दी, इसके वाद ...र्ती से मेगजीन के वाहर हो गए और जहाँ तक दूर निकल जाते वना निकल गए। ...सी के घण्टे भर वाद (जब मोमवत्ती का अनार छूटा होगा) वारूद में आग लगी ...र मेगजीन की इमारत जड़ वुनियाद से सत्यानाश हो गई, हजारों आदमी मरे ...र सैकड़ों मकान गिर पड़े, वल्कि यों कहना चाहिए कि उसकी आवाज से रोह-...तासगढ़ का किला दहल उठा, जरूर कई कोस तक इसकी भयानक आवाज गई होगी। ...हाड़ी के नीचे वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में जव यह आवाज पहुँची तो दोनों सेनापति ...मझ गए कि मेगजीन में आग लगी, क्योंकि ऐसी भयानक आवाज सिवाय मेग-...जीन उड़ने के और किसी तरह की नहीं हो सकती, वेशक यह काम भैरोंसिह का है।

मेगजीन उड़ने का निश्चय होते ही दोनों सेनापति बहुत प्रसन्न हुए और ...मझ गए कि अव रोहतासगढ़ का किला फतह कर लिया क्योंकि जब वारूद का ...जाना ही उड़ गया तो किले वाले तोपों के जरिये से हमें क्योंकर रोक सकते ...। दोनों सेनापतियों ने यह सोच कर कि अव विलम्ब करना मुनासिव नहीं है ...कले पर चढ़ाई कर दी और दो हजार आदमियों को साथ ले नाहरसिंह पहाड़

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पर चढ़ने लगा। यद्यपि दोनों सेनापति इस बात को समझते थे कि मेगजी
उड़ गई है तो भी कुछ बारूद तोपखाने में जरूर होगी मगर यह खयाल उ
बढ़े हुए हौसले को किसी तरह रोक न सका।

इधर दिग्विजयसिंह अपनी जिन्दगी से बिल्कुल नाउम्मीद हो बैठा। ज
उसे यह खबर पहुँची कि रामानन्द दीवान यों ऐयार भी मारा गया औ
बहुत सी तोपें भी कील ठुक जाने के कारण बर्बाद हो गईं तब वह और बे
हो गया और मालूम होने लगा कि मौत नंगी तलवार लिए सामने खड़ी है।
पहर दिन चढ़े तक पागलों की तरह चारों तरफ दौड़ता रहा और तब एका
में बैठ कर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। जब उसे जान बचाने
तरकीब न सूझी और यह निश्चय हो गया कि अब रोहतासगढ़ का किला कि
तरह नहीं रह सकता और दुश्मन लोग भी मुझे किसी तरह जीता नहीं छोड़ स
तब वह हाथ में नंगी तलवार लेकर उठा और तहखाने की ताली निकाल
यह कहता हुआ तहखाने की तरफ चला कि 'जब मेरी जान बच ही नहीं सक
तो वीरेन्द्रसिंह और उनके लड़के वगैरह को क्यों जीता छोड़ूँ? आज मैं अप
हाथ से उन लोगों का सिर काटूँगा'!

दिग्विजयसिंह हाथ में नंगी तलवार लिए हुए अकेला ही तहखाने में गया, म
जब उस दालान में पहुँचा जिसमें हथकड़ियों और बेड़ियों से कसे हुए वीरेन्द्रसि
वगैरह रक्खे गए थे तो उसको खाली पाया। वह ताज्जुब में आकर चारो त
देखने और सोचने लगा कि कैदी लोग कहाँ गायब हो गए। मालूम होता है
यहाँ भी ऐयार लोग आ पहुँचे मगर देखना चाहिए कि किस राह से पहुँचे?

दिग्विजयसिंह उस सुरंग में गया जो कब्रिस्तान की तरफ निकल गई थ
वहाँ का दर्वाजा उसी तरह बन्द पाया जैसा उसने अपने हाथ से बन्द किया था
आखिर लाचार सिर पीटता हुआ लौट आया और दीवानखाने में बदहवा
होकर गद्दी पर गिर पड़ा।

ग्यारहवाँ बयान

इस जगह मुख्तसर ही में यह भी लिख देना मुनासिब मालूम होता है
रोहतासगढ़ तहखाने में से राजा वीरेन्द्रसिंह कुँअर आनन्दसिंह और उनके ऐया
लोग क्योंकर छूटे और कहाँ गए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम ऊपर लिख आए हैं कि जिस समय गौहर 'जोगिया' का संकेत देकर रोहतासगढ़ किले में दाखिल हुई उसके थोड़ी ही देर बाद एक लम्बे कद का आदमी भी जो असल में भूतनाथ था 'जोगिया' का संकेत देकर किले के अन्दर चला गया। न मालूम उसने वहाँ क्या क्या कारवाई की मगर जिस समय मेगजीन उड़ाई गई थी उस समय वह एक चोवदार की सूरत बना राजमहल के आस पास घूम रहा था। जब राजा दिग्विजयसिंह घबड़ा कर महल के बाहर निकला था और चारो तरफ कोलाहल मचा हुआ था वह इस तरह महल के अंदर घुस गया कि किसी को गुमान भी न हुआ। इसके पास ठीक वैसी ही ताली मौजूद थी जैसी तहखाने की ताली राजा दिग्विजयसिंह के पास थी। भूतनाथ जल्दी जल्दी उस घर में पहुँचा जिसमें तहखाने के अन्दर जाने का रास्ता था। उसने तुरत दर्वाजा खोला और अन्दर जाकर उसी ताली से फिर बन्द कर दिया। उस दर्वाजे में एक ही ताली बाहर भीतर दोनों तरफ से लगती थी। कई दर्वाजों को खोलता हुआ वह उस दालान में पहुँचा जिसमें वीरेन्द्रसिंह वगैरह कैद थे और राजा वीरेन्द्रसिंह के सामने हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। राजा वीरेन्द्रसिंह उस समय बड़ी चिन्ता में थे। मेगजीन उड़ने की आवाज उनके कान तक भी पहुँची थी बल्कि मालूम हुआ कि उस आवाज के सदमे से समूचा तहखाना हिल गया। वे भी यही सोच रहे थे कि शायद हमारे ऐयार लोग किले के अन्दर पहुँच गए। जिस समय भूतनाथ हाथ जोड़ कर उनके सामने जा खड़ा हुआ वे चौंके और भूतनाथ की तरफ देख कर बोले, "तू कौन है और यहाँ क्यों आया ?"

भूत०। यद्यपि मैं इस समय एक चोवदार की सूरत में हूँ मगर मैं हूँ कोई दूसरा ही, मेरा नाम भूतनाथ है, मैं आप लोगों को इस कैद से छुड़ाने आया हूँ और इसका इनाम पहिले ही ले लिया चाहता हूँ।

वीरेन्द्र०। (ताज्जुब में आकर) इस समय मेरे पास क्या है जो मैं इनाम में दूँ ?

भूत०। जो मैं चाहता हूँ वह इस समय भी आपके पास मौजूद है।

वीरेन्द्र०। यदि मेरे पास मौजूद है तो मैं देने को तैयार हूँ, माँग क्या माँगता है ?

भूत०। बस मैं यही माँगता हूँ कि आप मेरा कसूर माफ कर दें, और कुछ नहीं चाहता।

वीरेन्द्र०। मगर मैं कुछ नहीं जानता कि तू कौन है और तूने क्या अपराध किया है जिसे मैं माफ कर दूँ।

भूत०। इसका जवाब मैं इस समय नहीं दे सकता, बस आप देर न करें,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा कसूर साफ कर दें जिससे आप लोगों को यहाँ से जल्द छुड़ाऊँ, समय वहुत कम है, विलम्ब करने से पछताना पड़ेगा।

तेज०। पहिले तुम्हें अपना कसूर साफ साफ कह देना चाहिए।

भूत०। ऐसा नहीं हो सकता!

भूतनाथ की वातें सुन कर सभी हैरान थे और सोचते थे कि यह विचित्र आदमी है जो जवर्दस्ती अपना कसूर माफ करा रहा है और यह भी नहीं कहता कि उसने क्या किया है। इसमें शक नहीं कि यदि हम लोगों को यहाँ से छुड़ा देगा तो भारी एहसान करेगा मगर इसके बदले में यह केवल इतना ही माँगता है कि इसका कसूर माफ कर दिया जाय तो यह मामला क्या है! आखिर वहुई कुछ सोच समझ कर राजा वीरेन्द्रसिंह ने भूतनाथ से कहा, "खैर जो हो, मैंने तेरा कसूर माफ किया।"

इतना सुनते ही भूतनाथ हँसा और वारह नम्वर की कोठरी के पास जाकर उसी ताली से जो उसके पास थी कोठरी का दर्वाजा खोला। पाठक महाशयों भूले न होंगे, उन्हें याद होगा कि इसी कोठरी में किशोरी को दिग्विजयसिंह ने डाल दिया था और इसी कोठरी में से उसे कुन्दन ले भागी थी।

कोठरी का दर्वाजा खुलते ही हाथ में नेजा लिये वही राक्षसी दिखाई पड़ी जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं और जिसके सवव से कमला भैरोसिंह राम नारायण और चुन्नीलाल किले के अन्दर पहुँचे थे। इस समय तहखाने में केवल एक चिराग जल रहा था जिसकी कुछ रोशनी चारो तरफ फैली हुई थी मगर जव वह राक्षसी कोठरी के वाहर निकली तो उसके नेजे की चमक से तहखाने में दिन की तरह उजाला हो गया। भयानक सूरत के साथ उसके नेजे ने सभी को ताज्जुव में डाल दिया। उस औरत ने भूतनाथ से पूछा, "तुम्हारा काम हो गया?" इसके जवाव में भूतनाथ ने कहा—"हाँ।"

उस राक्षसी ने राजा वीरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर कहा, "सभों को लेकर आप इस कोठरी में आवें और तहखाने के वाहर निकल चलें मैं इसी राह से आप लोगों को तहखाने के वाहर कर देती हूँ।" यह वात सभों को मालूम ही थी कि इसी वारह नम्वर की कोठरी में से किशोरी गायव हो गई थी, इसलिए सभों को विश्वास था कि इस कोठरी में से कोई रास्ता वाहर निकल जाने के लिए जरूर है।

सभों की हथकड़ी वेड़ी खोल दी गई, इसके वाद सव कोई उस कोठरी में घुसे और राक्षसी की मदद से तहखाने के वाहर हो गये। जाते समय राक्षसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोठरी को वन्द कर दिया। बाहर होते ही राक्षसी और भूतनाथ राजा वीरेन्द्र-
ह वगैरह से विना कुछ कहे चले गये और जंगल में घुस कर देखते ही देखते
रों से गायव हो गये। उन दोनों के वारे में सभों को शक वना ही रहा।

बारहवाँ बयान

दो पहर दिन चढ़ने के पहिले ही फौज लेकर नाहरसिंह रोहतासगढ़ पहाड़ी
ऊपर चढ़ गया। उस समय दुश्मनों ने लाचार होकर फाटक खोल दिया और
भिड़ कर जान देने पर तैयार हो गये। किले की कुल फौज फाटक पर उमड़
ई और फाटक के बाहर मैदान में घोर युद्ध होने लगा। नाहरसिंह की वहादुरी
खने योग्य थी। वह हाथ में तलवार लिए जिस तरफ को निकल जाता था सफाई
र देता था। उसकी वहादुरी देख कर उसके मातहत फौज की भी हिम्मत दूनी
गई और ककड़ी की तरह दुश्मनों को काटने लगे। उसी समय पाँच सौ वहा-
रों को साथ लिए राजा वीरेन्द्रसिंह कुँअर आनन्दसिंह और तेजसिंह वगैरह भी
पहुँचे और उस फौज में मिल गये जो नाहरसिंह की मातहती में लड़ रही
। ये पाँच सौ आदमी उन्हीं की फौज के थे जो दो दो चार चार करके पहाड़
ऊपर चढ़ाये गये थे। तहखाने से वाहर निकलने पर राजा वीरेन्द्रसिंह से
लाकात हुई थी और सव एक जगह हो गये थे।

जिस समय किले वालों को यह मालूम हुआ कि राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह भी
स फौज में आ मिले उस समय उनकी हिम्मत बिल्कुल जाती रही। विना दिल
हौसला निकाले ही उन लोगों ने हथियार रख दिए और सुलह का डंका वजा
या। पहाड़ी के नीचे से और फौज भी पहुँच गई और रोहतासगढ़ में राजा
रेन्द्रसिंह की अमलदारी हो गई। जिस समय राजा वीरेन्द्रसिंह दीवानखाने में
हुँचे वहाँ राजा दिग्विजयसिंह की लाश पाई गई। मालूम हुआ कि उसने आत्मघात
र लिया। उसकी हालत पर राजा वीरेन्द्रसिंह देर तक अफसोस करते रहे।

राजा वीरेन्द्रसिंह ने कुँअर आनन्दसिंह को गद्दी पर वैठाया। सभों ने नजरें
दीं। उसी समय कमला भी आ पहुँची। उसने किले में पहुँच कर कोई ऐसा
ाम नहीं किया था जो लिखने लायक हो, हाँ गिल्लन के सहित गौहर को जरूर
ारफ्तार कर लिया था। दिग्विजयसिंह की रानी अपने पति के साथ सती हुई।
मानन्द की स्त्री भी अपने पति के साथ जल मरी। शहर में कुमार के नाम
ो मुनादी करवा दी गई और यह कहला दिया गया कि जो रोहतासगढ़ से निकल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाना चाहे वह खुशी से चला जाय। दिग्विजयसिंह के मरने से जिसे कष्ट हो वह यदि हमारे भरोसे पर यहाँ रहेगा तो उसे किसी तरह का दुःख न हो हर एक की मदद की जायगी और जो जिस लायक है उसकी खातिर जायगी। इन सब कामों के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह ने कुल हाल की चीठी कर अपने पिता के पास रवाना की।

दूसरे दिन राजा बीरेन्द्रसिंह ने एकान्त में कमला को बुलाया। उस समय पास कुँअर आनन्दसिंह तेजसिंह भैरोसिंह तारासिंह वगैरह ऐयार लोग ही बैठे अर्थात् सिवाय आपुस वालों के बाहरी आदमी कोई भी न था। राजा बीरेन्द्रसिंह कमला से पूछा, "कमला तू इतने दिनों तक कहाँ रही, तेरे ऊपर क्या क्या मुसी आई, और तू किशोरी का क्या क्या हाल जानती है सो मैं सुना चाहता हूँ।"

कमला०। (हाथ जोड़ कर) जो कुछ मुसीबतें मुझ पर आई और जो किशोरी का हाल मैं जानती हूँ सब अर्ज करती हूँ। अपनी प्यारी किशोरी से बाद मैं बहुत ही परेशान हुई। अग्निदत्त की लड़की कामिनी ने जब किशोरी अपने बाप के पंजे से छुड़ाया और खुद भी निकल खड़ी हुई तो पुनः मैं उन से जा मिली और बहुत दिनों तक गयाजी में रही और वहाँ बहुत सी विचित्र बातें

बीरेन्द्र०। हाँ गयाजी का बहुत कुछ हाल तुम लोगों के बारे में देवीसिंह जुबानी मुझे मालूम हुआ था और यह भी जाना गया था कि जिन दिनों इन्द्र बीमार था उसके कमरे में जो जो अद्भुत बातें देखने सुनने में आईं वह सब कामिन ही की कार्रवाई थी मगर उनमें से कई बातों का भेद अभी तक मालूम नहीं हुआ

कमला०। वह क्या?

बीरेन्द्र०। एक तो यह कि तुम लोग उस कोठरी में किस रास्ते से जाती थीं, दूसरे लड़ाई किससे हुई थी, वह कटा हाथ जो कोठरी में पाया था किसका था, और बिना सिर की लाश किसकी थी?

कमला०। वह भेद भी मैं आपसे कहती हूँ। गयाजी में फलगू नदी के किनारे एक मन्दिर श्री राधाकृष्णजी का है। उसी मन्दिर में से एक रास्ता महल में का है जो उस कोठरी में निकला है जिसका हाल माधवी अग्निदत्त और कामिनी के सिवाय किसी को मालूम नहीं, कामिनी की बदौलत मुझे और किशोरी मालूम हुआ। उसी रास्ते से हम लोग आते जाते थे। वह रास्ता बड़ा ही विचित्र है, उसका हाल मैं जुबानी नहीं समझा सकती, गयाजी चलने बाद जब मौका मिलेगा तो ले चल कर उसे दिखाऊँगी। हम लोगों ने उस मकान में आना जाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कनीयती के साथ होता था मगर जब माधवी गयाजी में पहुँची तो बदला लेने की नीयत से एक आदमी और अपनी ऐयारा को साथ ले उसी राह से महल की तरफ रवाना हुई। उसे उस समय तक शायद हम लोगों का हाल मालूम न था। इत्तिफाक से हम तीनों आदमी भी उसी समय सुरंग में घुसे, आखिर नतीजा यह हुआ कि उस कोठरी में पहुँच कर लड़ाई हो गई, माधवी के साथ का आदमी मारा गया। वह कलाई माधवी की थी और मेरे हाथ से कटी थी। अन्त में उसकी ऐयारा उस आदमी का सर और माधवी को लेकर चली गई, हम लोगों ने उस समय रोकना मुनासिब न समझा।

वीरेन्द्र०। हाँ ठीक है, ऐसा ही हुआ है, यह हाल मुझे मालूम था मगर शक मिटाने के लिए तुमसे पूछा था।

कमला०। (ताज्जुब में आकर) आपको कैसे मालूम हुआ?

वीरेन्द्र०। मुझसे देवीसिंह ने कहा था और देवीसिंह को उस साधू ने कहा था जो रामशिला पहाड़ी के सामने फलगू नदी के बीच वाले भयानक टीले पर रहता था। देवीसिंह की जुबानी बाबाजी ने मुझे एक सन्देशा भी कहला भेजा था, मौका मिलने पर मैं जरूर उनके हुक्म की तामील करूँगा।

कमला०। वह सन्देशा क्या था?

वीरेन्द्र०। सो इस समय न कहूँगा। हाँ यह तो बता कि कामिनी का और उन डाकुओं का साथ क्योंकर हुआ जो गयाजी की रिआया को दुःख देते थे।

कमला०। कामिनी का उन डाकुओं से मिलना केवल उन लोगों को धोखा देने के लिए था। वे डाकू सब अग्निदत्त की तरफ से तनख्वाह और लूट के माल में कुछ हिस्सा भी पाते थे। वे लोग कामिनी को पहिचानते थे और उसकी इज्जत करते थे। उस समय उन लोगों को यह नहीं मालूम था कि कामिनी अपने बाप से रंज होकर घर से निकली है इसलिए उससे डरते थे और जो वह कहती थी करते थे। आखिर कामिनी ने धोखा देकर उन लोगों को मरवा डाला और मेरे ही हाथ से उन डाकुओं की जानें गईं। वे डाकू लोग जहाँ रहते थे आपको मालूम हुआ ही होगा।

वीरेन्द्र०। हाँ मालूम हुआ है, जो कुछ मेरा शक था मिट गया, अब उस विषय में विशेष कुछ मालूम करने की कोई जरूरत नहीं है। अब मैं यह पूछता हूँ कि इस रोहतासगढ़ वाले आदमी जब किशोरी को ले भागे तब तेरा और कामिनी का क्या हाल हुआ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमला० । कामिनी को साथ लेकर मैं उस खंडहर से जिसमें नाहरसिं और कुँअर इन्द्रजीतसिंह से लड़ाई हुई थी बाहर निकली और किशोरी को की धुन में रवाना हुई मगर कुछ कर न सकी बल्कि यों कहना चाहिए कि तक मारी फिरती हूँ। यद्यपि इस रोहतासगढ़ के महल तक पहुँच चुकी थी मेरे हाथ से कोई काम न निकला।

वीरेन्द्र० । खैर कोई हर्ज नहीं, अच्छा यह बता कि अब कामिनी कहाँ

कमला० । कामिनी को मेरे चाचा शेरसिंह ने अपने एक दोस्त में रक्खा है मगर मुझे यह नहीं मालूम कि वह कौन है और कहाँ रहता है।

वीरेन्द्र० । शेरसिंह से कामिनी क्योंकर मिली ?

कमला० । यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक खंडहर है। शेरसिंह से मिल लिए कामिनी को साथ लेकर मैं उसी खंडहर में गई थी, मगर अब सुनने में है कि शेरसिंह ने आपकी तावेदारी कबूल कर ली और आपने उन्हें कहीं भेज

वीरेन्द्र० । हाँ, वह देवीसिंह को साथ लेकर इन्द्रजीत को छुड़ाने के गये हैं मगर न मालूम क्या हुआ कि अभी तक नहीं लौटे।

कमला० । कुँअर इन्द्रजीतसिंह तो यहाँ से दूर न थे और चाचा को वह मालूम थी, अब तक उन्हें लौट आना चाहिए था।

वीरेन्द्र० । क्या तुझे भी वह जगह मालूम है ?

कमला० । जी हाँ, यहाँ से शायद पच्चीस या तीस कोस से ज्यादे होगा। एक छोटा सा तालाब है जिसके बीच में एक खूबसूरत मकान बना है, कुमार उसी में हैं।

वीरेन्द्र० । क्या तू वहाँ तक मुझे ले जा सकती है ?

कमला० । जी हाँ आप जब चाहें चलें, मुझे रास्ता बखूबी मालूम है।

इस समय कुँअर आनन्दसिंह ने जो सिर झुकाए सब बातें सुन रहे थे पिता की तरफ देखा और कहा, "यदि आज्ञा हो तो मैं कमला के साथ भाई खोज में जाऊँ ?" इसके जवाब में राजा वीरेन्द्रसिंह ने सिर हिलाया अर्थात् अर्जी नामंजूर की।

राजा वीरेन्द्रसिंह और कमला में जो कुछ बातें हो रही थीं सब कोई सुन रहे थे। यह कहना जरा मुश्किल है कि उस समय कुँअर आनन्दसिंह की दशा थी। कामिनी के वे सच्चे आशिक थे मगर जाहिर दिल, इस इश्क उन्होंने जैसा छिपाया उन्हीं का काम था। इस समय वे कमला की बातें बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सुन रहे थे। उन्हें निश्चय था कि जिस जगह शेरसिंह ने कामिनी को रक्खा है वह जगह कमला को मालूम है मगर किसी कारण से बताती नहीं, इसलिये कमला के साथ भाई की खोज में जाने के लिये पिता से आज्ञा माँगी। इसके सिवाय कामिनी के विषय में और भी बहुत सी बातें कमला से पूछा चाहते थे, मगर क्या करें, लाचारि कि उनकी अर्जी नामंजूर की गई और वे कलेजा मसोस कर रह गए।

इसके बाद आनन्दसिंह फिर अपने पिता के सामने गए और हाथ जोड़ कर बोले, "मैं एक बात और अर्ज किया चाहता हूँ।"

वीरेन्द्र०। वह क्या?

आनन्द०। इस रोहतासगढ़ की गद्दी पर मैं बैठाया गया हूँ परन्तु मेरी इच्छा है कि बतौर सूबेदार के यहाँ का राज्य किसी के सुपुर्द कर दिया जाय।

आनन्दसिंह की बात सुन राजा वीरेन्द्रसिंह गौर में पड़ गए और कुछ देर तक सोचने के बाद बोले, "हाँ मैं तुम्हारी इस राय को पसन्द करता हूँ और इसका बन्दोबस्त तुम्हारे ही ऊपर छोड़ता हूँ, तुम जिसे चाहो इस काम के लिए चुन लो।"

आनन्दसिंह ने झुक कर सलाम किया और उन लोगों की तरफ देखा जो वहाँ मौजूद थे। इस समय सभों के दिल में खुटका पैदा हुआ और सभी इस बात से डरने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि यहाँ का बन्दोबस्त मेरे सुपुर्द किया जाय, क्योंकि उन लोगों में से कोई भी ऐसा न था जो अपने मालिक का साथ छोड़ना पसन्द करता। आखिर आनन्दसिंह ने सोच समझ कर अर्ज किया—

आनन्द०। मैं इस काम के लिए पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी को पसन्द करता हूँ।

वीरेन्द्र०। अच्छी बात है, कोई हर्ज नहीं!

ज्योतिषीजी ने बहुत कुछ उज्र किया, बावेला मचाया, मगर कुछ सुना नहीं गया। उसी दिन से मुद्दत तक रोहतासगढ़ ब्राह्मणों की हुकूमत में रहा और यह हुकूमत हुमायूँ के जमाने में ९४४ हिजरी तक कायम रही, इसके बाद ९४५ में दगाबाज शेरखाँ ने (यह दूसरा शेरखाँ था) रोहतासगढ़ के राजा चिन्तामन ब्राह्मण को धोखा देकर किले पर अपना कब्जा कर लिया।

तेरहवाँ बयान

तहखाने में बैठी हुई कामिनी को जब किसी के आने की आहट मालूम हुई तब वह सीढ़ी की तरफ देखने लगी मगर आने वाले अभी छत ही पर थे। उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझा कि कमला या शेरसिंह आते होंगे मगर जब उसे कई आदमियों के की धमधमाहट मालूम हुई तब वह घबराई। उसका ख्याल दुश्मनों की तरफ और वह अपने बचाव का ढंग करने लगी।

ऊपर के कमरे से तहखाने में उतरने के लिए जो सीढ़ियाँ थीं उसके नीचे छोटी कोठरी बनी हुई थी। इसी कोठरी में शेरसिंह का असबाब रहा करता और इस समय भी उनका असबाब इसी के अन्दर था। इसके अन्दर जाने लिये एक छोटा सा दर्वाजा था और लोहे का मजबूत मगर हलका पल्ला लगा था। दर्वाजा बन्द करने के लिए बाहर की तरफ कोई जंजीर या कुण्डी न थी भीतर की तरफ एक अड़ानी लगी हुई थी जो दर्वाजा बन्द करने के लिए का थी। दर्वाजे के पल्ले में एक सूराख था जिस पर गौर करने से मालूम होता था वह ताली लगाने की जगह है।

कामिनी ने तुरत चिराग बुझा दिया और अपने बिछावन को बगल में द कर उसी कोठरी के अन्दर चले जाने बाद भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया। काम कामिनी ने बड़ी जल्दी और दबे पैर किया। थोड़ी ही देर में कामिनी मालूम हुआ कि आने वाले अब सीढ़ी उतर रहे हैं और साथ ही इसके ता लगाने वाले छेद में से मशाल की रोशनी भी उस कोठरी के अन्दर पहुँची जिस कामिनी छिपी हुई थी। वह छेद में आँख लगा कर देखने लगी कि कौन आ है और क्या करता है।

सिपाहियाना ठाठ के पाँच आदमी ढाल तलवार लगाये हुए दिखाई पड़े एक के हाथ में मशाल थी और चार आदमी एक सन्दूक को उठा कर लाये थे जमीन पर सन्दूक रख देने बाद पाँचों आदमी बैठ कर दम लेने और आपुस यों बातचीत करने लगे—

मशाल वाला०। जहन्नुम में जाय ऐसी नौकरी, दौड़ते दौड़ते हैरान हो गये, ओफ

दूसरा०। खैर दौड़ना और हैरान होना भी सुफल होता अगर कोई नेक का हम लोगों के सुपुर्द होता।

तीसरा०। भाई चाहे जो हो मगर बेगुनाहों का खून नाहक मुझसे तो नहीं किया जाता!

चौथा०। मुश्किल तो यह है कि हम लोग इनकार भी नहीं कर सकते और भाग भी नहीं सकते।

पाँचवाँ०। परसों जो हुक्म हुआ है सो तुमने सुना या नहीं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मशाल०। हाँ मुझे मालूम है।

तीसरा० । मैंने नहीं सुना, क्योंकि मैं नानक का पता लगाने गया था ।

पाँचवाँ० । परसों यह हुक्म दिया गया है कि जो कोई कामिनी को पकड़ लायेगा या पता लगा देगा उसे मुँहमाँगी चीज इनाम में दी जायगी ।

तीसरा० । हम लोगों की ऐसी किस्मत कहाँ कि कामिनी हाथ लगे !

दूसरा० । (चौंक कर) चुप रहो, देखो किसी की आवाज आ रही है !

किशोरी से बात करते करते जब किसी के आने की आहट मालूम हुई तो कामिनी चुप कर गई थी। किशोरी को ताज्जुब मालूम हुआ कि यकायक कामिनी चुप क्यों हो गई ? थोड़ी देर तक राह देखती रही कि शायद अब बोले, मगर जब देर हो गई तो उसने खुद पुकारा और कहा, "क्यों बहिन, चुप क्यों हो गई ?" यही आवाज उन पाँचों आदमियों ने सुनी थी। उन लोगों ने बातें करना छोड़ दिया और आवाज की तरफ ध्यान लगाया । फिर आवाज आई—"बहिन कामिनी, कुछ कहो तो सही, तुम चुप क्यों हो गई ? क्या ऐसे समय में तुमने भी मुझे छोड़ दिया ! बात करना भी बुरा मालूम होता है !"

किशोरी की बातें सुन कर पाँचों आदमी ताज्जुब में आ गये और उन लोगों को एक प्रकार की खुशी हुई ।

एक० । उसी किशोरी की आवाज है, मगर वह कामिनी को क्यों पुकार रही है ? क्या कामिनी उसके पास पहुँच गई ?

दूसरा० । क्या पागलपन की बातें कर रहे हो ? कामिनी अगर किशोरी के पास पहुँच जाती तो वह पुकारती क्यों, धीरे धीरे आपुस में बात करती या इस तरह उसे लानत देती ।

तीसरा० । अजी यह तो वाही हैं, मैं समझता हूँ कामिनी इस कोठरी में जरूर आई थी ।

दूसरा० । आई थी तो गई कहाँ ?

चौथा० । हम लोगों के आने के पहिले ही कहीं चली गई होगी ।

दूसरा० । (हँस कर) क्या खूब ! अजी किशोरी का यह कहना कि—"क्यों बहिन, चुप क्यों हो गई !" इस बात को साबित करता है कि वह अभी अभी इस कोठरी में मौजूद थी ।

पाँचवाँ० । तुम्हारा कहना ठीक है मगर यहाँ तो कामिनी की बू तक नहीं आती ।

दूसरा० । (चारो तरफ देख और उस कोठरी की तरफ इशारा करके) इसी में होगी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाँचों ही यह कहने लगे कि 'कामिनी जरूर इसी कोठरी में होगी, हम लोगों
आने की आहट पाकर छिप गई है'। आखिर पाँचों उस कोठरी के पास गए।
ने दर्वाजे में धक्का मारा और किवाड़ बन्द पाकर कहा—"है है, जरूरी इसी में है

कोठरी के अन्दर छिप कर बैठी बेचारी कामिनी सब बातें सुन रही
और ताली के छेद में से सभों को देख भी रही थी। ऊपर लिखी बातों ने उस
कलेजा दहला दिया, यहाँ तक कि वह अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गई
उसे निश्चय हो गया कि अब ये लोग मुझे गिरफ्तार कर लेंगे।

पाँचों आदमी इस फिक्र में लगे कि किस तरह दर्वाजा खुले और कामि
को गिरफ्तार कर लें। एक ने कहा, "दर्वाजा तोड़ दो!" दूसरे ने हँस
जवाब दिया—"शायद यह तुम्हारे किए हो सकेगा।"

उन पाँचों ने बहुत कुछ जोर मारा, कामिनी को पुकारा, दिलासा दि
धमकी दी, जान बचा लेने का वादा किया और समझाया मगर कुछ काम
चला। कामिनी बोली तक नहीं। आखिर उनमें से एक ने जो सभों से चा
और होशियार था कहा, "अगर इस दर्वाजे को हम पहिले कभी बन्द देखते
जरूर समझते कि किसी जानकार ने बाहर से ताला लगा कर बन्द किया
मगर अभी थोड़े ही दिन हुए इस कोठरी को मैंने खुला देखा था, इसमें ि
का असबाब पड़ा हुआ था। जो हो यह तो निश्चय हो गया कि कामिनी
कोठरी के अन्दर घुस कर बैठी है, अब बाबाजी आवें तो इस कोठरी का दर्वा
खुले। (कुछ सोच कर) अब तो यही मुनासिब है कि हम लोगों में से एक आ
जाय और बाकी चार आदमी बारी बारी से यहाँ पहरा दें जिसमें कामिनी नि
कर भाग न जाय। आखिर इस कोठरी में कब तक छिप कर बैठी रहेगी
अपनी भूख प्यास का क्या बन्दोबस्त करेगी?"

सभों ने इस राय को पसन्द किया। एक आदमी अपने मालिक को ख
करने चला गया, एक तहखाने में उसी जगह बैठा रहा और तीन आदमी ब
खंडहर में निकल आए और इधर उधर टहलने लगे। सवेरा हो गया और
तरफ सूर्य की लालिमा दिखाई देने लगी।

बेचारी कामिनी की जान आफत में फँस गई, देखा चाहिए क्या होता
मगर उसने निश्चय कर लिया है कि भूख और प्यास से चाहे जान निकल
मगर कोठरी के बाहर न निकलूँगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
उस बेचारी को कोठरी के अन्दर घुस कर बैठे तीन दिन हो गए। भूख

स से उस बेचारी को क्या अवस्था हो गई होगी" यह पाठक स्वयं समझ ते हैं लिखने की कोई आवश्यकता नहीं।

हम ऊपर लिख आए हैं कि उन पाँचों में से एक आदमी अपने मालिक को र करने चला गया और बाकी चार इसलिए रह गए कि बारी बारी से पहरा जिसमें कामिनी निकल कर भाग न जाय।

तीसरे दिन इनमें से तीन आदमी आपुस में बातें करते और घूमते फिरते डहर के बाहर निकले और फाटक पर खड़े होकर बातें करने लगे।

एक०। इसमें कोई शक नहीं कि हम लोगों का नसीब जाग गया।

दूसरा०। नसीब जागा तो हम नहीं कह सकते, हाँ इतनी बात है कि रकम हरी हाथ लगेगी।

तीसरा०। मुँहमाँगा इनाम क्या हम लोग नहीं पा सकते?

दूसरा०। नहीं।

तीसरा०। सो क्यों?

दूसरा०। हम लोग कामिनी को अगर पकड़ ले जाते तो मुँहमाँगा इनाम पाते, सो तो हुआ नहीं, कामिनी कोठरी के अन्दर घुस बैठी और हम लोग र्वाजा खोल कर उसे निकाल न सके, लाचार बाबाजी को बुलाना पड़ा, ऐसी अवस्था में जो कुछ इनाम मिल जाय वही बहुत है।

पहिला०। इतना तो कहला भेजा कि हम लोगों ने कामिनी को इस तहखाने में फँसा रक्खा है।

दूसरा०। खैर जो होगा देखा जायगा, इस समय तो हम लोगों की जीत ही जीत मालूम होती है। कामिनी और किशोरी दोनों ही को हमारे मालिक की किस्मत ने इस तहखाने में कैद कर रक्खा है।

तीसरा०। (चौंक कर) जरा इधर तो देखो ये लोग कौन हैं, मालूम होता है कि इन लोगों ने हमारी बातें सुन लीं।

खंडहर के बाहर बाएँ तरफ कुछ हट कर एक नीम का पेड़ था और उस पेड़ के नीचे एक कूआँ था। इस समय दो साधू उस कूएँ पर बैठे इन तीनों की बातें सुन रहे थे। जब उन तीनों को यह बात मालूम हुई तो डरे और उन साधुओं के पास जाकर बातचीत करने लगे—

एक आदमी०। तुम दोनों यहाँ क्यों बैठे हो?

एक साधू०। हमारी खुशी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक आदमी० । अच्छा अब हम कहते हैं कि उठो और यहाँ से चले

एक साधू० । तू है कौन जो तेरी बात मानें ?

एक आदमी० । (तलवार खैंच कर) यह न जानना कि साधू समझ के दूंगा, नाहक गुस्सा मत दिलाओ ।

साधू० । (हंस कर) वाह रे बन्दर घुड़की ! अबे क्या तू हम लोगों को समझ रहा है ?

इतना सुनते ही तीनों आदमियों ने गौर करके साधुओं को देखा और यक यह कहते हुए कि 'हाय गजब हो गया, यहाँ से भागो, यहाँ से वहाँ से भागे । जहाँ तक हो सका उन लोगों ने भागने में कसर न की । साधुओं ने उन लोगों को रोकना मुनासिब न समझा और भागने दिया ।

अब वे दोनों साधू वहाँ से उठे और बातें करते हुए खंडहर के अन्दर घूमते फिरते दालान में पहुँचे और दर्वाजा खोलते हुए उस तहखाने में उत जिसमें कामिनी थी । इस तहखाने और दर्वाजे का हाल हम ऊपर लिख पुनः लिखने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती, हाँ इतना जरूर कहेंगे ढंग से मालूम होता था कि ये दोनों साधू तहखाने और उसके रास्ते को जानते हैं नहीं तो ऐसा आदमी जो दर्वाजे का भेद न जानता हो उस तह किसी तरह नहीं पहुँच सकता था ।

जब दोनों साधू तहखाने में पहुँचे तो वहाँ एक सिपाही को पाया और पर भी नजर पड़ी । एक मोमबत्ती आले पर जल रही थी । वह सिपा दोनों को देख चौंका और तलवार खैंच कर सामना करने पर मुस्तैद हुआ साधू ने झपट कर उसकी कलाई पकड़ ली और दूसरे ने उसकी गर्दन ऐसा घूंसा जमाया कि वह चक्कर खा कर गिर पड़ा । उसकी तलवार गई और बेहोश कर चादर से जो कमर में लपेटी हुई थी उसकी मुश्कें गईं । इसके बाद दोनों साधू उस सन्दूक की तरफ बढ़े । सन्दूक में ताल हुआ न था बल्कि एक रस्सी उसके चारो तरफ लपेटी हुई थी । रस्सी खो और उस सन्दूक का पल्ला उठाया गया, एक साधू ने मोमबत्ती हाथ में झांक कर सन्दूक के अन्दर देखा, देखते ही "हाय !" कह कर जमीन प पड़ा । इसके बाद दूसरे ने देखा और उसकी भी यही अवस्था हुई ।

॥ पाँचवां भाग समाप्त ॥

३२वां संस्करण] १९७८ ई० [२२००

लहरी प्रेस, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

छठवां भाग

पहिला बयान

वे दोनों साधू जो सन्दूक के अन्दर झांक न मालूम क्या देख कर बेहोश हो गए थे थोड़ी देर बाद होश में आए और चीख चीख कर रोने लगे। एक ने कहा, "हाय इन्द्रजीतसिंह, तुम्हें क्या हो गया! तुमने तो किसी के साथ बुराई न की थी, फिर किस कम्बख्त ने तुम्हारे साथ बदी की? प्यारे कुमार, तुमने बड़ा बुरा धोखा दिया, हम लोगों को छोड़ कर चले गए, क्या दोस्ती का हक इसी तरह अदा करते हैं? हाय अब हम लोग जी कर क्या करेंगे, अपना काला मुंह ले कर कहां जावेंगे? हमको अपने भाई से बढ़कर मानने वाला अब दुनिया में कौन रह गया। तुम हमें किसके सुपुर्द करके चले गये?"

दूसरा बोला—"प्यारे कुमार, कुछ तो बोलो, जरा अपने दुश्मन का नाम बताओ, कुछ कहो तो सही कि किस बेईमान ने तुम्हें मार कर इस सन्दूक में डाल दिया? हाय अब हम तुम्हारी मां बेचारी चन्द्रकान्ता के पास कौन मुंह लेकर जायेंगे? किस मुंह से कहेंगे कि तुम्हारे प्यारे होनहार लड़के को किसी ने मार डाला! नहीं नहीं, ऐसा न होगा, हम लोग जीते जी लौट कर घर न जायेंगे, इसी जगह जान दे देंगे? नहीं नहीं, अभी तो हमें उससे बदला लेना है जिसने हमारा सर्वनाश कर डाला। प्यारे कुमार, जरा तो मुंह से बोलो, जरा आंखें खोल कर देखो तो सही तुम्हारे पास कौन खड़ा रो रहा है। क्या तुम हमें भूल गए? हाय, यह यकायक कहां से गजब आकर टूट पड़ा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो पाठक समझ गए होंगे कि इस सन्दूक में कुंअर इन्द्रजीतसिंह को

लाश थी और ये दोनों साधू उनके दोस्त भैरोसिंह और तारासिंह थे। इन दो
के रोने से कामिनी असल बात समझ गई, झट कोठरी के बाहर निकल
और मोमबत्ती की रोशनी में कुमार की लाश देख जोर जोर से रोने लगी
किशोरी इस तहखाने के बगल वाली कोठरी में थी। उसने जो कुँअर इन्द्र
सिंह का नाम ले लेकर रोने की आवाज़ सुनी तो उसकी अजब हालत हो
उसका पका हुआ दिल इस लायक न था कि इतनी ठेस सम्हाल सके, बस
दफे 'हाय' की आवाज तो उसके मुँह से निकली मगर फिर तनोबदन की
न रही। वह ऐसी जगह न थी कि कोई उसके पास जाय या उसे सम्हाले
देखे कि उसकी क्या हालत है।

भैरोसिंह और तारासिंह ने जो कामिनी को देखा तो वह लोग फूट फूट
रोने लगे। तहखाने में हाहाकार मच गया। घण्टे भर यही हालत रही।
कामिनी ने रो कर यह कहा कि 'इसी के बगल वाली कोठरी में बेचारी कि
भी है, हाय, हम लोगों का रोना सुन कर उस बेचारी की क्या अवस्था
होगी'। तब भैरोसिंह और तारासिंह चुप हुए और कामिनी का मुँह देखने

भैरो०। तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यहाँ किशोरी भी है?

कामिनी०। मैं उससे बातें कर चुकी हूँ।

तारा०। क्या तुम बड़ी देर से इस तहखाने में हो?

कामिनी०। देर क्या मैं तो कई दिनों से भूखी प्यासी इस तहखाने में
हूँ। (उस आदमी की तरफ इशारा करके) यह मेरा पहरा देता था।

भैरो०। खैर जो होना था सो हो गया, अब हम लोग अगर रोने में
लगे रहेंगे तो इनके दुश्मन का पता न लगा सकेंगे और न उससे बदला
सकेंगे। यों तो जन्म भर रोना हुई है परन्तु जब इनके दुश्मन से बदला
तो कलेजे में कुछ ठण्ढक पड़ेगी। तुम यहाँ कैसे आईं और इन दुष्टों के
क्योंकर फँसीं खुलासा कहो तो शायद कुछ पता लगे।

कामिनी ने अपना खुलासा हाल कहा और इसके बाद पूछा, "तुम
का आना कैसे हुआ?"

भैरो०। कमला ने इस तहखाने का पता देकर हम लोगों को भेजा
थोड़ी ही देर में राजा बीरेन्द्रसिंह और कुँअर आनन्दसिंह भी बहुत से आ
को साथ लिए आया ही चाहते हैं, कमला भी उनके साथ है।
कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए किसी दूसरी जगह जाने वाले थे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे, यह क्या खबर थी कि रास्ते में ही हम लोगों पर यह पहाड़ टूट पड़ेगा।
ं, जब महाराज यहाँ आएंगे तो हम किस मुँह से कहेंगे कि तुम्हारे प्यारे
के की लाश इस तहखाने में पाई गई।

इसके बाद भैरोसिंह ने इस तहखाने में आने का बाकी हाल कहा तथा यह बताया कि 'जब खंडहर के बाहर कूएँ पर हम दोनों आदमी बैठे थे तभी न आदमियों की बातचीत से मालूम हो गया कि तुमको उन लोगों ने कैद र लिया है परन्तु यह आशा न थी कि तुम्हें इस अवस्था में देखेंगे। उन गों ने मुझे देखा तो पहिचान कर डरे और भाग गये मगर मुझे यह न लूम हुआ कि वे लोग कौन हैं और उन्होंने मुझे कैसे पहिचाना'?

कामिनी०। (हाथ का इशारा करके) उन्हीं लोगों में से एक यह भी है से तुमने बांध रक्खा है।

भैरो०। (उस आदमी से) बता तू कौन है?

आदमी०। बताने को तो मैं सब कुछ बता सकता हूँ परन्तु मेरी जान सी तरह न बचेगी।

भैरो०। क्या तुझे अपने मालिक का डर है।

आदमी०। जी हां।

भैरो०। मैं वादा करता हूँ कि तेरी जान बचाऊंगा और तुझे बहुत कुछ ाम भी दिखाऊँगा।

आदमी०। इस वादे से मेरी तबीयत नहीं भरती, क्योंकि मुझे तो आप गों ही के बचने की उम्मीद नहीं। हाय, क्या आफत में जान फँसी है! अगर छ कहें तो मालिक के हाथ से मारे जाँय और न कहें तो इन लोगों के हाथ दुःख भोगें!

भैरो०। तेरी बातों से मालूम होता है कि तेरा मालिक बहुत जल्द यहाँ या चाहता है?

आदमी०। बेशक ऐसा ही है।

यह सुनते ही भैरोसिंह ने तारासिंह के कान में कुछ कहा और उनका यारी का बटुआ लेकर अपना बटुआ उन्हें दे दिया जिसे ले वे तुरन्त वहाँ से ाना हुए और तहखाने के बाहर निकल गए। तारासिंह ने जल्दी जल्दी खंड-हर के बाहर होकर उस कूएँ में से एक लुटिया पानी खींचा और बटुए में से ई चीज निकाल कर पत्थर पर रगड़ जल में घोल कर पीया, फिर एक लुटिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल निकाल कर वही चीज़ पत्थर पर घिस उस पानी में मिलाई और बहुत
तहखाने में पहुँचे, जल की लुटिया भैरोसिंह के हाथ में दी, भैरोसिंह ने ब
कुछ खाने की चीज निकाली और कामिनी से कहा, "इसे खाकर यह जल पी

कामिनी० । भला खाने और जल पीने का यह कौन सा मौका है ?
मैं कई दिनों से भूखी हूँ परन्तु क्या कुमार की लाश के सिरहाने बैठ क
सकूँगी, क्या यह अन्न मेरे गले के नीचे उतरेगा ?

भैरो० । हाय, इस बात का मैं कुछ भी जवाब नहीं दे सकता । बैर
पानी में से थोड़ा तुम्हें पीना ही पड़ेगा । अगर इससे इन्कार करोगी तो
सब लोग मारे जाँयगे । (धीरे से कुछ कह कर) बस देर न करो ।

कामिनी० । अगर ऐसा है तो मैं इन्कार नहीं कर सकती ।

भैरोसिंह ने उस लुटिया में से आधा जल कामिनी को पिलाया और
आप पीकर लुटिया तारासिंह के हवाले की । तारासिंह तुरन्त तहखाने
बाहर निकल आए और जहाँ तक जल्द हो सका इधर उधर से सूखी
ड़ियाँ और कण्डे बटोरकर खण्डहर के बीच में एक जगह रक्खा, तब व
चकमक पत्थर निकाला और उसमें से आग झाड़ कर गोठों और लकड़ि
सुलगाया ।

तारासिंह यह सब काम बड़ी फुर्ती से कर रहे थे और घड़ी घड़ी
बाहर मैदान की तरफ देखते भी जाते थे । आग सुलगाने के बाद जब ता
ने मैदान की तरफ देखा तो बहुत दूर पर गर्द उड़ती हुई दिखाई दी । व
काम में फिर जल्दी करने लगे । बटुए में से एक शीशी निकाली जिस
प्रकार का तेल था, वह तेल आग में डाल दिया, आग पर दो तीन द
का छींटा दिया, फिर मैदान की तरफ देखा । मालूम हुआ कि दस पन्द्रह
घोड़ों पर सवार बड़ी तेजी से इसी तरफ आ रहे हैं । उस समय तार
मुँह से यकायक निकल पड़ा—"ओफ, अगर जरा भी देर होती तो काम
ही चुका था, खैर अब ये लोग कहां जा सकते हैं !"

आग में से बहुत ज्यादे धूआं निकला और खण्डहर भर में फैल गया
बाद तारासिंह खंडहर के बाहर निकले और कूएँ के पास जा कर नीम
पर चढ़ गए तथा अपने को घने पत्तों की आड़ में छिपा लिया । वह पे
ऊँचा था कि उस पर से खंडहर के भीतर का मैदान साफ नजर पड़ता
सवार जिन्हें तारासिंह ने दूर से देखा था अब खंडहर के पास आ पहुँचे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने पेड़ पर चढ़े चढ़े गिना तो मालूम हुआ कि बारह सवार हैं। उनमें सब आगे एक साधू था जिसकी सफेद दाढ़ी नाभी तक पहुंच रही थी।

पाठक, यह वही बाबाजी हैं जिन्होंने रोहतासगढ़ में राजा दिग्विजयसिंह पास रात के समय पहुंच कर उन्हें भड़काया और राजा बीरेन्द्रसिंह वगैरह कैद कराया था।

खंडहर के पास पहुंच कर वे लोग रुके। घोड़ों की बागडोरें पत्थरों से अटकों र दस आदमी तो खंडहर के अन्दर घुसे और दो आदमी घोड़ों की हिफाजत के लिए बाहर रह गये।

खंडहर के अन्दर धूआं देख कर बुड्ढे साधू ने कहा, "यह धूआं कैसा है!"

एक०। किसी मुसाफिर ने आकर रसोई बनाई होगी।

दूसरा०। मगर धूआं बहुत कड़ुआ है।

तीसरा०। ओफ, आंख नाक से पानी बहने लगा।

साधू०। अगर किसी मुसाफिर ने यहां आकर रसोई पकाई होती तो हांडी त्तल और पानी का बर्तन इत्यादि कुछ और भी तो यहां दिखाई देता! (एक आदमी की तरफ देख कर) हमें इस धूएं का रंग बेढब मालूम होता है, इसकी कड़वाहट इसकी रंगत और इसकी बू कहे देती है कि धूएं में बेहोशी का असर है। हैं, है, जरूर ऐसा ही है, कुछ अमल भी आ चला और सिर भी घूमने लगा! (जोर से) अरे बहादुरों, बेशक तुम लोग धोखे में डाले गए, यहां कोई ऐयार आ पहुंचा है, क्या ताज्जुब है अगर तहखाने में से कामिनी को निकाल कर ले गया हो।

नीम के पेड़ पर बैठे हुए तारासिंह उस साधू की सब बातें सुन रहे थे क्योंकि वह नीम का पेड़ खंडहर के फाटक के पास ही था। साधू की बातें अभी पूरी न होने पाई थीं कि खंडहर के पिछवाड़े की तरफ से एक आदमी दौड़ता हुआ आया। मालूम होता है कि साधू की आखिरी बात उसने सुन ली थी क्योंकि पहुंचने के साथ ही उसने पुकार कर कहा, "नहीं नहीं, कामिनी को कोई निकाल कर नहीं ले गया मगर इसमें भी सन्देह नहीं कि बीरेन्द्रसिंह के दो ऐयार यहां आए हैं, एक तहखाने के अन्दर है दूसरा (हाथ का इशारा करके) उस नीम के पेड़ पर चढ़ा हुआ है।"

साधू०। बस तब तो मार लिया। बेशक हम लोग आफत में फंस गए हैं परन्तु कामिनी और इन्द्रजीत, जिन्हें तुम लोग तहखाने में पहुंचा चुके हो, अब बाहर नहीं जा सकते। ताज्जुब नहीं कि इन ऐयारों ने इन्द्रजीतसिंह को मुर्दा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझ लिया हो ! देखो मैं शाहदर्वाजे को अभी ऐसा बन्द करता हूँ कि ऐयार का बाप भी तहखाने में न जा सकेगा ।

इसके जवाब में उस आदमी ने जो अभी दौड़ता हुआ आया था "हमारा एक आदमी भी तहखाने में ही है ।"

साधू०। खैर अब तो उसका भी उसी तहखाने में घुट कर मर बेहतर है ।

तारासिंह ने उस आदमी को पहिचान लिया जो खंडहर के पिछवा तरफ से दौड़ता हुआ आया था । यह उन्हीं दोनों आदमियों में से था जो सिंह और तारासिंह को कूंए पर देख डर के मारे भाग गये थे, न मालूम छिप रहा था जो इस समय बाबाजी को देखकर बेधड़क आ पहुँचा ।

साधू ने धूए का खयाल बिल्कुल ही न किया और खंडहर के अन्द कर न मालूम किस कोठरी में घुस गया ।

तारासिंह को कुँअर इन्द्रजीतसिंह के मरने का जितना गम था उसे स्वयं समझ सकते हैं परन्तु उनका उस समय बड़ा ही आश्चर्य हुआ जब के मुँह से यह सुना कि 'ताज्जुब नहीं कि ऐयारों ने इन्द्रजीतसिंह को समझ लिया हो'! बल्कि यों कहना चाहिए कि इस बात ने तारासिंह को कर दिया । वे अपने दिल में सोचने लगे कि बेशक हम लोगों ने धोखा मगर न मालूम उन्हें कैसी दवा खिलाई गई जिसने बिल्कुल मुर्दा ही बना दि यदि इस समय भैरोसिंह के पास पहुँच कर यह खुशखबरी सुनाई जाती तो ही अच्छी बात थी, मगर कम्बख्त साधू तो कहता है कि मैं शाहदर्वाजा कर देता हूँ जिसमें फिर कोई आदमी तहखाने में न जा सके । यदि ऐसा तो बड़ी ही मुश्किल होगी, इन्द्रजीतसिंह अगर जीते भी हैं तो अब मर जां न मालूम यह शाहदर्वाजा कौन है और किस तरह खुलता और बन्द होता

वे लोग तो सुन ही चुके थे कि वीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार नीम के पे चढ़ा हुआ है । बाबाजी शाहदर्वाजा बन्द करने चले गये मगर तारासि इसकी कुछ भी चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे इस बात को बखूबी जानते थे बेहोशी का धूआं जो इस खंडहर में फैला हुआ है अब इन लोगों को ज्यादे तक ठहरने न देगा, थोड़ी ही देर में बेहोशी आ जायगी और फिर किसी न रहेंगे, और आखिर ऐसा ही हुआ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यद्यपि वे लोग ज्यादे धूएं में नहीं फँसे थे तो भी जो कुछ उन लोगों

आंखों में लगा था और नाक की राह से पेठ में गया था वही उन लोगों को बेदम करने के लिए काफी था। वे लोग कूए पर आ पहुँचे और चारो तरफ से इस नीम के पेड़ को घेर लिया। इस समय उन लोगों की अवस्था शराबियों की सी हो रही थी। उसी समय तारासिंह ने पेड़ पर से चिल्ला कर कहा, "ओ हो हो हो, क्या अच्छे वक्त पर हमारा मालिक आ पहुँचा। अब जरूर इन कम्बख्तों की जान जायगी !!"

तारासिंह की बात सुनते ही वे लोग ताज्जुब में आ गये और मैदान की तरफ देखने लगे। वास्तव में पूरब की तरफ गर्द उठ रही थी और मालूम होता था कि किसी राजा की सवारी इस तरफ आ रही है। उन लोगों के दिमाग में अब बेहोशी का असर अच्छी तरह हो गया था। वे लोग बैठ गए और फिर जमीन पर लेट कर दीन दुनिया से बेखबर हो गये।

तारासिंह की निगाह उसी गर्द की तरफ थी। धीरे धीरे आदमी और घोड़े दिखाई देने लगे और जब थोड़ी दूर रह गये तो साफ मालूम हो गया कि कई सवारों को साथ लिए राजा बीरेन्द्रसिंह आ पहुँचे। ऐयारों में तेजसिंह और पंडित बद्रीनाथ उनके साथ थे और मुश्की घोड़े पर सवार कमला आगे आगे आ रही थी। जब तक वे लोग खंडहर के पास आवें तब तक तारासिंह पेड़ के नीचे उतरे, कूए में से एक लुटिया जल निकाल कर मुँह हाथ धोया और कुछ आगे बढ़ कर उन लोगों से मिले। बीरेन्द्रसिंह ने तारासिंह से पूछा, "कहो क्या हाल है?"

तारा०। विचित्र हाल है।

वीरेन्द्र०। सो क्या, भैरो कहां है ?

तारा०। भैरोसिंह इसी खंडहर के तहखाने में हैं, और किशोरी कामिनी तथा कुंअर इन्द्रजीतसिंह भी उसी तहखाने में कैद है।

तारासिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह का जो कुछ हाल तहखाने में देखा था वह किसी से कहना मुनासिब न समझा क्योंकि सुनते ही वे लोग अधमरे हो जाते और किसी काम लायक न रहते और बीरेन्द्रसिंह की तो न मालूम क्या हालत होती, सिवाय इसके यह भी मालूम हो ही चुका था कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह मरे नहीं हैं, ऐसी अवस्था में उन लोगों को बुरी खबर सुनाना बुद्धिमानी के बाहर था इस लिए तारासिंह ने इन्द्रजीतसिंह के बारे में बहुत सी बातें बना कर कहीं जैसा कि आगे चल कर मालूम होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंअर आनन्दसिंह ने जब तारासिंह की जुबानी यह सुना कि कामिनी इसी तहखाने में कैद है तो बहुत ही खुश हुए और सोचने लगे कि अब थोड़ी में माशूका से मुलाकात हुआ ही चाहती है, ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि ढूंढ़ने पता लगाने की नौबत न पहुँची। उन्होंने सोचा कि बस अब हमारे दुःख नाटक का अन्त हुआ ही चाहता है।

वीरेन्द्रसिंह ने फिर तारा से पूछा, "क्या तुमने अपनी आंखों से उन को इस तहखाने में कैद देखा है?"

तारा०। जी हां, कुंअर इन्द्रजीतसिंह और कामिनी से तो हम दोनों आ मिल चुके हैं और भैरोसिंह उन दोनों के पास ही हैं, मगर किशोरी को हम न देख सके, कामिनी की जुवानी मालूम हुआ कि जिस तहखाने में वह है के वगल वाली कोठरी में किशोरी भी कैद है। पर कोई तर्कीब ऐसी न निक जिससे हमलोग किशोरी तक पहुँच सकते।

वीरेन्द्र०। क्या यहां की कोठरियों और दर्वाजों में किसी तरह का भेद

तारा०। भेद क्या मुझे तो यह एक छोटा तिलिस्म ही मालूम होता

वीरेन्द्र०। भला तुम और भैरोसिंह इन्द्रजीतसिंह के पास तक पहुंच गए उसे तहखाने के वाहर क्यों न ले आए?

तारा०। (कुछ अटक कर) मुलाकात होने पर हमलोग उसी तहखाने बैठ कर बातें करने लगे। दुश्मन का एक आदमी उस तहखाने में कैदियों निगहवानी कर रहा था। कैदी हथकड़ी और बेड़ी के सबब से बेबस थे। हम दोनों ने उस आदमी को गिरफ्तार किया और हाल जानने के लिए कुछ मारा पीटा तब वह राह पर आया। उसकी जुवानी मालूम हुआ कि लोगों का दुश्मन अर्थात् उसका मालिक बहुत से आदमियों को साथ ले यहां आ ही चाहता है। तब भैरोसिंह ने मुझे कहा कि इस समय हम लोगों का इस खाने से वाहर निकलना मुनासिब नहीं है, कौन ठिकाना बाहर निकल कर दुश्म से मुलाकात हो जाय। वे लोग बहुत होंगे और हम लोग केवल तीन आदमी ताज्जुब नहीं कि तकलीफ उठनी पड़े, इससे यही बेहतर है कि तु बाहर जा और जब दुश्मन लोग इस खंडहर में आ जायें तो तो उन्हें किसी तरह गिरफ्तार करो। उन्हीं की आज्ञा पाकर मैं अकेला उस तहखाने के बा र निकल आ और मैंने दुश्मनों को गिरफ्तार भी कर लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

तेज०। (खुश होकर और हाथ का इशारा करके) मालूम होता है कि

गग जो उस पेड़ के नीचे पड़े हैं और कुछ खंडहर के दर्वाजे पर दिखाई देते हैं व तुम्हारी ही कारीगरी से बेहोश हुए हैं, उन्हें किस तरह बेहोश किया ?

तारा० । खंडहर के अन्दर आग सुलगाई और उसमें बेहोशी की दवा डाली, ब तक वे लोग आवें तब तक धूआं अच्छी तरह फैल गया, ऐसी कड़ी दवा से लोग क्योंकर बच सकते थे, जरा सा धूआं आंख में लगना बहुत था । दुश्मनों केवल दो आदमी बच गये (घोड़ों की तरफ देख कर) हैं, मालूम होता है आपको आते देख वे लोग भाग गए, यह क्या हुआ !

तेज० । (चारो तरफ देख कर) खैर जाने दो क्या हर्ज है, हां तो अब हम लोगों को तहखाने में चलना चाहिए ।

तारा० । शायद अब हम लोग तहखाने में न जा सकें ।

कमला० । सो क्यों ?

तारा० । उन लोगों में एक साधू भी था, वह बड़ा ही चालाक और होशियार था । आंख में धूआं लगते ही समझ गया कि इसमें बेहोशी का असर है, अब दम के दम में हम लोग बेहोश हो जायेंगे । उसी समय एक आदमी ने जो पहिले हम लोगों को देख कर भाग गया था और छिप कर मेरी कार्रवाई देख रहा था पहुँच कर उसे हम लोगों के आने की खबर दे दी और यह भी कह दिया कि अभी तक कामिनी किशोरी और इन्द्रजीतसिंह तहखाने में हैं बल्कि राजा वीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार भी तहखाने में है । यह सुनते ही वह कुछ खुश हुआ और बोला, "अब हम लोग तो बेहोश हुआ ही चाहते हैं, धोखे में पड़ ही चुके हैं, मगर अब हम यहां के शाहदर्वाजे को बन्द कर देते हैं, फिर किसी की मजाल नहीं कि तहखाने में जा सके और उन लोगों को निकाल सके जो तहखाने के अन्दर अभी तक बैठे हुए हैं ।" इस बात को सुन कर उस जासूस ने कहा कि 'हम लोगों का एक आदमी भी उसी तहखाने में है ।' साधू ने जवाब दिया कि 'अब उसका भी उसी में घुट कर मर जाना बेहतर होगा' । फिर न मालूम क्या हुआ और उस साधू ने क्या किया अथवा शाहदर्वाजा कौन है और किस तरह खुलता या बन्द होता है !

तारासिंह की इस बात ने सभों को तरद्दुद में डाल दिया और थोड़ी देर तक वे लोग सोच विचार में पड़े रहे इसके बाद कमला ने कहा, "पहिले खंडहर में चल कर तहखाने का दरवाजा खोलना चाहिए, देखें खुलता है या नहीं, अगर खुल गया तो सोच विचार की कुछ जरूरत नहीं, यदि न खुल सका तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा जायेगा।"

इस बात को सभों ने पसन्द किया और राजा वीरेन्द्रसिंह ने कमला को आगे चलने और तहखाने का दरवाजा खोलने के लिए कहा। खँडहर में उस समय धूआं कुछ भी न था, सब साफ हो चुका था। कमला सभों को साथ लिए हुए उस दालान में पहुँची जहां से तहखाने में जाने का रास्ता था। मोमबत्ती जला कर हाथ में ली और बगल वाली कोठरी में जाकर मोमबत्ती तारासिंह के हाथ में दे दी। इस कोठरी में एक आलमारी थी जिसके पल्लों में दो मुट्ठे लगे हुए थे, इन्हीं मुट्ठों के घुमाने से दर्वाजा खुल जाता था और फिर उस कोठरी में पहुँच जाने से तहखाने में उतरने के लिए सीढ़ियां मिलती थीं। इस समय कमला ने इन्हीं दोनों मुट्ठों को कई बार घुमाया, वे घूम तो गए मगर दर्वाजा न खुला। इसके बाद तारासिंह ने और फिर तेजसिंह ने भी उद्योग किया मगर कोई काम न चला। तब तो सभों का जी बेचैन हो गया और विश्वास हो गया कि उस बेईमान साधू ने जो कुछ कहा सो किया। इस खँडहर में कोई शहदर्वाजा जरूर है जिसे साधू ने बन्द कर दिया और जिसके सबब से यह दर्वाजा अब नहीं खुलता।

सब लोग उस कोठरी से बाहर निकले और साधू को ढूँढ़ने लगे। खँडहर में और नीम के पेड़ के नीचे आठ आदमी बेहोश पड़े हुए थे जो सब होश में किए गए। दो आदमी जो घोड़ों की हिफाजत करने के लिए रह गये थे और बेहोश नहीं हुए थे वे तो न मालूम कहां भाग ही गए थे, अब साधू रह गए, मगर उनके शरीर का कहीं पता न लगा। चारों तरफ खोज होने लगी।

राजा वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह और तारासिंह को साथ लिए हुए कमला उस कोठरी में पहुँची जिसमें दीवार के साथ लगी हुई पत्थर की मूरत थी, जिसमें एक दफे रात के समय कामिनी जा चुकी थी, और जिसका हाल ऊपर के किसी बयान में लिखा जा चुका है। इसी कोठरी में पत्थर की मूरत के पास साधू महाशय बेहोश पड़े हुए थे।

तेज०। (मूरत को अच्छी तरह देख कर) मालूम होता है कि उस दर्वाजे से इस मूरत का कोई सम्बन्ध है।

वीरेन्द्र०। शायद ऐसा ही हो, क्योंकि मुझे यह खंडहर तिलिस्मी मालूम होता है। हाय, बेचारा लड़का इस समय कैसी मुसीबत में पड़ा हुआ है! दर्वाजा खुलने की तर्कीब किससे पूछी जाय और उसका कैसे पता लगे?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राय तो यह है कि इस खंडहर में जो कुछ मिट्टी चूना पड़ा है सब बाहर फेंकवा कर जगह साफ करा दो जाय और दीवार तथा जमीन भी खोदी जाय।

तेज०। मेरी भी यही राय है।

तारा०। जमीन और दीवार खुदने से जरूर काम चल जायगा। तहखाने की दीवार खोद कर हम लोग अपना रास्ता निकाल लेंगे वल्कि और भी बहुत सी वातों का पता लग जायगा।

वीरेन्द्र०। (तेजसिंह की तरफ देख के) वहुत जल्द बन्दोवस्त करो और दो आदमी रोहतासगढ़ भेज कर एक हजार आदमी की फौज वहुत जल्द मँगवाओ। वह फौज ऐसी हो कि सब काम कर सके अर्थात् जमीन खोदने सेंध लगाने सड़क वनाने इत्यादि का काम बखूबी जानती हो।

तेज०। वहुत खूब।

राजा वीरेन्द्रसिंह के साथ साथ सौ आदमी आये हुए थे, वे सव के सब काम में लग गये। वेहोश दुश्मनों के हाथ पैर बाँध दिये गये और उन्हें उठा कर एक दालान में रख देने के बाद सब लोग खंडहर की मिट्टी उठा उठा कर वाहर फेंकने लगे, जल्दी के मारे मालिकों ने भी काम में हाथ लगाया।

रात हो गई, कई मशाल भी जलाये गये, मिट्टी की सफाई वरावर जारी रही, मगर तारासिंह का विचित्र हाल था, घड़ी-घड़ी रुलाई आती थी और उसे वे वड़ी मुश्किल से रोकते थे। यद्यपि तारासिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह का हाल वहुत कुछ झूठ सच मिला कर राजा वीरेन्द्रसिंह से कहा था मगर वे बखूबी जानते थे कि इन्द्रजीतसिंह की अवस्था अच्छी नहीं है, उनकी लाश तो अपनी आँखों से देख ही चुके थे परन्तु साधू की वातों ने उनको कुछ तसल्ली कर दी थी। वे समझ गये थे कि इन्द्रजीतसिंह मरे नहीं वल्कि वेहोश हैं मगर अफसोस तो यह है कि यह वात केवल तारासिंह ही को मालूम है, भैरोंसिंह को भी यदि इस वात की खवर होती तो तहखाने में बैठे-बैठे कुमार को होश में लाने का कुछ उद्योग करते। कहीं ऐसा न हो कि वेहोशी में ही कुमार की जान निकल जाय, ऐसी कड़ी वेहोशी का नतीजा अच्छा नहीं होता है, इसके अतिरिक्त कई दिनों से कुमार वेहोशी की अवस्था में पड़े हैं, वेहोशी भी ऐसी कि जिसने विल्कुल ही मुर्दा बना दिया, क्या जाने जीते भी हैं या वास्तव में मर ही गये।

ऐसी-ऐसी वातों के विचार से तारासिंह वहुत ही बेचैन थे मगर अपने दिल का हाल किसी से कहते नहीं थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ से थोड़ी दूर पर एक गाँव था, कई आदमी दौड़ गये और कुदाल फरसा इत्यादि जमीन खोदने का सामान वहाँ से ले आये और बहुत से मजदूरों को साथ लिवाते आये। रात भर काम लगा रहा और सवेरा होते होते खंडहर साफ हो गया।

अब उस दालान की खुदाई शुरू हुई जिसके बगल वाली कोठरी के अन्दर से तहखाने में जाने का रास्ता था। हाथ भर तक जमीन खुदने के बाद पत्थर की सतह निकल आई जिसमें छेद होना भी मुश्किल था। यह देख वीरेन्द्रसिंह को भी बहुत रंज हुआ और उन्होंने खंडहर के बीच की जमीन अर्थात् चौक खोदने का हुक्म दिया।

दूसरे दिन चौक की खुदाई से छुट्टी मिली, खुद जाने पर वहाँ एक छोटी सी खूबसूरत बावली निकली जिसके चारो तरफ छोटी-छोटी संगमर्मर की सीढ़ियाँ थीं। यह बावली दस गज से ज्यादे गहरी न थी और इसके नीचे की सतह चार गज चौड़ी और इतनी ही लम्बी होगी। दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते उस बावली की मिट्टी निकल गई तो नीचे की सतह में पीतल की एक मूरत दिखाई पड़ी। मूरत बहुत बड़ी न थी, एक हरिन का शेर ने शिकार किया था, हरिन की गर्दन का आधा हिस्सा शेर के मुँह में था। मूरत बहुत ही खूबसूरत और कीमती थी मगर मिट्टी के अन्दर बहुत दिनों तक दबे रहने से मैली और खराब हो गई थी। वीरेन्द्रसिंह ने उसे अच्छी तरह झाड़ पोंछ कर साफ करने का हुक्म दिया।

वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह से कहा, "इस खुदाई में समय भी नष्ट हुआ और कुछ काम भी न निकला।"

तेज०। मैं इस मूरत पर अच्छी तरह गौर कर रहा हूँ मुझे आशा है कि कोई अनूठी बात जरूर दिखाई पड़ेगी।

वीरेन्द्र०। (ताज्जुब में आकर) देखो देखो शेर की आंखें इस तरह घूम रही हैं जैसे वह इधर उधर देख रहा हो!

आनन्द०। (अच्छी तरह देख कर) हां ठीक तो है!

इसी समय एक आदमी दौड़ता हुआ आया और हाथ जोड़ कर बोला, "महाराज, चारो तरफ से दुश्मन की फौज ने आकर हम लोगों का घेर लिया। दो हजार सवारों के साथ शिवदत्त आ पहुँचा, जरा मैदान की तरफ देखिए।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न मालूम शिवदत्त इतने दिनों तक कहाँ छिपा हुआ था और क्या कर रहा था। इस समय दो हजार फौज के साथ उसका यकायक आ पहुँचना

चारों तरफ से खंडहर को घेर लेना बड़ा ही दुखःदायी हुआ, क्योंकि वीरेन्द्रसिंह के पास इस समय केवल सौ सिपाही थे।

सूर्य अस्त हो चुका था, चारो तरफ से अन्धेरी घिरी चली आती थी। फौज सहित राजा शिवदत्त जब तक खंडहर के पास पहुँचे तब तक रात हो गई। राजा शिवदत्त को यह तो मालूम ही हो चुका था कि केवल सौ सिपाहियों के साथ राजा वीरेन्द्रसिंह कुँअर आनन्दसिंह और उनके ऐयार लोग इसी खंडहर में हैं, परन्तु राजा वीरेन्द्रसिंह कुमार और उनके ऐयारों की वीरता और साहस को भी वह अच्छी तरह जानता था, इस लिए रात के समय खंडहर के अन्दर घुसने की उसकी हिम्मत न पड़ी। यद्यपि उसके साथ दो हजार सिपाही थे मगर खंडहर के अन्दर डेढ़ दो सौ सिपाहियों से ज्यादे नहीं जा सकते थे क्योंकि उसके अन्दर ज्यादे जमीन न थी और वीरेन्द्रसिंह तथा उनके साथी इतने आदमियों को कुछ भी न समझते, इसलिए शिवदत्त ने सोचा कि रात भर इस खंडहर को घेर कर चुपचाप पड़े रहना ही उत्तम होगा। वास्तव में शिवदत्त का विचार बहुत ठीक था और उसने ऐसा ही किया किया। राजा वीरेन्द्रसिंह को भी रात भर सोचने विचारने की मोहलत मिली। उन्होंने कई सिपाहियों को फाटक पर मुस्तैद कर दिया और उसके बाद अपने बचाव का ढंग सोचने लगे।

दूसरा बयान

इस समय शिवदत्त की खुशी का अन्दाज करना मुश्किल है और यह कोई ताज्जुब की बात भी नहीं है, क्योंकि लड़कों और दोस्त ऐयारों के सहित राजा वीरेन्द्रसिंह को उसने ऐसा बेबस कर दिया कि उन लोगों को जान बचाना कठिन हो गया है। शिवदत्त के आदमियों ने उस खंडहर को चारों तरफ से घेर लिया और उसे निश्चय हो गया कि अब हम पुनः चुनार की गद्दी पावेंगे और इसके साथ नौगढ़ विजयगढ़ गयाजी और रोहतासगढ़ की हुकूमत भी बिना परिश्रम हाथ लगेगी।

एक घने बटवृक्ष के नीचे अपने दोस्तों और ऐयारों का साथ लिये बैठा शिवदत्त गप्पें उड़ा रहा है। ऊपर एक सफेद चन्दवा तना हुआ है। बिछावन और गद्दी उसी प्रकार की है जैसी मामूली सर्दार अथवा डाकुओं के भारी गरोह के अफसर की होनी चाहिए। दो मशालची हाथ में मशाल लिये सामने खड़े हैं और इधर उधर कई जगह आग सुलग रही है। बाकरअली खुदाबक्श यारअली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अजायबसिंह ऐयार शिवदत्त के दोनों तरफ बैठे हैं और सभों की निगाह उन शराब की बोतलों और प्यालों पर बराबर पड़ रही है जो शिवदत्त के सामने काठ की चौकी पर रक्खे हुए हैं। धीरे-धीरे शराब पीने के साथ सब कोई शेखी बघार रहे हैं। कोई अपनी बहादुरी की तारीफ कर रहा है, कोई वीरेन्द्रसिंह वगैरह को सहज ही गिरफ्तार करने की तर्कीब बता रहा है। शिवदत्त ने सिर उठाया और बाकरअली ऐयार की तरफ देख कर कुछ कहना चाहा परन्तु उसी समय उसकी निगाह सामने मैदान की तरफ जा पड़ी और चौंक उठा। ऐयारों ने भी पीछे फिर कर देखा और देर तक उसी तरफ देखते रहे।

दो मशालों की रोशनी जो कुछ दूर पर थी इसी तरफ आती दिखाई पड़ी। वे दोनों मशाल मामूली न थे बल्कि मालूम होता था कि लम्बे नेजे या छोटे बांस के सिरे पर बहुत सा कपड़ा लपेट कर मशाल का काम लिया गया है और उसे हाथ में लिए बल्कि ऊंचा किए हुए दो सवार घोड़ा दौड़ाते इसी तरफ आ रहे हैं। उन्हीं मशालों को देख कर शिवदत्त चौंका था।

बाकरअली ऐयार पेड़ के ऊपर चढ़ गया और थोड़ी देर में नीचे उतर कर बोला, "मशाल लेकर केवल दो सवार ही नहीं हैं बल्कि और भी कई सवार उनके साथ मालूम होते हैं।"

थोड़ी ही देर में शिवदत्त के कई आदमी उन सवारों को अपने साथ लिए हुए वहीं आ पहुँचे जहाँ शिवदत्त बैठा हुआ था। उन सवारों में से एक ने घोड़े पर से उतरने में शीघ्रता की। शिवदत्त ने पहिचान लिया कि वह उसका लड़का भीमसेन है। भीमसेन दौड़ कर शिवदत्त के कदमों पर गिर पड़ा, शिवदत्त ने प्रेम के साथ उठा कर गले लगा लिया, दोनों की आँखों में आँसू भर आये और देर तक मुहब्बत भरी निगाहों से एक दूसरे को देखता रह गया। इसके बाद लड़के का हाथ थामे हुए शिवदत्त अपनी गद्दी पर जा बैठा और भीमसेन से बातचीत करने लगा। उन सवारों ने भी कमर खोली जो भीमसेन के साथ आये थे।

भीम०। (गद्गद स्वर से) इन चरणों के दर्शन की कदापि आशा न थी।

शिव०। ठीक है, केवल मेरी ही भूल ने यह सब किया, परन्तु आज मुझ पर ईश्वर की दया हुई है जिसका सबूत इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है कि वीरेन्द्रसिंह को मैंने फाँस लिया और मेरा प्यारा लड़का भी मुझसे आ मिला। हाँ यह कहो तुम्हें छुट्टी क्योंकर मिली?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीम०। (अपने साथियों में से एक की तरफ इशारा करके) केवल इनकी

दौलत मेरी जान बची ।

भीमसेन ने उस आदमी को जिसकी तरफ इशारा किया था अपने पास लाया और बैठने का इशारा किया, वह अदब के साथ सलाम करने के बाद बैठ गया। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष के होगी, शरीर दुबला और कमजोर था। रंग यद्यपि गोरा और आंखें बड़ी थीं परन्तु चेहरे से उदासी और लाचारी पाई जाती थी और यह भी मालूम होता था कि कमजोर होने पर भी क्रोध ने उसे अपना सेवक बना रक्खा है।

भीम०। इसी ने मेरी जान बचाई है। यद्यपि यह दुबला और कमजोर मालूम होता है परन्तु परले सिरे का दिलावर और बात का धनी है और मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि इसके ऐसा चतुर और बुद्धिमान होना आजकल के जमाने में कठिन है यह ऐयार नहीं है मगर ऐयारों को कोई चीज नहीं समझता! यह रोहतासगढ़ का रहने वाला है, वीरेन्द्रसिंह के कारिन्दों के हाथ से दुःखी हो कर भागा और इसने कसम खा ली है कि जब तक बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान का नाम निशान न मिटा लूंगा अन्न न खाऊंगा, केवल कन्दमूल खा कर जान बचाऊंगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह जो कुछ चाहे कर सकता है। रोहतासगढ़ के तहखाने और (हाथ का इशारा करके) इस खण्डहर का भेद भी यह बखूबी जानता है जिसमें बीरेन्द्रसिंह वगैरह लाचार और आपके सिपाहियों से घिरे पड़े हैं। इसने मुझे जिस चालाकी से निकाला उसका हाल इस समय कह कर समय नष्ट करना उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि आज ही इस थोड़ी सी बची हुई रात में इसकी मदद से एक भारी काम निकलने की उम्मीद है। अब आप स्वयं इससे बातचीत कर लें।

भीमसेन की बात जो उस आदमी की तारीफ से भरी हुई थी सुन कर शिवदत्त खुशी के मारे फूल उठा और उससे स्वयं बातचीत करने लगा।

शिव०। सब के पहिले मैं आपका नाम सुनना चाहता हूँ।

वह०। (धीरे से कान की तरफ झुककर) मुझे लोग बांकेसिंह कह के पुकारते थे, परन्तु अब कुछ दिनों के लिए मैंने अपना नाम बदल दिया है। आप मुझे 'रुहा' कह कर पुकारा कीजिये जिसमें किसी को मेरा असल नाम मालूम न हो।

शिव० जैसा आपने कहा वैसा ही होगा। इस समय तो हमने वीरेन्द्रसिंह को अच्छी तरह घेर लिया है, उनके साथ सिपाही भी बहुत कम हैं जिन्हें हम लोग सहज ही गिरफ्तार कर लेंगे। आपका प्रण भी अब पूरा हुआ ही चहता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूहा० । (मुस्कुरा कर) इस बन्दोवस्त से आप बीरेन्द्रसिंह का
नहीं कर सकते ।

शिव० । सो क्यों ?

रूहा० । क्या आप इस बात को नहीं जानते कि इस खण्डहर की
बड़ी मजबूत है ?

शिव० । वेशक मजबूत है मगर इससे क्या हो सकता है ?

रूहा० । क्या इस खंडहर के भीतर घुसकर आप उनका मुकाबला कर क

शिव० । क्यों नहीं !

रूहा० । कभी नहीं । इसके अन्दर सौ आदमियों से ज्यादे के जाने की
नहीं है और इतने आदमियों को वीरेन्द्रसिंह के साथी सहज ही में काट गिरा

शिव० । हमारे आदमी दीवारों पर चढ़ कर हमला करेंगे और सबसे
बात यह है कि वे लोग दो ही तीन दिन में भूख प्यास से तंग होकर
बाहर निकलेंगे, उस समय उनको मार लेना कोई बड़ी बात नहीं है ।

रूहा० । सो भी नहीं हो सकता क्योंकि यह खंडहर एक छोटा सा ति
है जिसका रोहतासगढ़ के तहखाने वाले तिलिस्म से सम्बन्ध है । इसके
घुसना और दीवारों पर चढ़ना खेल नहीं है । वीरेन्द्रसिंह और उनके लड़
इस खण्डहर का बहुत कुछ भेद मालूम है और आप कुछ भी नहीं जानते
समझ लीजिये कि आपमें उनमें क्या फर्क है, इसके अतिरिक्त इस खण्डहर में
से तहखाने और सुरंगें भी हैं जिनसे वे लोग बहुत फायदा उठा सकते हैं

शिव० । (कुछ सोच कर) आप बड़े बुद्धिमान हैं और इस खण्डहर का
अच्छी तरह जानते हैं । अब मैं अपना विल्कुल काम आप ही की राय पर
हूँ, जो आप कहेंगे मैं वही करूंगा, अब आप ही कहिये क्या किया जाय

रूहा० । अच्छा मैं आपकी मदद करूंगा और राय दूँगा, पहिले
बतावें कि बीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने का सबब आप जानते हैं ?

शिव० । नहीं ।

रूहा० । इसका असल हाल मुझे मालूम हो चुका है । (भीमसेन की
देख कर) उस आदमी का कहना बहुत ठीक है ।

भीम० । बेशक ऐसा ही है, वह आपका शागिर्द होकर आपसे झूठ
नहीं बोलेगा ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिव० । क्या बात है ?

रूहा० । हम लोग यहाँ आ रहे थे तो रास्ते में मेरा एक चेला मिला था जसकी जुबानी वीरेन्द्रसिंह के यहाँ आने का सबब हम लोगों को मालूम हो गया।

शिव० । क्या मालूम हुआ ?

रूहा० । इस खण्डहर के तहखाने में कुंअर इन्द्रजीतसिंह न मालूम क्योंकर ा फँसे हैं जो किसी तरह निकल नहीं सकते, उन्हीं को छुड़ाने के लिये ये ोग आये हैं। मैं खण्डहर के हर एक तहखाने और उसके रास्ते को जानता हूँ, गर चाहूँ तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह को सहज ही में निकाल लाऊँ।

शिव० । ओ हो, यदि ऐसा हो तो क्या बात है। परन्तु आपको इस खंड- र में कोई जाने क्यों देगा और बिना खण्डहर में गये आप तहखाने के अन्दर हुँच नहीं सकते।

रूहा० । नहीं नहीं, खण्डहर में जाने की कोई जरूरत नहीं है, मैं बाहर बाहर अपना काम कर सकता हूँ।

शिव० । तो फिर ऐसे काम में क्यों न जल्दी की जाय ?

रूहा० । मेरी राय है कि आप या आपके लड़के भीमसेन पाँच सौ बहादुरों साथ लेकर मेरे साथ चलें, यहाँ से लगभग दो कोस जाने के बाद एक ोटा सा टूटा-फूटा मकान मिलेगा, पहिले उसे घेर लेना चाहिये।

शिव० । उसके घेरने से क्या फायदा होगा ?

रूहा० । इस खण्डहर में से एक सुरंग गई है जो उसी मकान में निकली , ताज्जुब नहीं है कि वीरेन्द्रसिंह वगैरह उस राह से भाग जायँ इसलिये उस र कब्जा कर लेना चाहिये। सिवाय इसके एक बात और है।

शिव० । वह क्या ?

रूहा० । उसी मकान में से एक दूसरी सुरंग उस तहखाने में गई है जिसमें ंअर इन्द्रजीतसिंह हैं। यद्यपि उस सुरंग की राह से इस तहखाने तक पहुँचते हुँचते पाँच दर्वाजे लोहे के मिलते हैं जिनका खोलना अति कठिन है परन्तु उनके ोलने की तरकीब मुझे मालूम है। वहाँ पहुँचकर मैं और भी कई काम करूंगा।

शिव० । (खुश होकर) तब तो सबके पहिले हमें वहाँ ही पहुँचना चाहिए।

रूहा० । बेशक ऐसा ही होना चाहिये, पाँच सौ सिपाही लेकर आप मेरे ाथ चलिये या भीमसेन चलें, फिर देखिये मैं क्या करता हूँ।

शिव० । अब भीमसेन को तकलीफ देना तो मैं पसंद नहीं करता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूहा० । यह बहुत थक गये हैं और कैद की मुसीबत उठा कर कमजोर भी

हो गये हैं, यहाँ का इन्तजाम इन्हें सुपुर्द कीजिये और आप मेरे साथ चलि

इसके कुछ ही देर बाद शिवदत्त पाँच सौ की फौज लेकर रूहा के उत्तर की तरफ रवाना हुआ। इस समय पहर भर रात बाकी थी, चांद ने अपना चेहरा छिपा लिया था मगर रहमदिल तारे डबडबाई हुई आँखों से शिवदत्त और उसके साथियों की तरफ देख देख अफसोस कर रहे थे।

ये पाँच सौ लड़ाके घोड़ों पर सवार थे, रूहा और शिवदत्त अरबी पर सवार सबके आगे आगे जा रहे थे। रूहा केवल एक तलवार कमर से हुए था मगर शिवदत्त पूरे ठाठ से था। कमर में कटार और तलवार तथा में नेजा लिये हुए बड़ी खुशी से घुल घुल कर बातें करता जाता था। पथरीली और ऊंची नीची थी इसलिये ये लोग पूरी तेजी के साथ नहीं सकते थे तिस पर भी घंटे भर चलने के बाद एक छोटे से टूटे फूटे मका दीवार पर रूहा की नजर पड़ी और उसने हाथ का इशारा करके शिवद कहा, "बस अब हम लोग ठिकाने आ पहुँचे, यही मकान है।"

शिवदत्त के साथी सवारों ने उस मकान को चारो तरफ से घेर लि

रूहा०। इस मकान में कुछ खजाना भी है जिसका हाल मुझे अच्छी मालूम है।

शिव०। (खुश होकर) आजकल मुझे रुपये की जरूरत भी है।

रूहा०। मैं चाहता हूँ कि पहिले केवल आपको इस मकान में ले दो एक जगह निशान और वहाँ का कुछ भेद बता दूँ फिर जैसा मुनासिब वैसा किया जायगा। आप मेरे साथ अकेले चलने के लिये तैयार हैं, डरते

शिव०। (घमंड के साथ) क्या तुमने मुझे डरपोक समझ लिया है फिर ऐसी अवस्था में जब कि हमारे पाँच सौ सवारों से यह मकान घिरा है

रूहा०। (हँस कर) नहीं नहीं, मैंने इसलिये टोका कि शायद इस मकान में आपको भूत प्रेत का गुमान पैदा हो।

शिव०। छिः, मैं ऐसे खयाल का आदमी नहीं हूँ; बस देर न कीजिये,

रूहा ने पथरी से आग झाड़ कर मोमबत्ती जलाई जो उसके पास शिवदत्त को साथ लेकर मकान के अन्दर घुसा। इस समय उस मक अवस्था बिल्कुल खराब थी, केवल तीन कोठरियाँ बची हुई थीं जिनकी इशारा करके रूहा ने शिवदत्त से कहा, "यद्यपि यह मकान बिल्कुल गया है मगर इन तीनों कोठरियों को अभी तक किसी तरह का सद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चा है, मुझे केवल इन्हीं कोठरियों से मतलब है। इस मकान की मजबूत वारें अभी दो तीन बरसीतें सम्हालने की हिम्मत रखती हैं।"

शिव०। मैं देखता हूँ कि वे तीनों कोठरियां एक के साथ एक सटी हुई हैं र इसका भी कोई सबब जरूर होगा।

रूहा०। जी हाँ मगर इन तीन कोठरियों से इस समय तीन काम निकलेंगे।

इसके बाद रूहा एक कोठरी के अन्दर घुसा। इसमें एक तहखाना था और चे उतरने के लिए सीढ़ियां नजर आती थीं। शिवदत्त ने पूछा, "मालूम होता इसी सुरंग की राह आप मुझे ले चलेंगे ?" इसके जवाब में रूहा ने कहा, "हां न्द्रजीतसिंह को गिरफ्तार करने के लिए इसी सुरंग में चलना होगा, मगर भी नहीं, मैं पहिले आपको दूसरी कोठरी में ले चलता हूँ जिसमें खजाना है, मेरी यही राय है कि पहिले खजाना निकाल लेना चाहिए, आपकी क्या राय है ?"

शिव०। (खुश होकर) हां हां, पहिले खजाना अपने कब्जे में कर लेना ाहिए, कहिये तो कुछ आदमियों को अन्दर बुलाऊं ?

रूहा०। अभी नहीं, पहिले आप स्वयं चल कर उस खजाने को देख तो जिए।

शिव०। अच्छा चलिये।

अब ये दोनों दूसरी कोठरी में पहुंचे। इसमें भी एक वैसा ही तहखाना जर आया जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियां मौजूद थीं। शिवदत्त को साथ लिए ए रूहा उस तहखाने में उतर गया। यह ऐसी जगह थी कि यदि सौ आदमी क साथ मिल कर चिल्लाएं तो भी मकान के बाहर आवाज न जाय। शिवदत्त ो उम्मीद थी कि अब रुपये और अशर्फियों से भरे हुए डेग दिखाई देंगे मगर सके बदले यहां दस सिपाही ढाल तलवार लिए मुंह पर नकाब डाले दिखाई ड़े और साथ ही इसके एक सुरंग पर भी नजर पड़ी जो मालूम होता था कि भी खोदकर तैयार की गई है। शिवदत्त एकदम कांप उठा उसे निश्चय हो या कि रूहा ने मेरे साथ दगा की, और ये लोग मुझे मार कर इसी गड़हे में वा देंगे। उसने एक लाचारी की निगाह रूहा पर डाली और कुछ कहना ाहा मगर खौफ ने उसका गला ऐसा दबा दिया कि एक शब्द भी मुंह से न नकल सका।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन दसों ने शिवदत्त को गिरफ्तार कर लिया और मुश्कें बांध लीं। रूहा े कहा, "बस अब आप चुपचाप इन लोगों के साथ इस सुरंग में चले चलिए

नहीं तो इसी जगह आपका सिर काट लिया जायगा।"

इस समय शिवदत्त रूहा और उसके साथियों का हुक्म मानने के सिवा और कुछ भी न कर सकता था। सुरंग में उतरने के बाद लगभग आध कोस चलना पड़ा, इसके बाद सब लोग बाहर निकले और शिवदत्त ने अपने को सूनसान मैदान में पाया। यहाँ पर कई साईसों की हिफाजत में बारह घोड़े कसाये तैयार थे। एक पर शिवदत्त को सवार कराया गया और नीचे से दोनों पैर बाँध दिए गए, बाकी पर रूहा और वे दसों नकाबपोश सवार और शिवदत्त को लेकर एक तरफ को चलते हुए।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह पर आफत आने से वीरेन्द्रसिंह दुखी होकर छुड़ाने का उद्योग कर ही रहे थे परन्तु बीच में शिवदत्त का आ जाना दुखदाई हुआ। ऐसे समय में जब कि यह अपनी फौज से बहुत ही दूर सौ दो सौ आदमियों को लेकर शिवदत्त की दो हजार फौज से मुकाबला बहुत ही कठिन मालूम पड़ता था, साथ ही इसके यह सोच कर कि जब शिवदत्त यहाँ है कुँअर इन्द्रजीतसिंह के छुड़ाने की कार्रवाई किसी तरह हो सकती, वे और भी उदास हो रहे थे। यदि उन्हें कुँअर इन्द्रजीत का खयाल न होता तो शिवदत्त का आना उन्हें न गढ़ाता और वे लड़ने से न आते मगर इस समय राजा वीरेन्द्रसिंह बड़े फिक्र में पड़ गए और सोच कि क्या करना चाहिए। सबसे ज्यादा फिक्र तारासिंह को थी क्योंकि वह इन्द्रजीतसिंह का मृत शरीर अपनी आँखों से देख चुका था। राजा वीरेन्द्र और उनके साथी लोग तो अपनी फिक्र में लगे हुए थे और खण्डहर के दरवाजे पर तथा दीवारों पर से लड़ने का इन्तजाम कर रहे थे, परन्तु तारासिंह छोटी सी बावली के किनारे जो अभी जमीन खोदने से निकली थी बैठा खयाल में ऐसा डूबा था कि उसे दीन दुनिया की खबर न थी? वह नहीं था कि हमारे संगी साथी इस समय क्या कर रहे हैं। आधी रात से ज्यादा चुकी थी मगर वह अपने ध्यान में डूबा हुआ बावली के किनारे बैठा है वीरेन्द्रसिंह ने भी यह सोच कर कि शायद वह इसी बावली के विषय में सोच रहा है तारासिंह को कुछ न टोका और न कोई काम उसके सुपुर्द

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस बावली में से कुल मिट्टी निकल बावली के बीचोबीच में पीतल की मूरत दिखाई पड़ी। उस मूरत यह था कि एक हिरन का शेर ने शिकार किया है और हिरन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ाधा भाग शेर के मुंह में है । मूरत बहुत ही खूबसूरत बनी हुई थी।

जिस समय का हाल हम लिख रहे हैं अर्थात् आधी रात गुजर जाने के ाद यकायक उस मूरत में एक प्रकार की चमक पैदा हुई और धीरे धीरे वह ामक यहां तक बढ़ी कि तमाम बावली बल्कि तमाम खण्डहर में उजियाला हो ाया जिसे देख सब के सब घबरा गए । बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह और कमला तीनों ादमी फुर्ती के साथ उस जगह पहुँचे जहाँ तारासिंह बैठा हुआ ताज्जुब में ाकर उस मूरत को देख रहा था।

घण्टा भर बीतते बीतते मालूम हुआ कि वह मूरत हिल रही है। उस समय ार की दोनों आँखें ऐसी चमक रही थीं कि निगाह नहीं ठहरती थी । मूरत को हिलते देख सभों को बड़ा ताज्जुब हुआ और निश्चय हो गया कि अब तिलिस्म ी कोई न कोई कार्रवाई हम लोग जरूर देखेंगे।

यकायक मूरत बड़े जोर से हिली और तब एक भारी आवाज के साथ ामीन के अन्दर धंस गई । खण्डहर में चारों तरफ अन्धेरा हो गया । कायदे की ात है कि आँखों के सामने जब थोड़ी देर तक कोई तेज रोशनी रहे और वह ाकायक गायब हो जाय या बुझा दी जाय तो आँखों में मामूली से ज्यादा ंधेरा छा जाता है, वही हालत इस समय खंडहर वालों की हुई। थोड़ी देर ाक उन लोगों को कुछ भी नहीं सूझता था। आधी घड़ी गुजर जाने के बाद ाह गड़हा दिखाई देने लगा जिसके अन्दर मूरत धंस गई थी। अब उस गड़हे ा अन्दर भी एक प्रकार की चमक मालूम होने लगी और देखते देखते हाथ में ामकता हुआ नेजा लिए वही राक्षसी उस गड़हे में से बाहर निकली जिसका जिक्र ऊपर कई दफे किया जा चुका है।

हमारे बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयार लोग उस औरत को कई दफे देख चुके ा और वह औरत इनके साथ अहसान भी कर चुकी थी इसलिये उसे यकायक ाख कर वे लोग कुछ प्रसन्न हुए और उन्हें विश्वास हो गया कि इस समय यह ाौरत जरूर हमारी कुछ न कुछ मदद करेगी और थोड़ा बहुत यहां का हाल ाी हम लोगों को जरूर मालूम होगा।

उस औरत ने नेजे को हिलाया। हिलने के साथ ही बिजली सी चमक ासमें पैदा हुई और तमाम खंडहर में उजाली हो गया। वह बीरेन्द्रसिंह के पास ााई और बोली, "आपको पता नहीं यह जगह बड़ी पोलत की जाती है। इसके अन्दर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ाइस खंडहर के हर एक तहखाने में यदि रास्ता मालूम है तो आप घूम सकते

हैं। शाहदर्वाजा जो बन्द हो गया था उसे आपके खातिर से पहर भर के लिये मैंने खोल दिया। इससे विशेष समय लगाना अनर्थ करना है।"

इतना कह वह राक्षसी उसी गड़हे में घुस गई और वह पीतल वाली मूरत जो ज़मीन के अन्दर धँस गई थी फिर अपने स्थान पर आ कर बैठ गई, इस समय उसमें किसी तरह की चमक न थी।

अब बीरेन्द्रसिंह और आनन्दसिंह वगैरह को कुंअर इन्द्रजीतसिंह से मिलने की उम्मीद हुई।

वीरेन्द्र०। कुछ मालूम नहीं होता कि यह औरत कौन है और समय समय पर हमलोगों की सहायता क्यों करती है।

तारा०। जब तक वह स्वयं अपना हाल न कहे हमलोग उसे किसी तरह नहीं जान सकते, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह औरत तिलिस्मी है और कोई भारी सामर्थ्य रखती है।

कमला०। परन्तु सूरत इसकी भयानक है।

तेज०। यदि यह सूरत बनावटी हो तो भी कोई आश्चर्य नहीं।

वीरेन्द्र०। हो सकता है, खैर अब हमको तहखाने के अन्दर चलना और इन्द्रजीत को छुड़ाना चाहिये, पहर भर का समय हम लोगों के लिये कम नहीं है मगर शिवदत्त के लिये क्या किया जाय? यदि वह इस खंडहर में घुस आने और लड़ने का उद्योग करेगा तो यह अमूल्य समय पहर भर यों ही नष्ट हो जायगा।

तेज०। इसमें क्या सन्देह है? ऐसे समय में इस कम्बख्त का चढ़ आना बड़ा ही दुःखदायी हुआ।

इतना कह कर तेजसिंह गौर में पड़ गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये। इसी बीच में खंडहर को फाटक की तरफ से सिपाहियों के चिल्लाने की आवाज आई और यह भी मालूम हुआ कि वहाँ लड़ाई हो रही है।

जिस समय शिवदत्त के चढ़ आने की खबर मिली थी उसी समय राजा वीरेन्द्रसिंह के हुक्म से पचास सिपाही खंडहर के फाटक पर मुस्तैद कर दिये गये थे और उन सिपाहियों ने आपस में निश्चय कर लिया था कि जब तक पचास में से एक भी जीता रहेगा फाटक के अन्दर कोई घुसने न पावेगा।

फाटक पर कोलाहल सुन कर तेजसिंह और तारासिंह दौड़े गये और थोड़ी देर में वापस आकर खुशी भरी आवाज में तेजसिंह ने बीरेन्द्रसिंह से कहा, "बेशक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाटक पर लड़ाई हो रही है। न मालूम हमारे किस दोस्त ने, किस ऐयारी से शिवदत्त को गिरफ्तार कर लिया जिससे उसकी फौज हताश हो गई। थोड़े आदमी तो फाटक पर आकर लड़ रहे हैं और बहुत से भागे जा रहे हैं। मैंने एक सिपाही से पूछा तो उसने कहा कि 'मैं अपने साथियों के साथ फाटक पर पहरा दे रहा था कि यकायक कुछ सवार इसी तरफ से मैदान की ओर भागे जाते दिखाई दिये। वे लोग चिल्ला चिल्ला कर यह कहते जाते थे कि 'तुम लोग भागो और अपनी जान बचाओ। शिवदत्त गिरफ्तार हो गया, अब तुम उसे किसी तरह से नहीं छुड़ा सकते'। इसके बाद बहुत से तो भाग गये और भाग रहे हैं मगर थोड़े आदमी यहाँ आ गये जो लड़ रहे हैं।'

तेजसिंह की बात सुन कर बीरेन्द्रसिंह वीर भाव से यह कहते हुए फाटक की तरफ लपके कि 'तब तो पहले उन्हीं लोगों को भगाना चाहिये जो भागने से बच रहे हैं, जब तक दुश्मन का कोई आदमी गिरफ्तार न होगा खुलासा हाल मालूम न होगा'।

खण्डहर के फाटक पर से लौट कर तेजसिंह ने जो कुछ हाल राजा बीरेन्द्रसिंह से कहा वह बहुत ठीक था। जब रूहा अपनी बातों में फंसा कर शिवदत्त को ले गया उसके दो घण्टे बाद भीमसेन ने अपने साथियों को तैयार होने और घोड़े कसने की आज्ञा दी। शिवदत्त के ऐयारों को ताज्जुब हुआ, उन्होंने भीमसेन से इसका सबब पूछा जिसके जवाब में भीमसेन ने केवल इतना ही कहा कि 'हम क्या करते हैं सो अभी मालूम हो जायगा'। जब घोड़े तैयार हो गये तो साथियों को कुछ इशारा करके भीमसेन घोड़े पर सवार हो गया और म्यान से तलवार निकाल शिवदत्त के आदमियों को जख्मी करता और यह कहता हुआ कि 'तुम लोग भागो और अपनी जान बचाओ, तुम्हारा शिवदत्त गिरफ्तार हो गया अब तुम उसे किसी तरह नहीं छुड़ा सकते' मैदान की तरफ भागा। उस समय शिवदत्त के ऐयारों की आँखें खुलीं और वे समझ गये कि हम लोगों के साथ ऐयारी की गई तथा यह भीमसेन नहीं है बल्कि कोई ऐयार है! उस समय शिवदत्त की फौज हर तरह से गाफिल और बेफिक्र थी। शिवदत्त के ऐयारों के हुक्म से यद्यपि कई आदमियों ने घोड़ों की नंगी पीठ पर सवार होकर नकली भीमसेन का पीछा किया मगर अब क्या हो सकता था, बल्कि उसका नतीजा यह हुआ कि फौजी आदमी अपने साथियों को भागता हुआ समझ खुद भी भागने लगे। ऐयारों ने रोकने के लिये बहुत उद्योग किया परन्तु बिना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालिक की फ़ौज कब तक रुक सकती थी, बड़ी मुश्किल से थोड़े आदमी रु और खण्डहर के फाटक पर आकर हुल्लड़ मचाने लगे, परन्तु उस समय उन लोगों की हिम्मत भी जाती रही जब बहादुर वीरेन्द्रसिंह आनन्दसिंह उनके ऐयार तथा शेरदिल साथी और सिपाही हाथों में नंगी तलवार लिये उन लोगों पर आ टूटे। राजा बीरेन्द्रसिंह और कुँअर आनन्दसिंह शेर की तरह जिस तरफ़ झपटते थे सफाई हो जाती थी जिसे देख शिवदत्त के आदमियों में से बहुतों की तो यह अवस्था हो गई कि खड़े होकर उन दोनों की बहादुरी देखने के सिवाय कुछ भी न कर सकते थे। आखिर यहाँ तक नौबत पहुँची कि सभी ने पीठ दिया दी और मैदान का रास्ता लिया।

इस लड़ाई में जो घंटे भर से ज्यादे तक होती रही राजा वीरेन्द्रसिंह के दस आदमी मारे गए और बीस जख्मी हुए। शिवदत्त के चालीस मारे गए और साठ जख्मी हुए जिनसे दरियाफ्त करने पर राजा बीरेन्द्रसिंह को भीमसेन और शिवदत्त का खुलासा हाल जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं मालूम हो गया मगर इसका पता न लगा कि शिवदत्त को किसने किस रीति से गिरफ्तार कर लिया।

बीरेन्द्रसिंह ने अपने कई आदमी लाशों को हटाने और जख्मियों की हिफाजत के लिए तैनात किया और इसके बाद कुँअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए खण्डहर के तहखाने में जाने का इरादा किया।

जिस तहखाने में कुँअर इन्द्रजीतसिंह थे उसके रास्ते का हाल कई दफे लिखा जा चुका है पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं, इसलिए केवल इतना ही लिखा जाता है कि वे दर्वाजे जिनका खुलना शाहदर्वाजा बन्द हो जाने के कारण कठिन हो गया था अब सुगमता से खुल गए जिससे सभों को खुशी हुई और केवल बीरेन्द्रसिंह तेजसिंह कमला और तारासिंह मशाल लेकर उस तहखाने के अन्दर उतर आए।

इस समय तारासिंह की अजब हालत थी। उसका कलेजा कांपता और उछलता था। वह सोचता था कि देखें कुँअर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह और कामिनी को किस अवस्था में पाते हैं। ताज्जुब नहीं कि हमारे पाठकों की भी इस समय वही अवस्था हो और वे भी इसी सोच विचार में हों मगर वहां तहखाने में तो मामला ही दूसरे ढंग का था।

तहखाने में उतर जाने के बाद राजा वीरेन्द्रसिंह आनन्दसिंह और ऐयारों ने चारों तरफ देखना शुरू किया मगर कोई आदमी दिखाई न पड़ा और न कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी चीज नजर पड़ी जिससे उन लोगों का पता लगता जिनकी खोज में वे लोग तहखाने के अन्दर गए थे। न तो वह सन्दूक था जिसमें इन्द्रजीतसिंह की लाश थी और न भैरोंसिंह कामिनी या उस सिपाही की सूरत नजर आई जो उस संदूक के साथ उस तहखाने में आया था जिसमें कुंअर इन्द्रजीतसिंह की लाश थी।

वीरेन्द्र०। (तारासिंह की तरफ देख कर) यहाँ तो कोई भी नहीं है! क्या तुमने उन लोगों को किसी दूसरे तहखाने में छोड़ा था।

तारा०। जी नहीं, मैंने उन सभी को इसी जगह छोड़ा (हाथ से इशारा करके) इसी कोठरी में कामिनी ने अपने को बन्द कर रक्खा था!

वीरेन्द्र०। कोठरी का दर्वाजा खुला हुआ है, इसके अन्दर जाकर देखो तो शायद कोई हो।

कमला ने कोठरी का दर्वाजा खोला और अन्दर झांक कर देखा इसके बाद कोठरी के अन्दर घुस कर उसने आनन्दसिंह और तारासिंह को पुकारा और उन दोनों ने भी कोठरी के अन्दर पैर रक्खा।

कमला तारासिंह और आनन्दसिंह को कोठरी के अन्दर घुसे आधी घड़ी से ज्यादे गुजर गई मगर उन तीनों में से एक भी बाहर न निकला। आखिर तेजसिंह ने पुकारा परन्तु जवाब न मिलने पर लाचार हो हाथ में मशाल लेकर तेजसिंह खुद कोठरी के अन्दर गए और इधर उधर ढूंढ़ने लगे।

वह कोठरी बहुत छोटी और संगीन थी। चारों तरफ पत्थर की दीवारों पर खूब ध्यान देने से कोई खिड़की या दर्वाजे का निशान नहीं पाया जाता था, हां ऊपर की तरफ एक छोटा सा छेद दीवार में था मगर वह भी इतना छोटा था कि आदमी का सिर किसी तरह उसके अन्दर नहीं जा सकता था और दीवार में कोई ऐसी रुकावट भी न थी जिस पर चढ़ के या पैर रख कर कोई आदमी अपना हाथ उस मोखे (छेद) तक पहुँचा सके। ऐसी कोठरी में से यकायक कमला तारासिंह और आनन्दसिंह का गायब हो जाना बड़े ही आश्चर्य की बात थी। तेजसिंह ने इसका सबब बहुत कुछ सोचा मगर अक्ल ने कुछ मदद न की। वीरेन्द्रसिंह भी कोठरी के अन्दर गये और तलवार के कब्जे से हर एक दीवार को ठोंक ठोंक कर देखने लगे जिसमें मालूम हो जाय कि किसी जगह से दीवार पोली तो नहीं है मगर इससे भी कोई काम न चला। थोड़ी देर तक दोनों आदमी हैरान हो चारों तरफ देखते रहे। आखिर किसी आवाज ने उन्हें चौकन्ना कर दिया और वे दोनों ध्यान देकर उस छेद की तरफ देखने लगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो उस कोठरी के अन्दर ऊँची दीवार में था और जिसमें से आवाज आ रही थी। यह आवाज यह थी—

"बस जहां तक जल्द हो सके तुम दोनों आदमी इस तहखाने से बाहर निकल जाओ नहीं तो व्यर्थ तुम दोनों की जान चली जायेगी, अगर बचे रहोगे तो दोनों कुमारों को छुड़ाने का उद्योग करोगे और पता लगा ही लोगे। मैं वही बिजली की तरह चमकने वाला नेज़ा हाथ में रखने वाली औरत हूँ, पर लाचार इस समय किसी तरह तुम्हारी मदद नहीं कर सकती। अब तुम लोग बहुत जल्द रोहतासगढ़ चले जाओ, उसी जगह आकर मैं तुमसे मिलूंगी और सब हाल खुलासा कहूँगी। अब मैं जाती हूँ क्योंकि इस समय मुझे भी अपनी जान की पड़ी है।"

इस बात को सुन कर दोनों आदमी ताज्जुब में आ गए और कुछ देर तक सोचने के बाद तहखाने के बाहर निकल आए।

डबडबाई आंखों के साथ उसांसें लेते हुए राजा बीरेन्द्रसिंह रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए। कैदियों और अपने कुल आदमियों को साथ लेते गए, मगर तेजसिंह ने न मालूम क्या कह सुन कर और क्यों छुट्टी ले ली और राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ रोहतासगढ़ न गये।

राजा बीरेन्द्रसिंह रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए, तेजसिंह ने दक्खिन का रास्ता लिया। इस वारदात को कई महीने गुजर गये और इस बीच में कोई बात ऐसी नहीं हुई जो लिखने योग्य हो।

तीसरा बयान

अब हम अपने पाठकों को फिर उस मैदान के बीच वाले अद्भुत मकान के पास ले चलते हैं जिसके अन्दर इन्द्रजीतसिंह देवीसिंह शेरसिंह और कमलिनी के सिपाही लोग जा फंसे थे अर्थात् कमन्द के सहारे दीवार पर चढ़ कर अन्दर की तरफ झांकने के बाद हंसते हंसते उस मकान में कूद पड़े थे। हम लिख आए हैं कि जब वे लोग मकान के अन्दर कूद गए तो न मालूम क्या समझ कर कमलिनी हंसी और अपनी ऐयार तारा को साथ ले वहां से रवाना हो गई।

तारा को साथ लिए और बातें करती हुई कमलनी दक्खिन की तरफ रवाना हुई जिधर का जङ्गल घना और सोहावना था। लगभग दो कोस चले जाने के बाद जङ्गल बहुत ही रमणीक मिला बल्कि यों कहना चाहिये कि जं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे वे दोनों बढ़ती जाती थीं जङ्गल सोहावना और खुशबूदार जंगली फूलों की महक से बसा हुआ मिलता जाता था, यहां तक कि दोनों एक ऐसे सुन्दर चश्मे के किनारे पहुँचीं जिसका जल बिल्लौर की तरह साफ था और जिसके दोनों किनारों पर दूर दूर तक मौलसिरी के पेड़ लगे हुए थे। इस चश्मे का पाट दस हाथ का होगा और गहराई दो हाथ से ज्यादे न होगी। यहां की जमीन पथरीली और पहाड़ी थी।

अब ये दोनों उस चश्मे के किनारे किनारे जाने लगीं। ज्यों ज्यों आगे जाती थीं जमीन ऊंची मिलती जाती थी जिससे समझ लेना चाहिए कि यह मुकाम किसी पहाड़ी की तराई में है। लगभग आधा कोस के जाने के बाद वे दोनों ऐसी जगह पहुँचीं जहां चश्मे के दोनों किनारे वाले मौलसिरी* के पेड़ झुक कर आपुस में मिल गए और जिसके सबब से चश्मा अच्छी तरह से ढंक कर मुसाफिरों का दिल लुभा लेने वाली छटा दिखा रहा था। इस जगह चश्मे के किनारे एक छोटा सा चबूतरा था जिसकी ऊंचाई पुर्सा भर से कम न होगी। चबूतरे पर एक छोटी सी पिन्डी इस ढब से बनी हुई थी जिसे देखते ही लोगों को विश्वास हो जाय कि किसी साधु की समाधि है।

इस ठिकाने पहुँच कर वे दोनों रुकीं और घोड़े से नीचे उतर पड़ीं। तारा ने अपने घोड़े का असबाब नहीं उतारा अर्थात् उसे कसा कसाया छोड़ दिया परन्तु कमलिनी ने अपने घोड़े का चारजामा उतार लिया और लगाम उतार कर घोड़े को यों ही छोड़ दिया। घोड़ा पहिले तो चश्मे के किनारे आया और पानी पीने के बाद कुछ दूर जाकर सब्ज जमीन पर चरने और खुशी खुशी घूमने लगा। तारा ने भी अपने घोड़े को पानी पिलाया और बागडोर के सहारे एक पेड़ से बांध दिया। इसके बाद कमलिनी और तारा चश्मे के किनारे पत्थर की एक चट्टान पर बैठ गईं और यों बातचीत करने लगीं—

कम०। अब इसी जगह से मैं तुमसे अलग होऊंगी!

तारा०। अफसोस, यह दुश्मनी अब हद से ज्यादे बढ़ चली?

कम०। फिर क्या किया जाय, तू ही बता इसमें मेरा क्या कसूर है?

तारा०। तुम्हें कोई भी दोषी नहीं ठहरा सकता, इसमें कोई सन्देह नहीं कि महारानी अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रही हैं।

कम०। हर एक लक्षण पर ध्यान देने से महारानी को भी निश्चय हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* इसका नाम 'मालश्री' भी है।

है कि ये ही दोनों भाई तिलिस्म के मालिक होंगे, फिर उसके लिए जिद करना और उन दोनों की जान लेने का उद्योग करना भूल नहीं तो क्या है?

तारा० । बेशक भूल है और इसकी वह सजा पावेंगी । तुमने वहुत अच्छा किया कि उनका साथ छोड़ दिया । (मुस्कुरा कर) इसके वदले में जरूर तुम्हारी मुराद पूरी होगी ।

कम० । (ऊंची सांस लेकर) देखें क्या होता है ।

तारा० । होना क्या है? क्या उनकी आंखों ने उनके दिल का हाल तुमसे नहीं कह दिया?

कम० । हां ठीक है, खैर इस समय तो उन पर भारी मुसीवत आ पड़ी है जहां तक जल्द हो सके उन्हें वचाना चाहिए ।

तारा० । मगर मुझे ताज्जुव मालूम पड़ता है कि उनके छुड़ाने का कोई उद्योग किए विना ही तुम यहां चली आईं?

कम० । क्या तुझे मालूम नहीं कि नानक ने इसी ठिकाने मुझसे मिलने का वादा किया है? उसने कहा था कि जव मिलना हो इसी ठिकाने आना!

तारा० । (कुछ सोच कर) हां हां ठीक है, अव याद आया, तो क्या वह यही जगह है?

कम० । हां यही जगह है ।

तारा० । मगर तुम तो इस तरह घोड़ा फेंके चली आईं जैसे कई दफे आने जाने के कारण यहां का रास्ता तुम्हें वखूवी याद हो ।

कम० । वेशक मैं यहां कई दफे आ चुकी हूं वल्कि नानक को इस ठिकाने का पता पहिले मैंने ही वताया था, और यहां का कुछ भेद भी कहा था ।

तारा० । अफसोस, इस जगह का भेद तुमने आज तक मुझसे कुछ नहीं कहा!

कम० । यद्यपि तू ऐयारा है और मैं तुझे चाहती हूं परन्तु तिलिस्मी कायदे के मुताविक मेरे भेदों को तू नहीं जान सकती ।

तारा० । सो तो मैं भी जानती हूं मगर अफसोस इस वात का है कि मुझसे तो तुमने छिपाया और नानक को यहां का भेद वता दिया । न मालूम नानक की कौन सी वात पर तुम रीझ गई हो?

कम० । (कुछ हंस कर और तारा के गाल पर धीरे से चपत मार कर) वदमाश कहीं की, मैं नानक पर क्यों रीझने लगी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारा० । (झुंझला कर) तो फिर ऐसा क्यों किया?

कम० । अरे उससे उस कोठरी की ताली न लेनी है जिसमें खून से लिखी हुई किताब रक्खी है ।

तारा० । तो फिर ताली लेने के पहिले ही यहाँ का भेद उसे क्यों बता दिया ? अगर वह ताली न दे तब ?

कम० । ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि भूतनाथ ने मेरी दिलजमई कर दी है और वह भूतनाथ के कब्जे में है ।

"हाँ हाँ, वह मेरे कब्जे में है—" उसी समय यह आवाज पेड़ों के झुरमुट में से जो कमलिनी के पीछे की तरफ था आई और कमलिनी ने फिर कर देखा तो भूतनाथ की सूरत दिखाई पड़ी ।

कम० । अजी आओ भूतनाथ, तुम कहाँ थे ? मैं बड़ी देर से यहाँ बैठी हूँ, नानक कहाँ है ?

भूत० । (पास आकर) आ ही तो गये, (हाथ का इशारा करके) वह देखो नानक भी आ रहा है ।

बात की बात में नानक भी वहाँ आ पहुँचा और कमलिनी को सलाम करके खड़ा हो गया ।

कम० । कहो जी नानकप्रसाद, अब वादा पूरा करने में क्या देर है ?

नानक० । कुछ देर नहीं, मैं तैयार हूँ, परन्तु आप भी अपना वादा पूरा कीजिये और समाधि पर हाथ रख कर कसम खाइये ।

कम० । हाँ हाँ, लो मैं अपना वादा पूरा करती हूँ ।

भूत० । मेरा भी ध्यान रखना ।

कम० । अवश्य ।

कमलिनी उठी और समाधि के पास जाकर खड़ी हो गई । पहिले तो उसने समाधि के सामने अदब से सिर झुकाया और तब उसपर हाथ रखकर यों बोली:—

"मैं उस महात्मा की समाधि पर हाथ रख कर कसम खाती हूँ जो अपना सानी नहीं रखता था, हर एक शास्त्र का पूरा पण्डित, पूरा योगी, भूत भविष्य और वर्तमान का हाल जानने वाला और ईश्वर का सच्चा भक्त था । यद्यपि यह उसकी समाधि है परन्तु मुझे विश्वास है कि योगिराज सजीव हैं और मेरी रक्षा का ध्यान उन्हें सदैव बना रहता है । (हाथ जोड़ कर) योगिराज से मैं प्रार्थना करती हूँ कि मेरी प्रतिज्ञा को निबाहें । (समाधि पर हाथ रख कर) यदि नानक मुझे वह ताली दे देगा तो मैं उसके साथ कभी दगा न करूँगी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे अपने भाई के समान मानूंगी और उसी काम में उद्योग करूंगी जिसमें उसकी खुशी हो। मैं उस आदमी के लिये भी कसम खाती हूँ जिसने अपना नाम भूतनाथ रक्खा हुआ है। उसे मैं अपने सहोदर भाई के समान मानूंगी और जब तक वह मेरे साथ बुराई न करेगा मैं उसकी भलाई करती रहूँगी।"

इतना कह कर कमलिनी समाधि से अलग हो गई। नानक ने एक छोटी सी डिबिया कमलिनी के हाथ में दी और उसके पैरों पर गिर पड़ा। कमलिनी ने पीठ ठोंक कर उसे उठाया और उस डिबिया को इज्जत के साथ सिर से लगाया। इसके बाद चारो आदमी फिर उस पत्थर की चट्टान पर आ कर बैठ गये और बातचीत होने लगी।

भूत०। (कमलिनी से) जब आपने मुझे और नानक को अपने भाई के समान मान लिया तो मुझे जो कुछ आपसे कहना हो दिल खोल कर कह सकता हूँ और जो कुछ मांगना हो मांग सकता हूँ चाहे आप दें अथवा न दें।

कम०। (मुस्कुरा कर) हां हां जो कुछ कहना हो कहो और मांगना हो मांगो।

भूत०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपके पास एक से एक बढ़ कर अनमोल चीजें होंगी अस्तु मुझे और नानक को कोई ऐसी चीज दीजिये जो समय पर काम आये और दुश्मनों को धमकाने और उनपर फतह पाने के लिये बेनजीर हो।

कम०। इसके कहने की तो कोई जरूरत न थी, मैं स्वयं चाहती थी कि तुम दोनों को कोई अनमोल वस्तु दूँ, खैर ठहरो मैं अभी ला देती हूँ।

इतना कह कर कमलिनी उठी और चश्मे के जल में कूद पड़ी। उस जगह जल बहुत गहरा था इसलिए मालूम न हुआ कि वह कहां चली गई। कमलिनी के इस काम ने सभों को ताज्जुब में डाल दिया और तीनों आदमी टकटकी बांध कर उसी तरफ देखने लगे।

आधे घन्टे बाद कमलिनी जल के बाहर निकली। उसके एक हाथ में छोटी सी कपड़े की गठरी और दूसरे हाथ में लोहे की जंजीर थी। यद्यपि कमलिनी जल में से निकली थी और उसके कपड़े गीले हो रहे थे तथापि उस कपड़े की गठरी पर जल ने कुछ भी असर न किया था जिसे कमलिनी लाई थी।

कमलिनी ने कपड़े की गठरी पत्थर की चट्टान पर रख दी और लोहे की जंजीर भूतनाथ के हाथ में देकर बोली, "इसे तुम दोनों आदमी मिल कर खींचो।" उस जंजीर के साथ एक छोटा सा लोहे का मगर हलका सन्दूक बंधा हुआ था जिसे भूतनाथ और नानक ने खैंच कर बाहर निकाला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलिनी ने एक खटका दबा कर सन्दूक खोला। इसके अन्दर चार खंजर एक नेजा और पांच अंगूठियां थीं। कमलिनी ने पहिले एक अंगूठी निकाली और अपनी अंगुली में पहिर लिया, इसके बाद एक खंजर निकाल और उसे म्यान से बाहर कर तारा भूतनाथ और नानक को दिखा कर बोली, "देखो इस खंजर का लोहा कितना उम्दा है।

भूत०। बेशक बहुत उम्दा लोहा है।

कम०। अब इसके गुण सुनो। यह खंजर जिस चीज पर पड़ेगा उसे दो टुकड़े कर देगा चाहे वह चीज लोहा पत्थर अष्टधातु या फौलादी हर्वा क्यों न हो। इसके अतिरिक्त जब इसका कब्जा दबाओगे तो इसमें बिजली की तरह चमक पैदा होगी, उस समय यदि सौ आदमी भी तुम्हें घेरे हुए होंगे तो चमक से सभी की आखें बन्द हो जांयगी। यद्यपि इस समय दिन है और किसी तरह की चमक सूर्य का मुकाबला नहीं कर सकती तथापि इसका मजा मैं तुम्हें दिखाती हूँ।

इतना कह कर कमलिनी ने खंजर का कब्जा दबाया, यकायक इतनी ज्यादे चमक उसमें से पैदा हुई कि दिन का समय होने पर भी उन तीनों की आंखें बन्द हो गईं, मालूम हुआ कि एक बिजली सी आंख के सामने चमक गई।

कम०। सिवाय इसके इस खंजर को जो कोई छूएगा या जिसके बदन से यह खंजर छुला दोगे उसके खून में एक प्रकार की बिजली दौड़ जायगी और वह तुरत बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ेगा। लो इसे तुम लोग छू कर देखो, यही अद्‌भुत खंजर मैं तुम लोगों को दूँगी।

कमलिनी ने खंजर भूतनाथ के आगे रख दिया, भूतनाथ नें उसे उठाना चाहा मगर हाथ लगाने के साथ ही वह कांपा और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ा। कमलिनी ने अपना दूसरा हाथ जिसमें अंगूठी थी उसके बदन पर फेरा तब उसे होश आया।

भूत०। चीज तो बहुत अच्छी है मगर इसका छूना गजब है।

कम०। (सन्दूक में से कई अंगूठियां निकाल कर) पहिले इन अंगूठियों को तुम लोग पहिरो तब इस खंजर को हाथ में ले सकोगे और तब इसकी तेज चमक भी तुम्हारी आंखों पर अपना पूरा असर न कर सकेगी अर्थात् जो कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुकाबले में या तुम्हारे चारो तरफ होगा उसकी आँखें तो बन्द हो जायंगी मगर तुम्हारी आँखें खुली रहेंगी और तुम दुश्मनों को बखूबी मार सकोगे।

इतना कह कर कमलिनी ने एक एक अंगूठी तीनों को पहिरा दी और इसके बाद एक एक खंजर तीनों के हवाले किया। तारा भूतनाथ और नानक ऐसा अद्भुत खंजर पाकर हद से ज्यादे खुश हुए और घड़ी घड़ी उसका कब्जा दवा कर उसकी चमक का मजा लेते रहे।

कम०। अव एक खंजर और एक अंगूठी बच गई सो कुंअर इन्द्रजीतसिंह के लिये अपने पास रक्खूंगी, जिस समय उनसे मुलाकात होगी उनके हवाले करूंगी और यह अंगूठी जो मेरी उंगली में है और यह नेजा जो अपने वास्ते लाई हूं, इसमें भी वही गुण हैं जो खंजर में हैं मगर फर्क इतना है कि वनिस्वत खंजर के इस नेजे में विजली का असर वहुत ज्यादे है।

उस नेजे के चार टुकड़े थे जो पेंच पर चढ़ा कर एक कर दिये जाते थे। कमलिनी ने इन चारों टुकड़ों को एक कर दिया और अव वह पूरा नेजा हो गया।

भूत०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आपने हम लोगों को अद्भुत और अनमोल चीज दी, इसकी वदौलत हम लोगों के हाथ से बड़े बड़े काम निकलेंगे।

इसके वाद कमलिनी ने वह कपड़े की गठरी खोली। इसमें स्याह रंग की एक साड़ी एक चोली और एक वोतल थी। कमलिनी उठ कर समाधि के पीछे गई और गीले कपड़े उतार कर वही काली साड़ी और चोली पहिर कर अपने ठिकाने आ बैठी। वह साड़ी और चोली रेशमी थी और उसमें एक प्रकार का रोगन चढ़ा हुआ था जिसके सवव उस कपड़े पर पानी का असर नहीं होता था। कमलिनी ने वह गीली साड़ी और चोली तारा के सामने रख दी और बोली, "इसे तू पेड़ पर डाल दे जिसमें झटपट सूख जाय, इसके बाद तू कमलिनी वन जा अर्थात् मेरी तरह अपनी सूरत बना ले और इसी साड़ी और चोली को पहिर कर मेरे घर अर्थात् उस तालाव वाले मकान में जाकर बैठ जिसमें नौकरों को मेरे गायव होने का हाल मालूम न हो, वे यही समझें कि तारा कहीं गई हुई है!

तारा०। वहुत अच्छा, मगर आप कहां जायंगी।

कम०। मेरा कोई ठिकाना नहीं, मुझे वहुत काम करना है। (भूतनाथ और नानक की तरफ देख कर) आप लोग भी जाइये और जहां तक हो सके राजा वीरेन्द्रसिंह की भलाई का उद्योग कीजिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नानक०। वहुत अच्छा (हाथ जोड़ कर) मेरी एक बात का जवाव दीजिये तो बड़ी कृपा होगी।

कम० । वह क्या ।

नानक० । इस प्रकार का खंजर उन लोगों के पास भी है या नहीं ?

कम० । (हंस कर) क्या उन लोगों के पास पुनः जाने की इच्छा है ? अपनी रामभोली को देखा चाहता है !

नानक० । हां, यदि मौका मिलेगा तो ।

कम० । अच्छा जा, कोई जर्ह नहीं, इस प्रकार की कोई वस्तु उन लोगों के पास नहीं है और न इसका पता ही उन्हें मिल सकता है मगर जो कुछ कीजिये होशियारी के साथ ।

इसके बाद कमलिनी ने वह बोतल खोली जो कपड़े की गठरी में थी । उसमें किसी प्रकार का अर्क था । समाधि के पीछे जाकर कमलिनी ने वह अर्क अपने तमाम बदन में लगाया जिससे बात की बात में उसका रंग बहुत ही काला हो गया, तब वह फिर तारा के पास आई और उससे दो लंबे बनावटी दांत लेकर अपने मुंह में लगाने के बाद नेजा हाथ में लेकर खड़ी हो गई ।

तारा ने भी अपनी सूरत बदली और कमलिनी बन कर तैयार हो गई । इस काम में भूतनाथ ने उसकी मदद की । कमलिनी के हुक्म से वह सन्दूक और जंजीर पानी में डाल दी गई ।

कमलिनी ने अपने घोड़े को आवाज दी । यद्यपि वह कुछ दूर पर चर रहा था परन्तु मालिक की आवाज के साथ ही दौड़ता हुआ पास आ गया । तारा ने उसे पकड़ लिया और चारजामा कस कर उस पर सवार हो गई तथा कमलिनी तारा के घोड़े पर सवार हुई । अन्त में चारों आदमी कुछ सलाह करके अलग हुए और चारों ने अपना अपना रास्ता लिया अर्थात उसी जगह से चारों आदमी जुदा हो गए ।

इस वारदात के कई दिन बाद कमलिनी इसी राक्षसी भेष में नेजा लिए रोहतासगढ़ की पहाड़ी पर कब्रिस्तान में कमला से मिली थी, इसी ने राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह को कैद से छुड़ाया, और फिर भी कई दफे उनके काम आई थी जिसका हाल पिछले बयानों में लिखा जा चुका है ।

चौथा बयान

अब तो मौसम में फर्क पड़ गया । ठंडी ठंडी हवा जो कलेजे को दहला देती थी और बदन में कंपकंपी पैदा करती थी अब भली मालूम पड़ती है । वह हवा जिसे देख चित्त प्रसन्न होता था और जो बदन में लग कर रग रग से सर्दी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकाल देती थी अब बुरी मालूम होती है। यद्यपि अभी आसमान पर बादल के टुकड़े दिखाई नहीं देते तथापि संध्या के समय मैदान वाग और तराई की ठंडी ठंडी और शीतल तथा मन्द मन्द वायु सेवन करने को जी चाहता है। वहां से हिलते हुए पेड़ों की कोमल कोमल पत्तियों की वहार आंखों की राह घुस कर अन्दर से दिल को अपनी तरफ खैंच लेती है तथा टकटकी बंधी हुई आंखों को दूसरी तरफ देखने का यकायक मौका नहीं मिलता। यद्यपि सूर्य अस्त हुआ ही चाहता है और आसमान पर उड़ने वाले परिन्दों के उतार और जमीन की तरफ झुके हुए एक ही तरफ उड़े जाने से मालूम होता है कि बात की बात में चारों तरफ अंधेरा छा जायगा तथापि हम अपने पाठकों को किसी पहाड़ की तराई में ले चल कर एक अनूठा रहस्य दिखाया चाहते हैं।

तीन तरफ ऊंचे ऊंचे पहाड़ और बीच में कोसों तक का मैदान रमणीक तो है परन्तु रात की अवाई और सन्नाटे ने उसे भयानक वना दिया है। सूर्य अस्त होने में अभी विलम्ब है परन्तु ऊंचे ऊंचे पहाड़ सूर्य की आखिरी लालिमा को इस मैदान में पहुंचने नहीं देते। चारों तरफ सन्नाटा है, जहां तक निगाह काम करती है इस मैदान में आदमी की सूरत दिखाई नहीं पड़ती, हां पश्चिम तरफ वाले पहाड़ के नीचे एक छोटा चमड़े का खेमा दिखाई पड़ता है। इस समय हमें इसी खेमे से मतलब है और हम इसी के दर्वाजे पर पहुंच कर अपना काम निकाला चाहते हैं।

इस खेमे के दर्वाजे पर केवल एक आदमी कमर में खंजर लगाए टहल रहा है। यद्यपि इसकी जवानी ने इसका साथ छोड़ दिया है और फिक्र ने इसे दुबला कर दिया है मगर फुर्ती मजबूती और दिलेरी ने अभी तक इसके साथ दुश्मनी नहीं की और वे इस गई गुजरी हालत में भी इसका साथ दिए जाती हैं। इस आदमी की सूरत शक्ल के बारे में हमें कुछ विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे पाठक इसे पहिचानते हैं और जानते हैं कि इसका नाम 'भूतनाथ' है।

भूतनाथ को खेमे के दर्वाजे पर टहलते हुए देर हो गई। वह न मालूम किस सोच में डूबा हुआ था कि सिर नीचा किए हुए सिवाय टहलने के इधर उधर देखने की उसे विल्कुल फुरसत न थी, हां कभी कभी वह सिर उठाता और एक लम्बी सांस लेकर केवल खेमे की तरफ देखता और सिर नीचा कर उसी तरह टहलने लगता। अब सूर्य ने अपना मुंह अच्छी तरह जमीन के पीछे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में छिपा लिया और भूतनाथ ने कुछ बेचैन होकर उत्तर की तरफ देख औरे से कहा, "अब तो बहुत ही विलम्ब हो गया, क्या बेमकी जान आफत में फंसी है।"

यकायक तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ एक सवार उत्तर की तरफ से आता हुआ दिखाई पड़ा। कुछ और पास आने से मालूम हो गया कि वह औरत है मगर सिपाहियाना ठाठ में, ढाल तलवार के सिवाय उसके पास कोई हर्बा न था। इस औरत की उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। सूरत शक्ल से मालूम होता था कि किसी समय में यह बहुत ही हसीन और दिल लुभाने वाली रही होगी। बात की बात में यह औरत खेमे के पास आ पहुँची और घोड़े से उतर कर उसकी लगाम खेमे की एक डोरी से अटका देने के बाद भूतनाथ के पास आकर बोली, "शाबाश भूतनाथ, बेशक तुम वादे के सच्चे हो।"

भूत०। मगर अभी तक मेरी समझ में यह न आया कि तुम मुझसे दुश्मनी रखती हो या दोस्ती।

औरत०। (हंस कर) अगर तुम ऐसे ही समझदार होते तो जीते जागते और निरोग रहने पर भी मुर्दों में क्यों गिने जाते?

भूत०। (कुछ सोच कर) खैर जो हुआ सो हुआ, अब मुझसे क्या चाहती हो?

औरत०। तुमसे एक काम कराना चाहती हूँ।

भूत०। वह कौन काम है जिसे तुम स्वयं नहीं कर सकतीं?

औरत०। केवल यही एक काम!

भूत०। (आश्चर्य की रीति से गर्दन हिला कर) खैर कहो तो सही, यदि करने लायक होगा तो करूंगा।

औरत०। मैं खूब जानती हूँ कि तुम उस काम को सहज ही में कर सकते हो।

भूत०। तब कहने में देर क्यों करती हो?

औरत०। अच्छा सुनो, यह तो जानते ही हो कि कमलिनी को ईश्वर ने अद्‌भुत बल दे रक्खा है।

भूत०। हां बेशक उसमें कोई दैवी शक्ति है, वह जो कुछ चाहे सो कर सकती है। जो कोई उसे जानता है वह कहेगा कि कमलिनी को कोई जीत नहीं सकता।

औरत०। हां ठीक है परन्तु मैं खूब जानती हूँ कि तुम कमलिनी से ज्यादे ताकत रखते हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत० । (चौंक और कांप कर) इसका क्या मतलब ?

औरत० । यही मतलब कि तुम अगर चाहो तो उसे मार सकते हो ।

भूत० । मगर मैं ऐसा क्यों करने लगा ?

औरत० । केवल मेरी आज्ञा से ।

इतना सुनते ही भूतनाथ के चेहरे पर मुर्दनी छा गई, उसका कलेजा कांपने लगा और सिर कमजोर होकर चक्कर खाने लगा, यहां तक कि वह अपने को संभाल न सका और जमीन पर बैठ गया । मालूम होता था कि उस औरत की आखिरी बात ने उसका खून निचोड़ लिया है । न मालूम क्या सबब था कि निडर होकर भी एक साधारण और अकेली औरत की बातों का वह जवाब नहीं दे सकता और उसकी सूरत से मजबूरी और लाचारी झलक रही है ।

भूतनाथ की ऐसी अवस्था देखकर उस औरत को किसी तरह का रंज नहीं हुआ बल्कि वह मुस्कुराई और उसी जगह घास पर बैठ कर न मालूम क्या सोचने लगी । थोड़ी देर बाद जब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ तो उसने उस औरत की तरफ देखा और हाथ जोड़ कर कहा, "क्या सचमुच मुझे ऐसा हुक्म लगाया जाता है ?"

औरत० । हां, कमलिनी का सिर लेकर मेरे पास हाजिर होना पड़ेगा और यह काम सिवाय तेरे और कोई भी नहीं कर सकता क्योंकि यह तुझ पर विश्वास रखती है ।

भूत० । (कुछ सोच कर) नहीं नहीं, मेरे किए यह काम न होगा । जो कुछ कर चुका हूँ उसी के प्रायश्चित से आज तक छुट्टी नहीं मिलती ।

औरत० । क्या तू मेरा हुक्म टाल सकता है ? क्या तुझमें इतनी ताकत है ?

यह सुन भूतनाथ बहुत ही बेचैन हुआ । वह उठ खड़ा हुआ और सिर नीचा किए इधर उधर टहलने और नीचे लिखी बातें धीरे धीरे बोलने लगा :—

"आह मुझ सा बदनसीब भी दुनिया में कोई न होगा । मुद्दत तक मुर्दों में अपनी गिनती कराई, अब ऐसा संयोग हो गया कि अपने को जीता जागता साबित करूं मगर अफसोस, करी कराई मेहनत मिट्टी हुआ चाहती है । हाय, उस आदमी के साथ जिसमें नेकी कूट कूट कर भरी है मैं बदी करने के लिए मजबूर किया जा रहा हूँ । क्या उसके साथ बदी करने वाला कभी सुख भोग सकता है ? नहीं नहीं कभी नहीं, फिर मैं ऐसा क्यों करूं ? मगर मेरी जान क्योंकर बच सकती है ? इसका हुक्म न मानना मेरी कुदरत के बाहर है । हाय,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दफे की भूल जन्म भर के लिए दुःखदाई हो जाती है। शेरसिंह सच कहता था इन्हीं बातों को सोच कर उसने मेरा नाम 'काल' रख दिया था और उसे मेरी सूरत से घृणा हो गई थी (कुछ देर तक चुप रह कर) ओफ मैं भी व्यर्थ के विचार में पड़ा हूँ; आखिर जान तो जायेगी ही, इसका हुक्म मानूंगा तो भी मारा जाऊंगा और यदि न मानूंगा तो भी मौत की तकलीफ उठाऊंगा और तमाम दुनिया में मेरी बुराई फैलेगी। (चौंक कर) राम राम मुझे क्या हो गया जो ... ...

भूत०। (उस औरत की तरफ देख के) अच्छा मैं कमलिनी को मारने के लिए तैयार हूँ मगर इसके बदले में मुझे इनाम क्या मिलेगा?

औरत०। (हंस कर) तू इस लायक नहीं है कि तुझे इनाम दिया जाय।

भूत०। क्या मैं इस दर्जे को पहुँच गया?

औरत०। बेशक।

भूत०। नहीं कभी नहीं! जा मैं तेरा हुक्म नहीं मानता, देखूं तू मेरा क्या कर लेती है!

औरत०। भूतनाथ, देख खूब सोच कर कोई बात मुंह से निकाल, ऐसा न हो कि अन्त में पछताना पड़े।

भूत०। जा जा, जो करते बने कर ले।

भूतनाथ की आखिरी बात सुन कर वह औरत क्रोध में आकर कांपने लगी उसके होंठ कांप रहे थे मगर कुछ कहना मुश्किल हो रहा था।

इस समय चारों तरफ अंधेरा छा चुका था अर्थात् रात बखूबी हो चुकी थी। थोड़ी देर के लिए दोनों आदमी चुप हो गये, यकायक घोड़ों के टापों की आवाज (जो बहुत दूर से आ रही थी) भूतनाथ के कानमें पड़ी और साथ ही इसके वह औरत भी बोल उठी, "अच्छा देख मैं तेरी ढिठाई का मजा चखाती हूँ।

भूतनाथ पहिले तो कुछ घबड़ाया मगर उसने तुरत ही अपने को संभाला और क़मर से खंजर निकाल कर उस औरत के सामने खड़ा हो गया। वह खंजर वही था जो कमलिनी ने उसे दिया था। कब्जा दबाते ही खंजर में से बिजली की चमक पैदा हुई जिसके सबब से उस औरत की आँखें बन्द हो गईं और वह बावली सी हो गई तथा उस समय तो उसे तनो-बदन की सुध न रही जब भूतनाथ ने खंजर उसके बदन से छुला दिया!

भूतनाथ ने बड़ी होशियारी से उस बेहोश औरत को उसके घोड़े पर लादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और आप भी उसी पर सवार हो तेजी के साथ मैदान का रास्ता लिया। थोड़ी दूर जा कर भूतनाथ ने बेहोशी की तेज दवा उसे सुंघाई जिससे वह औरत बहुत देर के लिये मुर्दे की सी हो गई। हमको इससे कोई मतलब नहीं कि वे सवार जिनके घोड़ों के टापों की आवाज भूतनाथ के कान में पड़ी थी कौन थे और उन्होंने वहां पहुंच कर क्या किया जहाँ से भूतनाथ उस औरत को ले भागा था, हम केवल भूतनाथ के साथ चलते हैं जिसमें उस औरत का और भूतनाथ का हाल मालूम हो।

यद्यपि रात अंधेरी और रास्ता पथरीला था तथापि भूतनाथ ने चलने में कसर न की। थोड़ी थोड़ी दूर पर घोड़ा ठोकर खाता था जिससे भूतनाथ को तकलीफ होती थी और वह बड़ी मुश्किल से उस बेहोश औरत को संभाले लिए जाता था मगर यह तकलीफ ज्यादे देर के लिए न थी क्योंकि पहर भर के बाद आसमान पर कुदरती माहताबी जलने लगी और उसकी (चन्द्रमा की) रोशनी ने चारो तरफ ढंक और खूबसूरती के साथ उजाला कर दिया। ऐसी अवस्था में भूतनाथ ने रुकना उचित न समझा और सवेरा होने तक तेजी के साथ बराबर चला गया। जिस समय आसमान पर सुबह की सुफेदी फैल रही थी घोड़े ने यहां तक हिम्मत हार दी कि दस कदम भी चलना उसके लिए कठिन हो गया। लाचार भूतनाथ घोड़े से नीचे उतरा और उस औरत को भी उतार लिया। घोड़ा उसी समय जमीन पर गिर पड़ा मगर भूतनाथने उसको कुछ परवाह न की।

कमर से चादर खोल उसने औरत की गठड़ी बांधी और पीठ पर लाद आगे का रास्ता लिया।

पहर भर चले जाने बाद भूतनाथ एक ऐसी पहाड़ी के नीचे पहुँचा जिसकी ऊंचाई बहुत ज्यादे न थी मगर खुशनुमा और सायेदार दरख्त पहाड़ी के ऊपर तथा उसकी तराई में बहुत थे। पहाड़ी की चोटी पर सलई का एक ऊंचा पेड़ था और उसके ऊपर लम्बी कांड़ी में लगा हुआ एक लाल फरहरा (ध्वजा) दूर से दिखाई दे रहा था। यह निशान कमलिनी का लगाया हुआ था। भूतनाथ तारा और नानक से मिलने के लिये कमलिनी ने एक यह जगह भी मुकर्रर की थी और निश्चय कर रक्खा था कि जब इन चारों में किसी को किसी से मिलने की आवश्यकता पड़े तो वह इसी जगह आवे और यदि किसी से मुलाकात न हो तो इस झंडे को झुका दे और उन चारों में से जो कोई इस झंडे को झुका हुआ देखे तुरंत इस पहाड़ी के नीचे आवे और नियत स्थान पर अपने साथी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढूंढ़े। यह फरहरा बहुत दूर से दिखाई देता था और यह पहाड़ी रोहतासगढ़ और गयाजी के बीच में पड़ती थी।

उस औरत को पीठ पर लादे हुए भूतनाथ पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगा। लगभग दो सौ कदम जाने के बाद रास्ता छोड़ कर दाहिनी तरफ घूमा जिधर छोटे छोटे जंगली पेड़ों की गुंजान झाड़ी दूर तक चली गई थी। उस झाड़ी में आदमी बखूबी छिप सकता था अर्थात् उस झाड़ी के पेड़ यद्यपि छोटे थे परन्तु आदमी की ऊंचाई से उन पेड़ों की ऊंचाई कुछ ज्यादे थी। भूतनाथ दोनों हाथ से पेड़ों को हटाता हुआ कुछ दूर तक चला गया। आखिर उसे एक गुफा मिली जिसका मुंह जंगली लताओं ने अच्छी तरह ढांक रक्खा था। भूतनाथ उस गुफा के अन्दर चला गया और अपना बोझ अर्थात् उस औरत को गुफा के अन्दर छोड़ बाहर निकल आया। इसके बाद पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया और सलई के पेड़ पर चढ़ कर लाल फरहरे (झण्डे) को झुकाने का इरादा किया परन्तु उसी समय सलई के पेड़ पर चढ़ी हुई कमलिनी उसे दिखाई पड़ी जो फरहरा झुकाने का उद्योग कर रही थी। इस समय भी कमलिनी उसी राक्षसी के वेष में थी जैसा कि ऊपर के बयानों में लिख आए हैं। भूतनाथ ने कमलिनी को पहिचाना और उसने भी भूतनाथ को देखा। कमलिनी पेड़ के नीचे उतर आई और बोली—

कम०। खूब पहुँचे, मैं तुमसे मिला चाहती थी इसी लिए झण्डा झुकाने का उद्योग कर रही थी।

भूत०। मैं खुद तुमसे मिला चाहता था और इसी लिए यहां तक आया हूँ, यदि इस समय तुम न मिलतीं तो मैं इस पेड़ पर चढ़ कर फरहरा झुकाता।

कम०। कहो क्या बात है और कौन सी जरूरत आ पड़ी।

भूत०। पहिले तुम कहो कि मुझसे मिलने की क्या आवश्यकता थी।

कम०। नहीं नहीं पहिले तुम्हारा हाल सुन लूंगी तब कुछ कहूँगी क्योंकि तुम्हारे चेहरे पर घबराहट और उदासी हद से ज्यादा पाई जाती है।

भूत०। बेशक ऐसा ही है और मैं तुमसे आखिरी मुलाकात करने आया हूँ क्योंकि अब जीने की उम्मीद नहीं रही और खुली बदनामी बल्कि कलंक मंजूर नहीं।

कम०। क्यों क्यों, ऐसी क्या आफत आ गई, कुछ कहो तो सही?

भूत०। मेरे साथ पहाड़ी के नीचे चलो। मैं एक औरत को बेहोश करके लाद लाया हूँ जो उसी खोह के अन्दर है, पहिले उसे देख लो तब मेरा हाल सुनो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम०। खैर ऐसा ही सही, चलो।

भूतनाथ के साथ ही साथ कमलिनी पहाड़ी के नीचे उतरी और उस खो के मुहाने पर आ कर बैठ गई जिसके अन्दर भूतनाथ ने उस औरत को रक्खा था। भूतनाथ उस बेहोश औरत को खोह के बाहर निकाल लाया। कमलिनी उस औरत को देखते ही चौंकी और उठ खड़ी हुई।

भूत०। इसी के मारे मेरी जिन्दगी जवाल हो रही है, मगर तुम इसे देख चौंकीं क्यों? क्या इस औरत को पहिचानती हो?

कम०। हां मैं इसे पहचानती हूँ। यह वह काली नागिन है कि जिसके डसने का मन्त्र ही नहीं? जिसे इसने काटा वह पानी तक नहीं मांगता, तुमने इसके साथ दुश्मनी की सो अच्छा नहीं किया।

भूत०। मैंने जान बूझ कर इसके साथ दुश्मनी नहीं की। तुम खुद जानती हो कि मैं इसके काबू में हूँ किसी तरह इसका हुक्म टाल नहीं सकता, मगर कब इसने जो कुछ काम करने के लिए मुझे कहा वह मैं किसी तरह नहीं कर सकता था और इनकार की भी हिम्मत न थी, लाचार इसी खजर की मदद से गिरफ्तार कर लाया हूँ। अब कोई ऐसी तर्कीब निकालो जिसमें मेरी जान बचे और मैं बीरेन्द्रसिंह को मुंह दिखाने लायक हो जाऊं।

कम०। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या रहे हो! मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि तुम इसके कब्जे में क्योंकर फंसे हो, न तुमने इसके बारे में कभी मुझसे कुछ कहा ही।

भूत०। बेशक मैं इसका हाल तुमसे कह चुका हूँ और यह भी कह चुका हूं कि इसी की बदौलत मुझे मरना पड़ा, बल्कि तुमने वादा किया था कि इसके हाथ से तुम्हें छुट्टी दिला दूँगी।

कम०। हां वह बात मुझे याद है, मगर तुमने तो श्यामाका नाम लिया था!

भूत०। ठीक है, वह यही श्यामा है।

कम०। (हंस कर) इसका नाम श्यामा नहीं है मनोरमा है। मैं इसकी सात पुश्त को जानती हूं। बेशक इसने अपने नाम में भी तुमको धोखा दिया। खैर अब मालूम हुआ कि तुम्हें इसी ने सता रक्खा है, तुम्हारे हाथ की लिखी हुई दस्तावेज इसी के कब्जे में है और इस सबब से तुम इसे जान से मार भी नहीं सकते। इसने मुझे भी कई दफे धोखा देना चाहा था मगर मैं कब इसके पंजे में आने वाली हूँ। हाँ, यह तो कहो कि इसने क्या काम करने के लिए कहा था।

भूत०। इसने कहा था कि तू कमलिनी का सिर काट कर मेरे पास ले आ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह काम तुझसे बखूबी हो सकेगा, क्योंकि वह तुझ पर विश्वास करती है।

कम०। (कुछ देर तक सोच कर) खैर कोई हर्ज नहीं, पहिले तो मुझे इसकी कोई विशेष फिक्र न थी परन्तु अब इसके साथ चाल चले बिना काम नहीं निकलता। देखो तो मैं इसे कैसा दुरुस्त करती हूँ और तुम्हारे कागजात भी इसके कब्जे से कैसे निकालती हूँ।

भूत०। मगर इस काम में देर न करनी चाहिये।

कम०। नहीं नहीं, देर न होगी क्योंकि कुंअर इन्द्रजीतसिंह को छुड़ाने के लिए भी मुझे इसी के मकान पर जाना पड़ेगा, बस दोनों काम एक साथ ही निकल जायेंगे।

भूत०। अच्छा तो अब क्या करना चाहिए?

कम०। (हाथ का इशारा करके) तुम इस झाड़ी में छिप रहो, मैं इसे होश में लाकर कुछ बातचीत करूंगी। आज यह मुझे किसी तरह नहीं पहिचान सकती।

भूतनाथ झाड़ी के अन्दर छिप रहा, कमलिनी ने अपने बटुए में से लखलखे की डिबिया निकाली और सुंघा कर उस औरत को होश में लाई। मनोरमा जब होश में आई उसने अपने सामने एक भयानक रूपधारी औरत को देखा। वह घबड़ा कर उठ बैठी और बोली—

मनो०। तुम कौन हो और मैं यहाँ क्योंकर आई?

कम०। मैं जंगल की रहने वाली भिल्लनी हूँ, तुम्हें एक लम्बे कद का आदमी पीठ पर लादे लिये जाता था। मैं इस पहाड़ी के नीचे सूअर का शिकार कर रही थी, जब वह मेरे पास पहुँचा मैंने उसे ललकारा और पूछा कि पीठ पर क्या लादे लिये जाता है? जब उसने कुछ न बताया तो लाचार (नेजा दिखा कर) इसी जहरीले नेजे से उसे जख्मी किया। जब वह बेहोश होकर गिर पड़ा तब मैंने गठड़ी खोली, जब तुम्हारी सूरत नजर आई तो हाल जानने की इच्छा हुई, लाचार इस जगह उठा लाई और होश में लाने का उद्योग करने लगी। अब तुम्हीं बताओ कि वह आदमी कौन था और तुम्हें इस तरह क्यों लिए जाता था?

मनो०। मैं अपना हाल तुमसे जरूर कहूँगी मगर पहिले यह बताओ कि वह आदमी तुम्हारे इस जहरीले नेजे के असर से मर गया या जीता है।

कम०। वह मर गया और मेरे साथी लोग उसे जला देने के लिए ले गए।

मनो०। (ऊंची सांस लेकर) अफसोस, यद्यपि उसने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया तथापि उसकी मोहब्बत मेरे दिल से किसी तरह नहीं जा सकती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्योंकि वह मेरा प्यारा पति था ! अफसोस अफसोस, तुमने उसके हाथ से मुझे व्यर्थ छुड़ाया।

पाठक, झाड़ी के अन्दर छिपा हुआ भूतनाथ भी मनोरमा की बातें सुन रहा था। मनोरमा ने जो कुछ कमलिनी से कहा न मालूम उसमें क्या तासीर थी कि सुनने के साथ ही भूतनाथ का कलेजा कांपने लगा और उसे चक्कर सा आ गया। बहुत मुश्किल से उसने अपने को सम्हाला और कान लगा कर फिर दोनों की बातें सुनने लगा !

कम०। (कुछ सोच कर) मैं कैसे विश्वास करूं कि तुमने जो कुछ कहा वह सच है।

मनो०। पहिले यह सोचो कि मैं तुमसे झूठ क्यों बोलूंगी ?

कम०। इसके कई सबब हो सकते हैं, सब से भारी सबब यह है कि तुम्हारा भेद एक गैर के सामने खुल जायेगा जिससे तुम्हें कोई मतलब नहीं। मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि जो आदमी तुम्हें इतना कष्ट दे और बेहोश करके गठरी में बांध कर कहीं ले जाने का इरादा रक्खे उसे तुम प्यार करो और अपना पति कह कर सम्बोधित करो।

मनो०। नहीं नहीं; यों तो शक की कोई दवा नहीं परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगी कि उस आदमी के बारे में मैंने जो कुछ कहा वह सच है।

कम०। खैर ऐसा ही होगा, मुझे इससे कोई मतलब नहीं चाहे वह आदमी तुम्हारा पति हो अथवा नहीं, अब तो वह मर चुका किसी तरह जी नहीं सकता। खैर यह तो बताओ कि अब तुम क्या किया चाहती हो और कहां जाने की इच्छा रखती हो ?

मनो०। मुझे गयाजी का रास्ता बता दो। मेरे माँ बाप उसी शहर में रहते हैं, अब मैं उन्हीं के पास जाऊंगी।

कम०। अच्छा पहाड़ी के नीचे चलो मैं तुम्हें गयाजी का रास्ता बता देती हूँ। हां मैं तुम्हारा नाम तो भूल ही गई।

मनो०। मेरा नाम इमामन है।

कम०। (जोर से हंस कर) क्या ठगने के लिए मैं ही थी !

मनो०। (चौंक कर और कमलिनी को सिर से पैर तक अच्छी तरह देख कर) मुझे तुम पर शक होता है।

कम०। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं, मगर शक होने ही से क्या हो सकता है ? आज तक तुमने मुझे कभी नहीं देखा और न फिर देखोगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनो०। तब मैं अवश्य ही कह सकती हूँ कि तुम कमलिनी हो !

कम०। नहीं नहीं, मैं कमलिनी नहीं हो सकती, हां कमलिनीको पहिचानती जरूर हूँ क्योंकि वह बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान की दोस्त है, इसलिए मेरी दुश्मन !

मनो०। अब तुम्हारी बातों का विश्वास नहीं कर सकती।

कम०। तो इसमें मेरा कोई भी हर्ज नहीं। (आहट पाकर और दाहिनी तरफ़ देख कर) लो देखो अब तो मैं सच्ची हुई ? वह कमलिनी आ रही है !

संयोग से उसी समय तारा भी आ पहुँची जो कमलिनी की सूरत में उसके कहे मुताबिक सब काम किया करती थी। कमलिनी ने गुप्त रीति से तारा को कुछ इशारा किया जिससे वह कमलिनी का मतलब समझ गई। कमलिनी रूपी तारा लपक कर उन दोनों के पास पहुँची और कमर से खंजर निकाल कर और उसे चमका कर बोली, "इस समय तुम दोनों भले मौके पर मुझे मिल गई हो, आज मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ, अब मैं तुम दोनों से बिना बदला लिए टलने वाली नहीं !"

तारा की यह बात सुन कमलिनी जान बूझ कर काँपने लगी, मालूम होता था कि वह डर से कांप रही है। मनोरमा भी यकायक कमलिनी को मौजूद देख कर घबड़ा गई, इसके अतिरिक्त उस चमकते हुए खंजर को देख कर उसे विश्वास हो गया कि अब किसी तरह जान नहीं बचती क्योंकि इसी तरह का खंजर भूतनाथ के हाथ में वह देख चुकी थी और उसके प्रबल प्रताप का नमूना उसे मालूम हो चुका था, साथ ही उसे इस बात का भी विश्वास हो गया कि राक्षसी (कमलिनी) जिसने उसे भूतनाथ के हाथ से छुड़ाया सच्ची और उसकी खैरखाह है।

कमलिनी ने तारा को फिर इशारा किया जिसे मनोरमा ने नहीं जाना पर तारा ने वह खंजर मनोरमा के बदन से लगा दिया और वह बात की बात में बेहोश होकर जमीन पर गिर गई। झाड़ी में छिपा हुआ भूतनाथ भी निकल आया और कमलिनी से बोला—

भूत०। जो हो मगर मेरा काम कुछ भी न हुआ।

कम०। इसमें कोई शक नहीं कि तुम बड़े बुद्धिमान हो परन्तु कभी कभी तुम्हारी अक्ल भी हवा खाने चली जाती है। तुम इस बात को नहीं जानते कि तुम्हारा काम पूरा पूरा हो गया। यकायक तारा के पहुँच जाने से मालूम हुआ कि तुम्हारी किस्मत तेज है नहीं तो मुझे बहुत कुछ बखेड़ा करना पड़ता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत० । सो क्या, मुझे साफ समझा दो तो जी ठिकाने हो ।

कम० । मेरे पास बैठ जाओ मैं अच्छी तरह समझा देती हूँ । (तारा तरफ देख कर) कहो तुम्हारा आना क्योंकर हुआ ?

तारा० । मुझे एक ऐसा काम आ पड़ा कि विना तुमसे मिले कठिनता होने की आशा न रही, लाचार झण्डी टेढ़ी करके तुमसे मिलने की उम्मीद यहां आई थी ।

कम० । अच्छा हुआ कि तुम आईं, इस समय तुम्हारे आने से बड़ा ही क चला, अच्छा बैठ जाओ और जो कुछ मैं कहती हूँ उसे सुनो ।

इसके बाद कमलिनी, तारा और भूतनाथ में देर तक बातचीत होती रही। जिसे यहां पर लिखना हम मुनासिब नहीं समझते क्योंकि इन लोगों ने जो करना विचारा है वह आगे के बयान में स्वयं खुल जायेगा । जब बातचीत से मिली तो मनोरमा को उठा तीनों आदमी पहाड़ी के नीचे उतरे, मनोरमा पेड़ के साथ बांध दी गई और इसके बाद कमलिनी भी कैदियों की तरह एक के साथ बाँध दी गई । इस काम से छुट्टी पाकर तारा और भूतनाथ वहां से अल हो गए और किसी झाड़ी में छिप कर दूर से इन दोनों को देखते रहे । थोड़ी देर बाद मनोरमा होश में आई और अपने को बेबस पाकर चारो तरफ देख लगी । पास ही में पेड़ से बंधी हुई कमलिनी पर भी उसकी निगाह पड़ी और अफसोस के साथ कमलिनी की तरफ देख कर बोली—

मनो० । बेशक तुम सच्ची हो, मेरी भूल थी जो तुम पर शक करती थी

कम० । खैर इस समय तो तुम्हारे ही सबब से मुझे भी कष्ट भोगना पड़

मनो० । इसमें कोई सन्देह नहीं ।

कम० । तुम्हारा छूटना तो मुश्किल है मगर मैं किसी न किसी तरह धो देकर छूट ही जाऊंगी और तब कमलिनी से समझूंगी, अब बिना उसकी ज लिए चैन कहां ?

मनो० । तुम्हारी भी तो वह दुश्मन है, फिर तुम्हें क्योंकर छोड़ देगी ?

कम० । मेरी उसकी दुश्मनी भीतर ही भीतर की है, इसके अतिरिक्त ए और सबब ऐसा है कि जिससे मैं अवश्य छूट जाऊंगी, तब तुम्हारे छुड़ाने क भी उद्योग करूंगी ।

मनो० । वह कौन सा सबब है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । सो मैं अभी नहीं कह सकती, तुम्हें स्वयं मालूम हो जायगा । (

तरफ देख कर) न मालूम वह कम्बख्त कहां गई !

मनो० । क्या तुम्हें भी नहीं मालूम ?

कम० । नहीं मुझे जब होश आया मैंने अपने को इसी तरह बेबस पाया ।

मनो० । खैर कहीं भी हो आवेहीगी, हां तुम्हें यदि अपने छूटने की उम्मीद है तो कब तक ?

कम० । उसके आने पर दो चार बातें करने से ही मुझे छुट्टी मिल जायगी और मैं भी तुम्हें अवश्य छुड़ाऊंगी हां अकेली होने के कारण विलम्ब जो कुछ हो। यदि तुम्हारा कोई मददगार हो तो बताओ ताकि छुट्टी मिलने पर मैं तुम्हारे हाल की उसे खबर दूँ ।

मनो० । (कुछ सोच कर) यदि कष्ट उठा कर तुम मेरे घर तक जाओ और मेरा सखी को मेरा हाल कह सको तो वह सहज ही में मुझे छुड़ा लेगी ।

कम० । इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि मैं अवश्य छूट जाऊंगी। तुम अपने घर का पता और अपनी सखी का नाम बताओ, मैं जरूर उससे मिल कर तुम्हारा हाल कहूँगी और स्वयं भी जहाँ तक हो सकेगा तुम्हें छुड़ाने के लिए उसका साथ दूँगी ।

मनो० । यदि ऐसा करो तो मैं जन्म भर तुम्हारा अहसान मानूंगी । जब उसके कान तक मेरा हाल पहुँच जायगा तो तुम्हारी मदद की आवश्यकता न रहेगी ।

कम० । खैर लो अब पता और नाम बताने में विलम्ब न करो, कहीं ऐसा न हो कि कमलिनी आ जाय, तब कुछ न हो सकेगा ।

कम० । हाँ ठीक है—काशीजी में त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास लाल रंग का मकान एक छोटे से बाग के अन्दर है । मछली के निशानी की स्याह रंग की झण्डी दूर से ही दिखाई पड़ेगी । मेरी सखी का नाम 'नागर' है, समझ गई ?

कम० । मैं खूब समझ गई, मगर उसे मेरी बात का विश्वास कब होगा ?

मनो० । इसमें विश्वास की कोई जरूरत नहीं है, वह मुझ पर आफत आने का हाल सुनते ही बेचैन हो जायगी और किसी तरह न रुकेगी ।

कम० । तथापि मुझे हर तरह से दुरुस्त रहना चाहिए, शायद वह समझे कि यह मुझे धोखा देने आई है और चाहती है कि मैं घर के बाहर जाऊं तो कोई मतलब निकाले ।

मनो० । (कुछ सोच कर) हां ऐसा हो सकता है, अच्छा मैं तुम्हें एक परिचय बताती हूँ, जब वह बात उसके कान में कहोगी तब वह तुम्हारा पूरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वास कर लेगी, परन्तु उस परिचय को बड़ी होशियारी से अपने दिल में रखना, खबरदार दूसरा जानने न पावे नहीं तो मुश्किल होगी और मेरी जान किसी तरह न बचेगी।

कम०। तुम विश्वास रक्खो कि वह शब्द सिवाय एक दफे के जब मैं तुम्हारी सखी के कान में कहूँगी दूसरे दफे मेरे मुंह से न निकलेगा। (इधर उधर देख कर) जल्द कहो, अब देर न करो।

मनो०। (कमलिनी की तरफ झुक कर धीरे से) 'विकट' शब्द कहना, बस फिर सन्देह न करेगी और तुम्हें मेरा विश्वासपात्र समझेगी।

कम०। ठीक है, अब जहाँ तक जल्द हो सकेगा मैं तुम्हारी सखी के पास पहुँचूंगी और अपना मतलब निकालूंगी।

मनो०। पहिले तो मुझे यह देखना है कि कमलिनी तुम्हें क्योंकर छोड़ती है! जब तुम छूट जाओगी तब कहीं जाकर मुझे अपने छूटने की कुछ उम्मीद होगी।

कम०। (हंस कर) मैं उतनी ही देर में छूट जाऊंगी जितनी देर में तुम एक से लेकर निन्यान्नवे तक गिन सको।

इतना कह कर कमलिनी ने सीटी बजाई। सीटी की आवाज सुनते ही तारा और भूतनाथ जो वहाँ से थोड़ी दूर पर एक झाड़ी के अन्दर छिपे हुए थे कमलिनी के पास आ पहुँचे। कमलिनी ने मुस्कुराते हुए उनकी तरफ देखा और कहा, "मुझे छोड़ दो।"

भूतनाथ ने कमलिनी को जो पेड़ से बंधी हुई थी खोल दिया कमलिनी उठ कर मनोरमा के पास आई और बोली, "क्यों मैं अपने कहे मुताबिक छूट गई या नहीं!"

कमलिनी की चालाकी के साथ ही भूतनाथ की सूरत देख कर मनोरमा सन्न हो गई और ताज्जुब के साथ उन तीनों की तरफ देखने लगी। इस समय भूतनाथ के चेहरे पर उदासी के बदले खुशी की निशानी पाई जाती थी। भूतनाथ ने हंस कर मनोरमा की तरफ देखा और कहा, "क्या अब भी भूतनाथ तेरे कब्जे में है? अगर हो तो कह, इसी समय कमलिनी का सर काट कर तेरे आगे रख दूँ क्योंकि वह यहाँ मौजूद है।"

मनोरमा ने क्रोध के मारे दांत पीसा और सर नीचा कर लिया। थोड़ी देर बाद बोली, "अफसोस, मैं धोखा खा गई!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम०। (तारा से) अब समय नष्ट करना ठीक नहीं। इस हरामजादी को

तुम ले आओ और लोहे वाले तहखाने में बन्द करो फिर देखा जायगा। (अपने हाथ का नेजा दे कर) इस नेजे को अपने पास रक्खो और वह खन्जर मुझे दे दो, अब नेजे के बदले खंजर ही रखना मैं उत्तम समझती हूँ, यद्यपि एक खंजर मेरे पास है परन्तु वह कुंअर इन्द्रजीतसिंह के लिए है।

तारा०। मैं भी यही कहा चाहती थी क्योंकि खन्जर और नेजे में गुण तो एक ही है फिर ढोढा लेकर घूमने से क्या फायदा, यह लो खंजर अपने पास रक्खो।

कम०। (भूतनाथ से) तुम भी तारा के साथ जाओ और इस हरामजादी को हमारे घर पहुँचा कर बहुत जल्द लौट आओ तब तक मैं इसी जगह रहूँगी और तुम्हारे आते ही तुम्हें साथ लेकर काशीजी जाऊंगी। पहिले तुम्हारा काम करके कुंअर इन्द्रजीतसिंह से मिलूंगी और मायारानी की मण्डली को जिसने दुनिया में अन्धेर मचा रक्खा है जहन्नुम में भेजूंगी।

भूतनाथ०। (सिर झुका कर) जो हुक्म।

पाँचवां बयान

आधी रात से कुछ ज्यादे जा चुकी है। चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, कभी कभी कुत्तों के भूंकने की आवाज के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं देती। ऐसे समय में काशी की तंग गलियों में दो आदमी जिनमें एक औरत और दूसरा मर्द है घूमते हुए दिखाई देते हैं। ये दोनों कमलिनी और भूतनाथ हैं जो त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास मनोरमा के मकान पर पहुँचने की धुन में कदम बढ़ाये हुए तेजी के साथ जा रहे हैं। जब वे दोनों एक चौमुहानी के पास पहुँचे तो देखा कि दाहिनी तरफ से एक आदमी पीठ पर गठ्ठर लादे आया और उसी तरफ को घूमा जिधर ये दोनों जाने वाले थे। कमलिनी ने धीरे से भूतनाथ के कान में कहा, "इस गठरी में जरूर कोई आदमी है।"

भूत०। बेशक ऐसा ही है। इस आदमी का चाल पर भी मुझे कुछ शक पड़ता है, ताज्जुब नहीं कि यह मनोरमा का नौकर श्यामलाल हो।

कम०। तुम्हारा शक ठीक हो सकता है क्योंकि तुम बहुत दिनों तक मनोरमा के मकान पर रह चुके हो और वहाँ के हर एक आदमी को बखूबी जानते हो।

भूत०। कहो तो इसे रोकूं ?

कम०। हाँ हाँ रोको, जाने न पावे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतनाथ लपक कर उस आदमी के सामने गया और कमर से खंजर निकाल

उसके सामने चमकाया। उसकी चमक में भूतनाथ और कमलिनी ने उस आदमी को पहिचान लिया मगर वह इन दोनों को अच्छी तरह न देख सका क्योंकि बिजली की तरह चमकने वाली रोशनी ने उसकी आंखें बन्द कर दीं और वह घबड़ा कर बैठ गया। भूतनाथ ने खंजर उसके बदन से लगाया जिसकी तासीर से वह एक दफे कांपा और बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया। भूतनाथ ने उसे उसी तरह छोड़ दिया और गठरी का कोना खोल कर देखा तो उसमें एक कमसिन औरत बंधी हुई पाई। कमलिनी के हुक्म से भूतनाथ ने वह गठरी अपनी पीठ पर लाद ली और मनोरमा के घर का रास्ता छोड़ दोनों आदमी गंगा किनारे की तरफ रवाना हुए।

बात की बात में दोनों गंगा किनारे जा पहुंचे। इस समय चन्द्रमा की रोशनी अच्छी तरह फैली हुई थी। एक मढ़ी के ऊपर बैठने के बाद भूतनाथ ने वह गठरी खोली। उस बेहोश औरत के चेहरे पर चन्द्रमा की रोशनी पड़ते ही भूतनाथ चौंक कर बोला, "ओफ, यह तो कमला है!"

कमला होश में लाई गई। जब उसकी निगाह भूतनाथ के ऊपर पड़ी तो वह एक दम कांप उठी। कमला को उस दिन की बात याद आ गई जिस दिन खण्डहर के तहखाने में अपने चाचा शेरसिंह के पास भूतनाथ को देखा था। कमला को शक हो गया कि इस समय वह जिसके हुक्म से बेहोश करके लाई गई वह भूतनाथ ही है। कमला की दूसरी निगाह कमलिनी पर पड़ी मगर वह कमलिनी को पहिचान न सकी। यद्यपि कमला कमलिनी को रोहतासगढ़ पहाड़ी पर देख चुकी थी परन्तु इस समय कमलिनी उस भयानक राक्षसी के भेष में थी, रंग काला ज़रूर था, परन्तु लम्बे लम्बे दांत उसके मुंह में न थे इसी से वह कमलिनी को पहचान न सकी।

कमलिनी ने जब देखा कि कमला बहुत ही डरी हुई और हैरान मालूम पड़ती है तो उसने कमला का हाथ पकड़ लिया और धीरे से दबा कर कहा, "कमला, तू डर मत। हम लोगों ने इस समय तुझे एक दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है।"

कमला०। अब मेरा जी ठिकाने हुआ, मुझे उम्मीद है कि आप लोगों की तरफ से मुझे तकलीफ़ न पहुंचेगी। परन्तु आप लोगों को जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है।

कम०। ठीक है, ज़रूर तेरा जी चाहता होगा कि हम लोगों का हाल जाने और इसी तरह मैं भी तुझसे बहुत कुछ पूछा चाहती हूँ मगर इस समय केवल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चार पांच घण्टे के लिए तुझसे जुदा होती हूं, तब तक तू (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनके साथ रह। किसी तरह से डर मत, सवेरा होने के पहिले ही मैं तुझसे आकर मिलूंगी और वातचीत के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह के छुड़ाने का उद्योग करूंगी।

कमला०। मैं आपके हुक्म के खिलाफ कुछ न करूंगी। मैं आपसे हर तरह पर भलाई की आशा रखती हूं क्योंकि आपने मुझे एक ऐसे दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है जिसका हाल मैं ही जानती हूं।

कम०। अच्छा तो अब बातों में समय नष्ठ करना ठीक नहीं है। (भूतनाथ की तरफ देख कर) भूतनाथ, यहां छोटी छोटी बहुत सी डोंगियां बंधी हुई हैं, सन्नाटा और मौका देख कर कोई एक डोंगी खोल लो और कमली को साथ लेकर गंगा पार चले जाओ। मैं मनोरमा के घर पर जाती हूं, वहां से अपना मतलब साध कर सवेरा होने के पहिले ही तुमसे आ मिलूंगी।

कमली०। (चौंक कर) क्या नाम लिया, मनोरमा! हाय हाय, वह तो बड़ी शैतान है, हम लोगों को तो उसने तबाह कर डाला! क्या तुम उसके....

कम०। डर मत, मनोरमा को मैंने कैद कर लिया है और अब एक जरूरी काम के लिए उसके घर पर जा रही हूं। (आसमान की तरफ देख कर) ओफ, बहुत विलम्ब हुआ, खैर अब मैं बिदा होती हूं, पुनः मिलने पर सब हाल कहूंगी।

कमलिनी वहां से रवाना हुई और थोड़ी ही देर में उस बाग के फाटक पर जा पहुंची जिसमें मनोरमा का मकान था। फाटक के साथ लोहे की एक जंजीर लगी हुई थी जिसे हिलाने से दरवान ने एक छोटे से सूराख में से बाहर की तरफ देखा जो इसी काम के लिए बना हुआ था। केवल एक औरत को दर्वाजे पर मौजूद पाकर दरबान ने फाटक खोल दिया और जब कमलिनी अन्दर चली गई तो फाटक उसी तरह बन्द कर दिया। दरबान ने कमलिनी से पूछा, "तुम कौन हो और यहां किस लिए आई हो?"

कमलिनी०। मुझे मनोरमाजी ने पत्र देकर अपनी सखी नागर के पास भेजा है, तुम मुझे नागर के पास बहुत जल्द ले चलो।

दरवान०। वह तो यहां नहीं हैं, किसी दूसरी जगह गई हैं।

कमलिनी०। कब आवेंगी?

दरवान०। सो मैं ठीक नहीं कह सकता।

कमलिनी०। क्या तुम यह भी नहीं कह सकते कि वे आज या कल तक लौट आवेंगी या नहीं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरबान॰। हां यह तो मैं कह सकता हूं कि पांच चार दिन तक वे न आवें इसके बाद चाहे जब आवें।

कमलिनी॰। अफसोस अब वेचारी मनोरमा नहीं बच सकती।

दरबान॰। (चौंक कर) क्यों क्यों, उन पर क्या आफत आई?

कमलिनी॰। यह एक गुप्त बात है जो मैं तुमसे नहीं कह सकती, हां इतना कहने में कोई हर्ज नहीं कि यदि तीन दिन के अन्दर उन्हें बचाने का उद्योग न किया जायगा तो चौथे दिन कुछ नहीं हो सकता, वे अवश्य मार डाली जायंगी।

दरबान॰। अफसोस, यदि आप एक दिन तब यहां अटकना मंजूर करें तो मैं नागरजी के पास जाकर उन्हें बुला लाऊं, आपको यहां किसी तरह की तक-लीफ न होगी!

कमलिनी॰। (कुछ सोच कर) मुझे एक जरूरी काम है इसलिए अटक नहीं सकती परन्तु कल शाम तक अपना काम करके लौट आ सकती हूं।

दरवान॰। यदि आप ऐसा भी करें तो काम चल सकता है परन्तु आप अ[illegible] न जांय! यदि आपका काम ऐसा हो जिसे हम लोग कर सकते हैं तो आप क[illegible] उसका बन्दोबस्त कर दिया जायगा।

कमलिनी॰। नहीं, बिना मेरे गए वह काम नहीं हो सकता, मगर [illegible] चिन्ता नहीं, मैं कल शाम तक अवश्य आ जाऊंगी।

दरवान॰। जैसी मर्जी, आपकी मेहरवानी से यदि हमारे मालिक की [illegible] बच जायगी तो हम लोग जन्म भर के लिए गुलाम रहेंगे।

कमलिनी॰। मैं अवश्य आऊंगी और उनके लिए हर तरह का उद्योग कर[illegible] तुम जाती समय इसका बन्दोवस्त कर जाना कि यदि तुम्हारे लौट आने के प[illegible] ही मैं यहां पहुंच जाऊं तो मुझे यहां रहने में किसी तरह का तरद्दुद न हो।

दरवान॰। इससे आप वेफिक्र रहें, मैं पूरा पूरा इन्तजाम करके जाऊंगा [illegible] नागरजी को लेकर बहुत जल्द लौटूंगा।

फाटक खोल दिया गया और कमलिनी वाग के बाहर हो गई। वह बीस कदम भी आगे न गई होगी कि एक आदमी बदहवास और दौड़ता हुआ बाग के फाटक पर पहुंचा और दरवाजा खुलवाने का उद्योग करने लगा। [illegible]लिनी जान गई कि यह वही आदमी है जिसके हाथ से अभी थोड़ी ही देर हु[illegible] कमला को छुड़ाया है। कमलिनी उसी जगह आड़ में खड़ी होकर उसे देखने [illegible] कुछ सोचने लगी। जब बाग का फाटक खुल गया और वह आदमी अन्दर [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया तो न मालूम क्या सोचती विचारती कमलिनी भी वहां से रवाना हुई और थोड़ी रात बाकी थी जब कमला और भूतनाथ के पास पहुंची जो गंगा पार उसके आने की राह देख रहे थे । कमलिनी को बहुत जल्द लौट आते देख भूतनाथ को ताज्जुब हुआ और उसने कहा—

भूत० । मालूम होता है कि कुछ काम न हुआ और आपको खाली ही लौट आना पड़ा ।

कम० । हां इस समय तो खाली ही लौटना पड़ा मगर काम हो जायगा । नागर घर पर मौजूद न थी, उसका आदमी उसे बुलाने के लिए गया है । मैं कल शाम तक फिर वहां पहुंचने का वादा कर आई हूं, इच्छा तो यही थी कि वहां अटक जाऊं क्योंकि ऐसा करने से और भी कुछ काम निकलने की उम्मीद थी परन्तु कमला के ख्याल से लौट आना पड़ा । मैं चाहती हूं कि कमला को रोहतासगढ़ रवाना कर दूं क्योंकि उसकी जुबानी कुछ हाल सुन कर राजा वीरेन्द्रसिंह को ढाढ़स होगी और लड़कों के सोच में बहुत व्याकुल न रहेंगे । (कमला की तरफ देख कर) तेरी क्या राय है ?

कमला० । जो कुछ आप हुक्म दें मैं करने को तैयार हूं परन्तु इस समय मैं बहुत सी बातों का असल भेद जानने के लिए बेचैन हो रही हूं और सिवाय आपके कोई दूसरा मेरी दिलजमई नहीं कर सकता ।

कम० । कोई हर्ज नहीं, मैं हर तरह से तेरी दिलजमई कर दूंगी ।

इतना सुन कर कमला भूतनाथ की तरफ देखने लगी । कमलिनी समझ गई कि यह निराले में मुझसे कुछ पूछा चाहती है अस्तु उसने भूतनाथ को वहां से हट जाने के लिए कहा और जब वह कुछ दूर चला गया तो कमला से बोली, "अब निराला हो गया, जो कुछ पूछना हो पूछो ।"

कमला० । मुझे आपका कुछ हाल भूतनाथ की जुबानी मालूम हुआ है परन्तु उससे पूरी दिलजमई नहीं होती । मुझे पूरा पूरा पता लग चुका था कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह आपके यहां कैद हैं, फिर न मालूम उन पर क्या आफत आई और उनके साथ आपने क्या सलूक किया । यद्यपि उस समय हम लोग आपके नाम से डरते थे परन्तु जब आपने कई दफे हम लोगों के साथ नेकी की जिसका हाल आज मालूम हुआ है तो वह बात अब मेरे दिल से जाती रही, फिर भी कुंअर इन्द्रजीतसिंह के बारे में शक बना ही रहा है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । सुन, मैं तुझसे पूरा पूरा हाल कहती हूं । यह तो तुझे मालूम ही है

चुका कि मैं कमलिनी हूं।

कमला०। जी हां यह तो (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनकी कृपा से मालूम हो गया और इन्हीं के जुबानी यह भी जान गई कि रोहतासगढ़ में व कब्रिस्तान के अन्दर हाथ में चमकता हुआ नेजा लेकर आप ही ने हम लोगों की मदद की थी और वेहोश करके रोहतासगढ़ किले के अन्दर पहुंचा दिया था, दूसरी दफे राजा वीरेन्द्रसिंह वगैरह को रोहतासगढ़ के कैदखाने से आप ही ने छुड़ाया था, और तीसरी दफे उस खंडहर में यकायक विचित्र रीति से आप को पहुंचते हम लोगों ने देखा था।

कम०। यद्यपि कुछ लोगों ने मुझे वदनाम कर रक्खा है, परन्तु वास्तव में वैसी नहीं हूं। मैं नेकों के साथ नेकी करने के लिए हरदम तैयार रहती हूं, उसी तरह दुष्टों को मजा चखाने की भी नीयत रहती है। मैंने कुंअर इन्द्रजीतसिंह के साथ किसी तरह की बुराई नहीं की वल्कि उनके साथ नेकी की और उन्हें बहुत बड़े दुश्मन के हाथ से छुड़ाया। जब वे तुम लोगों से मिलेंगे और मेरा हाल कहेंगे तब मालूम होगा कि कमलिनी ने सच कहा था!

इसके वाद कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह का अपने लश्कर से गायब होना, उन्हें दुश्मन के हाथ से छुड़ाना, कई दिनों तक अपने मकान में रखना, माधवी को गिरफ्तार करना, किशोरी का रोहतासगढ़ के तहखाने से निकलना और धन्नू के कब्जे में पड़ना, तारा के खबर पहुंचाने पर इन्द्रजीतसिंह को साथ लेकर किशोरी को छुड़ाने के लिए जाना, रास्ते में शेरसिंह और देवीसिंह से मिलना, अग्निदत्त का हाल और अन्त में उस तिलिस्मी मकान के अन्दर सभी का कूद जाना, कमला से पूरा पूरा बयान किया। कमला ताज्जुब से सब बातें सुनती रही और अब कमलिनी पर उसे पूरा पूरा विश्वास हो गया।

कमला०। फिर किशोरी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह उस खंडहर वाले तहखाने में क्योंकर पहूंचे?

कम०। वह खंडहर एक छोटे से तिलिस्म से सम्वन्ध रखता है। एक औरत जो मायारानी के नाम से पुकारी जाती है और जिसका हाल कुछ दिन बाद तुम लोगों को मालूम होगा उस तिलिस्म का राज्य करती है। मैं उसकी सगी बहिन हूं। हमारी तिलिस्मी किताब से सावित होता है कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उस तिलिस्म को तोड़ेंगे क्योंकि तिलिस्म तोड़ने वालों के जो जो लक्षण उस किताब में लिखे हैं वे सब इन दोनों भाइयों में पाए जाते हैं, परन्तु मायारानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहती है कि तिलिस्म टूटने न पावे और इसीलिए वह दोनों कुमारों को अपने कैद में रखने अथवा मार डालने का उद्योग कर रही है। मैंने उसे बहुत कुछ समझाया और कहा कि तिलिस्म बनाने वालों के खिलाफ चलने और इन दोनों भाइयों से दुश्मनी रखने का नतीजा अच्छा न होगा परन्तु उसने न माना बल्कि मेरी भी दुश्मन बन बैठी, अन्त में लाचार होकर मुझे उसका साथ छोड़ देना पड़ा। मैंने उस तालाब वाले मकान पर अपना कब्जा कर लिया और उसी में रहने लगी। उस मकान में मैं बेफिक्र रहती हूं! मायारानी के कई आदमियों ने जो नेक और ईमानदार थे मेरा साथ दिया। तिलिस्म का जितना हाल उसे मालूम है उतना ही मुझे भी मालूम है, यही सबब है कि वह अर्थात् तिलिस्मी महारानी (मायारानी) बीरेन्द्रसिंह और उनके खानदान के साथ दुश्मनी कर रही है और मैं हर तरह से उनकी मदद कर सकती हूं। उस तिलिस्मी मकान के अन्दर इन्द्रजीतसिंह और उनके साथियों तथा मेरे नौकरों का हंसते हंसते कूद जाना उसी तिलिस्मी महारानी की कारंवाई थी और उस खण्डहर वाले तहखाने में जो कुछ तुम लोगों ने देखा वह सब भी उसी की बदौलत था। अफसोस, गुप्त राह से मायारानी के बहुत से आदमियों के पहुंच जाने के कारण मैं कुछ कर न सकी। खैर कोई हर्ज नहीं कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और किशोरी तथा कामिनी वगैरह का मायारानी कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती क्योंकि उसकी असल जमा पूंजी जो थी वह मेरे हाथ लग चुकी है जिसका खुलासा हाल इस समय मैं नहीं कह सकती, हां इतना प्रतिज्ञा-पूर्वक कहती हूं कि उन लोगों को मैं बहुत जल्द कैद से छुड़ाऊंगी।

कमला०। मैं समझती हूं कि वह मकान भी तिलिस्मी होगा जिसके अन्दर कुंअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह हंसते हंसते कूद पड़े थे।

कम०। नहीं, उस मकान का तिलिस्म से कोई सम्बन्ध नहीं। वह नया बनाया गया है। मुझे उसकी खबर न थी इसी से मैं धोखे में आ गई, पीछे पता लगाने से मालूम हुआ कि वह भी मायारानी की कारंवाई थी।

कमला०। अब मेरा जो ठिकाने हुआ और आपकी बदौलत अपनी प्यारी सखी किशोरी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह के छूटने की उम्मीद हुई। अब आशा है कि आपकी कृपा से एक दफे मायारानी को भी देखूंगी।

कम०। इसके लिए जल्दी करना मुनासिब नहीं, मैं आज ही कल में तुझे अपने साथ मायारानी के घर ले चलती क्योंकि मुझे वहां जाने की बहुत जल्दी है परन्तु इस समय तेरा रोहतासगढ़ लौट जाना ही ठीक है क्योंकि राजा बीरेन्द्रसिंह लड़कों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की जुदाई में हद से ज्यादे दुःखी होंगे, तेरे लौट जाने से उन्हें ढाढ़स होगा औ मेरी जुबानी जो कुछ तूने सुना है जब उनसे बयान करेगी तो उन्हें एक प्रकार आशा हो जायगी, हां एक बात तुझसे पूछना मैं भूल गई।

कमला०। वह क्या ?

कम०। तू कहती है कि मैं मायारानी को देखा चाहती हूं, तो क्या तूने नहीं देखा ? उसी के आदमी तो तुझे गिरफ्तार करके ले गए थे, जहां तक मैं सम झती हूं तू उसके पास जरूर पहुंचाई गई होगी।

कमला०। हां हां, मैं एक जनाने दर्बार में पहुंचाई गई थी मगर यह नहीं क सकती कि वह मायारानी ही का दर्बार था या कोई दूसरा, और यदि मायारा ही का दर्बार या तो........

कम०। पहिले तू अपना हाल कह जा कि जब खण्डहर के अन्दर तहखाने घुसी तो क्या हुआ और क्योंकर गिरफ्तार होकर कहां गई ?

कमला०। जब हम लोग राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ कुमार को निकालने लिए उस खण्डहर वाले तहखाने में गये तो वहां किसी को न पाया। सीढ़ी के न एक छोटी कोठरी थी, मैं उसमें घुस गई। देखा कि पत्थर की एक सिल्ली दी से अलग होकर जमीन पर पड़ी हुई है और उस जगह एक आदमी के जाने ला रास्ता है। उस दर्वाजे के दूसरी तरफ एक और कोठरी नजर आई जिसमें चि जल रहा था। मैंने आनन्दसिंह और तारासिंह को पुकारा, जब वे आ गए तो आदमी उस कोठरी के अन्दर घुसे, जब दो तीन कदम आगे गये तो यकायक से खटके की आवाज आई, घूम कर देखा तो उस रास्ते को बन्द पाया जिध आये थे। ताज्जुब में आकर हम लोग सोचने लगे कि अब क्या करना चाहि यकायक कई आदमी एक तरफ से निकल आये और उन लोगों ने फुर्ती के एक एक चादर हम लोगों के ऊपर डाल दी। मुझे उस चादर की तेज महक न भूलेगी। सिर पर चादर पड़ते ही अजब हालत हो गई, एक प्रकार की महक नाक के अन्दर घुसी और उसने तनोबदन की सुध भुला दी। न मालूम दिन या दूसरे या कई दिन के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को रात के एक जनाने दर्बार में पाया।

कम०। वह दर्बार कैसा था ?

कमला०। वह दर्बार एक बारहदरी में था। जड़ाऊ सिंहासन पर एक बान औरत दक्खिनी ढंग की पोशाक पहिने बैठी थी, मैं कह सकती हूं कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किशोरी के उसके मुकाबले की खूबसूरत औरत आज तक किसी ने न देखी होगी।

कम०। हां बस मैं समझ गई, वही मायारानी थी, हां और क्या देखा ?

कमला०। उसके दाहिनी तरफ सोने की एक चौकी पर मृगछाला बिछा हुआ था मगर उस पर कोई बैठा न था।

कम०। वह तिलिस्म के दारोगा की जगह थी जो वृद्ध साधू के भेष में रहता है, मगर आज कल उसे राजा बीरेन्द्रसिंह ने कैद कर लिया है।

कमला०। (ताज्जुब से) राजा बीरेन्द्रसिंह ने कब और किस दारोगा को कैद किया है ?

कम०। उस तिलिस्मी खण्डहर में जब तुम लोग गये तो किसी साधू को बेहोश पाया था या नहीं ?

कमला०। (कुछ सोच कर) हां हां, एक कोठरी के अन्दर जिसमें एक सूरत थी। क्या वही तिलिस्मी दारोगा है ?

कम०। हां वही दारोगा है, वही बहुत से आदमियों को साथ लेकर तहखाने में से कुमार को उठा लाने के लिए उस खण्डहर में गया था मगर तारासिंह की चालाकी से अपने साथियों के सहित बेहोश हो गया। उस समय भेष बदले मेरा भी एक आदमी वहां मौजूद था मगर दूर ही से सब कुछ देख रहा था। हां तो उस दर्बार में और क्या देखा ?

कमला०। उस मृगछाला बिछी हुई चौकी के पास अर्धगोलाकार बीस जड़ाऊ कुर्सियां और थीं और उसी तरह सिंहासन के बाईं तरफ छोटे जड़ाऊ सिंहासन पर एक खूबसूरत औरत बैठी हुई थी जिसके बाद फिर बीस या इक्कीस जड़ाऊ कुर्सियां थीं, और दोनों तरफ वाली जड़ाऊ कुर्सियों पर नौजवान और खूबसूरत औरतें बड़े ठाठ से बैठी हुई थीं।* मैं उस दर्बार को कभी न भूलूंगी।

कम०। ठीक है, तो अब तुझे मायारानी को देखने को कोई आवश्यकता नहीं, खैर मुख्तसर में कह कि फिर क्या हुआ ?

कमला०। पहिले यह बता दीजिये कि मायारानी के बगल में छोटे जड़ाऊ सिंहासन पर कौन औरत थी क्योंकि वह भी बड़ी ही खूबसूरत थी ?

कम०। वह मेरी छोटी बहिन थी। सब से बड़ी मायारानी, उससे छोटी मैं और मुझसे छोटी वही औरत है, उसका नाम लाडिली है।

कमला०। आपकी और भी कोई बहिन है ?

---

* इसी दर्बार में रामभोली का आशिक नानक गया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । नहीं, हम तीनों के सिवाय और कोई बहिन या भाई नहीं है । अ
अपना हाल कह, फिर क्या हुआ ?

कमला० । मायारानी के सिंहासन के पीछे मनोरमा खड़ी थी । उन्हीं स
की बातचीत से मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम मनोरमा है । वह बड़ी दुष्ट थी

कम० । थी नहीं बल्कि है, हां खैर तब क्या हुआ ?

कमला० । ऐसे दर्बार को देख मैं घबड़ा गई । जिधर निगाह पड़ती थी उध
ही एक से एक बढ़ के जड़ाऊ चीजें नजर आती थीं । मैं हैरान थी कि इतनी दौलत इ
लोगों के पास कहां से आई और ये लोग कौन हैं । मैं ताज्जुब में आकर चारो तर
देखने लगी । यकायक मेरी निगाह कुंअर आनन्दसिंह और तारासिंह पर पड़ी
कुंअर आनन्दसिंह हथकड़ी और बेड़ी से लाचार मेरे पीछे की तरफ बैठे थे, उन
पास उन्हीं की तरह हथकड़ी बेड़ी से बेबस तारासिंह भी बैठे थे, फर्क इतना था कि
कुंअर आनन्दसिंह जख्मी न थे मगर तारासिंह बहुत ही जख्मी और खून से त
बतर हो रहे थे । उनकी पोशाक खून से रंगी हुई मालूम पड़ती थी । यद्यपि उन
जख्मों पर पट्टी बंधी हुई थी मगर सूरत देखने से साफ मालूम पड़ता था कि उन
बदन से खून बहुत निकल गया है और इसी से वे सुस्त और कमजोर हो रहे है
कुमार की अवस्था देख कर मुझे क्रोध चढ़ आया मगर क्या कर सकती थी क्यों
हथकड़ी और बेड़ी ने मुझे भी लाचार कर रक्खा था । हाथ में नंगी तलवा
लिए कई औरतें कुंअर आनन्दसिंह तारासिंह और मुझको घेरे हुए थीं । य
जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा था कि जब हम लोग बेहोश करके य
लाए गये तो तारासिंह को जख्मी करने की आवश्यकता क्यों पड़ी । मायारानी
मनोरमा की तरफ देखा और कुछ इशारा किया, मनोरमा तुरत मेरे पास आई
उसके एक हाथ में कोई चीठी थी और दूसरे हाथ में कलम और दावात । मनोर
ने वह चीठी मेरे आगे रख दी और उस पर हस्ताक्षर कर देने के लिए मुझे कह
मैंने चीठी पढ़ी और क्रोध के साथ हस्ताक्षर करने से इनकार किया ।

कम० । उस चीठी में क्या लिखा हुआ था ?

कमला० । वह चीठी मेरी तरफ से राजा बीरेन्द्रसिंह के नाम लिखी गई
और उसमें यह लिखा हुआ था :—

"आप चीठी देखते ही केवल एक ऐयार को लेकर इस आदमी के साथ बेखौ
चले आइए । कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और किशोरी वगैरह इसी जगह
हैं । उनको छुड़ाने का पूरा पूरा उद्योग मैं कर चुकी हूं केवल आपके आने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है । यदि आप तीन दिन के अन्दर यहां न पहुंचेंगे तो इन लोगों में से एक की भी जान न बचेगी ।"

कम० । अच्छा फिर क्या हुआ ?

कमला० । जब मैंने दस्तखत करने से इनकार किया तो मनोरमा बहुत बिगड़ी और बोली कि 'यदि तू हस्ताक्षर न करेगी तो तेरे सामने ही कुंअर आनन्दसिंह और तारासिंह का सिर काट लिया जायगा और उसके बाद तुझे भी सूली दे दी जायगी' । यह सुन कर मैं घबड़ा गई और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए, इतने में ही तारासिंह ने मुझे पुकार कर कहा, "कमला उस चीठी में जो कुछ लिखा है मैं अन्दाज से कुछ कुछ समझ गया, खबरदार इन लोगों के धमकाने में न आइयो और चाहे जो हो उस चीठी पर दस्तखत न कीजियो ।" तारासिंह की बात सुन कर मायारानी की तो केवल भृकुटी ही चढ़ कर रह गई परन्तु मनोरमा बहुत ही उछली कूदी और बकझक करने लगी । उसने मायारानी की तरफ देख कर कहा, "कम्बख्त तारासिंह को अवश्य सूली देनी चाहिए, उसने यहां का रास्ता भी देख लिया है इसलिए उसका मारना आवश्यक हो गया है, और इस नालायक कमला को सरकार मेरे हवाले करें मैं इसे अपने घर ले जाऊंगी ।" मायारानी ने इशारे से मनोरमा की बात मंजूर की । मनोरमा ने एक चोबदार औरत की तरफ देख कर कहा, "कमला को ले जाकर कैद में रक्खो । चार पांच दिन बाद काशीजी में हमारे घर पर भेजवा देना क्योंकि इस समय मुझे एक जरूरी काम के लिए जाना है जहां से तीन चार दिन के अन्दर शायद न लौट सकूंगी ।" हुक्म के साथ ही मुझ पर पुनः चादर डाल दी गई जिसकी तेज महक ने मुझको बेहोश कर दिया और फिर जब मैं होश में आई अपने को एक अन्धेरी कोठरी में कैद पाया । कई दिन तक उसी कोठरी में कैद रही और इस बीच में जो कुछ रंज और तकलीफ उठानी पड़ी उसका कहना व्यर्थ है । आखिर एक दिन भोजन में मुझे बेहोशी की दवा दी गई और बेहोश होने के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को आपके कब्जे में पाया । अब न मालूम कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह किशोरी और उनके ऐयार लोगों पर क्या मुसीबत आई और वे लोग किस अवस्था में पड़े हुए हैं ।

यहां तक कह कर कमला चुप हो गई मगर उसकी आंखों से आंसू की बूंदें बराबर जारी थीं । कमलिनी भी बड़े गौर और अफसोस के साथ उसकी बातें सुनती जाती थी और जब वह चुप हो गई तो बोली—

कम० । कमला सब्र कर, घबड़ा मत, देख मैं उन लोगों को कैसा छकाती हूं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन लोगों की क्या मजाल जो मेरे हाथ से बच कर निकल जांय। तिलिस्मी मकान के अन्दर जब कुंअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह हंसते हंसते कूद गये थे तो उन लोगों के पहिले मैंने अपने कई आदमी उस मकान के अन्दर कुदाए थे जिसका हाल थोड़ी देर हुई मैं तुझसे कह चुकी हूं। मैंने उन आदमियों को बेसबब दुश्मनों के हाथ में नहीं फंसाया, कुछ समझ बूझ के हो ऐसा किया था। वे लोग साधारण मनुष्य न थे, आशा है कि थोड़े दिन में तू सुन लेगी कि उन लोगों ने क्या क्या कार्रवाई की।

कमला०। आज आपके मिलने से और बहुत सी बातें सुन कर मेरा जी ठिकाने हुआ। आप सरीखा मददगार पाकर मैं भी अपने जी का हौसला निकाला चाहती हूं और........

कम०। नहीं नहीं, इस समय तू और कुछ मत सोच और सीधे रोहतासगढ़ चली जा। तेरे वहां जाने से दो काम निकलेंगे, एक तो तेरी जुबानी सब हाल सुन कर राजा बीरेन्द्रसिंह को बहुत कुछ ढाढ़स होगी, दूसरे तू इस बात से होशियार रहियो और सभों को भी होशियार कर दीजियो कि वह तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बूढ़ा साधू कहीं धोखा देकर निकल न जाय। इसमें कोई शक नहीं कि मायारानी ने उसे छुड़ाने के लिए कई आदमी रोहतासगढ़ भेजे होंगे।

कमला०। बहुत अच्छा, मैं रोहतासगढ़ जाती हूं और उस बुड्ढे कम्बख्त से होशियार रहूंगी, मगर एक भेद बहुत दिनों से मेरे दिल में खटक रहा है, यदि आप चाहें तो मेरे दिल से वह खुटका निकाल सकती हैं।

कम०। वह क्या है!

कमला०। (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) यह कौन हैं? इनका असल भेद मुझको बता दीजिये।

कम०। (हंस कर) इसमें सन्देह नहीं कि भूतनाथ के बारे में तरह तरह की बातें तू सोचती होगी परन्तु लाचार हूं कि इस समय इनका असल भेद तुझसे नहीं कह सकती, थोड़े ही दिनों में इनका हाल तुझे बल्कि सभों को मालूम हो जायगा। हां, इतना अवश्य कहूंगी कि तुझे अपने चाचा शेरसिंह की तरह इनसे डरने की कोई जरूरत नहीं, ये तुझे किसी तरह की तकलीफ न देंगे बल्कि जहां तक हो सकेगा मदद करेंगे।

कमलिनी से अपने सवाल का पूरा पूरा जवाब न पाकर कमला चुप हो रही और कमलिनी की आज्ञानुसार उसको उसी समय रोहतासगढ़ चले जाना पड़ा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छठवां बयान

दूसरे दिन कुछ रात बीते कमलिनी फिर मनोरमा के मकान पर पहुंची। बाग के फाटक पर उसी दर्बान को टहलते पाया जिससे कल बातचीत कर चुकी थी। इस समय बाग का फाटक खुला हुआ था और उस दर्बान के अतिरिक्त और भी कई सिपाही वहां मौजूद थे। दर्बान कमलिनी को देखते ही खुशी से आगे बढ़ा और बोला, "आइये आइये, मैं कब से राह देख रहा हूं। नागरजी को आये दो घण्टे से ज्यादे हो गये और वे आपसे मिलने के लिए बेताब हो रही हैं।"

दर्बान के साथ ही साथ कमलिनी बाग के अन्दर गई और उस आलीशान मकान के सहन में पहुंची जो इस बाग के बीचोबीच में बना हुआ था। इस मकान के कमरों दालानों कोठरियों तहखानों और पेचीले रास्तों का यदि यहां पूरा पूरा बयान किया जाय तो पाठकों का बहुत समय नष्ट होगा क्योंकि इस हिकमती मकान के हर एक दर्जे और हर एक हिस्से कारीगरी और मतलब के साथ बनाये गये हैं। यदि हमारे पाठकों को तीन चार बार इस मकान के अन्दर आने और रात भर रहने का मौका मिल जायगा तो उन्हें यहां का बहुत भेद मालूम हो जायगा।

कमलिनी ने नागर को सहन में टहलते हुए पाया। वह सिर नीचा किए किसी सोच में डूबी हुई टहल रही थी, कमलिनी के पैर की आहट पाकर चौंकी और बोली—

नागर०। क्या मेरी सखी मनोरमा का सन्देशा लेकर तुम ही आई हो ?

कमलिनी०। हां।

नागर०। तुम कौन और कहां की रहने वाली हो ? मैंने तुम्हें सिवाय आज के पहिले कभी नहीं देखा।

कम०। हां ठीक है परन्तु मैं अपना परिचय किसी तरह नहीं दे सकती।

नागर०। यदि ऐसा है तो मैं तुम्हारी बातों पर क्योंकर विश्वास करूंगी ?

कम०। यदि मेरी बातों पर विश्वास न करोगी तो मेरा कुछ भी न बिगड़ेगा, अगर कुछ बिगड़ेगा तो तुम्हारा या तुम्हारी सखी मनोरमा का। जब मनोरमा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा तो मुझे भी इस बात का तरद्दुद हुआ और मैंने उनसे कहा कि तुम मुझे भेजती तो हो मगर जाने से कोई काम न निकलेगा क्योंकि मैं किसी तरह अपना परिचय किसी को नहीं दे सकती और बिना मुझे अच्छी तरह जांचे नागर मेरी बातों पर विश्वास न करेंगी। इसके जवाब में मनोरमा ने कहा कि मैं लाचार हूं, सिवाय तेरे यहां पर मेरा हितू कोई नहीं जिसे नागर के पास भेजूं, यदि तू न जायगी तो मेरी जान किसी तरह नहीं बच सकती। और तुम्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं एक शब्द बताती हूं मगर खबरदार वह शब्द सिवाय नागर के किसी दूसरे के सामने जुबान से न निकालियो। जिस समय नागर तेरी जुबान से वह शब्द सुनेगी उस समय उसका शक जाता रहेगा और जो कुछ तू उसे कहेगी वह अवश्य करेगी। आखिर मनोरमा ने वह शब्द मुझे बताया और उसी के भरोसे मैं यहां तक आई हूं।

नागर०। (कुछ सोच कर) वह शब्द क्या है ?

कम०। (चारों तरफ देख कर और किसी को न पाकर) विकट।

नागर०। (कुछ देर तक सोचने के बाद) खैर मुझे तुम पर भरोसा करना पड़ा, अब कहो मनोरमा किस अवस्था में हैं और मुझे क्या करना चाहिए ?

कम०। मनोरमा भूतनाथ से मिलने के लिए गई थी मगर उससे मुलाकात होने पर न मालूम कौन सा ऐसा सबब आ पड़ा कि उसने भूतनाथ का सिर काट लिया।

नागर०। (चौंक कर) हैं! भूतनाथ को मार ही डाला !!

कम०। हां, उस समय मैं मनोरमा के साथ मगर कुछ दूर पर खड़ी यह हाल देख रही थी।

नागर०। अफसोस, मनोरमा ने बहुत ही बुरा किया, आज कल भूतनाथ से बहुत कुछ काम निकलने का जमाना था, खैर तब क्या हुआ ?

कम०। मनोरमा को मालूम न था कि राजा वीरेन्द्रसिंह का ऐयार तेजसिंह इस समय थोड़ी ही दूर पर एक पेड़ की आड़ में खड़ा भूतनाथ और मनोरमा की तरफ देख रहा है।

नागर०। ओफ, तेजसिंह को भूतनाथ के मरने का सख्त रंज हुआ होगा क्योंकि इन दिनों भूतनाथ दिलोजान से उन लोगों की मदद कर रहा था, अच्छा तब ?

कम०। तेजसिंह बड़ी फुर्ती से उस जगह जा पहुंचा जहां मनोरमा खड़ी थी और एक लात ऐसी मनोरमा की छाती पर लगाई कि वह बदहवास हो जमीन पर गिर पड़ी। तेजसिंह ने उसकी मुश्कें बांध लीं और जफील बजाई जिसकी आवाज सुन कई आदमी वहां आ पहुंचे। उन लोगों ने मनोरमा को और मुझे भी गिरफ्तार कर लिया। उसी समय मनोरमा के कई सवार दूर से आते हुए दिखाई पड़े मगर उन लोगों के पहुंचने के पहिले ही तेजसिंह और उसके साथी हम दोनों को लेकर वहां से थोड़ी दूर पर पेड़ों की आड़ में जा छिपे। दूसरे दिन हम दोनों ने अपने को रोहतासगढ़ किले के अन्दर पाया। मनोरमा ने अपने छूटने की बहुत कुछ कोशिश की मगर कोई काम न चला। आखिर उसने तेजसिंह से कहा कि भूतनाथ बड़ा ही शैतान नालायक और खूनी आदमी था, उसका असल हाल आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोग नहीं जानते, यदि जानते तो आप लोग खुद भूतनाथ का सिर काट डालते'। इसके जवाब में तेजसिंह ने कहा कि 'यदि इस बात को तू साबित कर दे तो मैं तुझे छोड़ दूंगा'। मनोरमा ने मेरी तरफ इशारा करके कहा कि 'यदि आप इसे छोड़ दें और पांच दिन की मोहलत दें तो इसे मैं अपने घर भेज कर भूतनाथ के लिखे थोड़े कागजात ऐसे मंगा दूं कि जिन्हें पढ़ते ही आपको मेरी बातों पर विश्वास हो जाय और भूतनाथ का बहुत कुछ विचित्र हाल भी जिसे आप लोग नहीं जानते मालूम हो। यदि मैं झूठी निकलूं तो जो कुछ चाहें मुझे सजा दीजिएगा'। तेजसिंह ने कुछ देर सोच विचार कर कहा कि 'हो सकता है मुझसे बहाना करके इसे तुम अपने घर भेजो और किसी तरह की मदद मंगाओ मगर मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, मैं तुम्हारी बात मंजूर करता हूं और इसे (मेरी तरफ इशारा करके) छोड़ देता हूं, जो कुछ चाहे इसे समझा बुझा कर अपने घर भेजो'। इसके बाद मुझसे निराले में बातचीत करने के लिए आज्ञा मांगी गई और तेजसिंह ने उसे भी मंजूर किया, आखिर मनोरमा ने मुझे बहुत कुछ समझा बुझा कर तुम्हारे पास रवाना किया। अब मैं तो रोहतासगढ़ जाने वाली नहीं क्योंकि बड़ी मुश्किल से जान बची है मगर तुम्हें मुनासिब है कि जहां तक जल्द हो सके भूतनाथ के कागजात लेकर रोहतासगढ़ जाओ और अपनी सखी के छुड़ाने का बन्दोबस्त करो।

कमलिनी की बातें सुन कर नागर सोच सागर में डूब गई। न मालूम उसके दिल में क्या क्या बातें पैदा हो रही थीं मगर लगभग आधी घड़ी के वह चुपचाप बैठी रही। इसके बाद उसने सिर उठाया और कमलिनी की तरफ देख कर कहा, "खैर अब मुझे रोहतासगढ़ जाना जरूरी हुआ, रात भर में सब इन्तज़ाम करके सवेरे या कुछ दिन चढ़े रवाना हो जाऊंगी।"

कमलिनी०। अच्छा तो मेरे जिम्मे जो कुछ काम था उसे मैं कर चुकी अब तुम जो मुनासिब समझो करो और मुझे आज्ञा दो कि जाऊं और अपना काम देखूं।

नागर०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुमने मुझ पर और मनोरमा पर भारी अहसान किया। अब मैं चाहती हूं कि आज की रात तुम यहां रह जाओ क्योंकि मनोरमा को छुड़ाने के लिए रात भर में मैं जो कुछ इन्तजाम करूंगी उसका हाल सवेरे तुमसे कहूंगी और उसके बाद तुमसे कुछ सलाह करके तब रोहतासगढ़ जाऊंगी।

कमलिनी०। मैं इस योग्य नहीं हूं कि तुम्हें राय दूं परन्तु रात भर के लिए अटक जाने में मेरा कोई हर्ज नहीं है यदि इससे आप लोगों की कुछ भी भलाई हो।

नागर ने कमलिनी के लिए एक कमरा खोल दिया और उसके खाने पीने के लिए बखूबी इन्तजाम कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सतवाँ बयान

आधी रात जा चुकी है। कमलिनी उस कमरे में जो उसके सोने के लिए मुकर्रर किया गया था चारपाई पर लेटी हुई करवटें बदल रही है क्योंकि उसकी आंखों में नींद का नाम नामोनिशान नहीं है। उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होतीं और मिटती हैं। उसे इस कोठरी की बनावट ने और भी तरद्दुद में डाल रक्खा है। यद्यपि इस कोठरी में विशेष सामान नहीं और न किसी तरह की सजावट ही है, केवल एक चारपाई जिस पर कमलिनी सोई है और एक चौकी पड़ी है तथा कोने में एक शमादान जल रहा है परन्तु तीन तरफ की दीवारों पर वह ताज्जुब और तरद्दुद की निगाह डाल रही है। इस कमरे के एक तरफ की दीवार जिधर से इसमें आने के लिए दर्वाजा था ईंट और चूने से बनी हुई थी परन्तु बाकी तीन तरफ की दीवारें तख्तेबन्दी की थीं अर्थात् लकड़ी से बनी हुई थीं। कमलिनी के दिल में शक पैदा हुआ और उसने सोचा कि इन तख्तेबन्दी की दीवारों में कोई भेद जरूर है। इस मकान का कुछ कुछ भेद कमलिनी को मालूम था पर यहां का पूरा पूरा हाल वह नहीं जानती थी और जानने की इच्छा रखती थी। आखिर कमलिनी से चुप न रहा गया और वह चारपाई से उठी। पहिले उसने उस दर्वाजे को भीतर की तरफ से बन्द किया जो इस कमरे में आने जाने के लिए था इसके बाद कमर से खंजर निकाल लिया और उसके कब्जे से उन तख्तेबन्दी की दीवारों को जगह जगह से ठोंक कर देखने लगी। एक जगह से उसे दीवार पोली मालूम पड़ी और उस पर वह बखूबी गौर करने लगी। जब कुछ मालूम न हुआ तो उसने शमादान उठा लिया और फिर उस जगह को गौर से देखने लगी। थोड़ी ही देर में उसे विश्वास हो गया कि यहां पर एक छोटा सा दर्वाजा है क्योंकि दर्वाजे के चारो तरफ की बारीक दरार में खंजर की नोक चुभाई और उसे अच्छी तरह दो चार दफे हिलाया। दरार बड़ा हो गया और आधा खंजर उसके अन्दर चला गया। फिर से कोशिश करने पर लकड़ी का एक तख्ता अलग हो गया और दूसरी तरफ जाने लायक रास्ता निकल आया।

हाथ में शमादान लिए हुए कमलिनी अन्दर घुसी और एक बहुत लम्बी चौड़ी कोठरी में पहुंची। इस कोठरी के चारो तरफ की दीवार भी तख्तेबन्दी की थी। इसमें कई चीजें ऐसी पड़ी हुई थीं जिनके देखने से चाहे कैसा ही संगदिल और दिलावर आदमी क्यों न हो मगर एक दफे कांप उठे और उसका कलेजा मामूली से चौगुना और आठगुना धड़कने लग जाय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कोठरी में एक घोड़े की लाश थी मगर वह अजब ढंग से थी। उसके चारो तरफ चार खूंटियां जमीन में गड़ी हुई थीं और उन खूंटियों के सहारे उस घोड़े के चारो पैर बंधे हुए थे। उस घोड़े का पेट चीरा हुआ और आंतें निकाल कर बाहर रक्खी हुई थीं। चारो तरफ खून फैला हुआ था, मालूम होता था कि वह घोड़ा किसी काम के लिए आज ही मारा गया है। उसके पास ही थोड़ी दूर पर फूलों के कई गमले रक्खे हुए थे और उनके पास ही एक सुन्दर बिछौना जिस पर सुफेद चादर थी बिछा हुआ था तथा उस पर एक आदमी गरदन तक सुफेद ही चादर ओढ़े सो रहा था। घोड़े के पास से लेकर उस बिछावन तक पैर से लगे हुए खून के दाग जमीन पर दिखाई दे रहे थे और बिछावन की चादर तथा उस चादर में भी जो वह आदमी ओढ़े हुए था खून के धब्बे लगे हुए थे।

उस आदमी को देख कर कमलिनी इसलिए हिचकी कि कहीं वह जाग कर कमलिनी को देख न ले मगर थोड़ी देर तक खड़े रहने पर भी उसके हिलने डुलने अथवा उसकी सांस चलने की आहट न मिली। तब कमलिनी हाथ में शमादान लिए हुए उस बिछावन के पास गई और रोशनी में उस आदमी की सूरत देखने लगी जिसका बिल्कुल चेहरा बखूबी खुला हुआ था। सूरत देखते ही कमलिनी चौंक पड़ी और शमादान जमीन पर रख बेधड़क उस आदमी का बाजू पकड़ के हिलाने और यह कह कर उसको जगाने का उद्योग करने लगी कि 'वाह वाह! तुम यहां बेखबर पड़े हुए हो और मुझे इसका जरा भी हाल नहीं मालूम' !!

जब बाजू पकड़ के हिलाने से भी वह आदमी न जागा तब कमलिनी को ताज्जुब हुआ और गौर से उसकी सूरत देखने लगी मगर नब्ज पर हाथ रक्खा तो मालूम हो गया कि वह जिन्दा नहीं बल्कि मुर्दा है। यह जानते ही कमलिनी का जी भर आया और वह मुर्दे के सर पर हाथ रख कर रोने और गरम गरम आंसू गिराने लगी। थोड़ी देर तक कमलिनी इसी अवस्था में पड़ी रही, आखिर वह चैतन्य हुई और यह कह कर उठ खड़ी हुई कि 'बात तो बहुत ही बुरी हुई मगर इस समय मुझे सब्र करना चाहिए नहीं तो कुछ भी न कर सकूंगी। हाय, मेरा दिल और मेरे काबू में न रहे! नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता, मैं पूरा पूरा सब्र करूंगी और देखूंगी कि क्या कर सकती हूं। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि इसकी जान निकले चार पहर से ज्यादे अभी नहीं हुए'। कमलिनी फिर शमादान उठा कर उस कोठरी में घूमने और चारो तरफ देखने लगी। पूरब और दक्खिन के कोने में एक लाश छत से लटकती हुई दिखाई पड़ी जिसके गले में फांसी लगी थी। वह ताज्जुब के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शमादान ऊंचा कर के उसकी सूरत देखने लगी, जब अच्छी तरह पहिचान चुकी तो नफरत के साथ उस लाश पर थूक कर अपना मुंह फेर लिया और दूसरी तरफ चलना ही थी कि यह आवाज सुन कर ठहर गई और उस तरफ देखने लगी जिधर से आवाज आई थी। आवाज यह थी—"हाय, मौत को भी मौत आ गई।" इसे ताज्जुब मालूम हुआ कि यह आवाज क्योंकर आई। वह यह देखने के लिए उस तरफ बढ़ी जिधर से आवाज आई थी कि शायद कोई सूराख या खिड़की दिखाई दे और आखिर ऐसा ही हुआ। दीवार के पास पहुंचते ही एक सुराख ऐसा दिखा जिसमें आदमी की गर्दन बखूबी जा सकती थी। यह टेढ़ा और नीचे की तरफ झुका हुआ सूराख जिसे किसी कमरे का रोशनदान कहना चाहिए दीवार के बिल्कुल नीचे की तरफ था।

कमलिनी ने उस सूराख में से झांक कर देखा तो एक छोटे से मगर सजे हुए कमरे में निगाह गई। यह कमरा उस कोठरी से एक खंड नीचे था जिसमें से कमलिनी झांक रही थी। उस कमरे में जो कुछ कमलिनी ने देखा उससे उसके दिल को बड़ा सदमा पहुंचा और जब तक वह देखती रही उसकी आंखों से आंसू बराबर जारी रहे।

कमलिनी ने देखा कि एक पलंग पर, जिसके पास ही शमादान जल रहा है आफत की मारी बेचारी किशोरी पड़ी हुई है। रञ्ज और गम के मारे सूख कर कांटा हो रही है। चेहरे पर मुर्दनी छाई हुई और कमजोरी की यह अवस्था है कि सांस भी मुश्किल से आती जाती है। थोड़ी थोड़ी देर पर उसके होंठ हिलते हैं और धीरे धीरे कुछ कहती है मगर जब कहती है तो उसकी आवाज साफ सुनाई देती है। वह कह रही थी :—

"हाय, अब इससे बढ़ कर दुर्दशा क्या हो सकती है! इन्द्रजीतसिंह, तुम्हारी मुहब्बत में मैं यहां तक पहुंच चुकी, कुल में कलंकिनी कहाई, लज्जा को तिलांजुलि दे बैठी, और वह सब दुःख झेलने को तैयार हुई जो तुम्हारी बदौलत........

"(थोड़ी देर चुप रह कर) यहां तक रोई कि अब आंखों में आंसू भी नहीं रहे। खाना पीना छोड़ देने पर भी निगोड़ी जान नहीं निकलती। हाय, मौत को भी मौत आ गई! नहीं नहीं, मौत को मौत नहीं आई, वह देखो मेरे सामने खड़ा हुआ काल मेरी तरफ देख रहा है। अब कुछ दम की मेहमान हूं। मैं तो आती हूं मगर अफसोस, अपने प्यारे की जुदाई का रंज और उसकी बेवफाई और बेमुरौवती की शिकायत अपने साथ लिए जाती हूं। हाय, इस समय ऐसा कोई है नहीं जो मेरी हालत देखे और मेरे बाद उनसे जाकर........

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"(थोड़ी देर चुप रह कर) जब उनको मेरी परवाह ही नहीं तो मेरा हाल कोई उनसे जाह कर करेगा ही क्या ? उन्होंने तो खुद कहला भेजा है कि मुझे कुछ भी परवाह नहीं। हाय, मैं ऐसी बात कैसे सुन सकी! उसी समय मेरी जान क्यों न निकल गई ! नहीं नहीं, यह सब ऐयारी है, उन्होंने ऐसी बात कभी न कही होगी ; पर इससे क्या हो सकता है जब कि दम निकलने में कुछ कसर बाकी नहीं है। देखो देखो वह काल अब मेरी तरफ बढ़ा चला आता है। अच्छा है, किसी तरह वह सायत आए भी तो। हे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर मैं तुम्हीं को गवाह रखती हूं क्योंकि तुम खूब जानते हो कि मैं निर्दोष इस दुनिया से उठी जाती हूं और इन्द्रजीतसिंह की मुहब्बत के सिवाय अपने साथ कुछ भी नहीं लिए जाती, हां उस प्यारे की...."

इसके बाद बहुत देर तक राह देखने पर भी कुछ सुनाई न दिया। कमलिनी ने समझा कि या तो इसे कमजोरी से गश आ गया और या इस बेचारी हसरत की मारी का दम ही निकल गया। इस समय कमलिनी ने जो कुछ देखा या सुना वह उसे बेसुध करने के लिए काफी था। कमलिनी जार जार रो रही थी, यहां तक कि हिचकी बंध गई और उसे इस बात का ध्यान बिल्कुल ही जाता रहा कि मैं यहां किस काम के लिए आई हूं क्या कर रही हूं और इस समय कैसे खतरे में फंसी हुई हूं।

कमलिनी के लिए यह समय बड़े ही संकट का था। वह नहीं चाहती थी कि बेचारी किशोरी का पूरा पूरा हाल जाने या उसे किसी तरह की मदद पहुंचाए बिना यहां से चली जाय और साथ ही इसके भूतनाथ के कागजात को भी जिनके लेने का वह पूरा पूरा उद्योग कर चुकी थी किसी तरह छोड़ नहीं सकती थी क्योंकि यह मौका निकल जाने पर फिर उनका हाथ लगना बहुत ही कठिन था।

किशोरी की हालत पर अफसोस करती हुई कमलिनी अभी नीचे देख ही रही थी कि यकायक उस कमरे का दर्वाजा खुला और एक खूबसूरत नौजवान अमीराना पोशाक पहिरे अन्दर आता हुआ दिखाई पड़ा। उसके पीछे हाथ में पंखा लिए एक लौंडी भी थी जिसने अन्दर पहुंचने पर उस दर्वाजे को उसी तरह बन्द कर दिया।

इस नौजवान की उम्र लगभग पच्चीस वर्ष के होगी। मेयाना कद, गोरा रंग, हाथ पैर से मजबूत और खूबसूरत था। वह किशोरी के पलंग के पास आकर खड़ा हो गया और गौर से उसकी तरफ देखने लगा। उस पलंग के पास ही एक मोढ़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपड़े से मढ़ा हुआ पड़ा था जिसे लौंडी उठा लाई और पलंग के पास रख कर पंखा झलने लगी। नौजवान ने बड़े गौर से किशोरी की नाड़ी देखी और फिर उस लौंडी की तरफ मुंह करके कहा, "गश आ गया है।"

लौंडी०। कमजोरी के सबब से।

नौज०। एक तो बीमार, दूसरे कई दिन से खाना पीना सब छोड़ दिया, फिर ऐसी नौबत तो हुआ ही चाहे। अफसोस, यह मेरी बात नहीं मानती और मुफ्त में जान दे रही है।

लौंडी०। इस जिद्द का भी कोई ठिकाना है!

नौज०। खैर चाहे जो हो मगर दो बात से तीसरी कभी हो ही नहीं सकती या तो यह मेरी होकर रहेगी या इसी अवस्था में पड़ी पड़ी यमलोक को पधार जायगी। अच्छा इसे होश में लाना चाहिए।

"जो हुक्म" कह कर लौंडी वहां से चली गई और एक आलमारी में से जो पलंग के सिरहाने की तरफ थी कई बोतलें निकाल लाई जिन्हें उस नौजवान के पास रख कर वह फिर पंखा झलने लगी।

नौजवान ने अपनी जेब में से रूमाल निकाल कर एक बोतल के अर्क से तर किया और दूसरी बोतल में से थोड़ा सा अर्क हाथ में लेकर किशोरी के मुंह पर छींटा दिया। इसके बाद वही रूमाल नाक के पास ले जाकर कुछ देर तक सुंघाया। जब उससे कुछ काम न चला तो तीसरी बोतल से अर्क लेकर उसके मुंह पर छींटा दिया। थोड़ी देर में किशोरी का गश जाता रहा और उसने आंखें खोल कर देखा मगर जैसे ही उस नौजवान पर निगाह पड़ी वह कांप उठी और दोनों हाथों से मुंह ढांप कर बोली—

"हाय, न मालूम यह चाण्डाल अब क्यों मेरे पास आया है!"

नौज०। मैं इसी वास्ते आया हूं कि एक दफे तुमसे और पूछ लूं।

किशोरी०। एक दफे क्या सौ दफे कह चुकी कि तू मुझसे किसी तरह की उम्मीद न रख। मैं तेरी सूरत देखने की बनिस्बत मौत को हजार दर्जे अच्छा समझती हूं!

नौज०। क्या अभी तक तुझे इस बात की उम्मीद है कि इन्द्रजीतसिंह आकर तेरी मदद करेंगे और छुड़ा ले जायेंगे?

किशोरी०। मुझे क्या पड़ी है कि इन सब बातों का तुझे जवाब दूं? मैं तुझ पर बल्कि तेरे सात पुश्त पर थूकती हूं। चाण्डाल, हट जा मेरे सामने से?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लौंडी०। (नौजवान से) हुजूर, इस कामीनी औरत से क्यों बेइज्जती

रहे हैं ? इसमें क्या ऐसा हीरा जड़ा है ?

नौजवान क्रोध के मारे कांपने लगा, आंखें लाल हो गईं और दांत पीसता हुआ मोढ़े पर से उठ खड़ा हुआ। दाहिने हाथ से वह छूरा निकाल लिया जो उसकी कमर में छिपा हुआ था और बाएं हाथ से किशोरी का हाथ पकड़ यह कहता हुआ उसकी तरफ झुका, "जब ऐसा ही है तो मैं इसी समय क्यों न तुझे यमलोक पहुंचाऊं !"

उस नौजवान और किशोरी की यह अवस्था देख कर कमलिनी परेशान हो गई और सोचने लगी कि इस जल्दी में कौन सी तर्कीब की जाय कि किशोरी की जान बचे। मगर वह कर ही क्या सकती थी ? एक तो वह स्वयं चोरों की तरह कोठरियों में घूम रही थी, यदि किसी को जरा भी शक हो तो उसकी जान पर आ बने, दूसरे कोई ऐसा रास्ता भी नहीं दिखाई देता था जिधर से किशोरी के पास पहुंच कर उसकी सहायता करती। मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि कमलिनी बहुत होशियार चालाक और बुद्धिमान थी। उसने बहुत जल्द दिल में इस बात का फैसला कर लिया कि अब क्या करना चाहिए। एक खयाल बिजली की तरह उसके दिल में दौड़ गया मगर देखा चाहिए उससे कहां तक काम निकलता है।

जिस समय किशोरी को मारने के लिए वह नौजवान झुका और कमलिनी को मालूम हुआ कि अब उस बेचारी का काम तमाम हुआ चाहता है उसी समय कमलिनी ने अपने कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल लिया और जिस मोखे में देख रही थी उसके अन्दर डाल कर उसका कब्जा दबाया*। यह खंजर बिजली की तरह चमका और उस कोठरी में इतनी ज्यादे चमक या रोशनी पैदा हुई कि लौंडी किशोरी और उस नौजवान की आंखें बिल्कुल बन्द हो गईं जो किशोरी को मारा चाहता था, इसके साथ ही कमलिनी ने भारी स्वर में यह आवाज दी, "खबरदार ! किशोरी की जान लेकर अपनी जान का ग्राहक मत बन !!"

उस बिजली की चमक ने तो नौजवान को परेशान कर ही दिया था मगर साथ ही कमलिनी की आवाज ने जो गैब की आवाज मालूम होती थी उसे बद-हवास कर दिया और वह इतना डरा और घबराया कि बिना कुछ सोचे और किशोरी को दुःख दिये उस कोठरी से निकल भागा। कमलिनी ने भी अब उस जगह ठहरना मुनासिब न जाना और जहां तक जल्द हो सका अपने कमरे में

---

* पाठकों को याद होगा कि कमलिनी की कमर में इस समय दो तिलिस्मी खंजर मौजूद हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चली आई और उस तख्ते के दर्वाजे को जिसे खोल दूसरी कोठरी में गई थी ज्यों का त्यों बन्द करने बाद अपने कमरे का दर्वाजा भी खोल दिया जो दूसरी कोठरी में जाने के पहिले भीतर से बन्द कर लिया था।

इस समय रात बहुत थोड़ी रह गई थी। कमलिनी ने चाहा कि दो घण्टे आराम करे मगर जो कुछ अद्‌भुत बातें उसने देखी और सुनी थीं उनके ख्याल और विचार ने आराम लेने न दिया और उसे किसी तरह नींद न आई। अभी आसमान पर सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैलने नहीं पाई थी कि दर्वाजा खुलने की आहट मालूम हुई, कमलिनी ने दर्वाजे की तरफ देखा तो नागर पर नजर पड़ी।

कमलिनी पहिले ही से सोचे हुए थी कि आज की अद्‌भुत बातों का असर कुछ न कुछ नागर पर जरूर पड़ेगा और वह सवेरा होने के पहिले ही यहां पहुंचेगी बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह मुझ पर किसी तरह का शक भी करे। आखिर कमलिनी का सोचना ठीक निकला।

इस समय नागर के चेहरे पर परेशानी और उदासी छाई हुई थी। उसने आते ही कमलिनी पर एक तेज निगाह डाली और सवाल करना शुरू किया—

नागर०। इस समय तुम्हारी आंखें लाल मालूम होती हैं, क्या नींद नहीं आई?

कम०। हां दो घण्टे के लगभग तो मैं सोई मगर फिर नींद नहीं आई, अभी तक डर के मारे मेरा कलेजा कांप रहा है, यह उम्मीद न थी कि तुम मुझे ऐसी भयानक जगह सोने के लिये दोगी क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई नहीं की थी।

नागर०। (ताज्जुब से) सो क्या? तुम्हें किस बात की तकलीफ हुई और यहां पर क्या भयानक वस्तु देखने में आई?

कम०। मैं यहां पर अब एक सायत भी नहीं ठहर सकती, केवल तुम्हारी राह देख रही थी।

नागर०। आखिर मामला क्या है, कुछ कहो भी तो।

कम०। अच्छा बाहर चलो तो जो कुछ देखा है तुमसे कहूं।

इसमें कोई शक नहीं कि नागर बहुत तेजी के साथ आई थी और उसे कमलिनी पर शक था मगर कमलिनी ने ऐसे ढंग से बातें कीं कि उसकी हालत बिल्कुल ही बदल गई और वह तरह तरह के सोच में पड़ गई। नागर और कमलिनी बाहर आईं और सहन में एक संगमर्मर की चौकी पर बैठ कर बातचीत करने लगीं।

नागर०। हां कहो तुमने क्या देखा?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम० । दो घण्टे तो मैं बड़े आराम से सोई पर यकायक घड़घड़ाहट की आवाज सुन चौंक पड़ी और घबड़ा कर चारो तरफ देखने लगी ।

नागर० । घड़घड़ाहट की आवाज कैसी ?

कम० । मालूम होता था कि इस कमरे के नीचे कई गाड़ियां दौड़ रही हैं । पहिले तो मुझे शक हुआ कि शायद भूकम्प आने वाला है क्योंकि उसके पहिले भी प्रायः ऐसी घटना हुआ करती है, मगर सो न हुआ, आखिर थोड़ी देर तक राह देख कर फिर सो रही । आधा घण्टा भी न हुआ होगा कि मेरी चारपाई हिली, मैं घबरा कर उठ बैठी और अपने सामने एक कम उम्र लड़के को देख कर ताज्जुब करने लगी ।

नागर० । (ताज्जुब से) कम उम्र लड़का ! या कोई औरत थी ? शायद तुमने अच्छी तरह खयाल न किया हो ।

कम० । जी नहीं जहां तक मैं समझती हूं वह लड़का ही था !

नागर० । भला उसकी उम्र क्या होगी ? और सूरत शक्ल कैसी थी ?

कम० । शायद चौदह पन्द्रह वर्ष होगी, चेहरा खूबसूरत और रंग गोरा, सिर पर मुड़ासा बांधे और हाथ में एक बड़ा सा डब्बा लिए था ।

नागर० । (कुछ सोच कर) तुमने धोखा खाया, वह जरूर औरत बल्कि कमलि........अच्छा तब क्या हुआ ?

कम० । उसने आते ही मुझसे पूछा कि 'सच बता किशोरी कहां है' ?

नागर० । आते ही किशोरी को पूछा !

कम० । जी हां । मैंने जवाब दिया कि 'मुझे खबर नहीं' । इतना सुनते ही उसकी आंखें लाल हो गईं और गुस्से के मारे थरथर कांपने लगा । उसने वह बड़ा डब्बा जो हाथ में लिए था जमीन पर दे मारा । उस डब्बे में से इतनी तेज चमक पैदा हुई कि जिसे मैं अच्छी तरह बयान नहीं कर सकती । मालूम होता है कि आसमान से उतर कर कई बिजलियां एक साथ कमरे के अन्दर आ घुसी हैं । मेरी आंखें एक दम बन्द हो गईं । और मैं कांप कर चारपाई पर गिर पड़ी । थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि कोई आदमी मेरे बदन पर हाथ फेर रहा है । बस उसी समय मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुध जाती रही । मैं समझती हूं कि कोई पहर भर के बाद मुझे होश आई और तब से बराबर जाग रही हूं । मैंने बहुत चाहा कि कमरे से निकल भागूं मगर डर के मारे हाथ पैर ऐसे कमजोर हो गए थे कि चारपाई से उठ न सकी, इस समय जब तुम्हारी सूरत देखी तो जरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी ठिकाने हुआ।

नागर०। (कुछ देर सोचने के बाद धीरे से) बेशक यह काम मझली रानी का है दूसरे का नहीं।

कम०। मझली रानी कौन ?

नागर०। तुम उसे नहीं जानती हो।

कम०। खैर जो हो, मैं तो सोचे हुए थी कि कल या परसों जब मैं अपना काम करके लौटूंगी और एक रात इस शहर में काटने की नौबत आवेगी तो बराबर इसी मकान में रह जाऊंगी क्योंकि मनोरमा की मोहब्बत के भरोसे इसे भी अपना घर समझती हूं मगर रात की बात ने ऐसा डरा दिया कि अब हिम्मत नहीं पड़ती।

नागर०। नहीं नहीं तुम जब इधर आया जाया करो तो यहां जरूर टिका करो और इस मकान को अपना ही समझो। मैं लौंडियों और नौकरों को इस विषय में पूरा पूरा हुक्म देती हूं। यह भयानक घटना जो आज हुई है रोज नहीं हो सकती इससे निश्चिन्त रहो।

कम०। क्या कहूं अभी तक होशहवास दुरुस्त नहीं हुए।

नागर०। जरा ठहरो मैं इस कमरे में जाती हूं और एक चीज देख कर अभी लौट आती हूं।

नागर उठी और उस कमरे में चली गई जिसमें कमलिनी सोई थी मगर थोड़ी ही देर बाद आकर बोली, "तुम बेखौफ रहो, आज के बाद फिर कभी इस मकान में ऐसी घटना न देखोगी। क्या करूं लांचार हूं क्योंकि इस समय मुझे भख मार के रोहतासगढ़ मनोरमा को छुड़ाने के लिए जाना ही पड़ेगा नहीं तो आज एक भारी काम निकलने का मौका आ गया था।"

कम०। तुमने क्या कहा मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया।

नागर०। इन बातों को तुम नहीं समझ सकतीं। खैर अब तुम्हारा क्या इरादा है ? मैं तो रोहतासगढ़ जाने के लिए तैयार हो चुकी हूं।

कम०। अच्छी बात है। जहां तक हो सके जल्दी जाओ, मैं भी एक जरूरी काम के लिए मिर्जापुर जाती हूं, कल या परसों तक लौटूंगी। मैं तो कल ही चली जाती मगर तुमने व्यर्थ मुझे रोक लिया।

नागर०। मैंने व्यर्थ नहीं रोका था मगर हां अब उसे व्यर्थ ही कहना चाहिए, खैर माफ करो और कृपा करके मेरी एक बात स्वीकार करो तो बड़ा अहसान मानूंगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कम०। वह क्या ?

नागर० । इस समय तो मैं रोहतासगढ़ जाती हूं क्या जाने कब तक लौटना हो मगर तुम पन्द्रह दिन के अन्दर ही अन्दर मुझसे एक दफे जरूर मिलो ।

कम० । पन्द्रह दिन तक तो मैं इस प्रान्त में नहीं रह सकती, हां पांच सात दिन तक में यदि मुझसे मिल सको तो ठीक है ।

नागर० । शायद पांच सात दिन तक मेरा लौटना न हो ।

कम० । ऐसा नहीं हो सकता, तुम जिस समय पहुंचोगी और भूतनाथ के कागजात तेजसिंह को दिखाओगी उसी समय मनोरमा की छुट्टी हो जायगी । इसमें कुछ सन्देह नहीं कि तेजसिंह बात का बड़ा धनी है ।

नागर० । यदि ऐसा हो तो मैं अपने तेज घोड़े पर सवार होकर कल बखूबी रोहतासगढ़ पहुंच सकती हूं ।

कम० । ऐसा करो तो तुम चार ही दिन में लौट आओगी । मैं भी कल या परसों मिर्जापुर से आ जाऊंगी और जब तक तुम न लौटोगी इसी मकान में टिकी रहूंगी क्योंकि मनोरमा ने पुनः मिलने के लिए मुझसे कसम खिला ली थी अस्तु पांच चार दिन तक अपना हर्ज करके भी मनोरमा के लिए यहां अटकना आवश्यक है ।

नागर० । बहुत अच्छी बात है, जब मनोरमा से वादा कर चुकी हो तो मुझे विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं ।

कम० । अच्छा तो आप अब मेरा एक काम करें ।

नागर० । कहिये ।

कम० । अपने किसी आदमी को भेज कर एक घोड़ा किराये का मंगवा दीजिये जिस पर सवार होकर मैं मिर्जापुर जाऊं, क्योंकि यद्यपि मैं ऐयार हूं परन्तु रोहतासगढ़ से यहां तक तेजी के साथ आने के कारण बहुत सुस्त हो रही हूं ।

नागर० । क्या मनोरमा के घर में घोड़ों की कमी है जो तुम्हारे लिए किराए का घोड़ा मंगाया जाय ।

इतना कह कर नागर चली गई । थोड़ी देर के बाद एक लौंडी आई जिसने कमलिनी को स्नान इत्यादि से छुट्टी पा लेने के लिए कहा । कमलिनी ने दो एक जरूरी काम से तो छुट्टी पा ली मगर स्नान करने से इन्कार किया और अपने बटुए से समान निकाल कर चिट्ठी लिखने लगी ।

घण्टे भर बाद सफर के समान से लैस होकर कई लौंडियों को साथ लिए हुए नागर भी उसी जगह आ पहुंची जहां कमलिनी बैठाई गई थी । उस समय कमलिनी चिट्ठी लिख चुकी थीं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नागर०। मैंने तुम्हारे पास इसलिए एक लौंडी भेजी थी कि तुम्हें नहला धु
दे मगर तुमने.........

कमलिनी०। हां मैंने स्नान नहीं किया क्योंकि इस समय अर्थात् सूर्योदय
पहिले स्नान करने की मेरी आदत नहीं। कहीं स्नान कर लूंगी, और कामों
छुट्टी पा चुकी हूं।

नागर०। खैर कुछ मेवा खाकर जल पी लो।

कमलिनी०। नहीं इस समय माफ करो, हां थोड़ा सा मेवा साथ रख लूं
जो सफर में काम आवेगा।

थोड़ी देर बाद दो घोड़े कसे कसाये लाए गये, एक पर नागर और दूसरे
कमलिनी सवार हुई। उस समय कमलिनी ने वह चिट्ठी जो अभी घण्टा भर
लिख कर तैयार की थी नागर के हाथ में दे दी और कहा, "इसे हिफाजत से रख
मनोरमा को देकर मेरी तरफ से 'जै माया की' कहना।" वह चीठी लिफाफे
अन्दर थी और जोड़ पर मोहर लगाई हुई थी।

बाग के बाहर निकल कर कमलिनी ने पश्चिम का रास्ता लिया और नागर
पूरब की तरफ रवाना हुई।

॥ छठवां भाग समाप्त ॥

३१ वां संस्करण] १९७८ ई० [२२०० प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।

* श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

सातवां भाग

पहिला बयान

नागर थोड़ी दूर पश्चिम जा कर घूमी और उस सड़क पर चलने लगी जो रोहतासगढ़ की तरफ गई थी।

पाठक स्वयम् समझ सकते हैं कि नागर का दिल कितना मजबूत और कठोर था। उन दिनों जो रास्ता काशी से रोहतासगढ़ को जाता था वह बहुत ही भयानक और खतरनाक था। कहीं कहीं तो बिल्कुल ही मैदान में जाना पड़ता था और कहीं गहन वन में होकर दरिन्दे जानवरों की दिल दहलाने वाली आवाजें सुनते हुए सफर करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त उस रास्ते में लुटेरों और डाकुओं का डर तो हरदम बना ही रहता था। मगर इन सब बातों पर जरा भी ध्यान न देकर नागर ने अकेले ही सफर करना पसन्द किया, इसी से कहना पड़ता है कि वह बहुत ही दिलावर निडर और संगदिल औरत थी। शायद उसे अपनी ऐयारी का भरोसा या घमण्ड हो क्योंकि ऐयार लोग यमराज से भी नहीं डरते और जिस ऐयार का दिल इतना मजबूत न हो उसे ऐयार कहना भी न चाहिए।

नागर एक नौजवान मर्द की सूरत बना कर तेज और मजबूत घोड़े पर सवार तेजी के साथ रोहतासगढ़ की तरफ जा रही थी। उसकी कमर में ऐयारी का बटुआ खंजर कटार और एक पथरकला* भी था। दोपहर होते होते उसने

* पथरकला उस छोटी सी बन्दूक को कहते हैं जिसके घोड़े में चकमक लगा रहता है और जो रंजक पर गिर कर आग पैदा करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगभग पच्चीस कोस के रास्ता तय किया और उसके बाद एक ऐसे गहन वन में पहुंची जिसके अन्दर सूर्य की रोशनी बहुत कम पहुंचती थी, केवल एक पगडंडी सड़क थी जिस पर बहुत सम्हल कर सवारों को सफर करना पड़ता था क्योंकि उसके दोनों तरफ कंटीले दरख्त और झाड़ियां थीं। इस जंगल के बाहर एक चौड़ी सड़क भी थी जिस पर गाड़ी और छकड़े वाले जाते थे मगर घुमाव और चक्कर पड़ने के कारण उस रास्ते को छोड़ कर घोड़सवार और पैदल लोग अक्सर इसी जंगल में से होकर जाया करते थे जिसमें इस समय नागर जा रही है क्योंकि इधर से कई कोस का बचाव पड़ता था।

यकायक नागर का घोड़ा भड़का और रुक कर अपने दोनों कान आगे की तरफ करके देखने लगा। नागर शहसवारी का फन बखूबी जानती और अच्छी तरह समझती थी, इसलिए घोड़े के भड़कने और रुकने से उसे किसी तरह का रंज न हुआ बल्कि वह चौकन्नी हो गई और बड़े गौर से चारो तरफ देखने लगी। अचानक सामने की तरफ पगडंडी के बीचोबीच में बैठे हुए एक शेर पर उसकी निगाह पड़ी जिसका पिछला भाग नागर की तरफ था अर्थात् मुंह उस तरफ था जिधर नागर जा रही थी। नागर बड़े गौर से शेर को देखने और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए। अभी उसने कोई राय पक्की नहीं की थी कि दाहिनी बगल की झाड़ी में से एक आदमी निकल कर बढ़ा और फुर्ती के साथ घोड़े के पास आ पहुंचा जिसे देखते ही वह चौंक पड़ी और घबराहट के मारे बोल उठी, "ओफ, मुझे बड़ा भारी धोखा दिया गया !!" साथ ही इसके वह अपना हाथ पथरकले पर ले गई मगर उस आदमी ने इसे कुछ भी करने न दिया। उसने नागर का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींचा और एक झटका ऐसा दिया कि वह घोड़े के नीचे आ रही। वह आदमी तुरत उसकी छाती पर सवार हो गया और उसके दोनों हाथ कब्जे में कर लिये।

यद्यपि नागर को विश्वास हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती तो भी उसने बड़ी दिलेरी से अपने दुश्मन की तरफ देखा और कहा—

नागर०। बेशक उस हरामजादी ने मुझे पूरा धोखा दिया, मगर भूतनाथ तुम मुझे मार कर जरूर पछताओगे। वह कागज जिसके मिलने की उम्मीद में तुम मुझे मार रहे हो तुम्हारे हाथ कभी न लगेगा क्योंकि मैं उसे अपने साथ नहीं लाई हूं, यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरी तलाशी ले लो, और बिना वह कागज पाए मेरे ऐसी अनाथ के साथ बुराई करना तुम्हारे हक में ठीक नहीं है इसे तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अच्छी तरह जानते हो ।

भूतनाथ० । अब मैं तुझे किसी तरह छोड़ नहीं सकता । मुझे विश्वास है कि वे कागजात जिनके सबब से मैं तुझ ऐसे कमीनों की तावेदारी करने पर मजबूर हो रहा हूं इस समय जरूर तेरे पास हैं तथा इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि कमलिनी ने अपना वादा पूरा किया और कागजों के सहित तुझे मेरे हाथ फंसाया । अब तू मुझे धोखा नहीं दे सकती और न तलाशी लेने की नीयत से मैं तुझे कब्जे से छोड़ ही सकता हूं । तेरा जमीन से उठना मेरे लिए काल हो जायगा क्योंकि फिर तू हाथ नहीं आवेगी ।

नागर० । (चौंक कर और ताज्जुब से) हैं, तो क्या वह कम्बख्त कमलिनी थी जिसने मुझे धोखा दिया ! अफसोस, शिकार घर में आकर निकल गया । खैर जो तेरे जी में आवे कर, यदि मेरे मारने ही में तेरी भलाई हो तो मार, मगर मेरी एक बात सुन ले ।

भूत० । अच्छा कह क्या कहती है ? थोड़ी देर तक ठहर जाने में मेरा कोई हर्ज भी नहीं ।

नागर० । इसमें तो कोई शक नहीं कि अपने कागजात जिसे तेरा जीवन चरित्र कहना चाहिए लेने के लिए ही तू मुझे मारना चाहता है ।

भूत० । बेशक ऐसा ही है, यदि वह मुट्ठा मेरे हाथ का लिखा हुआ न होता तो मुझे उसकी परवाह न होती ।

नागर० । हां ठीक है, परन्तु इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मुझे मार कर तू वे कागजात न पावेगा । खैर जब मैं इस दुनिया से जाती ही हूं तो क्या जरूरत है कि तुझे भी बर्बाद करती जाऊं ? मैं तेरी लिखी चीजें खुशी से तेरे हवाले करती हूं, मेरा दाहिना हाथ छोड़, मैं तुझे बता दूं कि मुझे मारने के बाद वे कागजात तुझे कहां से मिलेंगे ।

भूतनाथ इतना डरपोक और कमजोर भी न था कि नागर का केवल दाहिना हाथ जिसमें हर्बे की किस्म से एक एक कांटा भी न था छोड़ने से डर जाय, दूसरे उसने यह भी सोचा कि जब यह स्वयं ही कागजात देने को तैयार है तो क्यों न ले लिया जाय, कौन ठिकाना इसे मारने के बाद कागजात हाथ न लगें । थोड़ी देर तक कुछ सोच विचार कर भूतनाथ ने नागर का दाहिना हाथ छोड़ दिया उसके साथ ही उसने फुर्ती से वह हाथ भूतनाथ के गाल पर दबा कर फेरा । भूतनाथ को ऐसा मालूम हुआ कि नागर ने एक सूई उसके गाल में चुभो दी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर वास्तव में ऐसा न था। नागर की उंगली में एक अंगूठी थी जिस पर नगीने की जयह स्याह रंग का कोई पत्थर जड़ा हुआ था, वही भूतनाथ के गाल में गड़ा जिससे एक लकीर सी पड़ गई और जरा खून भी दिखाई देने लगा। पर मालूम होता है कि वह नोकीला स्याह पत्थर जो अंगूठी में जड़ा हुआ था किसी प्रकार का जहर हलाहल था जो खून के साथ मिलते ही अपना काम कर गया क्योंकि उसने भूतनाथ को बात करने की मोहलत न दी। वह एक दम चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़ा और नागर उसके कब्जे से छूट कर अलग हो गई।

नागर ने घोड़े की बागडोर जो चारजामे से बंधी हुई थी खोली और उसी से भूतनाथ के हाथ पैर बांधने के बाद एक पेड़ के साथ कस दिया, इसके बाद उसने अपने ऐयारी के बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी प्रकार का तेल था। उसने थोड़ा सा तेल उसमें से भूतनाथ के गाल में उसी जगह जहां लकीर पड़ी हुई थी मला। देखते ही देखते उस जगह एक बड़ा फफोला पड़ गया। नागर ने खंजर की नोक से उस फफोले में छेद कर दिया जिससे उसके अन्दर का बिल्कुल पानी निकल गया और भूतनाथ होश में आ गया।

नागर०। क्यों बे कम्बख्त, अपने किये की सजा पा चुका या कुछ कसर है? तूने देखा मेरे पास कैसी अद्भुत चीज है। अगर हाथी भी हो तो इस जहर को बर्दाश्त न कर सके और मर जाय, तेरी क्या हकीकत है!

भूतनाथ०। बेशक ऐसा ही है, और अब मुझे निश्चय हो गया कि मेरी किस्मत में जरा भी सुख भोगना बदा नहीं है।

नागर०। साथ ही इसके तुझे यह भी मालूम हो गया कि इस जहर को मैं सहज ही में उतार भी सकती हूं। इसमें सन्देह नहीं कि तू मर चुका था मगर मैंने इसलिए तुझे जिला दिया कि अपने लिखे हुए कागजों का हाल दुनिया में फैला हुआ तू स्वयम् देख और सुन ले क्योंकि उससे बढ़ कर कोई दुःख तेरे लिये नहीं है, पर यह भी देख ले कि उस कम्बख्त कमलिनी के साथ मैंने क्या किया जिसने मुझे धोखे में डाला था। इस समय वह मेरे कब्जे में है क्योंकि कल वह मेरे घर में जरूर आकर टिकेगी! अहा, अब मैं समझ गई कि रात वाले अद्भुत मामले की जड़ भी वही है। जरूर ही इस मुर्दे शेर को रास्ते में तूने ही बैठाया होगा!

भूतनाथ०। (आंखों में आंसू भर कर) अबकी दफे मुझे माफ करो, जो कुछ हुक्म दो मैं करने को तैयार हूं।

नागर०। मैं अभी कह चुकी हूं कि तुझे मारूंगी नहीं, फिर इतना क्यों डरता है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतनाथ० । नहीं नहीं, मैं वैसी जिन्दगी नहीं चाहता जैसी तुम देती हो; हां यदि इस बात का वादा करो कि वे कागजात किसी दूसरे को न दोगी तो मैं वे सब काम करने को तैयार हूं जिनसे पहिले इन्कार करता था।

नागर० । मैं ऐसा कर सकती हूं क्योंकि आखिर तुझे जिन्दा छोड़ूंगी ही और यदि मेरे काम से तू जी न चुरावेगा तो मैं तेरे कागजात भी बड़ी हिफाजत से रक्खूंगी। हां खूब याद आया—उस चीठी को तो जरा पढ़ना चाहिए जो उस कम्बख्त कमलिनी ने यह कह कर दी थी कि मुलाकात होने पर मनोरमा को दे देना।

यह सोचते ही नागर ने बटुए में से वह चीठी निकाली और पढ़ने लगी। यह लिखा हुआ था :—

"जिस काम के लिए मैं आई थी ईश्वर की कृपा से वह काम बखूबी हो गया। वे कागजात इसके पास हैं ले लेना। दुनिया में यह बात मशहूर है कि उस आदमी का जहान से उठ जाना ही अच्छा है जिससे भलों को कष्ट पहुंचे। मैं तुमसे मिलने के लिए यहां बैठी हूं।"

नागर० । देखो नालायक ने चीठी भी लिखी तो ऐसे ढंग से कि यदि मैं चोरी से पढ़ूं भी तो किसी तरह का शक न हो और इसका पता भी न लगे कि यह भूतनाथ के नाम लिखी गई है या मनोरमा के, स्त्रीलिंग और पुलिंग को भी बचा ले गई है। उसने यही सोच के चीठी मुझे दी होगी कि जब यह भूतनाथ के कब्जे में आ जायगी और वह इसकी तलाशी लेगा तो यह चीठी उसके हाथ लग जायगी और जब वह पढ़ेगा तो नागर को अवश्य मार डालेगा और फिर तुरत आकर मुझसे मिलेगा जिसमें वह किशोरी को छुड़ा ले। अच्छा कम्बख्त देख मैं तेरे साथ क्या सलूक करती हूं।

भूत० । अच्छा इतना वादा तो मैं कर ही चुका हूं कि हर तरह से तुम्हारी तावेदारी करूंगा और जो कुछ तुम कहोगी बेउज्र बजा लाऊंगा, अब इस समय मैं तुम्हें एक भेद की बात बताता हूं जिसे जान कर तुम बहुत प्रसन्न होवोगी।

नागर० । कहो क्या कहते हो? शायद तुम्हारी नेकचलनी का सबूत मिल जाय।

भूत० । मेरे हाथ तो बंधे हैं, खैर तुम ही आओ मेरी कमर से खंजर निकालो। उसके साथ एक पुर्जा बंधा है खोल कर पढ़ो देखो क्या लिखा है?

नागर भूतनाथ के पास गई और उसकी कमर से खंजर निकालना चाहा, मगर खंजर पर हाथ पड़ते ही उसके बदन में बिजली दौड़ गई और वह कांप कर जमीन पर गिरते ही बेहोश हो गई। भूतनाथ पुकार उठा—"वह मारा।" उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिलिस्मी खंजर का हाल जो कमलिनी ने भूतनाथ को दिया था पाठक बखूबी जानते ही हैं कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। इस समय वही खंजर भूतनाथ की कमर में था उसकी तासीर से नागर बिल्कुल बेखबर थी। वह नहीं जानती थी कि जिसके पास उसके जोड़ की अंगूठी न हो वह उस खंजर को छू नहीं सकता।

अब भूतनाथ का जी ठिकाने हुआ और वह अपने छूटने का उद्योग करने लगा परन्तु हाथ पैर बंधे रहने के कारण कुछ कर न सका! आखिर वह जोर जोर से चिल्लाने लगा जिसमें किसी आते जाते मुसाफिर के कान में आवाज पड़े तो वह आकर उसको छुड़ावे।

दो घन्टे बीत गए मगर किसी मुसाफिर के कान में भूतनाथ की आवाज न पड़ी और तब तक नागर भी होश में आकर उठ बैठी।

दूसरा बयान

हम ऊपर लिख आए हैं कि राजा वीरेन्द्रसिंह तिलिस्मी खण्डहर से (जिसमें दोनों कुमार और तारासिंह इत्यादि गिरफ्तार हो गए थे) निकल कर रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए तो तेजसिंह उनसे कुछ कह सुन कर अलग हो गए और उनके साथ रोहतासगढ़ न गए। अब हम यह लिखना मुनासिब समझते हैं कि राजा वीरेन्द्रसिंह से अलग होकर तेजसिंह ने क्या किया।

एक दिन और रात उस खण्डहर के चारो तरफ जंगल और मैदान में तेजसिंह घूमते रहे मगर कुछ काम न चला। दूसरे दिन वह एक छोटे से पुराने शिवालय के पास पहुंचे जिसके चारो तरफ बेल और पारिजात के पेड़ बहुत ज्यादे थे जिसके सबब से वह स्थान बहुत ठंडा और रमणीक मालूम होता था। तेजसिंह शिवालय के अन्दर गए और शिवजी का दर्शन करने के बाद बाहर निकल आए, उसी जगह से बेलपत्र तोड़ कर शिवजी की पूजा की और फिर उस चश्मे के किनारे जो मन्दिर के पीछे की तरफ बह रहा था बैठ कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। इस समय तेजसिंह एक मामूली जमींदार की सूरत में थे और यह स्थान भी उस खण्डहर से बहुत दूर न था।

थोड़ी देर बाद तेजसिंह के कान में आदमियों के बोलने की आवाज आई। बात साफ समझ में नहीं आती थी इससे मालूम हुआ कि वे लोग कुछ दूर पर हैं। तेजसिंह ने सिर उठा कर देखा तो कुछ दूर पर दो आदमी दिखाई पड़े जो उसी शिवालय की तरफ आ रहे थे। तेजसिंह चश्मे के किनारे से उठ खड़े हुए और एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झाड़ी के अन्दर छिप कर देखने लगे कि वे लोग कहां जाते और क्या करते हैं। इन दोनों की शक्लें उन लोगों से बहुत कुछ मिलती थीं जो तारासिंह की चालाकी से तिलिस्मी खण्डहर में बेहोश हुए थे और जिन्हें राजा बीरेन्द्रसिंह साधू बाबा (तिलिस्मी दारोगा) के सहित कैदी बना कर रोहतासगढ़ ले गए थे, इसलिए तेजसिंह ने सोचा कि ये दोनों आदमी भी जरूर उन्हीं लोगों में से हैं जिसकी बदौलत हम लोग दुःख भोग रहे हैं अस्तु इन लोगों में से किसी को फंसा कर अपना काम निकालना चाहिए।

तेजसिंह के देखते ही देखते वे दोनों आदमी वहां पहुंच कर उस शिवालय के अन्दर घुस गये और लगभग दो घड़ी के बीत जाने पर भी बाहर न निकले। तेजसिंह ने छिप कर राह देखना उचित न जाना। वह झाड़ी में से निकल कर शिवालय में आये मगर झांक कर देखा तो शिवालय के अन्दर किसी आदमी की आहट न मिली। ताज्जुब करते हुए शिवलिंग के पास तक चले गये मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी। तेजसिंह तिलिस्मी कारखाने और अद्भुत मकानों तथा तहखानों की हालत से बहुत कुछ वाकिफ हो चुके थे इसलिए समझ गए कि इस शिवालय के अन्दर कोई गुप्त राह सुरंग या तहखाना अवश्य है और इसी सबब से ये दोनों आदमी गायब हो गये हैं।

शिवालय के सामने की तरफ बेल का एक पेड़ था। उसी के नीचे तेजसिंह यह निश्चय करके बैठ गए कि जब तक वे लोग अथवा उनमें से कोई बाहर न आयेगा तब तक यहां से न टलेंगे। आखिर घण्टे भर के बाद उन्हीं में से एक आदमी शिवालय के अन्दर से बाहर आता हुआ दिखाई पड़ा। उसे देखते ही तेजसिंह उठ खड़े हुए, निगाह मिलते ही झुक कर सलाम किया और तब कहा, "ईश्वर आपका भला करे, मेरे भाई की जान बचाइए!"

आदमी०। तू कौन है और तेरा भाई कहां है?

तेज०। मैं जमींदार हूं, (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी के दूसरी ओर मेरा भाई है। बेचारे को एक बुढ़िया व्यर्थ मार रही है। आप पुजेरी जी हैं, धर्मात्मा हैं, किसी तरह मेरे भाई को बचाइए। इसीलिए मैं यहां आया हूं। (गिड़गिड़ा कर) बस अब देर न कीजिए, ईश्वर आपका भला करे!

तेजसिंह की बातें सुन कर उस आदमी को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और बेशक ताज्जुब की बात भी थी, क्योंकि तेजसिंह बदन के मजबूत और निरोग मालूम होते थे, देखने वाला कह सकता था कि बेशक इसका भाई भी वैसा ही होगा, फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे दो आदमियों के मुकाबले में एक बूढ़ी औरत का जबर्दस्त पड़ना ताज्जुब नहीं तो क्या है ।

आखिर बहुत कुछ सोच विचार कर उस आदमी ने तेजसिंह से कहा, "खैर चलो देखें वह बुढ़िया कैसी पहलवान है !"

उस आदमी को साथ लिए हुए तेजसिंह शिवालय से कुछ दूर चले गये और एक गुंजान झाड़ी के पास पहुंच कर इधर उधर घूमने लगे ।

आदमी० । तुम्हारा भाई कहां है ?

तेजसिंह० । उसी को तो ढूंढ़ रहा हूं ।

आदमी० । क्या तुम्हें याद नहीं कि उसे किस जगह छोड़ गए थे ?

तेजसिंह० । राम राम, कैसे बेवकूफ से पाला पड़ा है, अरे कम्बख्त, जब जगह याद नहीं तो यहां तक कैसे आए !

आदमी० । पाजी कहीं का ! हम तो तेरी मदद को आए और तू हमें ही कम्बख्त कहता है !!

तेज० । बेशक तू कम्बख्त बल्कि कमीना है, तू मेरी मदद क्या करेगा जब तू अपने ही को नहीं बचा सकता ?

इतना सुनते ही वह आदमी चौकन्ना हो गया और बड़े गौर से तेजसिंह की तरफ देखने लगा । जब उसे निश्चय हो गया कि यह कोई ऐयार है तब उसने खंजर निकाल कर तेजसिंह पर वार किया । तेजसिंह ने वार बचा कर उसकी कलाई पकड़ ली और एक झटका ऐसा दिया कि खंजर उसके हाथ से छूट कर दूर जा गिरा । वह और कुछ चोट करने की फिक्र ही में था कि तेजसिंह ने उसकी गर्दन में हाथ डाल दिया और बात की बात में जमीन पर दे मारा । वह घबड़ा कर चिल्लाने लगा मगर इससे भी कुछ काम न चला क्योंकि उसके नथनों में बेहोशी की दवा जबर्दस्ती ठूंस दी गई और एक छींक मार कर वह बेहोश हो गया ।

उस बेहोश आदमी को उठा कर तेजसिंह एक ऐसी झाड़ी में घुस गए जहां से आते जाते मुसाफिरों को वे बखूबी देख सकते मगर उन पर किसी की निगाह न पड़ती । उस बेहोश आदमी को जमीन पर लेटा देने बाद तेजसिंह चारो तरफ देखने लगे और जब किसी को न पाया तो धीरे से बोले, "अफसोस इस समय मैं अकेला हूं, यदि मेरा कोई साथी होता तो इसे रोहतासगढ़ भेजवा कर बेखौफ हो जाता और बेफिक्री के साथ काम करता ! खैर कोई चिन्ता नहीं, अब किसी तरह काम तो निकालना ही पड़ेगा ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेजसिंह ने ऐयारी का बटुआ खोला और आईना निकाल कर सामने रक्खा, अपनी सूरत ठीक वैसी ही बनाई जैसा कि आदमी था, इसके बाद अपने कपड़े उतार कर रख दिए और उसके बदन से कपड़े उतार कर आप पहिन लेने के बाद उसकी सूरत बदलने लगे। किसी तेज दवा से उसके चेहरे पर कई जख्म के निशान ऐसे बनाए कि सिवाय तेजसिंह के दूसरा कोई छुड़ा ही नहीं सकता था और मालूम ऐसा होता था कि ये जख्म के दाग कई वर्षों से उसके चेहरे पर मौजूद हैं। इससे बाद उसका तमाम बदन एक स्याह मसाले से रंग दिया। इसमें यह गुण था कि जिस जगह लगाया जाय वह आबनूस के रंग की तरह स्याह हो जाय और जब तक केले के अर्क से न धोया जाय वह दाग किसी तरह न छूटे चाहे वर्षों बीत जाय।

वह आदमी गोरा था मगर अब पूर्ण रूप से काला हो गया, चेहरे पर कई जख्म के निशान भी बन गए। तेजसिंह ने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी और इस ढंग से गर्दन हिला कर उठ खड़े हुए कि जिससे उनके दिल का भाव साफ झलक गया। तेजसिंह ने सोच लिया कि बस इसकी सूरत बखूबी बदल गई, अब और कोई कारीगरी करने की आवश्यकता नहीं है और वास्तव में ऐसा ही था कि, दूसरे की बात तो दूर रही यदि उसकी मां भी उसे देखती तो अपने लड़के को कभी न पहिचान सकती।

उस आदमी की कमर के साथ ऐयारी का बटुआ था, तेजसिंह ने उसे खोल लिया और अपने बटुए की कुल चीजें उसमें रख अपना बटुआ उसकी कमर से बांध दिया और वहां से रवाना हो गये।

तेजसिंह फिर उसी शिवालय के सामने आए और एक बेल के पेड़ के नीचे बैठ कर कुछ गाने लगे। दिन केवल घण्टे भर बाकी रह गया था जब वह दूसरा आदमी भी शिवालय के बाहर निकला। तेजसिंह को जो उसके साथी की सूरत में पेड़ के नीचे मौजूद पाकर यह गुस्से में आ गया और उनके पास आ कर कड़ी आवाज में बोला, "वाहजी बिहारीसिंह, अभी तक आप यहां बैठे गीत गा रहे हैं।"

तेजसिंह को इतना मालूम हो गया कि हम जिसकी सूरत में हैं उसका नाम बिहारीसिंह है। अब जब तक वे अपनी असली सूरत में न आवें हम भी इन्हें बिहारीसिंह के ही नाम से लिखेंगे, हां कहीं कहीं तेजसिंह लिख जाय तो कोई हर्ज भी नहीं।

बिहारीसिंह ने अपने साथी की बात सुन कर गाना बन्द किया और उसकी तरफ देख के कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिहारी० । (दो तीन दफे खांस कर) बोलो मत, इस समय मुझे खांसी ... गई है, आवाज भारी हो रही है, जितना कोशिश करता हूं उतना ही गाना बि... जाता है, खैर तुम भी आ जाओ और जरा सुर में सुर मिला कर साथ गाओ ...

वह० । क्या बात है ! मालूम होता है तुम कुछ पागल हो गए हो, मालि... का काम गया जहन्नुम में और हम लोग बैठे गीत गाया करें !!

बिहारी० । वाह, जरा सी बूटी ने क्या मजा दिखाया । अहा हा जीते ... पट्ठे, ईश्वर तुम्हारा भला करे, खूब सिद्धी पिलाई ।

वह० । बिहारीसिंह, यह तुम्हें क्या हो गया ? तुम तो ऐसे न थे !

बिहारी० । जब न थे तब बुरे थे, जब हैं तो अच्छे हैं । तुम्हारी बात हो... हैं, सत्रह हाथी जलपान कर के बैठा हूं । कम्बख्त ने जरा नमक भी नहीं दि... फीका ही उड़ाना पड़ा । ही ही ही हो, आओ एक गदहा तुम भी खा लो, नहीं ... सूअर, अच्छा कुत्ता ही सही । ओ हो हो हो, क्या दूर की सूझी ! बचा जी ऐयारी करने बैठे हैं, हल जोतना आता ही नहीं जिन्न पकड़ने लगे । हा हा हा हा, ... रे बूटी, अभी तक जीभ चटचटाती है—लो देख लो (जीभ चटचटा कर दिखाता है)

वह० । अफसोस !

बिहारी० । अब अफसोस करने से क्या फायदा ? जो होना था वह तो ... गया । जा के पिन्डदान करो । हां यह तो बताओ पितर मिलौनी कब करोगे ... मैं जाता हूं तुम्हारी तरफ से ब्राह्मणों को नेवता दे आता हूं ।

वह० । (गर्दन हिला कर) इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम पूरे पागल ... गए हो । तुम्हें जरूर किसी ने कुछ खिला या पिला दिया है ।

बिहारी० । न इसमें सन्देह न उसमें सन्देह, पागल की बातचीत तो बिल... जाने दो क्योंकि तुम लोगों में केवल मैं ही हूं सो हूं, बाकी सब पागल । खिला... वाले की ऐसी तैसी, पिलाने वाले का बोल बाला । एक लोटा भांग, दो सौ ... साढ़े तेरह आना, लोटा निशान । ऐयारी के नुस्खे एक से एक बढ़ के याद ... जहाज की पाल भी खूब ही उड़ती है । वाह, कैसी अंधेरी रात है । बाप रे ... सूरज भी अस्त हुआ ही चाहता है । तुम भी नहीं हम भी नहीं, अच्छा तुम ... सही, बड़े अकिलमन्द हो, अकिल अकिल अकिल मन्द मन्द मन्द । (कुछ देर ... चुप रह कर) अरे बाप रे बाप, मैया रे मैया, बड़ा ही गजब हो गया, मैं ... अपना नाम भी भूल गया ! अभी तक तो याद था कि मेरा नाम बिहारीसिंह ... मगर अब भूल गया, तुम्हारे सिर की कसम जो कुछ भी याद हो । भाई ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे, जरा बता तो दो मेरा नाम क्या है ?

वह० । अफसोस, रानी मुझी को दोष देंगी, कहेंगी कि हरनामसिंह अपने साथी की हिफाजत न कर सका ।

बिहारी० । ही ही ही ही, वाह रे भाई हरनामसिंह, अलिफ बे ते टे से च छ ज, उल्लू की दुम फाख्ता........!

हरनामसिंह को विश्वास हो गया कि जरूर किसी ऐयार या शैतान से जिसने कुछ खिला या पिला दिया है हमारा साथी बिहारीसिंह पागल हो गया, इसमें कोई सन्देह नहीं । उसने सोचा कि अब इससे कुछ कहना सुनना उचित नहीं, इसे इस समय किसी तरह फुसला कर घर ले चलना चाहिए ।

हरनाम० । अच्छा यार अब देर हो गई, चलो घर चलें ।

बिहारी० । क्या हम औरत हैं कि घर चलें ! चलो जंगल में चलें, शेर का शिकार खेलें, रंडी का नाच देखें, तुम्हारा गाना सुनें और सब के अन्त में तुम्हारे सिरहाने बैठ कर रोएं । ही ही ही ही........!

हरनाम० । खैर जंगल ही में चलो ।

बिहारी० । हम क्या साधू वैरागी या उदासी हैं कि जंगल में जांय । बस इसी जगह रहेंगे, भंग पीएंगे, चैन करेंगे, यह भी जंगल ही है । तुम्हारे जैसे गदहों का शिकार करेंगे, गदहे भी कैसे कि बस पूरे अन्धे ! (इधर उधर देख कर) सात पांच बारह पांच तीन, तीन घण्टे बीत गए अभी तक भंग लेकर नहीं आया, बड़ा झूठा निकला, मगर मुझसे बढ़ के नहीं ! बदमाश है, लुच्चा है, अब उसकी राह या सड़क नहीं देखूंगा ! चलो भाई साहब चलें, घर ही की तरफ मुंह करना उत्तम है, मगर मेरा हाथ पकड़ लो, मुझे कुछ सूझता नहीं ।

हरनामसिंह ने गनीमत समझा और बिहारीसिंह का हाथ पकड़ घर की तरफ अर्थात् मायारानी के महल की तरफ ले चला । मगर वाह रे तेजसिंह, पागल बन क्या काम निकाला है ! अब ये चाहे दो सौ दफे चूकें मगर किसी की मजाल नहीं कि शक करे । बिहारीसिंह को मायारानी बहुत चाहती थी क्योंकि इसकी ऐयारी खूब चढ़ी बढ़ी थी, इसलिए हरनामसिंह उसे ऐसी अवस्था में छोड़ कर अकेला जा भी नहीं सकता था । मजा तो उस समय होगा जब नकली बिहारीसिंह मायारानी के सामने होंगे और भूत की सूरत बने असली बिहारीसिंह भी पहुंचेंगे ।

बिहारीसिंह को साथ लिए हरनामसिंह जमानिया* की तरफ रवाना हुआ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* जमानियां—इसे लोग जमानया भी कहते हैं काशी के पूरब गंगा के दहिने किनारे पर आबाद है ।

मायारानी वास्तव में जमानिया की रानी थी, इसके बाप दादे भी इस जगह हुकूमत कर गए थे। जमानिया के सामने गंगा के किनारे से कुछ दूर हट कर एक बहुत ही खुशनुमा और लम्बा चौड़ा बाग था जिसे वहां वाले 'खास बाग' के नाम से पुकारते थे। इस बाग में राजा अथवा राज्य कर्मचारियों के सिवाय कोई दूसरा आदमी जाने नहीं पाता था। इस बाग के बारे में तरह तरह की गप्पें लोग उड़ाया करते थे मगर असल भेद यहां का किसी को मालूम न था। इस बाग के गुप्त भेदों को राजखान्दान और दीवान तथा ऐयारों के सिवाय कोई गैर आदमी नहीं जानता था और न कोई जानने की कोशिश कर सकता था। यदि कोई गैर आदमी इस बाग में पाया जाता तो तुरत मार डाला जाता था और यह कायदा बहुत पुराने जमाने से चला आता था।

जमानिया में जिस छोटे किले के अन्दर मायारानी रहती थी उसमें से गंगा के नीचे नीचे एक सुरंग भी इस बाग तक गई थी और इसी राह से मायारानी वहां आती जाती थी, इस सबब से मायारानी का इस बाग में आना या वहां से जाना खास खास आदमियों के सिवाय किसी गैर को न मालूम होता था। फिर और इस बाग का खुलासा हाल पाठकों को स्वयं मालूम हो जायगा इस जगह विशेष लिखने की कोई आवश्यकता नहीं, हां इस जगह इतना लिख देना मुनासिब मालूम होता है कि रामभोली के आशिक नानक तथा कमला ने इसी बाग में मायारानी का दरबार देखा था।

जमानिया पहुंचने तक बिहारीसिंह ने अपने पागलपन से हरनामसिंह को बहुत ही तंग किया और साबित कर दिया कि पढ़ा लिखा आदमी किस ढंग का पागल होता है। यदि मायारानी का डर न होता तो हरनामसिंह अपने साथी को बेशक छोड़ देता और हजार खराबी के साथ घर ले जाने की तकलीफ न उठाता।

कई दिन के बाद बिहारीसिंह को साथ लिए हुए हरनामसिंह जमानिया के किले में पहुंच गया। उस समय पहर भर रात जा चुकी थी। किले के अन्दर पहुंचने पर मालूम हुआ कि इस समय मायारानी बाग में हैं, लाचार बिहारीसिंह को साथ लिए हुए हरनामसिंह को उस बाग में जाना पड़ा और इस लिए बिहारीसिंह (तेजसिंह) ने किले और सुरंग का रास्ता भी बखूबी देख लिया। सुरंग के अन्दर दस पन्द्रह कदम जाने के बाद बिहारीसिंह ने हरनामसिंह से कहा—

बिहारी० । सुनो जी, इस सुरंग के अन्दर सैकड़ों दफे हम आ चुके और आज भी तुम्हारे मुलाहिजे से चले आए, मगर आज के बाद फिर कभी यहां लाओगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें कच्चा ही खा जाऊंगा और इस सुरंग की भी बर्बादी कर दूंगा, अच्छा यह बताओ कि मुझे किधर लिए जाते हो ?

हरनाम० । मायारानी के पास ।

बिहारी० । तब तो मैं न जाऊंगा क्योंकि मैं सुन चुका हूं कि मायारानी आज-कल आदमियों का खाया करती है, तुम भी तो कल तीन गदहियां खा चुके हो ! मायारानी के सामने चलो तो सही, देखो मैं तुम्हें कैसे छकाता हूं, ही ही ही, बच्चा तुम्हें छकाने से क्या होगा, मायारानी को छकाऊं तो कुछ मजा मिले । भज मन राम चरन सुखदाई !! (भजन गाता है) ।

बड़ी मुश्किल से सुरंग खतम किया और बाग में पहुंचे । उस सुरंग का दूसरा सिरा बाग में एक कोठरी के अन्दर निकलता था । जिस समय वे दोनों कोठरी के बाहर हुए तो उस दालान में पहुंचे जिसमें मायारानी का दर्बार होता था । इस समय मायारानी उसी दालान में थी मगर दर्बार का सामान वहां कुछ न था, केवल अपनी बहन और सखी सहेलियों के साथ बैठी दिल बहला रही थी । मायारानी पर निगाह पड़ते ही उसकी पोशाक और गम्भीर भाव ने बिहारीसिंह (शिवसिंह) को निश्चय करा दिया कि यहां की मालिक यही है ।

हरनामसिंह और बिहारीसिंह को देख कर मायारानी को एक प्रकार की खुशी हुई और उसने बिहारीसिंह की तरफ देख कर पूछा, "कहो क्या हाल है ?"

बिहारी० । रात अंधेरा है, पानी खूब बरस रहा है, काई फट गई, दुश्मन ने सिर निकाला, चोर ने घर देख लिया, भूख के मारे पेट फूल गया, तीन दिन से भूखा हूं, कल का खाना अभी तक हजम नहीं हुआ । मुझ पर बड़े अन्धेर का पत्थर आ टूटा, बचाओ बचाओ !!

बिहारीसिंह के बेतुके जवाब से मायारानी घबड़ा गई, सोचने लगी कि इसको क्या हो गया जो बेमतलब की बात बक गया । आखिर हरनामसिंह की तरफ देख कर पूछा, "बिहारी क्या कह गया मेरी समझ में न आया !"

बिहारी० । अहा हा, क्या बात है ! तुमने मारा हाथ पसारा, छुरा लगाया चक्कर खाया, शेर लड़ाया गीदड़ खाया । राम लिखाया नहीं मिटाया, फांस लगाया आप घुमाया, ताड़ खुजाया खून बहाया, समझ खिलाड़ी बूझ मेरे बल्लू, हा, हा, हो, भला समझो तो !

मायारानी और भी घबड़ाई, बिहारीसिंह का मुंह देखने लगी । हरनामसिंह मायारानी के पास गया और धीरे से बोला, "इस समय मुझे दुःख के साथ कहना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ता है कि बेचारा बिहारीसिंह पागल हो गया है मगर ऐसा पागल नहीं है कि हथकड़ी बेड़ी की जरूरत पड़े क्योंकि किसी को दुःख नहीं देता, केवल बकता बहुत है और अपने पराये का होश नहीं है, कभी बहुत अच्छी तरह भी बातें करता है। मालूम होता है कि बीरेन्द्रसिंह के किसी ऐयार ने धोखा देकर इसे कुछ खिला दिया।

माया०। तुम्हारा और इसका साथ क्योंकर छूटा और क्या हुआ कुछ खुलासा कहो तो हाल मालूम हो।

हर०। पहले इनके लिए कुछ बन्दोबस्त कर दीजिये फिर सब हाल कहूंगा। वैद्यजी को बुला कर जहां तक जल्द हो इनका इलाज करना चाहिये!

बिहारी०। यह कानाफुसकी अच्छी नहीं, मैं समझ गया कि तुम मेरी चुगली खा रहे हो। (चिल्ला कर) दोहाई रानी साहबा की, इस कम्बख्त हरनामसिंह ने मुझे मार डाला, जहर खिला कर मार डाला, मैं जिन्दा नहीं हूं, मैं तो मरने बाद भूत बन कर यहां आया हूं, तुम्हारी कसम खाकर कहता हूं मैं अब वह बिहारीसिंह नहीं हूं, मैं कोई दूसरा ही हूं। हाय हाय, बड़ा गजब हुआ या ईश्वर उन लोगों से तू ही समझियो जो भले आदमियों को पकड़ कर पिंजरे में बन्द किया करते हैं।

माया०। अफसोस, इस बेचारे की क्या दशा हो गई, मगर हरनामसिंह यह तो तुम्हारा ही नाम लेता है, कहता है हरनामसिंह ने जहर खिला दिया।

हर०। इस समय मैं इसकी बातों से रंज नहीं हो सकता क्योंकि इस बेचारे की अवस्था ही दूसरी ही रही है।

माया०। इसकी फिक्र जल्द करना चाहिये, तुम जाओ वैद्यजी को बुला लाओ।

हर०। बहुत अच्छा।

माया०। (बिहारी से) तुम मेरे पास आकर बैठो। कहो तुम्हारा मिजाज कैसा है?

बिहारी०। (मायारानी के पास बैठ कर) मिजाज? मिजाज है, बहुत है, अच्छा है, क्यों अच्छा है सो ठीक है!

माया०। क्या तुम्हें मालूम है कि तुम कौन हो?

बिहारी०। हां मालूम है, मैं महाराजाधिराज श्री बीरेन्द्रसिंह हूं। (कुछ सोच कर) नहीं, वह तो अब बुड्ढे हो गये, मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह बनूंगा क्योंकि वह बड़े खूबसूरत हैं, औरतें देखने के साथ ही उन पर रीझ जाती हैं, अच्छा अब मैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह हूं। (सोच कर) नहीं नहीं नहीं वह तो अभी लड़के हैं और उन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यारी भी नहीं आती, और मुझे बिना ऐयारी के चैन नहीं अतएव मैं तेजसिंह बनूंगा। बस यही बात पक्की रही, मुनादी फिरवा दीजिए कि लोग मुझे तेज-सिंह कह के पुकारा करें।

माया०। (मुस्कुरा कर) बेशक ठीक है, अब हम भी तुमको तेजसिंह ही कह पुकारेंगे।

बिहारी०। ऐसा ही उचित है। जो मजा दिन भर भूखे रहने में है वह मजा आपकी नौकरी में है, जो मजा डूब मरने में है वह मजा आपका काम करने में है।

माया०। सो क्यों ?

बिहारी०। इतना दुःख भोगा, लड़े झगड़े, सर के बाल नोच डालें, सब कुछ किया, मगर अभी तक आंख से अच्छी तरह न देखा। यह मालूम ही न हुआ कि जिसके लिए किसको फांसा और उस फंसाई से फंसने वाले की सूरत अब कैसी है!

माया०। मेरी समझ में न आया कि इस कहने से तुम्हारा क्या मतलब है ?

बिहारी०। (सिर पीट कर) अफसोस, हम ऐसे नासमझ के साथ हैं। ऐसी जिन्दगी ठीक नहीं, ऐसा खून किसी काम का नहीं, जो कुछ मैं कह चुका हूं जब तक उसका कोई मतलब न समझेगा और मेरी इच्छा पूरी न होगी तब तक मैं किसी से न बोलूंगा, न खाऊंगा न सोऊंगा, न एक न दो न चार, हजार पांच कुछ नहीं, चाहे जो हो मैं तो देखूंगा!

माया०। क्या देखोगे ?

बिहारी०। मुंह से तो मैं बोलने वाला नहीं, आपको समझने की गों हो तो समझिए।

माया०। भला कुछ कहो भी तो सही।

बिहारी०। समझ जाइए।

माया०। कौन सी चीज ऐसी है जो तुम्हारी देखी नहीं है ?

बिहारी०। देखी है मगर अच्छी तरह देखूंगा।

माया०। क्या देखोगे ?

बिहारी०। समझिए!

माया०। कुछ कहो भी कि समझिए समझिए ही बकते जाओगे!

बिहारी०। अच्छा एक हर्फ कहो, तो कह दूं।

माया०। खैर यही सही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिहारी०। कै कै कै कै!!

माया०। (मुस्कुरा कर) कैदियों को देखोगे?

बिहारी०। हां हां हां, बस बस बस, वही वही वही।

माया०। उन्हें तो तुम देख ही चुके हो, तुम्हीं लोगों ने तो गिरफ्तार किया है।

बिहारी०। फिर देखेंगे, सलाम करेंगे, नाच नचावेंगे, ताक धिनाधिन नाचेगा साल् (उठ कर कूदता है)।

मायारानी बिहारीसिंह को बहुत मानती थी। मायारानी के कुल ऐयारों में वह सर्दार था और वास्तव में बहुत ही तेज और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद भी था। यद्यपि इस समय वह पागल है तथापि मायारानी को उसकी खातिर मंजूर है। मायारानी हंस कर उठ खड़ी हुई और बिहारीसिंह को साथ लिए हुए उस कोठरी में चली गई जिसमें सुरंग का रास्ता था। दर्वाजा खोल कर सुरंग के अन्दर गई। सुरंग में कई शीशे की हांडियां लटक रही थीं और रोशनी बखूबी हो रही थी। मायारानी लगभग पचास कदम के जाकर रुकी, उस जगह दीवार में एक छोटी सी आलमारी बनी हुई थी। मायारानी की कमर में जो सोने की जंजीर थी उसके साथ तालियों का एक छोटा सा गुच्छा लटक रहा था, मायारानी ने वह गुच्छा निकाला और उसमें की एक ताली लगा कर यह आलमारी खोली। आलमारी के अन्दर निगाह करने से सीढ़ियां नजर आईं जो नीचे उतर जाने के लिए थीं। वहां भी शीशे की कन्दील में रोशनी हो रही थी। बिहारीसिंह को साथ लिए हुए मायारानी नीचे उतरी। अब बिहारीसिंह ने अपने को ऐसी जगह पाया जहां लोहे के जंगले वाली कई कोठरियां थीं और हर एक कोठरी का दर्वाजा मजबूत ताले से बन्द था। उन कोठरियों में हथकड़ी बेड़ी से बेबस उदास और दुःखी केवल चटाई पर लेटे अथवा बैठे हुए कई कैदियों की सूरत दिखाई दे रही थीं। ये कोठरियां गोलाकार ऐसे ढंग से बनी हुई थीं कि हर एक कोठड़ी में अलग अलग कैद करने पर भी कैदी लोग आपस में बातें कर सकते थे।

सबसे पहिले बिहारीसिंह की निगाह जिस कैदी पर पड़ी वह तारासिंह था जिसे देखते ही बिहारीसिंह खिलखिला कर हंसा और चारो तरफ देख न मालूम क्या क्या बक गया जिसे मायारानी कुछ भी न समझ सकी, इसके बाद बिहारीसिंह ने मायारानी की तरफ देखा और कहा—

"छि: छि: मुझे आप इन कम्बख्तों के सामने क्यों लाईं? मैं इन लोगों की सूरत नहीं देखा चाहता। मैं तो कै देखूंगा कै, बस केवल कै देखूंगा और कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीं, आप जब तक चाहें यहां रहें मगर मैं दम भर नहीं रह सकता, अब के खूंगा के बस के देखूंगा, बस के केवल के !"

'के के' बकता हुआ बिहारीसिंह वहां से भागा और उस जगह आकर बैठ जहां मायारानी से पहिले पहिल मुलाकात हुई थी। बिहारीसिंह की बद-वासी देख कर मायारानी घबराई और जल्दी जल्दी सीढ़ियां चढ़ कैदखाने का वा बन्द करने बाद अपनी जगह पर आई जहां लम्बी लम्बी सांसें लेते बिहारी-ह को बैठे हुए पाया। मायारानी की वे सहेलियां भी उसी जगह बैठी थीं न्हें छोड़ कर मायारानी कैदखाने की तरफ गई थी।

मायारानी ने बिहारीसिंह से भागने का सबब पूछा मगर उसने कुछ जवाब दिया। मायारानी ने कई तरह के प्रश्न किए मगर बिहारीसिंह ने ऐसी चुप्पी धी कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं। मालूम होता था कि यह जन्म का गूंगा र बहिरा है, न सुनता है न कुछ बोल सकता है। मायारानी की सहेलियों ने बहुत कुछ जोर मारा मगर बिहारीसिंह ने मुंह न खोला। इस परेशानी में यारानी को बिहारीसिंह की हालत पर अफसोस करते हुए घण्टा भर बीत गया र तब तक वैद्यजी को, जिनकी उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी अपने साथ ए हुए हरनामसिंह भी आ पहुंचा।

वैद्यराज ने इस अनोखे पागल की जांच की और अन्त में यह निश्चय किया बेशक इसे कोई ऐसी दवा खिलाई गई है जिसके असर से यह पागल हो गया और यदि इसी समय इसका इलाज किया जाय तो एक ही दो दिन में आराम सकता है। मायारानी ने इलाज करने की आज्ञा दी और वैद्यराज ने अपने से एक अड़ाऊ डिबिया निकाली जो कई तरह की दवाओं से भरी हुई हमेशा के पास रहा करती थी।

वैद्यराज को उस अनोखे पागल की जांच में कुछ भी तकलीफ न हुई। बिहारीसिंह ने नाड़ी दिखाने में उज्र न किया और अन्त में दवा की वह गोली खा गया जो वैद्यराज ने अपने हाथ से उसके मुंह में रख दी थी। बिहारीसिंह अपने को ऐसा बनाया जिससे देखने वालों को विश्वास हो कि वह दवा खा परन्तु उस चालाक पागल ने गोली दांतों के नीचे छिपा ली और थोड़ी देर द मौका पा इस ढब से थूक दी कि किसी को गुमान तक न हुआ।

आधी घड़ी तक उछल कूद करने बाद बिहारीसिंह जमीन पर गिर पड़ा और देर होने तक उसी तरह पड़ा रहा। वैद्यराज ने नब्ज देख कर कहा कि यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दवा की तासीर से बेहोश हो गया है, इसे कोई छेड़े नहीं, आशा है कि जब इसकी आंख खुलेगी तो अच्छी तरह बातचीत करेगा। बिहारीसिंह चुपचाप पड़ा ये बातें सुन रहा था। मायारानी बिहारीसिंह की हिफाजत के लिए कई लौंडियां छोड़ दूसरे कमरे में चली गई और एक नाजुक पलंग पर जो वहां बिछा हुआ था सो रही।

सूर्योदय से पहिले ही मायारानी उठी और हाथ मुंह धो कर उस जगह पहुंची जहां बिहारीसिंह को छोड़ गई थी। हरनामसिंह पहिले ही वहां जा चुका था। बिहारीसिंह को जब मालूम हो गया कि मायारानी उसके पास आकर बैठ गई है तो वह भी दो तीन करवटें लेकर उठ बैठा और ताज्जुब से चारो तरफ देखने लगा।

माया०। अब तुम्हारा क्या हाल है?

बिहारी०। हाल क्या कहूं, मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि मैं यहां क्योंकर आया, मेरी आवाज क्यों बैठ गई, और इतनी कमजोरी क्यों मालूम होती है कि मैं उठ कर चल फिर नहीं सकता!

माया०। ईश्वर ने बड़ी कृपा की जो तुम्हारी जान बच गई, तुम तो पूरे पागल हो गए थे, वैद्यराज ने भी ऐसी दवा दी कि एक ही खूराक में फायदा हो गया। बेशक उन्होंने इनाम पाने का काम किया। तुम अपना हाल तो कहो, तुम्हें क्या हो गया था?

बिहारी०। (हरनामसिंह की तरफ देख कर) मैं एक ऐयार के फेर में पड़ गया था, मगर पहिले आप कहिए कि मुझे इस अवस्था में कहां पाया?

हरनाम०। आप मुझसे यह कह कर कि तुम थोड़ा सा काम जो बच रहा है उसे पूरा कर के जमानिया चले जाना, मैं कमलिनी से मुलाकात करके और जिस तरह होगा उसे राजी करके जमानिया आऊंगा—खंडहर वाले तहखाने से बाहर चले गए, परन्तु काम पूरा करने के बाद मैं सुरंग के बाहर निकला तो आपको शिवालय के सामने पेड़ के नीचे विचित्र दशा में पाया। (पागलपने की बातें और मायारानी के पास तक आने का खुलासा हाल कहने के बाद) मालूम होता है आप कमलिनी के पास नहीं गए?

बिहारी०। (मायारानी से) जैसा धोखा मैंने अबकी खाया आज तक न खाया था। हरनामसिंह का कहना सही है। जब मैं सुरंग से निकल कर शिवालय से बाहर हुआ तो एक आदमी पर नजर पड़ी जो मामूली जमींदार की सूरत था। वह मुझे देखते ही मेरे पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि 'पुजेरीजी महाराज, किसी तरह मेरे भाई की जान बचाइए'! मैंने उससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तेरे भाई को क्या हुआ है' ? उसने जवाब दिया कि 'उसे एक बुढ़िया बेतरह मार रही है, किसी तरह उसके हाथ से छुड़ाइये' । वह जमींदार बहुत ही मजबूत और मोटा ताजा था । मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि वह कैसी बुढ़िया है जो ऐसे दो भाइयों से नहीं हारती ! आखिर मैं उसके साथ चलने पर राजी हो गया । वह मुझे शिवालय से कुछ दूर एक झाड़ी में ले गया जहां कई आदमी छिपे हुए थे । उस जमींदार के इशारे से सभों ने मुझे घेर लिया और एक ने चांदी की एक लुटिया मेरे सामने रख कर कहा कि यह भंग है इसे पी जाओ' । मुझे मालूम हो गया कि वास्तव में कोई ऐयार है जिसने मुझे धोखा दिया । मैंने भंग पीने से इनकार किया और वहां से लौटना चाहा मगर उन सभों ने भागने न दिया । थोड़ी देर तक मैं उन लोगों से लड़ा मगर क्या कर सकता था क्योंकि वे गिनती में पन्द्रह से कम न थे । आखिर उन लोगों ने पटक कर मुझे मारना शुरू किया और जब मैं बेदम हो गया तो भंग या दवा जो कुछ हो मुझे जबर्दस्ती पिला दी, बस इसके बाद मुझे कुछ भी खबर नहीं कि क्या हुआ ।

थोड़ी देर तक इसी तरह की ताज्जुब की बातें कह कर बिहारीसिंह ने मायारानी का दिल बहलाया और इसके बाद कहा, "मेरी तबीयत बहुत खराब हो रही है, अगर कुछ देर तक बाग में टहलूं तो बेशक जी प्रसन्न हो मगर कमजोरी इतनी बढ़ गई है कि स्वयं उठने और टहलने की हिम्मत नहीं पड़ती ।" मायारानी ने कहा, "कोई हर्ज नहीं, हरनामसिंह सहारा देकर तुम्हें टहलावेंगे, मैं समझती हूं कि बाग की ताजी हवा खाने और फूलों की खुशबू सूंघने से तुम्हें बहुत कुछ फायदा पहुंचेगा ।"

आखिर हरनामसिंह ने बिहारीसिंह को हाथ पकड़ के बाग में अच्छी तरह घुमाया और इस बहाने से तेजसिंह ने उस बाग को तथा वहां की इमारतों को अच्छी तरह देख लिया । ये लोग घूम फिर कर मायारानी के पास पहुंचे ही थे कि एक लौंडी ने जो चोबदार थी मायारानी के सामने आ कर और हाथ जोड़ कर कहा, "बाग के फाटक पर एक आदमी आया है और सरकार में हाजिर हुआ चाहता है । बहुत ही बदसूरत और काला कलूटा है परन्तु कहता है कि मैं बिहारीसिंह हूं, मुझे किसी ऐयार ने धोखा दिया और चेहरे तथा बदन को ऐसे रंग से रंग दिया कि अभी तक साफ नहीं होता ।"

मायारानी । यह अनोखी बात सुनने में आई कि ऐयारों का रंगा हुआ रंग और न छूटे ! कोई कोई रंग पक्का जरूर होता है मगर उसे भी ऐयार लोग छुड़ा सकते हैं । (हंस कर) बिहारीसिंह ऐसा बेवकूफ नहीं है कि अपने चेहरे का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंग न छुड़ा सके।

बिहारी०। रहिये रहिये, मुझे शक पड़ता है कि शायद यह वही आदमी हो जिसने मुझे धोखा दिया बल्कि ऐसा कहना चाहिये कि मेरे साथ जबर्दस्ती की (लौंडी की तरफ देख कर) उसके चेहरे पर जख्म के दाग भी हैं ?

लौंडी०। जी हां, पुराने जख्म के कई दाग हैं।

बिहारी०। भौं के पास भी कोई जख्म का दाग है ?

लौंडी०। एक आड़ा दाग है, मालूम होता कि कभी लाठी की चोट खाई है।

बिहारी०। बस बस, यह वही आदमी है, देखो जाने न पावे। चंडूल को यह खबर ही नहीं कि बिहारीसिंह यहां पहुंच गया है। (मायारानी की तरफ देख कर) यहां पर्दा करवा कर उसे बुलवाइये, मैं भी पर्दे के अन्दर रहूंगा, देखिये क्या मजा करता हूं। हां हरनामसिंह पर्दे के बाहर रहें, देखें पहिचानता है या नहीं।

माया०। (लौंडी की तरफ देख कर) पर्दा करने के लिए कहो और नियमानुसार आंख में पट्टी बांध कर उसे यहां लिवा आओ।

लौंडी०। वह यहां की हर एक चीजों का पूरा पूरा पता देता है और जब इस बाग के अन्दर आ चुका है।

बिहारी०। पक्का चोर है, ताज्जुब नहीं कि यहां आ चुका हो ! खैर लोगों को अपना नियम पूरा करना चाहिये।

हुक्म पाते ही लौंडियों ने पर्दे का इन्तजाम कर दिया और वह लौंडी जिसने बिहारीसिंह के आने की खबर दी थी इसलिये फाटक की तरफ रवाना हुई कि नियमानुसार आंख पर पट्टी बांध कर बिहारीसिंह को बाग के अन्दर ले आवे और मायारानी के सामने हाजिर करे।

इस जगह इस बाग का कुछ थोड़ा सा हाल लिख देना मुनासिब मालूम होता है। यह दो सौ बिगहे का बाग मजबूत चहारदीवारी के अन्दर था। चारो तरफ की दीवारें बहुत मोटी मजबूत और लगभग पचीस हाथ के ऊंची थीं। दीवार के ऊपरी हिस्से में तेज नोक और धार वाले लोहे के कांटे और फल इस ढंग से लगे हुए थे कि काबिल ऐयार भी दीवार लांघ कर बाग के अन्दर जाने का साहस नहीं कर सकते थे। कांटों के सबब यद्यपि कमंद लगाने का सुबीता था परन्तु उसके सहारे ऊपर चढ़ना बिल्कुल ही असम्भव था। इस चहारदीवारी के अन्दर की जमीन जिसे हम बाग कहते हैं चार हिस्सों में बंटी हुई थी। पूरब तरफ आलीशान फाटक था जिसके अन्दर जाकर एक बाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहिला हिस्सा कहना चाहिए मिलता था। इसकी चौड़ी चौड़ी रविशें ईंट और चूने से बनी हुई थीं। पश्चिम तरफ अर्थात् इस हिस्से के अन्त में बीस हाथ मोटी और इससे ज्यादे ऊंची दीवार बाग की पूरी चौड़ाई तक बनी हुई थी जिसके नीचे बहुत सी कोठरियां थीं जो सिपाहियों के काम में आती थीं। उस दीवार के ऊपर चढ़ने के लिए खूबसूरत सीढ़ियां थीं जिन पर जाने से बाग का दूसरा हिस्सा दिखाई देता था और इन्हीं सीढ़ियों की राह दीवार के नीचे उतर कर उस हिस्से में जाना पड़ता था। सिवा इसके और कोई दूसरा रास्ता उस बाग में जिसे हम दूसरा हिस्सा कहते हैं जाने के लिए नहीं था। बाग के इसी दूसरे हिस्से में वह इमारत या कोठी थी जिसमें मायारानी दर्बार किया करती थी या जिसमें पहुंच कर नानक ने मायारानी को देखा था। पहिले हिस्से की अपेक्षा यह हिस्सा विशेष खूबसूरत और सजा हुआ था। बाग के तीसरे हिस्से में जाने का रास्ता उसी मकान के अन्दर से था जिसमें मायारानी रहा करती थी। बाग के तीसरे हिस्से का हाल लिखना जरा मुश्किल है तथापि इमारत के बारे में इतना कह सकते हैं कि इस तीसरे हिस्से के बीचोबीच में एक बहुत ऊंचा बुर्ज था। उस बुर्ज के चारों तरफ कई मकान थे जिनके दालानों कोठरियों कमरों और बारहदरियों तथा तहखानों का हाल इस जगह लिखना कठिन है क्योंकि उन सभी का तिलिस्मी बातों से विशेष सम्बन्ध है। हां इतना कह सकते हैं कि उसी बुर्ज में से बाग के चौथे हिस्से में जाने का रास्ता था, मगर इस बाग के चौथे हिस्से में क्या है उसका हाल लिखते कलेजा कांपता है, इस जगह हम उसका जिक्र करना मुनासिब नहीं समझते, आगे जाकर किसी मौके पर वह हाल लिखा जायगा।

जब वह लौंडी असली बिहारीसिंह को जो बाग के फाटक पर आया था लेने चली गई तो नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह ने मायारानी से कहा, "इसे ईश्वर की कृपा ही कहनी चाहिए कि वह शैतान ऐयार जिसने मेरे साथ जबर्दस्ती की और ऐसी दवा खिलाई कि जिसके असर से मैं पागल हो गया था घर बैठे फंदे में आ गया।"

माया०। ठीक है, मगर देखा चाहिए यहां पहुंच कर क्या रंग लाता है।

बिहारी०। जिस समय वह यहां पहुंचे सब के पहिले हथकड़ी और बेड़ी उसके नजर करनी चाहिए जिसमें मुझे देख कर भागने का उद्योग न करे।

माया०। जो मुनासिब हो करो, मगर मुझे यह आश्चर्य जरूर मालूम होता है कि वह ऐयार जब तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव कर ही चुका और तुम्हें पागल बना कर छोड़ ही चुका तो बिना अपनी सूरत बदले यहां क्यों चला आया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐयारों से ऐसी भूल न होनी चाहिए, उसे मुनासिब था कि तुम्हारी या मेरे किसी और आदमी की सूरत बना कर आता।

बिहारी० । ठीक है मगर जो कुछ उसने किया वह भी उचित ही किया मेरी या यहां के किसी और नौकर की सूरत बन कर उसका यहां आना तब अच्छा होता जब मुझे गिरफ्तार रखता!

माया० । मैं यह भी सोचती हूं कि तुम्हें गिरफ्तार करके केवल पागल ही बना कर छोड़ देने में उसने क्या फायदा सोचा था? मेरी समझ में तो यह उसने भूल की।

इतना कह कर मायारानी ने टटोलने की नीयत से नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह पर एक तेज निगाह डाली। तेजसिंह भी समझ गए कि मायारानी को मेरी तरफ से कुछ शक हो गया है और इस शक को मिटाने के लिए वह किसी तरह की जांच जरूर करेगी, तथापि इस समय बिहारीसिंह (तेजसिंह) ने ऐसा गम्भीर भाव धारण किया कि मायारानी का शक बढ़ने न पाया। थोड़ी देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं और इसके बाद लौंडी असली बिहारीसिंह को लेकर आ पहुंची। आज्ञानुसार असली बिहारीसिंह पर्दे के बाहर बैठाया गया। अभी तक उसकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी।

असली बिहारीसिंह की आंखों से पट्टी खोली गई और उसने चारो तरफ अच्छी तरह निगाह दौड़ाने बाद कहा, "बड़ी खुशी की बात है कि मैं जीता जागता अपने घर में आ पहुंचा। (हाथ का इशारा करके) मैं इस बाग को और अपने साथियों को खुशी की निगाह से देखता हूं। मुझे इस बात का अफसोस नहीं कि मायारानी ने मुझसे पर्दा किया क्योंकि जब तक मैं अपना बिहारीसिंह होना साबित न कर दूं तब तक इन्हें मुझ पर भरोसा न करना चाहिए, मगर मुझे (हरनामसिंह की तरफ देख कर और इशारा करके) अपने इस अनूठे दोस्त हरनामसिंह पर अफसोस आता है कि इन्होंने मेरी कुछ भी परवाह न की और मुझे ढूंढ़ने का भी कष्ट न उठाया। शायद इसका सबब यह हो कि वह ऐयार मेरी सूरत बन कर इनके साथ हो लिया हो जिसने मुझे धोखा दिया। अगर मेरा खयाल ठीक है तो वह ऐयार यहां जरूर आया होगा, मगर ताज्जुब की बात है कि मैं चारो तरफ निगाह दौड़ाने पर भी उसे नहीं देखता! खैर यदि यहां आया तो देख ही लूंगा कि बिहारीसिंह वह है या मैं हूं। केवल इस बाग के चौथे दर्जे के बारे में थोड़े सवाल करने से ही सारी कलई खुल जायगी!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असली बिहारीसिंह की बातों ने जो इस जगह पहुंचने के साथ ही उसने कहीं

...ों पर अपना असर डाला। मायारानी के दिल पर तो उसका बहुत ही गहरा असर पड़ा मगर उसने बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और तब एक निगाह तेजसिंह के ऊपर डाली। तेजसिंह को यह क्या खबर थी कि यहां कोई ऐसा विचित्र ...ा देखने में आवेगा और उसके भाग अथवा दर्जों के बारे में सवाल किये जायंगे। ...होंने सोच लिया कि अब मामला बेढ़ब हो गया, काम निकालना अथवा राज-...मारों को छुड़ाना तो दूर रहा कोई दूसरा उद्योग करने के लिये मेरा बच कर ...ां से निकल जाना भी मुश्किल हो गया, क्योंकि मैं किसी तरह उसके सवालों ...ा जवाब नहीं दे सकता और न उस बाग के गुप्त भेदों का मुझे खबर ही है।

असली बिहारीसिंह अपनी बात कह कर चुप हो गया और इस फिक्र में हुआ ...क मेरी बात का कोई जवाब दे ले तो मैं कुछ कहूं, मगर मायारानी की आज्ञा ...िना कोई भी उसकी बातों का जवाब न दे सकता था। चालाक और धूर्त माया-...ानी न मालूम क्या सोच रही थी कि आधी घड़ी तक उसने सिर न उठाया इसके ...ाद उसने एक लौंडी की तरफ देख कर कहा, "हरनामसिंह को यहां बुलाओ।"

हरनामसिंह पर्दे के अन्दर आया और मायारानी के सामने खड़ा हो गया।

माया०। यह ऐयार जो अभी आया है और बड़ी तेजी से बोल कर चुप ...ैठा है बड़ा ही शैतान और धूर्त मालूम होता है। मैं इससे बहुत कुछ पूछना ...ाहती हूं परन्तु इस समय मेरे सर में दर्द है, बात करना या सुनना मुश्किल ...है। तुम इस ऐयार को ले जाओ, चार नम्बर के कमरे में इसके रहने का बन्दो-...बस्त कर दो, जब मेरी तबीयत ठीक होगी तो देखा जायगा।

हर०। बहुत मुनासिब है, और मैं सोचता हूं कि बिहारीसिंह को भी....

माया०। हां बिहारीसिंह भी दो चार दिन इसी बाग में रहें तो ठीक है क्योंकि यह इस समय बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रहे हैं, यहां की आबहवा ...से दो तीन दिन में यह ठीक हो जायगे। इनके लिए बाग के तीसरे हिस्से का दो नम्बर वाला कमरा ठीक है जिसमें तुम रहा करते हो।

हरनाम०। मैं सोचता हूं कि पहले बिहारीसिंह का बन्दोबस्त कर लूं तब इस शैतान ऐयार की फिक्र करूं।

माया०। हां ऐसा ही होना चाहिये।

हरनाम०। (नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह की तरफ देख कर) चलिए उठिये।

यद्यपि तेजसिंह को विश्वास हो गया कि अब बचाव की सूरत मुश्किल है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथापि उन्होंने हिम्मत न हारी और अपनी कारंवाई सोचने से बाज न आए। इस समय चुपचाप हरनामसिंह के साथ चले जाना ही उन्होंने मुनासिब जाना।

तेजसिंह को साथ लेकर हरनामसिंह उस कोठरी में पहुंचा जिसमें सुरंग का रास्ता था। इस कोठरी में दीवार के साथ लगी हुई छोटी छोटी कई आलमारियां थीं। हरनामसिंह ने उनमें से एक आलमारी खोली, मालूम हुआ कि यह दूसरी कोठरी में जाने का दर्वाजा है। हरनामसिंह और तेजसिंह दूसरी कोठरी में गये। यह कोठरी बिलकुल अंधेरी थी अस्तु तेजसिंह को मालूम न हुआ कि यह कितनी लम्बी और चौड़ी है। दस बारह कदम आगे बढ़ कर हरनामसिंह नें तेजसिंह की कलाई पकड़ी और कहा, "बैठ जाइये।" यहां की जमीन कुछ हिलती हुई मालूम हुई और इसके बाद इस तरह की आवाज आई जिससे तेजसिंह ने समझा कि हरनामसिंह ने किसी कल या पुर्जे को छेड़ा है।

वह जमीन का टुकड़ा जिस पर दोनों ऐयार बैठे थे यकायक नीचे को तरफ धंसने लगा और थोडी देर के बाद किसी दूसरी जमीन पर पहुंच कर ठहर गया। हरनामसिंह ने हाथ पकड़ कर तेजसिंह को उठाया और दस कदम आगे बढ़ा कर हाथ छोड़ दिया, इसके बाद फिर घड़घड़ाहट की आवाज आई जिससे तेजसिंह ने समझ लिया कि वह जमीन का टुकड़ा जो नीचे उतर आया था फिर ऊपर की तरफ चढ़ गया। यहां तेजसिंह को सामने की तरफ कुछ उजाला मालूम हुआ। ये उसी तरफ बढ़े मगर अपने साथ हरनामसिंह के आने की आहट न पाकर उन्होंने हरनामसिंह को पुकारा पर कुछ जवाब न मिला। अब तेजसिंह को विश्वास हो गया कि हरनामसिंह मुझे इस जगह कैद करके चलता बना, लाचार ये उसी तरफ रवाना हुए जिधर कुछ उजाला मालूम होता था। लगभग पचास कदम के जाने बाद दर्वाजा मिला और उसके पार होने पर तेजसिंह ने अपने को एक बाग में पाया।

यह बाग भी हरा भरा था, और मालूम होता था कि इसकी रविशों पर अभी छिड़काव किया गया है मगर माली या किसी दूसरे आदमी का नाम भी न था। इस बाग में बनिस्बत फूलों के मेवों के पेड़ बहुत ज्यादे थे और एक छोटी सी नहर भी जारी थी जिसका पानी मोती की तरह साफ था, सतह की कंकड़ियां भी साफ दिखाई देती थीं। बाग के बीचोबीच में एक ऊंचा बुर्ज था और उसके चारो तरफ कई मकान कमरे और दालान इत्यादि थे जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। तेजसिंह सुस्त और उदास होकर नहर के किनारे बैठ गए और न मालूम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या क्या सोचने लगे। और चाहे जो कुछ भी हो मगर अब तेजसिंह इस योग्य न रहे कि अपने को बिहारीसिंह कहें। उनकी बची बचाई कलई भी हरनामसिंह के साथ इस बाग में आने से खुल गई। क्या बिहारीसिंह तेजसिंह की तरह चुपचाप हरनामसिंह के साथ अनजान आदमियों की तरह चला आता? क्या मायारानी अथवा उसका कोई ऐयार अब तेजसिंह को बिहारीसिंह समझ सकता है? कभी नहीं, कभी नहीं! इन सब बातों को तेजसिंह भी बखूबी समझ सकते थे और उन्हें विश्वास हो गया कि अब हम कैद कर लिए गये।

थोड़ी देर बाद यहां के मकानों को घूम घूम कर देखने के लिए तेजसिंह उठे, मगर सिवाय एक कमरे के जिसके दर्वाजे पर मोटे अक्षर में दो (२) का अंक लिखा हुआ था बाकी सब कमरे और मकान बन्द पाये। दो का नम्बर देखते ही तेजसिंह को ध्यान आया कि मायारानी ने इसी कमरे में मुझे रखने का हुक्म दिया है। उस कमरे में एक दर्वाजा और छोटी छोटी कई खिड़कियां थीं, अन्दर फर्श बिछा हुआ और कई तकिये भी मौजूद थे। तेजसिंह को भूख लगी हुई थी, मेवों की कमी न थी, उन्हीं से पेट भरा और नहर का पानी पी कर उसी दो नम्बर वाले कमरे को अपना मकान या कैदखाना समझा।

तीसरा बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। तेजसिंह उसी दो नम्बर वाले कमरे के बाहर सहन में तकिया लगाये सो रहे हैं। चिराग बालने का कोई सामान यहां मौजूद नहीं जिससे रोशनी करते, पास में कोई आदमी नहीं जिससे दिल बहलाते, बाग से बाहर निकलने की उम्मीद नहीं कि कुमारों को छुड़ाने के लिए कोई बन्दोबस्त करते, लाचार तरह तरह के तरद्दुदों में पड़े उन पेड़ों पर नजर दौड़ा रहे थे जो सहन के सामने बहुतायत से लगे हुए थे।

यकायक पेड़ों की आड़ में रोशनी मालूम पड़ी। तेजसिंह घबड़ा कर ताज्जुब के साथ उसी तरह देखने लगे। थोड़ी ही देर में मालूम हुआ कि कोई आदमी हाथ में चिराग लिए तेजी के साथ कदम बढ़ाता उनकी तरफ आ रहा है। देखते देखते वह आदमी तेजसिंह के पास आ पहुंचा और चिराग एक तरफ रख कर सामने खड़ा हो के बोला, "जय माया की!"

यह आदमी सिपाहियाना ठाठ में था। छोटी छोटी स्याह दाढ़ी से इसके चेहरे का ज्यादा हिस्सा ढंका हुआ था। मेयाना कद और शरीर से हृष्ट पुष्ट था। तेज-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिंह ने भी यह समझ कर कि कोई ऐयार है जवाब में कहा, "जय माया की !"

सिपाही० । (जो अभी आया है) ओस्ताद तुमने चालाकी तो खूब की थी मगर जल्दी करके काम बिगाड़ दिया ।

तेज० । चालाकी क्या और जल्दी कैसी ?

सिपाही० । इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि मायारानी के बाग में रूप बदल कर आने वाला ऐयार पागल बने बिना किसी दूसरी रीति से काम चला ही नहीं सकता था परन्तु आपने जल्दी कर दी, दो चार दिन और पागल बने रहते तो ठीक था, असली बिहारीसिंह की बातों का जवाब आपको देना न पड़ता और इस बाग के तीसरे या चौथे हिस्से का भेद भी आपसे पूछा न जाता, अब तो सभी को मालूम हो गया कि आप असली बिहारीसिंह नहीं बल्कि कोई ऐयार हैं ।

तेज० । सब लोग जो चाहे समझें मगर तुम मेरे पास क्यों आये हो ?

सिपाही० । इसी लिए कि आपका हाल जानूं और जहां तक हो सके आपकी मदद करूं ।

तेज० । मैं अपना हाल सिवाय इसके और क्या कहूं कि मैं वास्तव में बिहारीसिंह हूं ।

सिपाही० । (हंस कर) क्या खूब, अभी तक आपका मिजाज ठिकाने नहीं हुआ ! मगर मैं फिर कहता हूं कि मुझ पर भरोसा कीजिये और अपना ठीक ठीक नाम बताइए ।

तेज० । जब तुम यह समझते ही हो कि मैं ऐयार हूं तो क्या यह नहीं जानते कि ऐयार लोग किसी ऐसे बतोलिए पर जैसे कि आप हैं यकायकी कैसे भरोसा कर सकते हैं ?

सिपाही० । हां आपका कहना ठीक है, ऐयारों को यकायक किसी का विश्वास न करना चाहिए, मगर मेरे पास एक ऐसी चीज है कि आपको झख मार कर मुझ पर भरोसा करना पड़ेगा ।

तेज० । (ताज्जुब से) वह ऐसी कौन सी अनोखी चीज तुम्हारे पास है जिसमें इतना बड़ा असर है कि मुझे झख मार कर तुम पर भरोसा करना पड़ेगा ?

सिपाही० । नेमचो रिक्तगन्थ !*

'नेमचो रिक्तगन्थ' इस शब्द में न मालूम कैसा असर था कि सुनते ही तेजसिंह

* नेमचो रिक्तगन्थ—यह ऐयारी भाषा का शब्द है, इसका अर्थ है—खून से लिखी किताब का घर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोंगटे खड़े हो गए, सिर नीचे कर लिया और न जाने क्या सोचने लगे। थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता था कि वह तेजसिंह नहीं हैं बल्कि पत्थर की कोई मूरत हैं। आखिर वे एक लम्बी सांस लेकर उठ खड़े हुए और सिपाही का हाथ पकड़ कर बोले, "अब कहो तुम्हें मैं अपने साथियों में से कोई समझू या अपना पक्का दुश्मन जानूं ?"

सिपाही०। दोनों में से कोई भी नहीं।

तेज०। यह और भी ताज्जुब की बात है! (कुछ सोच कर) हां ठीक है, यदि तुम चोर होते तो इतनी दिलावरी के साथ मुझसे बातें न करते बल्कि मेरे सामने ही न आते, लेकिन यह तो मालूम होना चाहिए कि तुम हो कौन? क्या रिक्तगन्थ तुम्हारे पास है ?

सिपाही०। जी नहीं, यदि वह मेरे पास होता तो अब तक राजा बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंच गया होता।

तेज०। फिर यह शब्द तुमने कहां से सुना ?

सिपाही०। यह वही शब्द है जिसे आप लोग समय पड़ने पर आपस में कह कर इस बात का परिचय देते हैं कि हम राजा बीरेन्द्रसिंह के दिली दोस्तों में से कोई हैं।

तेज०। हां बेशक यह वही शब्द है, तो क्या तुम राजा बीरेन्द्रसिंह के दिली दोस्तों में से कोई हो ?

सिपाही०। नहीं, हां, होंगे।

तेज०। (चिढ़ कर) तुम अजब मसखरे हो जी, साफ साफ क्यों नहीं कहते कि तुम कौन हो ?

सिपाही०। (हंस कर) क्या उस शब्द के कहने पर भी आप मुझपर भरोसा न करेंगे ?

तेज०। (मुंह बना कर और बात पर जोर देकर) हाय हाय, कह तो दिया कि भरोसा किया, भरोसा किया, भरोसा किया! झख मारा और भरोसा किया! अब भी कुछ कहोगे या नहीं? अपना नाम बताओगे या नहीं ?

सिपाही०। अच्छा तो आप ही पहले अपना परिचय दीजिये।

तेज०। मैं तेजसिंह हूं—बस हुआ? अब भी तुम अपना कुछ परिचय दोगे या नहीं ?

सिपाही०। हां हां, अब मैं अपना परिचय दूंगा, मगर पहिले एक बात का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जवाब दे दीजिये ।

तेज० । अभी एक आंच की कसर रह गई, अच्छा पूछिये !

सिपाही० । "यदि कोई ऐसा आदमी आपके सामने आवे जो आपसे मुहब्बत रक्खे, आपके काम में दिलोजान से मदद दे, आपकी भलाई के लिये जान तक देने को तैयार रहे, मगर उसके बाप दादा चाचा भाई इत्यादि में से कोई एक आदमी आपके साथ पूरी पूरी दुश्मनी कर चुका हो तो आप उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगे

तेज० । जो मेरे साथ नेकी करेगा उसके साथ मैं दोस्ती का बर्ताव करूं चाहे उसके बाप दादे मेरे साथ पूरी दुश्मनी क्यों न कर चुके हों ।

सिपाही० । ठीक है ऐसा ही करना चाहिये, अच्छा तो फिर सुनिये मेरा नाम नानक है और मकान काशीजी ।

तेज० । नानक !

सिपाही० । जी हां, और मेरा किस्सा बहुत ही अनूठा और आश्चर्यजनक है

तेज० । मैंने यह नाम कहीं सुना है मगर याद नहीं पड़ता कि कब और क्यों सुना । इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम्हारा हाल आश्चर्य और अद्भुत घटनाओं से भरा होगा । तेरी तबीयत घबड़ा रही है, जहां तक जल्दी हो सके अपना ठीक ठीक हाल कहो ।

नानक० । दिल लगा कर सुनिये मैं कहता हूं यद्यपि उस काम में देर हो जाय जिसके लए मैं आया हूं तथापि मेरा किस्सा सुन कर आप अपना काम बहुत आसानी से निकाल सकेंगे और यहां की बहुत सी बातें भी आपको मालूम हो जायंगी

नानक का किस्सा

लड़कपन में बड़े चैन से गुजरती थी । मेरे घर में किसी चीज की कमी न थी खाने के लिए अच्छी से अच्छी चीजें, पहिरने के लिए एक से एक बढ़ के कपड़े और वे सब चीजें मुझे मिला करतीं जिनकी मुझे जरूरत होती या जिनके लिए मैं जिद किया करता । मां से मुझे बहुत ज्यादे मुहब्बत थी और बाप से कम क्योंकि मेरा बाप किसी दूसरे शहर में किसी राजा के यहां नौकर था, चौथे पांचवें महीने और कभी कभी साल भर पीछे घर में आता और दस पांच दिन रह कर चला जाता था । उसका पूरा हाल आगे चल कर आपको मालूम होगा । मेरा बाप मेरी मां को बहुत चाहता था और जब घर आता तो बहुत सा रुपया और अच्छी अच्छी चीजें उसे दे जाया करता था और इसलिए हम लोग अमीरी ठाठ के साथ अपने दिन बिताते थे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस बुड्ढी दाई की गोद में मैं खेला करता था वह बहुत ही नेक थी और उसकी बहिन एक जमींदार के यहां जिसका घर मेरे पड़ोस में था, रहती और उसकी लड़की को खिलाया करती थी। मेरी दाई कभी मुझे लेकर उस जमींदार के घर जा बैठा करती और कभी उसकी बहिन उस लड़की को लेकर जिसके खिलाने पर वह नौकर थी मेरे घर आ बैठा करती इसलिए मेरा और उस लड़की का रोज साथ रहता तथा धीरे धीरे हम दोनों में मुहब्बत दिन दिन बढ़ने लगी। उस लड़की का नाम, जो मुझसे उम्र में दो वर्ष कम थी, रामभोली था और मेरा नाम नानक; मगर घर वाले मुझे ननकू कह के पुकारा करते। वह लड़की बहुत खूबसूरत थी मगर जन्म की गूंगी बहरी थी, तथापि हम दोनों की मुहब्बत का यह हाल था कि उसे देखे विना मुझ और मुझे देखे बिना उसे चैन न पड़ता। गुरु के पास बैठ कर पढ़ना मुझे बहुत बुरा मालूम होता और उस लड़की से मिलने के लिए तरह तरह के बहाने करने पड़ते।

धीरे धीरे मेरी उम्र दस वर्ष की हुई और मैं अपने पराये को अच्छी तरह समझने लगा। मेरे पिता का नाम रघुबरसिंह था। बहुत दिनों पर उसका घर आया करना मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ और मैं अपनी मां से उसका हाल खोद खोद के पूछने लगा। मालूम हुआ कि वह अपना हाल बहुत छिपाती है यहां तक कि मेरी मां भी उसका पूरा पूरा हाल नहीं जानती तथापि यह मालूम हो गया कि मेरा बाप ऐयार है और किसी राजा के यहां नौकर है। यह भी सुना कि वहां मेरी एक सौतेली मां भी रहती है जिससे एक लड़का और एक लड़की भी है।

मेरा बाप जब आता तो महीने दो महीने या कभी कभी केवल आठ ही दस दिन रह कर चला जाता और जितने दिन रहता मुझे ऐयारी सिखाने में विशेष ध्यान देता। मुझे भी पढ़ने लिखने से ज्यादा खुशी ऐयारी सीखने में होती क्योंकि रामभोली से मिलने तथा अपना मतलब निकालने के लिए ऐयारी बड़ा काम देती थी। धीरे धीरे लड़कपन का जमाना बहुत कुछ निकल गया और वे दिन आ गये कि जब लड़कपन नौजवानी के साथ ऊधम मचाने लगा और मैं अपने को नौजवान और ऐयार समझने लगा।

एक रात मैं अपने घर में नीचे के खण्ड में कमरे के अन्दर चारपाई पर लेटा हुआ रामभोली के विषय में तरह तरह की बातें सोच रहा था। इश्क के चोट मैं लोट रहा था, दीवार के ऊपर लटकती हुई तस्वीरों की तरफ टकटकी बांध कर देख रहा था, यकायक ऊपर की छत पर धमधमाहट की आवाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आने लगी। मैं यह सोच कर निश्चिन्त हो रहा कि शायद कोई लौंडी किसी जरूरी काम के लिए उठी होगी उसी के पैरों की धमधमाहट मालूम होती है मगर थोड़ी देर बाद ऐसा मालूम हुआ कि सीढ़ियों की राह कोई आदमी नीचे उतरा चला आता है। पैर की आवाज भारी थी जिससे साफ मालूम हुआ कि यह कोई मर्द है। मुझे ताज्जुब मालूम हुआ कि इस समय मर्द इस मकान में कहां से आया क्योंकि मेरा बाप घर में न था, उसे नौकरी पर गए हुए दो महीने से ज्यादे हो चुके थे।

मैं आहट लेने और कमरे से बाहर निकल कर देखने की नीयत से उठ बैठा। चारपाई की चरमराहट और मेरे उठने की आहट पाकर यह आदमी फुर्ती से उतर कर चौक में पहुंचा और जब तक मैं कमरे के बाहर हो कर उसे देखूं तब तक वह सदर दर्वाजा खोल कर मकान के बाहर निकल गया। मैं हाथ में खंजर लिए हुए मकान के बाहर निकला और उस आदमी को जाते हुए देखा। उस समय मेरे नौकर और सिपाही जो दर्वाजे पर रहा करते थे बिल्कुल गाफिल सो रहे थे मगर मैं उन्हें सचेत करके उस आदमी के पीछे रवाना हुआ।

मैं नहीं कह सकता कि उस आदमी को जो स्याह कपड़ा ओढ़े मेरे घर से निकला था यह खबर थी या नहीं कि मैं उसके पीछे पीछे आ रहा हूं क्योंकि वह बड़ी बेफिक्री से कदम बढ़ाता हुआ मैदान की तरफ जा रहा था।

थोड़ी देर जाने बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि यह आदमी अपनी पीठ पर एक गठरी लादे हुए है जो एक स्याह कपड़े के अन्दर है। अब मुझे विश्वास हो गया कि यह चोर है और इसने जरूर मेरे यहां चोरी की है। जी में तो आया कि गुल मचाऊं जिसमें बहुत से आदमी इकट्ठे होकर उसे गिरफ्तार कर लें मगर कई बातें सोच कर चुप हो रहा और उसके पीछे पीछे जाना ही उचित समझा।

घण्टे भर तक बराबर मैं उस आदमी के पीछे पीछे चला गया यहां तक कि वह शहर के बाहर मैदान में एक ऐसी जगह जा पहुंचा जहां इमली के बड़े बड़े पेड़ इतने ज्यादे लगे हुए थे कि उनके सबब से मामूली से विशेष अंधकार हो रहा था। जब मैं उन घने पेड़ों के बीच पहुंचा तो मालूम हुआ कि यहां लगभग दस बारह आदमियों के और भी हैं जो एक समाधि के बगल में बैठे धीरे धीरे बातें कर रहे थे। वह आदमी उसी जगह पहुंचा और उन लोगों में से दो ने बढ़ कर पूछा, "कहो अबकी दफे किसे लाए ?" इसके जवाब में उस आदमी ने कहा, "नानक की मां को।"

आप खयाल कर सकते हैं कि इस शब्द को सुन कर मेरे दिल पर कैसी चोट लगी होगी। अब तक तो मैं यही समझ रहा था कि वह चोर मेरे यहां से माल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असबाब चुरा कर लाया है जिसकी मुझे विशेष परवाह न थी और मैं उसका पूरा पूरा हाल जानने की नीयत से चुपचाप उसके पीछे पीछे चला गया था, मगर जब यह मालूम हुआ कि वह कम्बख्त मेरी मां को चुरा लाया है तो मुझे बड़ा ही रंज हुआ और मैं इस बात पर अफसोस करने लगा कि उसे यहां तक आने का मौका क्यों दिया क्योंकि अब इस समय यहां मेरे किये कुछ भी नहीं हो सकता था। चारो तरफ ऐसा सन्नाटा था कि अगर गला फाड़ कर चिल्लाता तो भी मेरी आवाज किसी के कान तक न पहुंचती, इसके अतिरिक्त वे लोग गिनती में भी ज्यादे थे, किसी तरह उनका मुकाबला नहीं कर सकता था, लाचार उस समय बड़ी मुश्किल से मैंने अपने दिल को सम्हाला और चुपचाप एक पेड़ की आड़ में खड़े रह कर उन लोगों की कारंवाई देखने और यह सोचने लगा कि क्या करना चाहिए।

वह समाधि जो औंधी हांड़ी की तरह थी बहुत बड़ी तथा मजबूत बनी हुई थी और मुझे उसी समय यह भी मालूम हो गया कि उसके अन्दर जाने के लिए कोई रास्ता भी है क्योंकि मेरे देखते देखते वे सब के सब उसी समाधि के अन्दर घुस गए और जब तक मैं रहा बाहर न निकले।

घन्टे भर तक राह देख कर मैं उस समाधि के पास गया और उसके चारो तरफ घूम घूम कर अच्छी तरह देखने लगा मगर कोई दर्वाजा या छेद ऐसा न दिखाई दिया जिस राह से कोई उसके अन्दर जा सकता और न मैंने उस जगह कोई दर्वाजे का निशान ही पाया। मैं उस समाधि को अच्छी तरह जानता था, उसके बारे में कभी कोई बुरा खयाल किसी के दिल में न हुआ होगा। देहाती लोग वहां तरह तरह की मन्नतें मानते और प्रायः पूजा करने के लिए आया करते थे परन्तु मुझे आज मालूम हुआ कि वह वास्तव में समाधि नहीं बल्कि खूनियों का अड्डा है।

मैंने बहुत सर पाटा मगर कुछ काम न निकला, लाचार यह सोच कर घर की तरफ लौटा कि पहले लोगों को इस मामले की खबर करूं और इसके बाद आदमियों को साथ ला कर इस समाधि को खुदवा अपनी मां और बदमाशों का पता लगाऊं।

रात बहुत थोड़ी रह गई थी जब मैं घर पहुंचा। मैं चाहता था कि अपनी परेशानी का हाल नौकरों से कहूं मगर वहां तो मामला ही दूसरा था। वह बूढ़ी दाई जिसने मुझे गोद में खिलाया था और अब बहुत ही बूढ़ी और कमजोर हो रही थी इस समय दर्वाजे पर बैठी नौकरों पर खफा हो रही थी और कह रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी कि आधी रात के समय तुमने लड़के को अकेले क्यों जाने दिया ? तुम लोगों में से कोई आदमी उसके साथ क्यों न गया ? इतने ही में मुझे देख नौकरों ने कहा, "लो ननकू बाबू आ गये, खफा क्यों होती हो !"

मैंने पास जा कर कहा, "क्या है जो हल्ला मचा रही हो ?"

दाई० । है क्या, चुपचाप न जाने कहां चले गये, न किसी से कुछ कहा न सुना ! तुम्हारी मां बेचारी रो रो कर जान दे रही है ! ऐसा जाना किस काम का कि एक आदमी भी साथ न ले गए, जा के अपनी मां का हाल तो देखो।

मैं० । मां कहां हैं ?

दाई० । घर में और कहां हैं, तुम जाओ तो सही !

दाई की बात सुन कर मैं बड़ी हैरानी में पड़ गया । वहां उस चोर ऐयार की जुबानी जो कुछ सुना था उससे तो साफ मालूम हुआ था कि वह मेरी मां को गिरफ्तार करके ले गया है, मगर घर पहुंच कर सुनता हूं कि मां यहां मौजूद है ! खैर मैंने अपने दिल का हाल किसी से न कहा और चुपचाप मकान के अन्दर उस कमरे में पहुंचा जिसमें मेरी मां रहती थी । देखा कि वह चारपाई पर पड़ी रो रही है, उसका सिर फटा हुआ है और उसमें से खून बह रहा है, एक लौंडी हाथ में कपड़ा लिए खून पोंछ रही है । मैंने घबड़ा कर पूछा, "यह क्या हाल है ! सिर कैसे फट गया ?"

मां० । मैंने जब सुना कि तुम घर में नहीं हो तो तुम्हें ढूंढ़ने के लिए घबरा कर नीचे उतरी, अकस्मात् सीढ़ी पर गिर पड़ी । तुम कहां गये थे ?

मैं० । हां घर में से एक चोर को कुछ असबाब लेकर बाहर जाते देख मैं उसके पीछे पीछे चला गया था ।

मां० । (कुछ घबड़ा कर) क्या यहां से किसी चोर को बाहर जाते देखा था ?

मैं० । हां, कहा तो उसी के पीछे पीछे मैं गया था ।

मां० । तुम उसके पीछे पीछे कहां तक गए ? क्या उसका घर देख आए ?

मैं० । नहीं, थोड़ी दूर जाने के बाद गलियों में घूम फिर कर न मालूम वह कहां गायब हो गया, मैंने बहुत ढूंढ़ा मगर पता न लगा, आखिर लाचार होकर लौट आया । (लौंडी की तरफ देख कर) कुछ मालूम हुआ घर में से क्या चीज चोरी गई ?

लौंडी० । (ताज्जुब में आकर और चारो तरफ देख कर) यहां से तो कोई चीज चोरी नहीं गई ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जवाब सुन मैं चुपचाप नीचे उतर आया और घर में चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगा। जिस घर में खजाना रहता था उसमें भी ताला बन्द पाया और कई कीमती चीजें जो मामूली तौर पर मण्डेरियों और खुली आलमारियों में पड़ी रहा करती थीं ज्यों की त्यों मौजूद पाईं, लाचार मैं अपनी चारपाई पर आकर लेट रहा और तरह तरह की बातें सोचने लगा। उस समय रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी घर में घुस कर कह रही थी कि अब थोड़ी ही देर में सूर्य भगवान निकला चाहते हैं।

इस बात को कई महीने बीत गए। मैंने अपने दिल का हाल और वे बातें जो देखी सुनी थीं किसी से न कहीं, हां छिपे छिपे तहकीकात करता रहा कि असल मामला क्या है। चाल चलन बातचीत और मुहब्बत की तरफ ध्यान देने से मुझे निश्चय हो गया कि मेरी मां जो घर में है वह असल में मेरी मां नहीं है बल्कि कोई ऐयारा है। मैं छिपे छिपे अपनी मां की खोज करने लगा और इस विषय पर ध्यान देने लगा कि वह ऐयारा घर में मेरी मां बन कर क्यों रहती है और उसकी नीयत क्या है? इसके अलावे मैं अपनी जान की हिफाजत भी अच्छी तरह करने लगा। इस बीच में रामभोली ने मुझसे मुहब्बत ज्यादे बढ़ा दी। यद्यपि उसकी चाल चलन में भी मुझे कुछ फर्क मालूम होता था परन्तु मुहब्बत ने मुझे अन्धा बना रक्खा था और मैं पूरा उसका आशिक बन गया था।

एक पढ़ी लिखी बुद्धिमान नौजवान औरत ने जिम्मा लिया हुआ था कि यद्यपि रामभोली गूंगी और बहरी है परन्तु वह उसे इशारे ही में समझा बुझा कर पढ़ना लिखना सिखा देगी और वास्तव में उस औरत ने बड़ी चालाकी से रामभोली को पढ़ना लिखना सिखा दिया। उसी औरत के हाथ रामभोली की चीठी मेरे पास आती और मैं उसी के हाथ जवाब भेजा करता था। ऊपर लिखी वारदात के कुछ दिन बाद जो चीठियां रामभोली की मेरे पास आने लगीं उनके अक्षरों का ढंग और गढ़न कुछ निराले ही तौर का था परन्तु मैंने उस समय उस पर कुछ विशेष ध्यान न दिया।

अब ऊपर वाले मामले को छः महीने से ज्यादे गुजर गए। इस बीच में मेरा बाप कई दफे घर में आया और थोड़े थोड़े दिन रह कर चला गया। घर की बातों में सिर्फ इतना फर्क पड़ा कि मेरा बाप मेरी मां से मुहब्बत ज्यादे करने लगा मगर मेरी नकली मां तरह तरह की बेढब फरमाइशों से उसे तंग करने लगी। एक दिन जब मेरा बाप घर ही में था, आधी रात के समय मेरे बाप और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी मां में कुछ खटपट होने लगी। उस समय मैं जागता था। मेरे जी में आया कि किसी तरह इस झगड़े का सबब मालूम करना चाहिए। आखिर ऐसा ही किया, मैं चुपके से उठा और धीरे धीरे उस कमरे के पास गया जिसके अन्दर वे दोनों वाली कड़ी बातें कर रहे थे। उस कमरे में तीन दर्वाजे थे जिनमें से एक खुला हुआ मगर उसके आगे पर्दा गिरा हुआ था और दो दर्वाजे बन्द थे। मैं एक बन्द दर्वाजे के आगे जाकर (जो खुले दर्वाजे के ठीक दूसरी तरफ था) लेट रहा और उन दोनों की बातें सुनने लगा। जो कुछ मैंने सुना उसे ठीक ठीक बयान करता हूं—

मां०। जब तुम्हें मेरा विश्वास नहीं तो किस मुंह से कहते हो कि मैंने तेरे लिए यह किया और वह किया?

बाप०। बेशक मैंने तेरे लिए अपनी जान खतरे में डाली और जनम भर के लिए अपने नाम पर धब्बा लगाया और अब तू चाहती है कि मैं न मरने लायक रहूं और न जीते रह कर किसी को मुंह दिखा सकूं।

मां०। अपने मुंह से तुम जो चाहे कहो मगर मैं ऐसा नहीं चाहती जो तुम कहते हो। क्या मैं वह किताब खा जाऊंगी या किसी दूसरे को दे दूंगी? जाओ अपनी किताब ले जाओ और अपनी चहेती बेगम को नजर कर दो!

बाप०। मेरी वह जोरू जिसे तुम ताना देकर बेगम कहती हो तुम्हारे ऐसी जिद्दी नहीं। उसने मुझे राजा वीरेन्द्रसिंह के यहां चोरी करने के लिए नहीं कहा और न वह तिलिस्म का तमाशा ही देखा चाहती है।

मां०। उसको इतना दिमाग ही नहीं, कंगाल की लड़की का हौसला ही कितना!

बाप०। हां बेशक उसका इतना बड़ा हौसला नहीं कि मेरी जान की ग्राहक बन बैठे।

इसके बाद थोड़ी सी बातें बहुत ही धीरे धीरे हुईं जिन्हें मैं अच्छी तरह सुन न सका। अन्त में मेरा बाप इतना कह कर चुप हो रहा— "खैर फिर जो कुछ भाग्य में बदा है वह भोगूंगा। लो यह खूनी किताब तुम्हारे हवाले करता हूं, पांच रोज में लौट के आऊंगा तो तिलिस्म का तमाशा दिखा दूंगा और फिर यह किताब राजा वीरेन्द्रसिंह के यहां किसी ढंग से पहुंचा दूंगा।"

मैं यह सोच कर कि अब मेरा बाप बाहर निकलना ही चाहता है उठ खड़ा हुआ और चुपचाप नीचे उतर अपने कमरे में चला आया। मगर मेरे दिल की अजब हालत थी, मैं खूब जानता था कि वह मेरी मां नहीं है और अब तो मालूम हो गया कि उस कम्बख्त के फेर में पड़ कर मेरा बाप अपने ऊपर कोई आफत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

[चा]हता है, इस लिए यह सोचने लगा कि किसी तरह अपने बाप को इसके [फ]रेब से बचाना और अपनी असली मां का पता लगाना चाहिए ।

दो घन्टे बीत गए मगर मेरा बाप नीचे न उतरा । मेरी चिन्ता और भी बढ़ [ग]ई। मैं सोचने लगा कि शायद फिर कुछ खटपट होने लगी । आखिर मुझसे रहा [न ग]या, मैंने अपने कमरे से बाहर निकल के बाप को आवाज दी । आवाज सुनते [ही] वे मेरे पास चले आये और धीरे से बोले, "क्यों बेटा क्या है ?"

मैं० । आपसे एक बात कहा चाहता हूं मगर बहुत छिपा कर ।

बाप० । कहो, यहां तो कोई भी सुनने वाला नहीं है, ऐसा ही डर है तो [बाह]र चले चलो ।

मैं० । (धीरे से) नहीं, मैं उस दुष्टा के सामने कुछ भी कहा नहीं चाहता [जि]से आप मेरी मां समझते हैं ।

बाप० । (ताज्जुब में आकर) क्या वह तुम्हारी मां नहीं है !

मैं० । नहीं ।

बाप० । आज क्या है जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो ? क्या उसने तुम्हें कुछ [त]कलीफ दी है ?

मैं० । आप इस जगह मुझसे कुछ भी न पूछिये, निराले में जब मेरी बातें [सुन]येगा तो असल भेद मालूम हो जायगा !

इतना सुनते ही मेरे बाप ने घबड़ा कर मेरा हाथ पकड़ लिया और मकान [के] बाहर अपने खास बैठके में ले जाकर दर्वाजा बन्द करने के बाद पूछा, "कहो [क्या] बात है ?" मैंने वे कुल बातें जो देखी सुनी थीं और जो ऊपर बयान कर [चुका] हूं कह सुनाईं जिनके सुनते ही मेरे बाप की अजब हालत हो गई, चेहरे [पर] उदासी और तरद्दुद की निशानी मालूम होने लगी, थोड़ी देर तक चुप रहने [और] कुछ गौर करने के बाद बोले, "बेशक धोखा हो गया ! अब जो गौर करता [हूं तो] इस कम्बख्त की बातचीत और चाल चलन में बेशक बहुत कुछ फर्क पाता [हूं] मगर अफसोस तुमने इतने दिनों तक न मालूम क्या समझ कर यह बात [छिपा] रक्खी और अपनी मां की तरफ से भी गाफिल रहे ! न जाने वह बेचारी [जीती] भी है या इस दुनिया से ही उठ गई !"

मैं० । जरा सा गौर करने पर आप खुद समझ सकते हैं कि इस बात को इतने [दिनों] तक मैं क्यों छिपाये रहा । मां की तरफ से भी गाफिल न रहा, जहां तक हो [उनका] पता लगाने के लिए परेशान हुआ मगर अभी तक कोई अच्छा नतीजा न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकला। तथापि मुझे विश्वास है कि वह इस दुनिया में जीती जागती मौजूद है।

बाप०। तुम्हारा ख्याल ठीक है और इसका सबूत इससे बढ़ कर और क्या होगा कि एक ऐयारा उसकी सूरत बन कर अपना काम निकाला चाहती है और इस घर में अभी तक मौजूद है, जब तक इसका काम न निकलेगा बेशक उसकी जान बची रहेगी। मगर अफसोस, मैंने बड़ा धोखा खाया और अपने को किसी लायक न रक्खा। अच्छा यह कहो कि इस समय तुम्हें क्या सूझी जो यह सब कहने के लिए तैयार हो गए?

मैं०। खटका तो बहुत दिनों से लगा हुआ था मगर इस समय कुछ तकरार की आहट पाकर मैं ऊपर चढ़ गया और बड़ी देर तक छिप कर आप लोगों की बातें सुनता रहा, ज्यादे तो समझ में न आया मगर इतना मालूम हो गया कि आप उसकी खातिर से राजा बीरेन्द्रसिंह के यहां से कोई किताब चुरा लाये हैं और अब कोई काम ऐसा किया चाहते हैं जो आपके लिए बहुत बुरा नतीजा पैदा करेगा, अस्तु ऐसे समय में चुप रहना मैंने उचित न जाना। अब आप कृपा कर यह कहिए कि वह किताब जो आप चुरा लाये हैं कैसी है?

बाप०। इस समय खुलासा हाल कहने का मौका तो नहीं है परन्तु संक्षेप में कुछ हाल कह तुम्हें होशियार कर देना भी बहुत जरूरी है क्योंकि अब मेरी जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं, हां अगर यह औरत तुम्हारी मां होती तो कोई हर्ज न था। वह एक प्राचीन समय की किसी के खून से लिखी हुई किताब है जो राजा बीरेन्द्रसिंह को विक्रमा तिलिस्म से मिली थी। उस तिलिस्म में स्याह पत्थर के दालान में एक सिंहासन के ऊपर छोटा सा पत्थर का सन्दूक था जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था।

मैं०। हां, यह किस्सा आप पहिले भी मुझसे कह चुके हैं बल्कि आपने यह भी कहा था कि सिंहासन के ऊपर जो पत्थर था और जिसके छूने से आदमी बेहोश हो जाता था वास्तव में वह एक सन्दूक था और उसके अन्दर से कोई नायाब चीज राजा बीरेन्द्रसिंह को मिली थी।

बाप०। ठीक है ठीक है, इस समय मेरी अक्ल ठिकाने नहीं इसी से बहुत सी बातें भूल रहा हूं, हां तो उसी पत्थर के टुकड़े में से जिसे छोटा सन्दूक कहना चाहिए यह किताब और हीरे का एक सरपेंच निकला था।

मैं०। उस किताब में क्या बात लिखी है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाप०। उस किताब में उस तिलिस्म के भेद लिखे हुए हैं जो राजा बीरेन्द्र

सिंह के हाथ से न टूट सका और जिसके विषय में मशहूर है कि राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़के उस तिलिस्म को तोड़ेंगे।

मैं०। यदि उस पुस्तक में उस भारी तिलिस्म के भेद लिखे हुए थे तो राजा बीरेन्द्रसिंह ने उस तिलिस्म को क्यों छोड़ दिया ?

बाप०। केवल उस किताब की सहायता से यह तिलिस्म टूट नहीं सकता, हां जिसके पास वह पुस्तक हो उसे तिलिस्म का कुछ हाल जरूर मालूम हो सकता है और यदि वह चाहे तो तिलिस्म में जाकर वहां की सैर भी कर सकता है। इस कम्बख्त औरत ने यही कहा कि मुझे तिलिस्म की सैर करा दो। उसी जिद्द ने मुझसे यह अपराध कराया, लाचार मैंने वह किताब चुराई। मैंने सोच लिया था कि इसकी इच्छा पूरी करने बाद मैं वह पुस्तक जहां की तहां रख आऊंगा, मगर जब यह औरत कोई दूसरी ही है तो बेशक मुझे धोखा दिया गया तथा इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि यह औरत उस तिलिस्म से कोई सम्बन्ध रखती है और यदि ऐसा है तो अब उस पुस्तक का मिलना मुश्किल है। अफसोस, जब मैं किताब चुरा कर राजा बीरेन्द्रसिंह के शीशमहल से बाहर निकल रहा था तो उनके एक ऐयार नें मुझे देख लिया था। मैं मुश्किल से निकल भागा और यह सोचे हुए था कि यदि मैं यह पुस्तक फिर वहीं रख आऊंगा तो फिर मेरी खोज न होगी, मगर हाय, यहां तो कोई दूसरा ही रंग निकला।

मैं०। आपने उस पुस्तक को पढ़ा भी था ?

बाप०। (आंखों में आंसू भर कर) उसका पहला पृष्ठ देख सका था जिसमें इतना ही लिखा था कि जिसके कब्जे में यह पुस्तक रहेगी उसे तिलिस्मी आदमियों के हाथ से दुःख नहीं पहुंच सकता। जो हो परन्तु अब इन सब बातों का समय नहीं है, यदि हो सके तो उस औरत के हाथ से किताब ले लेना चाहिये, उठो और मेरे साथ चलो।

इतना कह कर मेरा बाप उठा और मकान के अन्दर चला, मैं भी उसके पीछे पीछे था। अन्दर से मकान का दर्वाजा बन्द कर लिया गया, मगर जब मेरा बाप ऊपर के कमरे में जाने लगा जहां मेरी मां रहा करती थी तो मुझे सीढ़ी के नीचे खड़ा कर गया और कहता गया कि देखो जब मैं पुकारूं तो तुरत चले आना।

घण्टे भर तक मैं खड़ा रहा। इसके बाद छत पर धमधमाहट मालूम होने लगी मानों कई आदमी आपस में लड़ रहे हैं। अब मुझसे रहा न गया, हाथ में खंजर लेकर मैं ऊपर चढ़ गया और बेधड़क उस कमरे में घुस गया जिसमें मेरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाप था। इस समय घमघमाहट की आवाज बन्द हो गई थी और कमरे के अन्दर सन्नाटा था। भीतर की अवस्था देख कर मैं घबड़ा गया। वह औरत जो मेरी मां बनी हुई थी वहां न थी। मेरा बाप जमीन पर पड़ा हुआ था, और उसके बदन से खून बह रहा था। मैं घबड़ा कर उसके पास गया और देखा कि वह बेहोश पड़ा है और उसके सर और बाएं हाथ में तलवार की गहरी चोट लगी हुई जिसमें से अभी तक खून निकल रहा है। मैंने अपनी धोती फाड़ी और पानी से जख्म धोकर बांधने के बाद बाप को होश में लाने की फिक्र करने लगा। थोड़ी देर बाद वह होश में आया और उठ बैठा।

मैं०। मुझे ताज्जुब है कि एक औरत के हाथ से आप चोट खा गए!

बाप०। केवल औरत ही न थी, यहां आने पर मैंने कई आदमी देखे जिनके सबब से यहां तक नौबत आ पहुंची। अफसोस, वह किताब हाथ न लगी और मेरी जिन्दगी मुफ्त में बर्बाद हुई!

मैं०। ताज्जुब है कि इस मकान में लोग किस राह से आकर अपना काम कर जाते हैं, पहिले भी कई दफे यह बात देखने में आई!

बाप०। खैर जो हुआ सो हुआ, अब मैं जाता हूं गुमनाम रह कर अपने किए का फल भोगूंगा, यदि वह किताब हाथ लग गई और अपने माथे से बदनामी का टीका मिटा सका तो फिर तुमसे मिलूंगा नहीं तो हरि-इच्छा। तुम इस मकान को मत छोड़ना और जो कुछ देख सुन चुके हो उसका पता लगाना। तुम्हारे घर में जो कुछ दौलत है उसे हिफाजत से रखना और होशियारी से रह कर गुजारा करना तथा बन पड़े तो अपनी मां का भी पता लगाना।

बाप की बातें सुन कर मेरी अजब हालत हो गई, दिल धड़कने लगा, जी भर आया, आंसुओं ने आंखों के आगे पर्दा डाल दिया। मैं बहुत कुछ कहा चाहता था मगर कह न सका। मेरे बाप ने देखते देखते मकान के बाहर निकल कर न मालूम किधर का रास्ता लिया। उस समय मेरे हिसाब से दुनिया उजड़ गई और मैं बिना मां बाप के मुर्दे से भी बदतर हो रहा था। मेरे घर में जो कुछ हुआ था उसका कुछ हाल नौकरों और लौंडियों को मालूम हो चुका था, मगर मेरे समझाने से उन लोगों ने छिपा लिया और बड़ी कठिनाई से मैं उस मकान में रह कर बीती हुई बातों का पता लगाने लगा।

प्रतिदिन आधी रात के समय मैं ऐयारी के सामान से दुरुस्त होकर उस समाधि के पास जाया करता जहां पहिले दिन उस आदमी के पीछे पीछे गया था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो मेरी मां को चुरा कर ले गया था। अब यहां से मैं अपने किस्से को बहुत ही संक्षेप में कहा चाहता हूं क्योंकि समय बहुत कम है।'

एक दिन आधी रात के समय उसी समाधि के पास एक इमली के पेड़ पर चढ़ कर मैं बैठा हुआ था और अपनी बदकिस्मती पर रो रहा था कि इतने में उस समाधि के अन्दर से एक आदमी निकला और पूरब की तरफ रवाना हुआ। मैं झट-पट पेड़ से उतरा और पैर दबाता हुआ उसके पीछे पीछे जाने लगा इसलिए उसे मेरे आने की आहट कुछ भी मालूम न हुई। उस आदमी के हाथ में एक लिफाफा कपड़े का था। उस लिफाफे की सूरत ठीक उस खलीते की तरह थी जैसा प्रायः राजे और बड़े जमींदार लोग राजों महाराजों के यहां चीठी भेजते समय लिफाफे की जगह काम में लाते हैं। यकायक मेरे जी में आया कि किसी तरह यह लिफाफा इसके हाथ से ले लेना चाहिये, इससे मेरा मतलब कुछ न कुछ जरूर निकलेगा।

वह लिफाफा अंधेरी रात के सबब मुझे दिखाई न देता मगर राह चलते चलते वह एक ऐसी दूकान के पास से होकर निकला जो बांस की जफरीदार टट्टी से बन्द थी मगर भीतर जलते हुए चिराग की रोशनी बाहर सड़क पर आने जाने वाले के ऊपर बखूबी पड़ती थी। उसी रोशनी ने मुझे दिखा दिया कि इसके हाथ में एक लिफाफा या खलीता मौजूद है। मैंने उसके हाथ से किसी तरह लिफाफा ले लेने के बारे में अपनी राय पक्की कर ली और कदम बढ़ा कर उसके पास जा पहुंचा। मैंने उसे धोखे में इस जोर से धक्का दिया कि वह किसी तरह सम्हाल न सका और मुंह के बल जमीन पर गिर पड़ा। लिफाफा उसके हाथ से छटक कर दूर जा रहा जिसे मैंने फुर्ती से उठा लिया और वहां से भागा। जहां तक हो सका मैंने भागने में तेजी की, मुझे मालूम हुआ कि वह आदमी भी उठ कर मुझे पकड़ने के लिए दौड़ा पर मुझे पा न सका। गलियों में घूमता और दौड़ता हुआ मैं अपने घर पहुंचा और दर्वाजे पर खड़ा होकर दम लेने लगा। उस समय मेरे दर्वाजे पर रामधनीसिंह नामा मेरा एक सिपाही पहरा दे रहा था। यह सिपाही नाटे कद का बहुत मजबूत और चालाक था, थोड़े ही दिनों से चौकीदारी के काम पर मेरे बाप ने इसे नौकर रक्खा था।

मुझे उम्मीद थी कि रामधनीसिंह दौड़ते हुए आने का कारण मुझसे पूछेगा मगर उसने कुछ भी न पूछा। दर्वाज़ा खुलवा कर मैं मकान के अन्दर गया और दरवाजा बन्द करके अपने कमरे में पहुंचा। शमादान अभी तक जल रहा था। उस लिफाफे को खोलने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा था, आखिर शमादान के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास जाकर लिफाफा खोला। उस लिफाफे में एक चीठी और लोहे की एक ताली थी। वह ताली विचित्र ढंग की थी, उसमें छोटे छोटे कई छेद और पत्तियां बनी हुई थीं, वह ताली जेब में रख लेने के बाद मैं चीठी पढ़ने लगा, यह लिखा हुआ था:

"श्री १०८ मनोरमाजी की सेवा में—

महीनों की मेहनत आज सुफल हुई। जिस काम पर आपने मुझे तैनात किया था वह ईश्वर की कृपा से पूरा हुआ। रिक्तगन्थ मेरे हाथ लगा। आपने लिखा था कि—'हारीत* सप्ताह में मैं रोहतासगढ़ के तिलिस्मी तहखाने में रहूंगी, इस बीच में यदि रिक्तगन्थ (खून से लिखी हुई किताब) मिल जाय तो उसी तहखाने के बलिमण्डप में मुझसे मिल कर मुझे देना'। आज्ञानुसार रोहतासगढ़ के तहखाने में गया परन्तु आप न मिलीं। रिक्तगन्थ लेकर लौटने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि तेजसिंह की गुप्त अमलदारी तहखाने में हो चुकी थी और उनके साथी ऐयार लोग चारो तरफ ऊधम मचा रहे थे। मैंने यह सोच कर कि यहां से निकलते समय शायद किसी ऐयार के पाले पड़ जाऊं और यह रिक्तगन्थ छिन जाय तो मुश्किल होगी, रिक्तगन्थ को चौबीस नम्बर की कोठरी में जिसकी ताली आपने मुझे दे रक्खी थी रख दिया और खाली हाथ बाहर निकल आया। ईश्वर की कृपा से किसी ऐयार से मुलाकात न हुई परन्तु दस्त की बीमारी ने मुझे बेकार कर दिया, मैं आपके पास आने लायक न रहा, लाचार अपने एक दोस्त के हाथ जिससे अचानक मुलाकात हो गई यह ताली आपके पास भेजता हूं। मुझे उम्मीद है कि वह आदमी चौबीस नम्बर की कोठरी को कदापि नहीं खोल सकता जिसके पास यह ताली न हो, अस्तु अब आपको जब समय मिले रिक्तगन्थ मंगवा लीजिएगा और बाकी हाल पत्र ले जाने वाले के मुंह से सुनिएगा। मुझमें अब कुछ लिखने की ताकत नहीं, बस अब साधोराम को इस दुनिया में रहने की आशा नहीं, अब साधोराम आपके चरणों को नहीं देख सकता। यदि आराम हुआ तो पटने से होता हुआ सेवा में उपस्थित होऊंगा, यदि ऐसा न हुआ तो समझ लीजिएगा कि साधोराम नहीं रहा। इस पत्र को पाते ही नानक की मां को निपटा दीजिएगा।"

आपका—साधोराम।

इस चिट्ठी के पाते ही मेरे दिल की मुरझाई कली खिल गई। निश्चय हो गया कि मेरी मां अभी जीती है, यदि यह चीठी ठिकाने पहुंच जाती तो उस

* ऐयारी भाषा में 'हारीत' देवीपूजा को कहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारी का बचना मुश्किल था। अब मैं यह सोचने लगा कि जिसके हाथ से यह चीठी मैंने ली है वह साधोराम था या उसका कोई मित्र? परन्तु मेरी विचारशक्ति ने तुरत ही उत्तर दिया कि नहीं वह साधोराम नहीं था, यदि वह होता तो अपने लिखे अनुसार उस सड़क से आता जो पटने की तरफ से आती है। साधोराम के मरने का दूसरा सबूत यह भी है कि यह चीठी और ताली काले खलीते (कपड़े के लिफाफे) के अन्दर है।

चीठी के ऊपर मनोरमा का नाम लिखा था, इससे निश्चय हो गया कि यह बिल्कुल बखेड़ा मनोरमा ही का मचाया हुआ है। मैं मनोरमा को अच्छी तरह जानता था। त्रिलोचनेश्वर महादेव के पास उसका आलीशान मकान देखने से यही मालूम होता था कि वह किसी राजा की लड़की होगी मगर ऐसा नहीं था, हां उसका खर्च हद से ज्यादे बढ़ा हुआ था और आमदनी का ठिकाना कुछ मालूम नहीं होता था। दूसरी बात यह कि वह प्रचलित रीति पर ध्यान न देकर बेपर्दे खुले आम पालकी तामझाम और कभी कभी घोड़े पर सवार हो कर बड़े ठाठ से घूमा करती और इसीलिए काशी के छोटे बड़े सभी मनुष्य उसे पहिचानते थे। उस चीठी के पढ़ने से मुझे विश्वास हो गया कि मनोरमा जरूर तिलिस्म से कुछ सम्बन्ध रखती है और मेरी मां उसी के कब्जे में है।

इस सोच में कि किस तरह अपनी मां को छुड़ाना और रिक्तगन्थ पर कब्जा करना चाहिए कई दिन गुजर गये और इस बीच में उस ताली को मैं अपने मकान के बाहर किसी दूसरे ठिकाने हिफाजत से रख आया।

यहां तक अपना हाल कह कर नानक चुप हो रहा और झुक कर बाहर की तरफ देखने लगा।

तेज०। हां हां, कहो फिर क्या हुआ! तुम्हारा हाल बड़ा ही दिलचस्प है, बिल्कुल बातें हमारे ही सम्बन्ध की हैं।

नानक०। ठीक है, परन्तु अफसोस, इस समय मैं जो कुछ आप से कह रहा हूं उससे मेरे बाप का कसूर और........

तेज०। मैं समझ गया जो कुछ तुम कहा चाहते हो, मगर मैं सच्चे दिल से कहता हूं कि यद्यपि तुम्हारे बाप ने भारी जुर्म किया है और उसके विषय में हमारे तरफ से विज्ञापन दिया गया है कि जो कोई रिक्तगन्थ के चोर को गिरफ्तार करेगा उसे मुंहमांगा इनाम दिया जायगा तथापि तुम्हारे इस किस्से को सुन कर जिसे तुम सचाई के साथ कह रहे हो मैं वादा करता हूं कि उसका कसूर माफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दिया जायगा और तुम जो कुछ नेकी हमारे साथ किया चाहते हो या करो उसके लिए धन्यवाद के साथ पूरा पूरा इनाम दिया जायगा। मैं समझता हूं तुम्हें अपना किस्सा अभी बहुत कुछ कहना है और इसमें भी कोई सन्देह नहीं जो कुछ तुम कहोगे मेरे मतलब की बात होगी परन्तु इस बात का जवाब मैं सबसे पहिले सुना चाहता हूं कि वह रिक्तगन्थ तुम्हारे कब्जे में है या नहीं ? अथवा हम लोग उसके पाने की आशा कर सकते हैं या नहीं ?

इसके पहिले कि तेजसिंह की आखिरी बात का कुछ जवाब नानक दे, बाहर से यह आवाज आई—"यद्यपि रिक्तगन्थ नानक के कब्जे में अब नहीं है तथापि तुम उसे उस अवस्था में पा सकते हो जब अपने को उसके पाने योग्य साबित करो !" इसके बाद खिलखिला कर हंसने की आवाज आई ।

इस आवाज ने दोनों ही को परेशान कर दिया, दोनों ही को दुश्मन का खयाल हुआ । नानक ने सोचा कि शायद मायारानी का कोई ऐयार आ गया और उसने छिप कर मेरा किस्सा सुन लिया, अब यहां से निकलना या जान बचा कर भागना बहुत मुश्किल है, तेजसिंह को भी यह निश्चय हो गया कि नानक दुश्मन जो कुछ भलाई की आशा हुई थी अब निराशा के साथ बदल गई ।

दोनों ऐयार उसे ढूंढ़ने के लिए उठे जिसकी आवाज ने यकायक उन दोनों को चौंका और होशियार कर दिया था । दो कदम भी आगे न बढ़े थे कि फिर आवाज आई, "क्यों कष्ट करते हो, मैं स्वयं तुम्हारे पास आता हूं ।" साथ ही इसके एक आदमी इन दोनों की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा । जब वह पास पहुंचा तो बोला, "ऐ तेजसिंह और नानक, तुम दोनों मुझे अच्छी तरह देख कर पहिचान लो, मैं तुमसे कई दफे मिलूंगा, देखो भूलना मत ।"

तेजसिंह और नानक ने उस आदमी को अच्छी तरह देखा । उसका कद नाटा और रंग सांवला था । घनी और स्याह दाढ़ी और मूछों ने उसका आधा चेहरा छिपा रक्खा था । उसकी आंखें बड़ी बड़ी मगर बहुत ही सुर्ख और चमकीली हाथ पैर से मजबूत और फुर्तीला जान पड़ता था । माथे पर सफेद चार अंगुल जगह घेरे हुए रामानन्दी तिलक था जिस पर देखने वाले की निगाह सब से पहिले पड़ सकती थी, परन्तु ऐसी अवस्था होने पर भी उसका चेहरा नमकीन और खूबसूरत था तथा देखने वाले का दिल उसकी तरफ खिच जाना कोई ताज्जुब न था । उसकी पोशाक बेशकीमत और चस्त मगर कुछ भद्दी थी । स्याह पायजामा, घुटन्ना अंगा जिसमें बड़े बड़े कई जेब किसी चीज से भरे हुए थे, और सब्ज रंग के मुंडासे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरफ ध्यान देने से हंसी आती थी, एक खंजर बगल में और दूसरा हाथ में लिए हुए था।

तेजसिंह ने बड़े गौर से उसे देखा और पूछा, "क्या तुम अपना नाम बता सकते हो ?" जिसके जवाब में उसने कहा, "नहीं मगर चण्डूल के नाम से आप मुझे बुला सकते हैं।"

तेज० । जहां तक मैं समझता हूं आप इस नाम के योग्य नहीं हैं।

चण्डूल० । चाहे न हों।

तेज० । खैर यह भी कह सकते हो कि तुम्हारा आना यहां क्यों हुआ ?

चण्डूल० । इसलिए कि तुम दोनों को होशियार कर दूं कि कल शाम के वक्त आठ आदमियों के खून से इस बाग की क्यारियां रंगी जायगी जो फंस कर यहां आ चुके हैं।

तेज० । क्या उनके नाम भी बता सकते हो ?

चण्डूल० । हां सुनो—राजा बीरेन्द्रसिंह एक, रानी चन्द्रकान्ता दो, इन्द्रजीत-सिंह तीन, आनन्दसिंह चार, किशोरी पांच, कामिनी छ:, तेजसिंह सात, नानक आठ।

तेजसिंह० । (घबड़ा कर) यह तो मैं जानता हूं कि दोनों कुमार और उनके ऐयार मायारानी के फंदे में फंस कर यहां आ चुके हैं मगर राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता तो........

चण्डूल० । हां हां वे दोनों भी फंस कर यहां आ चुके हैं, पूछो नानक से !

नानक० । (तेजसिंह की तरफ देख कर) हां ठीक है, अपना किस्सा कहने के बाद राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल मैं आपसे कहने ही वाला था, मगर मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम नहीं है कि वे लोग क्योंकर मायारानी के फन्दे में फंसे !

चण्डूल० । (नानक से) अब विशेष बातों का मौका नहीं है, तेजसिंह से जो कुछ करते बनेगा कर लेंगे, मैं इस समय तुम्हारे लिए आया हूं, आओ और मेरे साथ चलो।

नानक० । मैं तुम पर विश्वास करके तुम्हारे साथ क्योंकर चल सकता हूं ?

चण्डूल० । (कड़ी निगाह से नानक की तरफ देख के और हुकूमत के साथ) लुच्चा कहीं का ! अच्छा सुन, एक बात मैं तेरे कान में कहा चाहता हूं।

इतना कह कर चण्डूल चार पांच कदम पीछे हट गया। उसकी डपट और बात ने नानक के दिल पर कुछ ऐसा असर किया कि वह अपने को उसके पास जाने से रोक न सका। नानक चण्डूल के पास गया मगर अपने को हर तरह सम्हाले और अपना दाहिना हाथ खंजर के कब्जे पर रक्खे हुए था। चण्डूल ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झुक कर नानक के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही नानक दो कदम पीछे हट गया और बड़े गौर से उसकी सूरत देखने लगा। थोड़ी देर तक यही अवस्था रही, इसके बाद नानक ने तेजसिंह की तरफ देखा और कहा, "माफ़ कीजिएगा लाचार होकर मुझे इनके साथ जाना ही पड़ा, अब मैं बिलकुल इनके कब्जे में हूं यहां तक कि मेरी जान भी इनके हाथ में है।" इसके बाद नानक ने कुछ न कहा। वह चण्डूल के साथ चला गया और पेड़ों की आड़ में घूम फिर कर देखते देखते नजरों से गायब हो गया।

अब तेजसिंह फिर अकेले पड़ गए। तरह तरह के खयालों ने चारो तरफ से आकर उन्हें घेर लिया। नानक की जुबानी जो कुछ उन्होंने सुना था उससे बहुत सी भेद की बातें मालूम हुई थीं और अभी बहुत कुछ मालूम होने को आशा थी परन्तु नानक अपना किस्सा पूरा कहने भी न पाया था कि इस चण्डूल ने आ कर दूसरा ही रंग मचा दिया जिससे तरद्दुद और घबराहट सौ गुनी ज्यादा बढ़ गई। बिछावन पर पड़े पड़े वे तरह तरह की बातें सोचने लगे।

"नानक की बातों से विश्वास होता है कि उसने अपना हाल जो कुछ कहा सही सही कहा, मगर उसके किस्से में कोई ऐसा पात्र नहीं आया जिसके बारे में चण्डूल होने का अनुमान किया जाय। फिर यह चण्डूल कौन है जिसकी थोड़ी सी बात से जो उसने झुक कर नानक के कान में कही नानक घबड़ा गया और उसके साथ जाने पर मजबूर हो गया! हाय यह कैसी भयानक खबर सुनने में आई कि अब शीघ्र ही राजा बीरेन्द्रसिंह रानी चन्द्रकान्ता तथा दोनों कुमार और ऐयार लोग इस बाग में मारे जायंगे। बेचारे राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता के बारे में भी अब ऐसी बातें! ....ओफ न मालूम अब ईश्वर क्या किया चाहता है! मगर हिम्मत न हारनी चाहिए, आदमी की हिम्मत और बुद्धि की जांच ऐसी ही अवस्था में होती है। ऐयारी का बटुआ और खंजर अभी मेरे पास मौजूद है, कोई न कोई उद्योग करना चाहिए, और वह भी जहां तक हो सके शीघ्रता के साथ।"

इन्हीं सब विचारों और गम्भीर चिन्ताओं में तेजसिंह डूबे हुए थे और सोच रहे थे कि अब क्या करना उचित है कि इतने ही में सामने से आती हुई मायारानी दिखाई पड़ी। इस समय वह असली बिहारीसिंह (जिसकी सूरत तेजसिंह ने बदल दी थी और अभी तक वह जिसकी सूरत में थे) और हरनामसिंह तथा और भी कई ऐयारों और लौंडियों से घिरी हुई थी। इस समय सवेरा अच्छी तरह हो चुका था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सूर्य की लालिमा ऊंचे ऊंचे पेड़ों की डालियों पर फैल चुकी थी।

मायारानी तेजसिंह के पास आई और असली बिहारीसिंह ने आगे बढ़ कर बिहारीसिंह से कहा, "धर्मावतार बिहारीसिंहजी, मिजाज दुरुस्त है या अभी तक आप पागल ही हैं ?"

तेज०। अब मुझे बिहारीसिंह कह कर पुकारने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आप जान ही गए हैं कि यह पागल असल में राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार है और अब आपको यह जान कर हद्द दर्जे की खुशी होगी कि यह पागल बिहारीसिंह वास्तव में ऐयारों के गुरुघंटाल तेजसिंह हैं जिनकी बढ़ीहुई हिम्मतों का मुकाबला करने वाला इस दुनिया में कोई नहीं है और जो इस कैद की अवस्था में भी अपनी हिम्मत और बहादुरी का दावा करके कुछ कर गुजरने की नीयत रखता है।

बिहारी०। ठीक है, मगर अब आप ऐयारों के गुरुघंटाल की पदवी नहीं रख सकते, क्योंकि आपकी अनमोल ऐयारी यहां मिट्टी में मिल गई और अब शीघ्र ही हथकड़ी बेड़ी भी आपके नजर की जायगी।

तेज०। अगर तुम मेरी ऐयारी चौपट कर चुके थे तो ऐयारी का बटुआ और खंजर भी ले लिए होते। यह गुरुघंटाल ही का काम था कि पागल होने पर भी ऐयारी का बटुआ और खंजर किसी के हाथ में जाने न दिया। बाकी रही बेड़ी सो मेरा चरण कोई छू नहीं सकता जब तक हाथ में खंजर मौजूद है! (हाथ में खंजर लेकर और दिखा कर) वह कौन सा हाथ है जो हथकड़ी लेकर इसके सामने आने की हिम्मत रखता है।

बिहारी०। मालूम होता है कि इस समय तुम्हारी आंखें केवल मुझी को देख रही हैं उन लोगों को नहीं देखतीं जो मेरे साथ हैं अतएव सिद्ध हो गया कि तुम पागल होने के साथ साथ अन्धे भी हो गए, नहीं तो....

बिहारीसिंह की बात पूरी न हुई थी कि बगल की एक कोठरी का दर्वाजा खुला और वही चण्डूल फुर्ती के साथ निकल कर सभों के बीच में आ खड़ा हुआ जिसे देखते ही मायारानी और उसके साथियों की हैरानी का कोई ठिकाना न रहा। केवल इतना ही नहीं बल्कि यह भी मालूम हुआ कि उस कोठरी में और भी कई आदमी हैं जिसके अन्दर से चण्डूल निकला था क्योंकि उस कोठरी का दर्वाजा चण्डूल ने खुला ही छोड़ दिया था और उसके अन्दर के आदमी कुछ कुछ दिखाई पड़ रहे थे।

चण्डूल०। (मायारानी और उसके साथियों की तरफ देख कर) यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि मैं कौन हूं, हां अपने आने का सबब जरूर कहूंगा। मुझे एक लौंडी और एक गुलाम की जरूरत है, कहो तुम लोगों में से किसे चुनूं ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(मायारानी की तरफ इशारा करके) मैं समझता हूं कि इसी को अपनी लौंडी बनाऊं, और (विहारीसिंह की तरफ इशारा करके), इसे गुलाम की पदवी दूं।

बिहारी०। तू कौन है जो इस बेअदबी के साथ बातें कर रहा है ? (माया-रानी की तरफ इशारा करके) तू जानता नहीं कि ये कौन हैं ?

चण्डूल०। (हंस कर) मेरी शान में चाहे कोई कैसी ही कड़ी बात कहे मगर मुझे क्रोध नहीं आता क्योंकि मैं जानता हूं कि सिवा ईश्वर के कोई दूसरा मुझसे बड़ा नहीं है, और मेरे सामने खड़ा होकर जो बातें कर रहा है वह तो गुलाम के बराबर भी हैसियत नहीं रखता ! मैं क्या जानूं कि (मायारानी की तरफ इशारा कर के) यह कौन है ? हां यदि मेरा हाल जानना चाहते हो तो मेरे पास आओ और कान में सुनो कि मैं क्या कहता हूं।

विहारी०। हम ऐसे वेवकूफ नहीं हैं कि तुम्हारे चकमे में आ जायं।

चण्डूल०। क्या तू समझता है कि मैं उस समय तुझ पर वार करूंगा जब तू कान झुकाए हुए मेरे पास आ कर खड़ा होगा ?

बिहारी०। बेशक ऐसा ही है।

चण्डूल०। नहीं नहीं, यह काम हमारे ऐसे बहादुरों का नहीं है, अगर डरता है तो किनारे चल, मैं दूर ही से जो कुछ कहना है कह दूं जिसमें कोई दूसरा न सुने।

बिहारी०। (कुछ सोच कर) ओफ, मैं तुझ ऐसे कमजोर से डरने वाला नहीं, कह क्या कहता है।

यह कह कर विहारीसिंह उसके पास गया और झुक कर सुनने लगा कि वह क्या कहता है।

न मालूम चण्डूल ने विहारीसिंह के कान में क्या कहा, न मालूम उन शब्दों में कितना असर था, न मालूम वह बात कैसे कैसे भेदों से भरी हुई थी जिसने बिहारीसिंह को अपने आपे से बाहर कर दिया। वह घबड़ा कर चण्डूल को देखने लगा, उसके चेहरे का रंग जर्द हो गया और बदन में थरथराहट पैदा हो गई।

चण्डूल०। क्यों, अगर अच्छी तरह न सुन सका हो तो जोर से पुकार के कहूं जिसमें और लोग भी सुन लें।

बिहारी०। (हाथ जोड़ कर) बस बस, क्षमा कीजिए, मैं आशा करता हूं कि आप अब दोहरा कर उन शब्दों को मुख से न निकालेंगे, मुझे यह जानने की भी आवश्यकता नहीं कि आप कौन हैं, चाहे जो भी हों।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया० । (बिहारी से) उसने तुम्हारे कान में क्या कहा जिससे तुम घबड़ा गए ?

बिहारी० । (हाथ जोड़ कर) माफ कीजिए, मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कह सकता ।

माया० । (कड़ी आवाज में) क्या मैं वह बात सुनने योग्य नहीं हूं ?

बिहारी० । कह तो चुका कि उन शब्दों को अपने मुंह से नहीं निकाल सकता ।

माया० । (आंखें लाल करके) क्या तुझे अपनी ऐयारी पर घमंड हो गया ? या तू अपने को भूल गया या इस बात को भूल गया कि मैं क्या कर सकती हूं और मुझमें कितनी ताकत है ?

बिहारी० । मैं आपको और अपने को खूब जानता हूं, मगर इस विषय में कुछ नहीं कह सकता । आप व्यर्थ खफा होती हैं, इसमें कोई काम न निकलेगा ।

माया० । मालूम हो गया कि तू भी असली बिहारीसिंह नहीं है । खैर क्या हर्ज है, समझ लूंगी ! (चण्डूल की तरफ देख के) क्या तू भी दूसरे को वह बात नहीं कह सकता ?

चण्डूल० । जो कोई मेरे पास आवेगा उसके कान में मैं कुछ कहूंगा मगर इसका वादा नहीं कर सकता कि वही बात कहूंगा या हर एक को नई नई बात का मजा चखाऊंगा ।

माया० । क्या यह भी नहीं कह सकता कि तू कौन है और इस बाग में किस राह से आया है ?

चण्डूल० । मेरा नाम चण्डूल है, आने के विषय में तो केवल इतना ही कह देना काफी है कि मैं सर्वव्यापी हूं, जहां चाहूं पहुंच सकता हूं, हां कोई नई बात सुना चाहती हो तो मेरे पास आओ और सुनो ।

हरनाम० । (मायारानी से) पहिले मुझे उसके पास जाने दीजिए, (चण्डूल के पास जाकर) अच्छा लो कहो क्या कहते हो ?

चण्डूल ने हरनामसिंह के कान में भी कोई बात कही । उस समय हरनामसिंह चण्डूल की तरफ कान झुकाए जमीन को देख रहा था । चण्डूल कान में कुछ कह के दो कदम पीछे हट गया मगर हरनामसिंह ज्यों का त्यों झुका हुआ खड़ा ही रह गया । यदि उस समय उसे कोई नया आदमी देखता तो यही समझता कि यह पत्थर का पुतला है । मायारानी को बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कई सायत बीत जाने पर भी जब हरनामसिंह वहां से न हिला तो उसने पुकारा, "हरनाम !" उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय वह चौंका और चारो तरफ देखने लगा. जब चण्डूल पर निगाह पड़ी तो अपने मुंह फेर लिया और बिहारीसिंह के पास जा सिर पर हाथ रख कर बैठ गया।

माया०। हरनाम, क्या तू भी बिहारी का साथी हो गया ? वह बात मुझसे न कहेगा जो अभी तूने सुनी है ?

हरनाम०। मैं इसी वास्ते यहां आ बैठा हूं कि आखिर तुम रंज होकर मेरा सिर काट लेने का हुक्म दोगी ही क्योंकि तुम्हारा मिजाज बड़ा क्रोधी है मगर लाचार हूं, मैं वह बात कदापि नहीं कह सकता !

माया०। मालूम होता है कि यह आदमी कोई जादूगर है, अस्तु मैं हुक्म देती हूं कि यह फौरन गिरफ्तार किया जाय !

चण्डूल०। गिरफ्तार होने के लिए तो मैं आया ही हूं, कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता है ? लीजिए स्वयं मैं आपके पास आता हूं, हथकड़ी बेड़ी कहां है लाइए !

इतना कह कर चण्डूल तेजी के साथ मायारानी के पास गया और जब तक वह अपने को सम्हाले झुक कर उसके कान में न मालूम क्या कह दिया कि उसकी अवस्था बिल्कुल ही बदल गई। बिहारीसिंह और हरनामसिंह तो बात सुनने के बाद इस लायक भी रहे थे कि किसी की बात सुनें और उसका जवाब दें मगर मायारानी इस लायक भी न रही। उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गई तथा वह घूम कर जमीन पर गिर पड़ी और बेहोश हो गई। बिहारीसिंह और हरनामसिंह को छोड़ कर बाकी जितने आदमी उसके साथ आए थे सभों में खलबली मच गई और सभों को इस बात का डर बैठ गया कि चण्डूल उनके कान में भी कोई ऐसी बात न कह दे जिससे मायारानी की सी अवस्था हो जाय।

घन्टा भर बीत गया पर मायारानी होश में न आई। चण्डूल तेजसिंह के पास गया और उनके कान में भी कोई बात कही जिसके जवाब में तेजसिंह ने केवल इतना ही कहा, "मैं तैयार हूं !"

तेजसिंह का हाथ पकड़े हुए चण्डूल उसी कोठरी में चला गया जिसमें से बाहर निकला था। अन्दर जाने बाद दर्वाजा बखूबी बन्द कर लिया। मायारानी के साथियों में से किसी की भी हिम्मत न पड़ी कि चण्डूल को या तेजसिंह को जाने से रोके। जिस समय चण्डूल यकायक कोठरी का दर्वाजा खोल कर बाहर निकला था उस समय मालूम होता था कि उस कोठरी के अन्दर और भी कई आदमी हैं मगर उस समय तेजसिंह ने वहां सिवाय अपने और चण्डूल के और किसी को भी न पाया। उधर मायारानी जब होश में आई तो बिहारीसिंह हरनामसिंह तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने और साथियों को लेकर खास महल में चली गई। उसके दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह अपने मालिक के वैसे ही तावेदार और खैरखाह बने रहे से थे मगर चण्डूल की कही हुई बात वे दोनों अपने मुंह से कभी भी निकाल नहीं सकते थे। जब जब चण्डूल का ध्यान आता बदन के रोंगटे खड़े हो जाते थे और ठीक यही अवस्था मायारानी की भी थी। मायारानी को यह भी निश्चय हो गया कि चण्डूल नकली बिहारीसिंह अर्थात् तेजसिंह को छुड़ा ले गया।

चौथा बयान

शाम का वक्त है। सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं तथापि पश्चिम तरफ आसमान पर कुछ कुछ लाली अभी तक दिखाई दे रही है। ठण्डी हवा मन्द गति से चल रही है। गरमी तो नहीं मालूम होती लेकिन इस समय की हवा बदन में कंपकंपी भी पैदा नहीं कर सकती। हम इस समय आपको एक ऐसे मैदान की तरफ ध्यान देने के लिए कहते हैं जिसकी लम्बाई और चौड़ाई का अन्दाज करना कठिन है। जिधर निगाह दौड़ाइये सन्नाटा नजर आता है, कोई पेड़ भी ऐसा नहीं है जिसके पीछे या जिस पर चढ़ कर कोई आदमी अपने को छिपा सके, हां पूरब तरफ निगाह कुछ ठोकर खाती है और एक धुंधली चीज को देख कर गौर करने वाला कह सकता है कि उस तरफ शायद कोई छोटी सी पहाड़ी या पुराने जमाने का कोई ऊंचा टीला है।

ऐसे मैदान में तीन औरतें घोड़ियों पर सवार धीरे धीरे उसी तरफ जा रही हैं जिधर उस टीले या छोटी पहाड़ी की स्याही मालूम हो रही है। यद्यपि उन औरतों की पोशाक जनाना वजः की है मगर फिर भी चुस्त और दक्षिणी ढंग की है। तीनों के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है तथापि बदन की सुडौली और कलाई तथा नाजुक अंगुलियों पर ध्यान देने से देखने वाले के दिल में यह बात जरूर पैदा होगी कि ये तीनों ही नाजुक नौजवान और खूबसूरत हैं। इन औरतों के विषय में हम अपने पाठकों को ज्यादा देर तक खुटके में न डाल कर इसी समय इनका परिचय दे देना उत्तम समझते हैं। वह देखिये ऊंची और मुश्की घोड़ी पर जो सवार है वह मायारानी है, चोगर आंखों वाली सुफेद पचकल्यान घोड़ी पर जो पटरी जमाये है वह उसकी छोटी बहिन लाडिली है जिसे अभी तक हम रामभोली के नाम से लिखते चले आये हैं और लक्खी घोड़ी पर सवार चारो तरफ निगाह दौड़ा दौड़ा कर देखने वाली धनपति है। ये तीनों आपुस में धीरे धीरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें करती जा रही हैं। लीजिए तीनों ने अपने चेहरों पर से नकाबें उलट दीं, अब हमें इन तीनों की बातों पर ध्यान देना उचित है।

माया० । न मालूम वह चण्डूल कम्बख्त तीसरे नम्बर के बाग में क्योंकर जा पहुंचा ! इसमें तो कुछ सन्देह नहीं कि जिस राह से हम लोग आते जाते हैं उस राह से वह नहीं गया था।

लाडिली० । तिलिस्म बनाने वालों ने वहां पहुंचने के लिए और कई रास्ते बनाए हैं, शायद उन्हीं रास्तों में सेकोई रास्ता उसे मालूम हो गया हो।

धनपति० । अगर उन रास्तों का हाल किसी दूसरे को मालूम हो जाना तो बड़ी भयानक बात है।

माया० । और यह एक ताज्जुब की बात है कि उन रास्तों का हाल जब मुझको, जो तिलिस्म की रानी कहलाती हूं, नहीं मालूम तो किसी दूसरे को कैसे मालूम हुआ !!

लाडिली० । ठीक है, तिलिस्म की बहुत सी बातें ऐसी हैं जो तुम्हें मालूम हैं मगर नियमानुसार तुम मुझसे भी नहीं कह सकती हो,हां उन रास्तोंका हाल जीजाजी* को जरूर मालूम था। अफसोस, उन्हें मरे पांच वर्ष हो गये, अगर जीते होते तो...

माया० । (कुछ घबड़ा कर और जल्दी से) तुम कैसे जानती हो कि उन्हें रास्तों का हाल उन्हें मालूम था ?

लाडिली० । हंसी हंसी में उन्होंने एक दिन मुझसे कहा था कि बाग के तीसरे दर्जे में जाने के लिए पांच रास्ते हैं, बल्कि वे मुझे अपने साथ वहां ले चल कर नया रास्ता दिखाने को तैयार भी थे मगर मैं तुम्हारे डर से उनके साथ न गई।

माया० । आज तक तूने यह हाल मुझसे क्यों न कहा !

लाडिली० । मेरी समझ मे यह कोई जरूरी बात न थी जो तुमसे कहती।

लाडिली की बात सुन मायारानी चुप हो गई और बड़े गौर में पड़ गई। उसकी अवस्था और उसकी सूरत पर ध्यान देने से मालूम होता था कि लाडिली की बात से उसके दिल पर एक सख्त सदमा पहुंचा है और वह थोड़ी देर के लिए आपे को बिल्कुल ही भूल गई है। मायारानी की ऐसी अवस्था क्यों हो गई और इतनी मामूली सी बात से उसके दिल पर क्यों चोट लगी इसका सबब उसकी छोटी बहिन लाडिली भी न समझ सकी। कदाचित् यह कहा जाय कि वह अपने पति को याद करके इस अवस्था में पड़ गई, सो भी नहीं हो सकता, क्योंकि लाडिली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* जीजाजी से मतलब मायारानी के पति से है जो लाडिली का बहनोई था।

जानती थी कि मायारानी अपने खूबसूरत हंसमुख और नेक चाल चलन वाले पति को कुछ भी नहीं चाहती थी। इस समय लाडिली के दिल में एक तरह का खुटका पैदा हुआ और शक की निगाह से मायारानी की तरफ देखने लगी मगर मायारानी कुछ भी नहीं जानती थी कि उसकी छोटी बहिन उसे किस निगाह से देख रही है। लगभग दो सौ कदम चले जाने बाद वह चौंकी और लाडिली की तरफ जरा सा मुह फेर कर बोली, "हां तो वह उन रास्तों का हाल जानता था।"

लाडिली के दिल में और भी खुटका हुआ बल्कि इस बात का रंज हुआ कि मायारानी ने अपने पति या लाडिली के प्यारे बहनोई की तरफ ऐसे शब्दों में इशारा किया जो किसी नीच या खिदमतगार तथा नौकर के लिए बर्ता जाता है। लाडिली का ध्यान धनपति की तरफ भी गया जिसके चेहरे पर उदासी और रंज की निशानी मामुली से कुछ ज्यादे पाई जाती थी और जिसकी घोड़ी भी पांच सात कदम पीछे रह गई थी। मगर मायारानी और धनपति की ऐसी अवस्था ज्यादे देर तक न रही, उन दोनों ने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और फिर मामूली तौर पर बातचीत करने लगीं।

धन०। अब वह टीला भी आ पहुंचा, देखा चाहिए बाबाजी से मुलाकात होती है या नहीं!

मायारानी०। मुलाकात अवश्य होगी क्योंकि वे कहीं जाते नहीं, मगर अब मेरा जी नहीं चाहता कि वहां तक जाऊं या उनसे मिलूं।

लाडिली०। सो क्यों! तुम तो बड़े उत्साह से उनसे मिलने के लिए आई हो!

माया०। ठीक है, मगर अब जो मैं सोचती हूं तो यही जान पड़ता है कि बेचारे बाबाजी इन सब बातों का जवाब कुछ भी न दे सकेंगे।

लाडिली०। खैर जब इतनी दूर आ चुकी हो तो अब लौट चलना भी उचित नहीं।

माया०। नहीं अब मैं वहां न जाऊंगी!

इतना कह कर मायारानी ने घोड़ी फेरी, लाचार होकर लाडिली और धनपति को भी घूमना पड़ा, मगर इस कारंवाई से लाडिली के दिल का शक और भी ज्यादा हुआ और उसे निश्चय हो गया कि मेरी बात से मायारानी के दिल पर गहरी चोट बैठी है मगर इसका सबब क्या है सो कुछ भी नहीं मालूम होता।

मायारानी ने जैसे ही घोड़ी की बाग फेरी वैसे ही उसकी निगाह तेजसिंह पर पड़ी जो तीर और कमान हाथ में लिए बहुत दूर से कदम बढ़ाए इन तीनों के पीछे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीछे आ रहे थे। मायारानी तेजसिंह को अच्छी तरह जानती थी। यद्यपि इस समय कुछ अन्धेरा हो गया था परन्तु मायारानी की तेज निगाहों ने तेजसिंह को तुरत ही पहिचान लिया और इसके साथ ही वह तलवार खैंच कर तेजसिंह पर झपटी।

मायारानी को नंगी तलवार लिए झपटते देख तेजसिंह ने ललकार के कहा, "खबरदार, आगे न बढ़ना, नहीं तो एक ही तीर में काम तमाम कर दूंगा!"

तेजसिंह के ललकारने से मायारानी रुक गई मगर धनपति से न रहा गया। वह तलवार खैंच कर यह कहती हुई आगे बढ़ी, "मैं तेरे तीर से डरने वाली नहीं!"

तेज०। मालूम होता है तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है, इसे खूब समझ लीजियो कि तेजसिंह के हाथ से छूटा हुआ तीर खाली न जायगा।

धन०। मालूम होता है कि तू केवल एक तीर ही से हम तीनों को डरा कर अपना काम निकालना चाहता है। अफसोस इस समय मेरे पास तीर कमान नहीं है, यदि होता तो तुझे जान पड़ता कि तीर चलाना किसे कहते हैं?

तेज०। (हंस कर) न मालूम तूने औरत होने पर भी अपने को क्या समझ रक्खा है? खैर अब मैं एक कमसिन औरत पर तीर न चलाऊंगा।

इतना कह कर तेजसिंह ने तीर तरकस में रख लिया तथा कमान बगल में लटकाने बाद ऐयारी के बटुए में से एक छोटा सा लोहे का गोला निकाल कर सामने खड़े हो गए और धनपति को वह गोला दिखा कर बोले, "तुम लोगों के लिए यही बहुत है, मगर मैं फिर कहे देता हूं कि मुझ पर तलवार चला कर भलाई की आशा मत रखियो!"

धन०। (मायारानी की तरफ इशारा करके) क्या तू जानता नहीं कि यह कौन हैं?

तेज०। मैं तुम तीनों को खूब जानता हूं और यह भी जानता हूं कि मायारानी सैंतालीस नम्बर की कोठरी को पवित्र करके बेवा हो गई और इस बात को पांच वर्ष का जमाना हो गया।

इतना कह कर मुस्कुराते हुए तेजसिंह ने एक भेद की निगाह मायारानी पर डाली और देखा कि मायारानी का चेहरा पीला पड़ गया और शर्म से उसकी आंखें नीचे की तरफ झुकने लगीं। मगर यह अवस्था उसकी बहुत देर तक न रही, तेजसिंह के मुंह से बात निकलने बाद जैसे ही लाडिली की ताज्जुब भरी निगाह मायारानी पर पड़ी वैसे ही मायारानी ने अपने को सम्हाल कर धनपति की तरफ देखा।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA / eGangotri

अब धनपति अपने को रोक न सकी, उसने घोड़ी बढ़ा कर तेजसिंह पर तलवार का वार किया। तेजसिंह ने फुर्ती से वार खाली देकर अपने को बचा लिया और वही लोहे का गोला धनपति की घोड़ी के सर में इस जोर से मारा कि वह सम्हल न सकी और सर हिला कर जमीन पर गिर पड़ी। लोहे का गोला छटक कर दूर जा गिरा और तेजसिंह ने लपक कर उसे उठा लिया।

आशा थी कि घोड़ी के गिरने से धनपति को भी कुछ चोट लगेगी मगर वह घोड़ी पर से उछल कुछ दूर जा रही और बड़ी चालाकी से गिरते गिरते उसने अपने को बचा लिया। तेजसिंह फिर वही गोला लेकर सामने खड़े हो गए।

तेज०। (गोला दिखा कर) इस गोले की करामात देखी? अगर अबकी फिर वार करने का इरादा करेगी तो यह गोला तेरे घुटने पर बैठेगा और तुझे लंगड़ी होकर मायारानी का साथ देना पड़ेगा। मैं यह नहीं चाहता कि तुम लोगों को इस समय जान से मारूं मगर हां इस समय जिस काम के लिए आया हूं उसे किए बिना लौट जाना भी मुनासिब नहीं समझता।

माया०। अच्छा बताओ तुम हम लोगों के पीछे पीछे क्यों आए हो और क्या चाहते हो?

तेज०। (लाडिली की तरफ इशारा कर के) केवल इनसे एक बात कहनी है और कुछ नहीं।

लाडिली०। कहो क्या कहते हो?

तेज०। मैं इस तरह नहीं कहा चाहता कि तुम्हारे सिवाय कोई दूसरा सुने, इन दोनों से अलग होकर सुन लो फिर मैं चला जाऊंगा। डरो मत, मैं दगाबाज नहीं हूं, यदि चाहूं तो ललकार कर तुम तीनों को यमलोक पहुंचा सकता हूं मगर नहीं, तुमसे केवल एक बात कहने के लिए आया हूं जिसके सुनने का अधिकार सिवाय तुम्हारे और किसी को नहीं है।

कुछ सोच कर लाडिली वहां से हट गई और कुछ दूर जाकर तेजसिंह की तरफ देखने लगी मानों वह तेजसिंह की बात सुनने के लिए तैयार हो। तेजसिंह लाडिली के पास गए और बटुए में से एक चीठी निकाल उसके हाथ में देकर बोले, "इसे जल्द पढ़ लो, देखो मायारानी को इसका हाल न मालूम हो!"

लाडिली ने बड़े गौर से वह चीठी पढ़ी और इसके बाद टुकड़े टुकड़े कर फेंक दी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेज०। इसका जवाब?

लाडिली०। केवल इतना ही कह देना कि 'बहुत अच्छा' !

अब तेजसिंह को ठहरने की कोई जरूरत न थी। उन्होंने उत्तर का रास्ता लिया, मगर घूम घूम कर देखते जाते थे कि पीछे कोई आता तो नहीं। तेजसिंह के जाने बाद मायारानी ने लाडिली से पूछा, "वह चीठी किसकी थी और उसमें क्या लिखा था !" लाडिलो ने असल भेद तो छिपा रक्खा मगर कोई विचित्र बात गढ़ कर उस समय मायारानी की दिलजमई कर दी !

पांचवां बयान

पाठकों को याद होगा कि भूतनाथ को नागर ने एक पेड़ के साथ बांध रक्खा है। यद्यपि भूतनाथ ने अपनी चालाकी और तिलिस्मी खंजर की मदद से नागर को बेहोश कर दिया मगर देर तक उसके चिल्लाने पर भी वहां कोई उसका मददगार न पहुंचा और नागर फिर से होश में आकर उठ बैठी।

नागर०। अब मुझे मालूम हुआ कि तेरे पास भी एक अद्भुत वस्तु है।

भूत०। जो अब तुम्हारी होगी।

नागर०। नहीं, जिसके छूने से मैं बेहोश हो गई उसे अपने पास क्योंकर रख सकती हूं ! मगर मालूम होता है कि कोई ऐसी चीज भी तेरे पास जरूर है जिसके सबब से इस खंजर का असर तुझ पर नहीं होता। खैर मैं तेरा यह तीसरा कसूर भी माफ करूंगी यदि तू यह खंजर मुझे दे दे और वह दूसरी चीज भी मेरे हवाले कर दे जिसके सबब से इस खंजर का असर तुझ पर नहीं होता।

भूत०। मगर मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तुमने मेरा कसूर माफ किया !

नागर०। और मुझे क्योंकर विश्वास होगा कि तूने वास्तव में वही चीज मुझे दी जिसके सबब से खंजर की करामात से तू बचा हुआ है ?

भूत०। बेशक मैं वही चीज तुम्हें दूंगा, और तुम अजमाने के बाद मुझे छोड़ सकती हो।

नागर०। मगर ताज्जुब नहीं कि आजमाते आजमाते मैं फिर बेहोश हो जाऊं क्योंकि तू धोखा देने में मुझसे किसी तरह कम नहीं !

भूत०। इसका जवाब तुम खुद समझ सकती हो !

नागर०। हां ठीक है, यदि मैं थोड़ी देर के लिए बेहोश भी हो जाऊंगी तो तू मेरा कुछ कर नहीं सकता क्योंकि पेड़ के साथ बंधा हुआ है और तेरे हाथ पैर भी खुले नहीं हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत०। और मेरे चिल्लाने से भी यहां कोई मददगार न पहुंचेगा।

नागर०। हां इसका प्रमाण भी........

कहते कहते नागर रुक गई क्योंकि पत्तों के खड़खड़ाने की आवाज उसने सुनी और किसी के आने का उसे शक हुआ। नागर ने पीछे घूम कर देखा तो कमलिनी पर नजर पड़ी जो नागर के दिए घोड़े पर सवार इसी तरफ आ रही थी। कमलिनी इस समय भी उसी सूरत में थी जिस सूरत में नागर के यहां गई थी और उसका पहिचानना मुश्किल था, मगर भूतनाथ की जुबानी नागर को पता लग चुका था इसलिए उसने कमलिनी को तुरत पहिचान लिया और भूतनाथ को उसी तरह छोड़ फुर्ती से अपने घोड़े पर सवार हो गई। कमलिनी भी पास पहुंची और नागर की तरफ देख कर बोली—

कम०। तुझे तो विश्वास हो गया होगा कि मैं मिर्जापुर चली गई!

नागर०। बेशक तुमने मुझे धोखा दिया, खैर अब मेरे हाथ से बच कर कहां जा सकती हो? यद्यपि तुम मायारानी की बहिन हो और इस सबब से मुझे तुम्हारा अदब करना चाहिए मगर तुम्हारी बुराइयों पर ध्यान दे कर मायारानी ने हुक्म दे रक्खा है कि जो कोई तुम्हारा सिर काट कर उनके पास ले जाएगा वह मुंह मांगा इनाम पाएगा, अस्तु अब मैं तुम्हें किसी तरह छोड़ नहीं सकती, हां अगर तुम खुशी से मायारानी के पास चली चलो तो अच्छी बात है!

कम०। (मुस्कुरा कर) ठीक है, मालूम होता है कि तू अभी तक अपने को अपने मकान में मौजूद समझती है और चारो तरफ अपने नौकरों को देख रही है।

नागर०। (कुछ शर्मा कर) मैं खूब जानती हूं कि इस मैदान में मैं अकेली हूं लेकिन यह भी देख रही हूं कि तुम्हारे साथ भी कोई दूसरा नहीं है। अगर तुम अपने को हर्बा चलाने और ताकत में मुझसे बढ़ कर समझती हो तो यह तुम्हारी भूल है और इसका फैसला हाथ मिलाने ही से हो सकता है (हाथ बढ़ाकर) आइए!

कम०। (हंस कर) वाह, तू समझती है कि मुझे उस अंगूठी की खबर नहीं जो तेरे इस बढ़े हुए हाथ में देख रही हूं, अच्छा ले!

"अच्छा ले" कह कर कमलिनी ने दिखा दिया कि उसमें कितनी तेजी और फुर्ती है। घोड़ा आगे बढ़ाया और तिलिस्मी खंजर निकाल कर इतनी तेजी के साथ नागर के हाथ पर रख दिया, कि वह अपना हाथ हटा भी न सकी और खंजर की तासीर से बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी। कमलिनी ने घोड़े से उतर कर भूतनाथ को कैद से छुट्टी दी और कहा, "वाह, तुम इतने बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चालाक होकर भी इसके फंदे में आ गए !"

भूत० । मैं इसके फंदे में न आता यदि उस अंगूठी का गुण जानता जो इसकी उंगली में चमक रही है, वास्तव में यह अनमोल वस्तु है और कठिन समय पर काम दे सकती है ।

कम० । इस कम्बख्त के पास यही तो एक चीज है जिसके सबब से मायारानी की आंखों में इसकी इज्जत है । इसके जहर से कोई बच नहीं सकता, हां यदि यह चाहे तो जहर उतार भी सकती है । न मालूम यह अंगूठी और इसका जहर उतारने की तर्कीब मनोरमा ने कहां से पाई ।

भूत० । मायारानी से और उससे क्या सम्बन्ध ?

कम० । मनोरमा उसकी सखियों में सब से बड़ा दर्जा रखती है और वह इस कम्बख्त को अपनी बहिन से बढ़ के मानती है । यह अंगूठी भी मनोरमा ही की है।

भूत० । तो मायारानी ने यह अंगूठी क्यों न ले ली । उसके तो बड़े काम की चीज थी ।

कम० । उसको भी मनोरमा ने ऐसी ही अंगूठी बना दी है और जहर उतारने की दवा भी तैयार कर दी है मगर इसके बनाने की तर्कीब नहीं बताती ।

भूत० । खैर अब यह अंगूठी आप ले लीजिए ।

कम० । यद्यपि यह मेरे काम की चीज नहीं है बल्कि इसको अपने पास रखने में मैं पाप समझती हूं तथापि जब तक मायारानी से खटपट चली जाती है तब तक यह अंगूठी अपने पास जरूर रक्खूंगी (तिलिस्मी खंजर की तरफ इशारा कर के) इसके सामने यह अंगूठी कोई चीज नहीं है ।

भूत० । बेशक बेशक, जिसके पास यह खंजर है उसे दुनिया में किसी चीज की परवाह नहीं और वह अपने दुश्मन से चाहे वह कैसा जबरदस्त क्यों न हो कभी नहीं डर सकता । आपने मुझ पर बड़ी ही कृपा की जो ऐसा खंजर थोड़े दिन के लिए मुझे दिया । आह, वह दिन भी कैसा होगा जिस दिन यह खंजर हमेशा अपने पास रखने की आज्ञा आप मुझे देंगी ।

कम० । (मुस्कुरा कर) खैर वह दिन आज ही समझ लो, मैं हमेशे के लिए यह खंजर तुम्हें देती हूं, मगर नानक के लिए ऐसा करने की सिफारिश मत करना।

भूतनाथ ने खुश होकर कमलिनी को सलाम किया । कमलिनी ने नागर की उंगली से जहरीली अंगूठी उतार ली और उसके बटुए में से खोज कर उस दवा की शीशी भी निकाल ली जो उस अंगूठी के भयानक जहर को बात की बात में दूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर सकती थीं। इसके बाद कमलिनी ने भूतनाथ से कहा, "नागर को हमारे अद्भुत मकान में ले जाकर तारा के सुपुर्द करो और फिर मुझसे आकर मिलो। मैं फिर वहीं अर्थात् मनोरमा के मकान पर जाती हूं। अपने कागजात भी उसके बटुए में से निकाल लो और इसी समय उन्हें जलाकर सदैव के लिए निश्चित हो जाओ!"

छठवां बयान

मायारानी का डेरा अभी तक खास बाग (तिलिस्मी बाग) में है। रात आधी से ज्यादे जा चुकी है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, पहरे वालों के सिवाय सभी को निद्रादेवी ने बेहोश करके डाल रक्खा है, मगर उस बाग में दो औरतों की आंखों में नींद का नाम निशान भी नहीं। एक तो मायारानी की छोटी बहिन लाडिली, जो अपने सोने वाले कमरे में मसहरी के ऊपर पड़ी कुछ सोच रही है और थोड़ी थोड़ी देर पर उठ कर बाहर निकलती और सन्नाटे की तरफ ध्यान देकर लौट जाती है, मालूम होता है कि वह मकान या बाग के बहिर जाकर किसी से मिलने का मौका ढूंढ़ रही है, और दूसरी मायारानी जो निद्रा न आने के कारण अपने कमरे में टहल रही हैं। उसे भी तरह तरह के खयालों ने सता रक्खा है। कभी कभी उसका सर हिल जाता है जो उसके दिल की परेशानी को पूरी तरह से छिपा रहने नहीं देता, उसक होंठ भी कभी कभी अलग होकर दिल का दर्वाजा खोल देते हैं जिससे दिल के अन्दर कैद रहने वाले कई भेद शब्द रूप होकर धीरे से बाहर निकल पड़ते हैं।

जब चारो तरफ अच्छी तरह सन्नाटा हो गया तो लाडिली ने काले कपड़े पहिरे और ऐयारी का बटुआ कमर से लगाने बाद कमरे के बाहर निकल कर इधर उधर टहलना शुरू किया। वह उस कमरे के पास आई जिसके अन्दर मायारानी तरद्दुद और घबराहट से निद्रा न आने के कारण टहल रही थी। लाडिली छिप कर देखने लगी कि मायारानी क्या कर रही है। थोड़ी देर के बाद मायारानी के मुंह से निकले हुए शब्द लाडिली ने सुने और वे शब्द ये थे—"वह इस रास्ते को जानता है....वह भेद जिसे लाडिली नहीं जानती....आह, धनपत की मुहब्बत ने...."

इन शब्दों को सुन कर लाडिली घबड़ा गई और बेचैनी से अपने कमरे में लौट आने के लिये तैयार हुई मगर उसक दिल ने उसे वहां से लौटने न दिया, इच्छा हुई कि मायारानी के मुंह से और भी कोई शब्द निकले तो सुने, परन्तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके बाद मायारानी कुछ ज्यादे बेचैन मालूम हुई और अपनी मसहरी पर जाकर लेट रही। आधी घड़ी से ज्यादे न बीती थी कि मायारानी की सांस ने लाडिली को उसके सो जाने की खबर दी और लाडिली वहां से लौट कर बाग में टहलने लगी। घूमती फिरती और अपने को पेड़ों की आड़ में बचाती हुई वह बाग के पिछले कोने में पहुंची जहां एक छोटा सा मगर मजबूत बुर्ज बना था। इसके अन्दर जाने के लिये छोटा सा लोहे का दर्वाजा था जिसे उसने धीरे से खोला और अन्दर जाने बाद फिर बन्द कर लिया। भीतर बिल्कुल अंधेरा था। बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उस कोठरी की हालत अच्छी तरह देखने लगी। यह बुर्ज वाली कोठरी वर्षों से ही बन्द थी और इस सबब से इसके अन्दर मकड़ों ने अच्छी तरह अपना घर बना लिया था, मगर लाडिली ने इस कोठरी की गन्दी हालत पर कुछ ध्यान न दिया। इस कोठरी की जमीन चौंखूटे पत्थरों से बनी हुई थी और छत में छोटे छोटे दो तीन सूराख थे जिनमें से आसमान में जड़े हुए तारे दिखाई दे रहे थे। पहिले तो लाडिली इस विचार में पड़ी कि बहुत दिनों से बन्द रहने के कारण इस कोठरी की हवा खराब होकर जहरीली हो गई होगी, शायद किसी तरह का नुकसान पहुंचे, मगर छत के सूराखों को देख निश्चिन्त हो गई और मोमबत्ती एक किनारे जमा कर जमीन पर बैठ गई। आधी घड़ी तक वह सोच विचार में पड़ी रही, इसके बाद हलकी आवाज के साथ कोने की तरफ जमीन का एक चौखूटा पत्थर किवाड़ के पल्ले की तरह खुल कर अलग हो गया और नीचे से अपनी असली सूरत में कमलिनी निकल कर लाडिली के सामने खड़ी हो गई। कमलिनी को देखते ही लाडिली उठ खड़ी हुई और बड़ी मुहब्बत से उसके साथ लिपट कर रोने लगी तथा कमलिनी की आंखें भी आंसू की बूंदें गिराने लगीं, कुछ देर बाद दोनों अलग हुईं और जमीन पर बैठ कर बातचीत करने लगीं।

लाडिली०। मेरी प्यारी बहिन, इस समय मेरी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता। मुझे तो इस बात का बड़ा ही रंज था कि तुमने मुझे अपने दिल से भुला दिया जिसकी आशा कदापि न थी, मगर आज शाम को तुम्हारे हाथ की लिखी हुई उस चीठी ने मुझमें जान डाल दी जो तेजसिंह के हाथ मुझ तक पहुंचाई गई थी।

कम०। नहीं नहीं अभी तक मैं तुझे उतना ही प्यार करती हूं जितना यहां रहने पर करती थी परन्तु इस समय आशा कम थी कि मेरे लिखे अनुसार यहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकर तू मुझसे मिलेगी क्योंकि बड़ी बहिन मायारानी मेरी जान की ग्राहक हो रही है और तू पूरी तरह उसके कब्जे में है।

लाडिली०। प्यारी बहिन, चाहे मायारानी का दिल तुम्हारी दुश्मनी से भरा हुआ क्यों न हो मगर मेरा दिल तुम्हारी मुहब्बत से किसी तरह खाली नहीं हो सकता। तुम्हारी चीठी पाते ही मैं बेचैन हो गई और हजारों आफतों की तरफ ध्यान न देकर बेखटके यहां चली आई। क्या अब भी तुम्हें—

कम०। हां हां मुझे विश्वास है, और मैं खूब जानती हूं कि अगर तेरे दिल में मेरी मुहब्बत न होती तो तू मेरे लिखने पर यकायक यहां न आती।

लाडिली०। मुझे इस बात की शिकायत करने का मौका आज मिला कि तुमने इस घर को तिलांजुली देते समय अपने इरादे से मुझे बेखबर रक्खा।

कम०। तो क्या मेरा इरादा जानने पर तू मेरा साथ देती?

लाडिली०। (जोर देकर) जरूर साथ देती! हाय, यहां रह कर जैसी तकलीफ में दिन काट रही हूं वह मेरा ही जी जान रहा है। ऐसे ऐसे भयानक काम मुझसे लिए जाते हैं कि जिसे मैं मुख्तसर में कह नहीं सकती, लाचार हो कर और मन मार कर सब कुछ करना पड़ता है क्योंकि इस बात को मैं अच्छी तरह जानती हूं कि मायारानी के गुस्से में पड़ कर मैं अपनी जान भारतवर्ष के किसी घने जंगल में छिप कर भी नहीं बचा सकती।

कम०। इसका सबब यही है कि तू तिलिस्मी हाल से बिल्कुल बेखबर और भोली है, बल्कि वास्तव में रामभोली है।

लाडिली०। (चौंक कर) क्या तुम जानती हो कि मैं रामभोली बनने पर लाचार की गई थी?

कम०। मुझे अच्छी तरह मालूम है, अभी तक नानक मेरे साथ रह कर मेरा काम कर रहा है।

लाडिली०। हाय, जब वह तुम्हारे साथ है तो जरूर एक दिन सामना होगा। उस समय शर्म से मेरी आंखें ऊंची न होंगी, उस बेचारे के साथ मैंने बड़ी बुराई की।

कम०। लेकिन मैं खूब जानती हूं कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं। खैर इस बात को जाने दे, मुझे तेरी मुहब्बत यहां तक खैंच लाई है, मैं इस समय यह पूछने आई हूं कि अब तेरा क्या इरादा है क्योंकि इस तिलिस्म की उम्र अब तमाम हो गई और मायारानी अपने बुरे कर्मों का फल भोगा ही चाहती है।

लाडिली०। (हाथ जोड़ कर) मैं यही चाहती हूं कि तुम मुझे अपने साथ रक्खो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसमें मायारानी का मुंह देखना नसीब न हो। मैं जानती हूं कि यह तिलिस्म अब टूटा ही चाहता है क्योंकि इधर थोड़े दिनों से बड़ी बड़ी अद्‌भुत बातें देखने में आ रही हैं जिनसे खुद मायारानी की अक्ल चक्कर में है, मगर शक है तो इतना ही कि तिलिस्म तोड़ने वाले कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह इस समय मायारानी के कैदी हो रहे हैं और कल उन दोनों का सिर जरूर काटा जायगा।

कम०। यह बात मुझे भी मालूम है मगर सवेरा होने के पहिले ही मैं उन दोनों को छुड़ा कर ले जाऊंगी।

लाडिली०। यदि ऐसा हो तो क्या बात है! वे दोनों कैसे नेक और खूबसूरत हैं। जिस समय मैंने आनन्दसिंह को देखा........

इतना कह लाडिली चुप हो रही, उसकी आंखें नीची हो गई और उसके गालों पर शर्म की सुर्खी दौड़ गई। कमलिनी समझ गई कि यह आनन्दसिंह को चाहती है।

कम०। मगर उन दोनों को छुड़ाने के लिए कुछ तुमसे भी मदद चाहती हूं।

लाडिली०। तुम्हारी आज्ञा मानने के लिए मैं हर तरह से तैयार हूं।

कम०। तू उस कैदखाने की ताली मुझे ला दे जिसमें दोनों कुमार कैद हैं।

लाडिली०। मैं उद्योग कर सकती हूं मगर वह तो हरदम मायारानी की कमर में रहती है।

कम०। उसके लेने की सहज तर्कीब मैं बताती हूं।

लाडिली०। क्या?

कम०। (कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल और दिखा कर) यह तिलिस्म की सौगात है, हाथ में लेकर जब इसका कब्जा दबाया जायगा तो बिजली की सी चमक पैदा होगी जिसके सामने किसी की आंख खुली नहीं रह सकती। इसके अतिरिक्त इसमें और भी दो गुण हैं, एक तो यह कि जिसके बदन से यह लगा दिया जाय उसके बदन में बिजली दौड़ जाती है और वह तुरत बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ता है, और दूसरे यह हर एक चीज को काट डालने की ताकत रखता है।

कमलिनी ने खंजर का कब्जा दबाया। उसमें से ऐसी चमक पैदा हुई कि लाडिली ने दोनों हाथों से आंखें बन्द कर लीं और कहा, "बस बस इस चमक को दूर करो तो आंखें खोलूं!"

कम०। (कब्जा ढीला करके) लो चमक बन्द हो गई, आंखें खोलो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाडिली०। (आंखें खोल कर) मेरे हाथ में दो तो मैं भी कब्जा दबा

हूं ! मगर नहीं तुम तो कह चुकी हो कि यह जिसके बदन से छुलाया जायगा वह बेहोश हो जायगा, तो मैं इसे कैसे ले सकूंगी और तुम पर इसका असर क्यों नहीं होता ?

हम ऊपर लिख आए हैं कि कमलिनी के कमर में दो तिलिस्मी खंजर थे और उनके जोड़ की दो अंगूठियां भी उसकी उंगलियों में थीं। उसने एक अंगूठी लाडिली की उंगली में पहिरा कर उसका गुण अच्छी तरह समझा दिया और कह दिया कि जिसके हाथ में यह अंगूठी रहेगी केवल वही इस खंजर को अपने पास रख सकेगा।

लाडिली० । जब ऐसी चीज तुम्हारे पास है तो वह ताली तुम स्वयं उससे ले सकती हो ।

कम० । हां मैं यह काम खुद भी कर सकती हूं मगर ताज्जुब नहीं कि माया-रानी के कमरे तक जाते आते मुझे कोई देख ले और गुल करे तो मुश्किल होगी। यद्यपि मेरा कोई कुछ कर नहीं सकता और मैं इस खंजर की बदौलत सैकड़ों को मार कर निकल जा सकती हूं, मगर जहां तक बिना खून खराबा किए काम निकल जाय तो उत्तम ही है ।

लाडिली० । हां ठीक है, तो अब विलम्ब न करना चाहिए ।

कम० । तो फिर जा, मैं इसी जगह बैठी तेरी राह देखूंगी ।

खंजर के जोड़ की अंगूठी हाथ में पहिरने बाद लाडिली ने तिलिस्मी खंजर ले लिया और बुर्ज का दरवाजा खोल वहां से रवाना हुई । कमलिनी को आधे घंटे से ज्यादे राह न देखना पड़ा, इसके भीतर ही ताली लिए हुए लाडिली आ पहुंची और अपनी बड़ी बहिन के सामने ताली रख कर बोली, "इस ताली के लेने में कुछ भी कठिनाई न हुई । मुझे किसी ने भी न देखा । चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ था, मायारानी बेखबर सो रही थी, ताली लेते समय वह जाग न उठे इससे यह तिलिस्मी खंजर एक दफे उसके बदन से लगा देना पड़ा, बस तुरत ही उसका बदन कांप उठा मगर वह आंखें न खोल सकी, मुझे विश्वास हो गया कि वह बेहोश हो गई। बस मैं ताली लेकर चली आई, मगर अब यहां ठहरना उचित नहीं ।

कम० । हां अब यहां से चलना और उन कैदियों को छुड़ाना चाहिए ।

लाडिली० । मगर उन कैदियों को छुड़ाने के लिए तुमको इसी बाग की राह तहखाने तक जाना होगा ?

कम० । नहीं, वहां जाने के लिए दूसरी राह भी है जिसे मैं जानती हूं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाडिली० । (ताज्जुब से कमलिनी का मुंह देख के) जीजाजी यहां के

बहुत से रास्तों और सुरंगों तथा तहखानों को जानते थे, मालूम होता है तुमने उन्हीं से इसका हाल जाना होगा ?

कम० । नहीं, यहां की बहुत सी बातें किसी दूसरे ही सबब से मुझे मालूम हुईं जिसे सुन कर तू बहुत ही खुश होगी, हां यदि जीजाजी हम लोगों से जुदा न किए जाते तो यहां की अजीब बातों के देखने का आनन्द मिलता । मायारानी को भी यहां के भेद अच्छी तरह मालूम नहीं हैं ।

लाडिली० । जीजाजी हम लोगों से जुदा किये गये इसका मतलब मैं नहीं समझी !

कम० । क्या तू समझती है कि गोपालसिंहजी (मायारानी के पति) अपनी मौत से मरे ?

लाडिली० । (कुछ सोच कर) मुझे तो यही विश्वास है कि उन्हें जहर दिया गया । मैंने स्वयं देखा कि मरने पर उनका रंग काला हो गया था और चेहरा ऐसा बिगड़ गया था कि मैं पहिचान न सकी । हाय, हम दोनों बहिनों पर उनकी बड़ी ही कृपा रहती थी !

कम० । उनकी कृपा किस पर नहीं रहती थी ! (कुछ सोच कर) खैर आज मैं तुझे इस बाग के चौथे दर्जे में ले चल कर एक तमाशा दिखलाऊंगी ।

लाडिली० । (ताज्जुब से) क्या चौथे दर्जे में तुम जा सकती हो ?

कम० । हां मैं यहां के बहुत से भेदों को जान गई हूं और सब जगह घूम फिर सकती हूं ।

लाडिली० । अहा तब तो मैं जरूर चलूंगी ! जीजाजी अक्सर कहा करते थे कि इस बाग के चौथे दर्जे में अगर कोई जाय तो उसे मालूम हो कि दुनिया क्या चीज है और ईश्वर की सृष्टि में कैसी विचित्रता दिखाई दे सकती है ।

कम० । अच्छा अब चल कर पहिले कैदियों को छुड़ाना चाहिए ।

इतना कह कर कमलिनी उठी और मोमबत्ती हाथ में लिए हुए उस सुरंग के मुहाने पर गई जिसका मुंह चौखूटे पत्थर के हट जाने से खुल गया था और जिसमें से वह कुछ ही देर पहिले निकली थी । नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां मौजूद थीं, दोनों बहिनें नीचे उतर गईं । आखिरी सीढ़ी पर पहुंचने के साथ ही वह चौखूटा पत्थर एक हलकी आवाज के साथ अपने ठिकाने पहुंच गया और उस सुरंग का मुंह बंद हो गया ।

॥ सातवां भाग समाप्त ॥

३० वां संस्करण] १९७५ [११०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* श्री। *

चन्द्रकान्ता सन्तति

आठवां भाग

पहिला बयान

मायारानी की कमर में से ताली लेकर जब लाडिली चली गई तो उसके घंटे भर बाद मायारानी होश में आ कर उठ बैठी। उसके बदन में कुछ कुछ दर्द हो रहा था जिसका सबब वह समझ नहीं सकती थी। उसे फिर उन्हीं खयालों ने आकर घेर लिया जिनकी बदौलत दो घण्टे पहिले वह बहुत ही परेशान थी। न वह बैठ कर आराम पा सकती थी और न कोई उपन्यास इत्यादि पढ़ कर ही अपना जी बहला सकती थी। उसने अपनी आलमारी में से नाटक की किताब निकाली और शमादान के पास जाकर पढ़ना शुरू किया, पर नान्दी पढ़ते पढ़ते ही उसकी आंखों पर पलकों का पर्दा पड़ गया और फिर आधे घंटे तक वह गम्भीर चिन्ता में डूबी रह गई, इसके बाद किसी के आने की आहट से उसे चौंका दिया और वह घूम कर दर्वाजे की तरफ देखने लगी। धनपत उसके सामने आकर खड़ी हो गई और बोली—

धनपत०। मेरी प्यारी रानी, मैं देखती हूं कि इस समय तू बहुत ही उदास और किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी हुई है, शायद अभी तक तेरी आंखों में निद्रा-देवी का डेरा नहीं पड़ा।

माया०। बेशक ऐसा ही है, मगर तेरे चेहरे पर भी......

धनपत०। मैं तो बहुत घबरा गई हूं क्योंकि अब यह बात लोगों को मालूम हुआ चाहती है, मैं खूब जानती हूं कि तुम्हारी कहर रिआया उसे जी जान से....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया०। बस बस, आगे कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी सोच ने तो

मुझे वेकाम कर दिया है।

धनपत०। मैं थोड़े दिनों के लिए तुमसे जुदा हो जाना उचित समझती हूं और यही कहने के लिए मैं यहां तक आया हूं।

माया०। (घबड़ा कर) तुझे क्या हो गया है? मुंह से बात भी सम्हाल कर नहीं निकालती!

धनपत०। हां हां, मुझसे भूल हो गई, इस समय तरद्दुद और डर ने मुझे वेकाम कर रक्खा है।

माया०। अच्छा तो तू मुझसे जुदा हो कर कहां जाएगी?

धनपत०। जहां कहो।

माया०। (कुछ सोच कर) अभी जल्दी न करो, इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह कब्जे में आ ही चुके हैं, सूर्योदय के पहिले ही मैं उनका काम तमाम कर दूंगी।

धनपत०। मगर उसका क्या बन्दोबस्त किया जायगा जिसके विषय में चंडूल ने तेरे कान में.......

माया०। आह,उसकी तरफ से भी अब मुझे निराशा हो गई,वह बड़ा जिद्दी है।

धनपत०। तो क्यों नहीं उसकी तरफ से निश्चिन्त हो जाती हो?

माया०। हां अब यही होगा।

धनपत०। फिर देर करने की क्या जरूरत है?

माया०। मैं अभी जाती हूं, क्या तू भी मेरे साथ चलेगी।

धनपत०। मैं चलने को तैयार हूं,मगर न मालूम उसे (चण्डूल को) यह बात क्योंकर मालूम हो गई।

माया०। खैर अब चलना चाहिए।

अब मायारानी का ध्यान कैदखाने की ताली पर गया। अपनी कमर में ताली न देख कर बहुत हैरान हुई। थोड़ी देर के लिए वह अपने को बिल्कुल ही भूल गई पर आखिर एक लम्बी सांस लेकर धनपत से बोली—

माया०। आफत आने की यह दूसरी निशानी है।

धनपत०। सो क्या? मेरी समझ में कुछ भी न आया कि यकायक तेरी अवस्था क्यों बदल गई और किस नई घटना ने आकर मुझे घेर लिया।

माया०। कैदखाने की ताली जिसे मैं सदा अपनी कमर में रखती थी गायब हो गई।

धनपत०। (घबड़ा कर) कहीं दूसरी जगह न रख दी हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया०। नहीं नहीं, जरूर मेरे पास ही थी। चल लाडिली से पूछूं, शायद

वह इस विषय में कुछ कह सके।

मायारानी धनपत को साथ लिए लाडिली के कमरे में गई मगर वह लाडिली भी कहां जो मिलती। अब उसकी घबराहट का कोई हद्द न रहा। एक दम बोल उठी, "बेशक लाडिली ने धोखा दिया।"

धनपत०। उसे ढूंढ़ना चाहिए।

माया०। (आसमान की तरफ देख कर और लम्बी सांस लेकर) आह, यह पहर भर के लगभग रात जो बाकी है मेरे लिए बड़ी ही अनमोल है। इसे मैं लाडिली की खोज में व्यर्थ नहीं खोया चाहती। इतने ही समय में मुझे उस जिद्दी के पास पहुंचना और उसका सर काट कर लौट आना है। कैदियों से भी ज्यादे तरद्दुद मुझे उसका है। हाय, अभी तक वह आवाज मेरे कानों में गूंज रही है जो चण्डूल ने कही थी, खैर वहां जाते जाते कैदखाने को भी देखती चलूंगी। (जोश में आकर) कैदी चाहे कैदखाने के बाहर हो जांय मगर इस बाग की चहारदीवारी को नहीं लांघ सकते। जा बिहारीसिंह और हरनामसिंह को बहुत जल्द बुला ला।

धनपत दौड़ी हुई गई और थोड़ी ही देर में दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए लौट आई। वे दोनों ऐयारी के सामान से दुरुस्त और हर एक काम के लिए मुस्तैद थे। यद्यपि बिहारीसिंह के चेहरे का रंग अच्छी तरह साफ नहीं हुआ था तथापि उसकी कोशिशों ने उसके चेहरे की सफाई आधी से ज्यादे कर दी थी, आशा थी कि दो ही एक दिन में वह आइने में अपनी असली सूरत देख लेगा।

कैदखाने का रास्ता पाठकों को मालूम है क्योंकि तेजसिंह जब बिहारीसिंह की सूरत में यहां आए थे तो मायारानी के साथ कैदियों को देखने गये थे।

लाडिली के कमरे में से दस बारह तीर और कमान ले के धनपत तथा दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए मायारानी सुरंग में घुसी। जब कैदखाने के दर्वाजे पर पहुंची तो दर्वाजा ज्यों का त्यों बन्द पाया। कैदखाने की ताली और लाडिली के गायब होने का हाल कह के बिहारीसिंह और हरनामसिंह को ताकीद कर दी कि जब तक मैं लौट कर न आऊं तब तक तुम दोनों बड़ी होशियारी से इस दर्वाजे पर पहरा दो। इसके बाद धनपत को साथ लिए हुए मायारानी बाग के तीसरे दर्जे में उसी रास्ते से गई जिस राह से तेजसिंह भेजे गये थे।

हम पहिले लिख आए हैं कि बाग के तीसरे दर्जे में एक बुर्ज है और उसके चारो तरफ बहुत से मकान कमरे और कोठरियां हैं। बाग में एक छोटा सा चश्मा बह रहा था जिसमें हाथ भर से ज्यादे पानी कहीं नहीं था। मायारानी उसी चश्मे के किनारे किनारे थोड़ी दूर तक गई यहां तक कि वह एक मौलसिरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पेड़ से नीचे पहुंचीं जहां संगमर्मर का एक छोटा सा चबूतरा बना हुआ था और
उस चबूतरे पर पत्थर की मूरत आदमी के बराबर की बैठी हुई थी। रात पहर
भर से कम बाकी थी। चन्द्रमा धीरे धीरे निकल कर अपनी सुफेद रोशनी आस-
मान पर फैला रहा था। मायारानी ने उस मूरत की कलाई पकड़ कर उमेठी,
साथ ही मूरत ने मुंह खोल दिया। मायारानी ने उसके मुंह में हाथ डाल कर
कोई पेंच घुमाना शुरू किया। थोड़ी देर में चबूतरे के सामने की तरफ का एक
बड़ा सा पत्थर हलकी आवाज के साथ हट कर अलग हो गया और नीचे उतरने
के लिए सीढ़ियां दिखाई दीं। अपने पीछे पीछे धनपत को आने का इशारा करके
मायारानी उस तहखाने में उतर गई। यद्यपि तहखाने में अंधेरा था मगर माया-
रानी ने टटोल कर एक आले पर से लालटेन और उसके बालने का सामान उतारा
और बत्ती बाल कर चारो तरफ देखने लगी। पूरब तरफ सुरंग का एक छोटा सा
दर्वाजा खुला हुआ था, दोनों उसके अन्दर घुसीं और सुरंग में चलने लगीं। लग-
भग सौ कदम के जाने बाद वह सुरंग खत्म हुई और ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां
दिखाई दीं। दोनों औरतें ऊपर चढ़ गईं और उस बुर्ज के निचले हिस्से में पहुंचीं
जो बहुत से मकानों से घिरा हुआ था। यहां भी उसी तरह का चबूतरा और उस
पर पत्थर का आदमी बैठा हुआ था। वह भी किसी सुरंग का दर्वाजा था जिसे
मायारानी ने पहिली रीति से खोला। यह सुरंग चौथे दर्जे में जाने के लिए थी।

दोनों औरतें उस सुरंग में घुसीं। दो सौ कदम के लगभग जाने बाद वह
सुरंग खतम हुई और ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां नजर आईं। दोनों औरतें
ऊपर चढ़ कर एक कोठरी में पहुंचीं जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। कोठरी से
बाहर निकल कर धनपत और मायारानी ने अपने को बाग के चौथे हिस्से में
पाया। इस बाग का पूरा पूरा नकशा हम आगे चल कर खैंचेंगे यहां केवल माया-
रानी की कारवाई का हाल लिखते हैं।

कोठरी से आठ दस कदम की दूरी पर पक्का मगर सूखा कूआं था जिसके
अन्दर लोहे की एक मोटी जंजीर लटक रही थी। कूएं के ऊपर डोल और रस्सा
पड़ा था। डोल में लालटेन रख कर कूएं के अन्दर ढीला और जब वह तह में
पहुंच गया तो दोनों औरतें जंजीर थाम कर कूएं के अन्दर उतर गईं। नीचे
कूएं की दीवार के साथ छोटा सा दर्वाज़ा था जिसे खोल कर धनपत को पीछे
आने का इशारा करके मायारानी हाथ में लालटेन लिए हुए अन्दर घुसी। थोड़ी दूर
पर छोटी छोटी कई कोठरियां थीं। बिचली कोठरी में जिसके आगे लोहे का
जंगला लगा हुआ था एक आदमी हाथ में फौलादी ढाल लिए टहलता हुआ दिखाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ा। यहां बिल्कुल अंधेरा था मगर मायारानी के हाथ वाली लालटेन ने उस कोठरी की हर एक चीज और उस आदमी की सूरत बखूबी दिखा दी। इस समय उस आदमी की उम्र का अन्दाज करना मुश्किल है क्योंकि रंज और ग़म ने उसे सुखा कर कांटा कर दिया है, बड़ी बड़ी आंखों के चारो तरफ स्याही दौड़ गई है और उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ी हुई हैं, तो भी हर एक हालत पर ध्यान देकर कह सकते हैं कि वह किसी जमाने में बहुत ही हसीन और नाजुक रहा होगा मगर इस समय कैद ने उसे मुर्दा बना रक्खा है। उसके बदन के कपड़े बिल्कुल फटे और मैले थे और वह बहुत ही मजहूल हो रहा था। कोठरी के एक तरफ तांबे का घड़ा लोटा और कुछ खाने का सामान रक्खा हुआ था, ओढ़ने और बिछाने के लिए दो कम्बल थे। कोठरी की पिछली दीवार में खिड़की थी जिसके अन्दर से बदबू आ रही थी।

मायारानी और धनपत को देख कर वह आदमी ठहर गया और इस अवस्था में भी लाल लाल आंखें कर के उन दोनों की तरफ देखने लगा।

माया०। यह आखिरी दफे मैं तेरे पास आई हूं।

कैदी०। ईश्वर करे ऐसा ही हो और फिर तेरी सूरत दिखाई न दे।

माया०। अब भी अगर वह भेद मुझे बता दे तो तुझे छोड़ दूंगी।

कैदी०। हरामजादी कमीनी औरत, दूर हो मेरे सामने से !!

माया०। मालूम होता है वह भेद तू अपने साथ ले जायगा ?

कैदी०। बेशक ऐसा ही है।

माया०। यह ढाल तेरे हाथ में कहां से आई ?

कैदी०। तुझ चाण्डालिन को इस बात का जवाब मैं क्यों दूं ?

माया०। मालूम होता है कि तुझे अपनी जान प्यारी नहीं है और अब तू मौत के पंजे में पड़ा चाहता है !

कैदी०। बेशक पहिले मुझे अपनी जान प्यारी न थी, पांच दिन पीछे भोजन करना मुझे पसन्द न था, कभी कभी तेरी सूरत देखने की बनिस्बत मौत को हजार दर्जे अच्छा समझता था, मगर अब मैं मरने के लिए तैयार नहीं हूं।

माया०। (हंस कर) तुझे मेरे हाथ से बचाने वाला कौन है ?

कैदी०। (ढाल दिखा कर) यह !

धनपत०। (मायारानी के कान में) न मालूम यह ढाल इसे क्योंकर मिल गई ! क्या चण्डूल यहां पहुंच तो नहीं गया ?

माया०। (धनपत से) कुछ समझ में नहीं आता। यह ढाल भविष्य बुरा बता रही है !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घन० । मेरा कलेजा डर के मारे कांप रहा है ।

माया० । (कैदी से) यह तुझे किसी तरह बचा नहीं सकती और मैं तेरी जान लिए बिना नहीं जा सकती ।

कैदी० । खैर जो कुछ तू कर सके कर ले ।

माया० । तू बड़ा जिद्दी और वेहया है ।

कैदी० । हरामजादी की बच्ची, बेहया तो तू है जो घड़ी घड़ी मेरे सामने आती है ।

इस बात के जवाब में मायारानी ने एक तीर कैदी को मारा जिसे उसने बड़ी चालाकी से ढाल पर रोक लिया, दूसरा तीर चलाया, वह भी बेकार हुआ, तीसरा तीर चलाया, उससे भी कोई काम न चला । लाचार मायारानी कैदी का मुंह देखने लगी ।

कैदी० । तेरे किए कुछ भी न होगा ।

माया० । खैर देखूंगी तू कब तक अपनी जान बचाता है ।

कैदी० । मेरी जान कोई भी नहीं ले सकता, बल्कि मुझे निश्चय हो गया कि अब तेरी मौत आ गई ।

इसका जवाब मायारानी कुछ दिया ही चाहती थी कि एक आवाज ने उसे चौंका दिया । कैदी की बात पूरी होने के साथ ही किसी ने कहा, "बेशक माया-रानी की मौत आ गई !"

दूसरा बयान

कैदखाने का हाल हम ऊपर लिख चुके हैं पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं । उस कैदखाने में कई कोठरियां थीं जिनमें से आठ कोठरियों में तो हमारे बहादुर लोग कैद थे और बाकी कोठरियां खाली थीं । कोई आश्चर्य नहीं यदि हमारे पाठक महाशय उन बहादुरों के नाम भूल गये हों जो इस समय मायारानी के कैदखाने में बेबस पड़े हैं अस्तु एक दफे पुनः याद दिला देते हैं । उस कैदखाने में कुंअर इन्द्रजीतसिंह, कुंअर आनन्दसिंह, तारासिंह, भैरोसिंह, देवीसिंह के अति-रिक्त एक कुमारी भी थी जिसके मुख की सुन्दर आभा ने उस कैदखाने को उजाला कर रक्खा था । पाठक समझ ही गये होंगे कि हमारा इशारा कामिनी की तरफ है । यद्यपि वह ऐसी कोठरी में बन्द थी जिसके अन्दर मर्दों की निगाह नहीं जा सकती थी तथापि कुंअर आनन्दसिंह को इस बात पर ढाढ़स थी कि उनकी प्यारी कामिनी उनसे दूर नहीं है, मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह के रंज का कोई ठिकाना न था। वे कुछ भी नहीं जानते थे कि उनकी प्यारी किशोरी कहां और किस अवस्था में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कैदखाने से छत के सहारे शीशे की एक कन्दील लटक रही थी। उसी में मायारानी का एक आदमी रोज जाकर रोशनी ठीक कर देता था। ठीक कर देता हम इसलिए कहते हैं कि उस कैदखाने में अंधेरा रहने के कारण दिन रात बत्ती जला करती थी और ठीक समय पर आदमी जाकर उसे दुरुस्त कर दिया करता था। खाने पीने का सामान आठ पहर में एक दफे कैदियों को दिया जाता था। कैदखाने की भयानक अवस्था लिखने में विशेष समय नष्ट करना हम नहीं चाहते क्योंकि हमें किस्सा बहुत लिखना है और जगह कम है।

अब हम उस संध्या का हाल लिखते हैं जिस दिन मायारानी से और चण्डूल से बातचीत हुई थी या जब कमलिनी से लाडिली मिली थी। यों तो तहखाने के अन्दर दिन रात समान था और कैदियों को इस बात का ज्ञान बिल्कुल नहीं हो सकता था कि सूर्य कब उदय और कब अस्त हुआ तथापि बाहरी हिसाब से हमें समय लिखना ही पड़ता है।

संध्या होने के बाद एक आदमी कैदखाने में आया और कैदियों की तरफ देख कर बोला, "मायारानी की तरफ से इस समय आप लोगों के पास यह कहने के लिए मैं आया हूं कि कल पहर दिन चढ़ने के पहिले ही आप लोग इस दुनिया से उठा दिए जायंगे। इसके अतिरिक्त अपनी तरफ से अफसोस के साथ आपको इत्तिला देता हूं कि राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को भी हमारी मायारानी ने गिरफ्तार कर लिया है। उन्हीं के सामने आप लोग मारे जायंगे और इसके बाद उन दोनों की भी जान ली जायगी।"

इस आदमी के आने के पहिले कैदी लोग सुस्त और उदास बैठे हुए थे मगर जब इस आदमी ने आकर ऊपर लिखी बातें कहीं तो सभों की अवस्था बदल गई। क्रोध से सभों का चेहरा लाल हो गया और बदन कांपने लगा, लेकिन उस आदमी की बात का जवाब किसी ने भी कुछ न दिया।

कैदियों को सन्देशा देने के बाद मायारानी का आदमी उस कोठरी में गया जिसमें हथकड़ी और बेड़ी से बेबस बेचारी कामिनी कैद थी। थोड़ी ही देर बाद कामिनी को साथ लिए हुए वह आदमी बाहर निकला। उस समय सभों की निगाह उस बेचारी पर पड़ी। देखा कि रंज गम और दुःख के मारे वह सूख कर कांटा हो गई है, मालूम होता है मानों वर्षों से बीमार है सिर के बाल खुले और फैले हुए हैं, साड़ी मैली और खराब हो गई है, मगर भोलापन खूबसूरती और नजाकत ने इस अवस्था में भी उसका साथ नहीं छोड़ा है। उसके दोनों हाथ बंधे थे और वह बेड़ी के सबब से अच्छी तरह कदम नहीं उठा सकती थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभों के देखते देखते कामिनी को साथ लिए हुए मायारानी का आदमी कैदखाने के बाहर चला गया और कैदखाने का दर्वाजा फिर बन्द हो गया। ताली भरने की आवाज भी बहादुर कैदियों के कानों में पड़ी। यों तो वहां जितने कैदी थे सभी क्रोध के मारे कांप रहे थे मगर हमारे आनन्दसिंह की अवस्था कुछ और ही थी। एक तो अपने मां बाप का हाल सुन कर जोश में आ ही चुके थे दूसरे कामिनी को जो इस बेबसी के साथ कैदखाने के बाहर जाते देखा और भी उबल पड़े, क्रोध सम्हाल न सके, उठ के खड़े हो गये और जंगले वाली कोठरी में जिसमें कैद थे टहलने लगे। जिस जंगले वाली कोठरी में कुंअर इन्द्रजीतसिंह थे वह आनन्दसिंह के ठीक सामने थी और ऐयार लोग भी उन्हें अच्छी तरह देख सकते थे। टहलने के साथ आनन्दसिंह के पैर की जंजीर बोली जिससे सभों का ध्यान उनकी तरफ जा रहा।

इन्द्रजीत०। आनन्द !

आनन्द०। आज्ञा ?

इन्द्र०। क्या बेबसी हम लोगों का साथ न छोड़ेगी !

आनन्द०। बेशक छोड़ेगी, अब हम लोग इस अवस्था में कदापि नहीं रह सकते। हम लोग जंगली शेर नहीं हैं जो जंगल के अन्दर बन्द पड़े रहें !

इन्द्रजीत०। (खड़े होकर) हां ऐसा ही है, यह लोहे की तार अब हमें रोक नहीं सकती !

इतना कह के इन्द्रजीतसिंह ने इष्टदेव का ध्यान कर अपनी कलाई उमेठी और जोर करके हथकड़ी तोड़ डाली। बड़े भाई की देखादेखी आनन्दसिंह ने भी वैसा ही किया। हथकड़ी तोड़ने के बाद दोनों ने अपने पैरों की बेड़ियां खोलीं और तब जंगले के बाहर निकलने का उद्योग करने लगे। दोनों हाथों से लोहे का छड़ जो जंगले में लगा हुआ था पकड़ के और लात अड़ा के खींचने लगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि दोनों कुमार बड़े बहादुर और ताकतवर थे। छड़ टेढ़े हो हो कर छेदों से बाहिर निकलने लगे और बात की बात में दोनों शेर जंगले वाली कोठरी के बाहर निकल के खड़े हो गये। दोनों गले गले मिले और इसके बाद हर एक जंगले के छड़ों को निकाल कर दोनों भाइयों ने अपने ऐयारों को भी छुड़ाया और जोश में आकर बोले, "उद्योग से बढ़ के दुनिया में कोई पदार्थ नहीं !"

आनन्द०। ईश्वर चाहेगा तो अब थोड़ी देर में हम लोग इस कैदखाने के बाहर भी निकल जायंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रजीत०। हां अब हम लोगों को इसके लिए भी उद्योग करना चाहिये

भैरो० । हम लोग जोर करके तहखाने का दर्वाजा उखाड़ डालेंगे और इसी समय कम्बख्त मायारानी के सामने जा खड़े होंगे ।

ऐयारों को साथ लिए हुए दोनों भाई सदर दर्वाजे के पास गये जो बाहर से बन्द था । यह दर्वाजा चार अंगुल मोटे लोहे का बना था और इसकी मजबूत चूल भी जमीन में बहुत गहरी घुसी हुई थी इसलिए पूरे दो घण्टे तक मेहनत करने पर भी कोई नतीजा न निकला । क्रोध में आकर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने लोहे का छड़ जो जंगले में से निकला था उठा लिया और बाईं तरफ की दीवार जो चूना और ईंटों से बनी हुई थी तोड़ने लगे । उस समय ऐयारों ने दोनों भाइयों के हाथ से छड़ ले लिया और दीवार तोड़ना शुरू किया ।

पहर भर की मेहनत से दीवार में इतना बड़ा छेद हो गया कि आदमी उसकी राह बखूबी निकल जाय । भैरोंसिंह ने झांक कर देखा, उस तरफ बिल्कुल अंधेरा था और इस बात का ज्ञान जरा भी नहीं हो सकता था कि दीवार के दूसरी तरफ क्या है । हम ऊपर लिख आये हैं कि इस कैदखाने में छत के सहारे शीशे की एक कन्दील लटकती थी । इस समय ऐयारों ने उसी कन्दील की रोशनी से काम लेना चाहा । तारासिंह ने भैरोंसिंह के कन्धे पर चढ़ कर कन्दील उतार ली और उसे हाथ में लिए हुए उस सूराख की राह दूसरी तरफ निकल गये । इनके पीछे दोनों कुमार और ऐयार लोग भी गए । अब मालूम हुआ कि यह कोठरी है जो लगभग तीस हाथ के लम्बी और पन्द्रह हाथ से कम चौड़ी है । कुमार या ऐयार लोग अगर बिना रोशनी के इस कोठरी में आते तो जरूर दुःख भोगते क्योंकि यहां जमीन बराबर न थी, बीचोबीच में एक कूआं था और उसके चारो तरफ जमीन में चार दर्वाजे बने हुए थे जिनके देखने से मालूम होता था कि यहां कई तहखाने हैं और ये दर्वाजे नहीं तहखानों के रास्ते हैं । इस समय उन दर्वाजों के पल्ले जो लकड़ी के थे, अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ कि नीचे उतरने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं और उस कूए में भी लोहे की एक जंजीर लटक रही थी । इसके अतिरिक्त चारो तरफ की दीवारें बराबर थीं अर्थात् किसी तरफ कोई दर्वाजा न था जिसे खोल कर ये लोग बाहर जाने की इच्छा करते ।

इन्द्र० । मालूम होता है कि यहां आने या यहां से जाने के लिए इन तहखानों के सिवाय कोई राह नहीं है ।

आनन्द० । मैं भी यही समझता हूं ।

देवी० । इन तहखानों में उतरे बिना काम न चलेगा ।

तारा० । आज्ञा हो तो मैं रोशनी लेकर एक तहखाने में उतरूं और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखूं कि क्या है।

इन्द्रजीत०। खैर जाओ, कोई हर्ज नहीं।

आज्ञा पाकर तारासिंह एक तहखाने के मुंह पर गये मगर जब नीचे उतरने लगे तो कुछ देख कर रुक गये। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने रुकने का सबब पूछा जिसके जवाब में तारासिंह ने कहा, "इस तहखाने में रोशनी मालूम होती है और धीरे धीरे वह रोशनी तेज होती जाती है। मालूम होता है कि सुरंग है और कोई आदमी हाथ में बत्ती लिये इसी तरफ आ रहा है।"

दोनों कुमार और ऐयार लोग भी वहां गये और झांक कर देखने लगे। थोड़ी देर में दो कमसिन औरतें नजर पड़ीं जो सीढ़ी के पास आकर ऊपर चढ़ने का इरादा कर रही थीं। एक के हाथ में मोमबत्ती थी जिसे देखते ही कुमार ने पहिचान लिया कि यह कमलिनी है, साथ में लाडिली भी थी मगर उसे पहिचानते न थे, हां जब कैदी बन कर मायारानी के दर्बार में लाए गये थे तो मायारानी के बगल में बैठे हुए उसे देखा था और समझते थे कि वह भी हम लोगों की दुश्मन है। इस समय कमलिनी के साथ उसे देख कर कुमार को शक मालूम हुआ क्योंकि इन्द्रजीतसिंह कमलिनी को दोस्त समझते थे और दोस्त के साथ दुश्मन का होना बेशक खुटके की बात है।

कमलिनी जब सीढ़ी के पास पहुंची तो ऊपर रोशनी देख कर रुक गई, साथ ही कुमार ने पुकार कर कहा, "डरो मत, ऊपर चली आओ, मैं हूं, इन्द्रजीतसिंह।"

कमलिनी कुमार की आवाज पहिचान गई और लाडिली को साथ लिये ऊपर चली आई मगर दोनों कुमारों और उनके ऐयारों को यहां देख कर ताज्जुब करने लगी।

कमलिनी०। आप लोग यहां कैसे आये ?

इन्द्रजीत०। यही बात मैं तुमसे पूछने वाला था !

कमलिनी०। मैं तो आपको छुड़ाने के लिए आई हूं मगर मालूम होता है कि मेरे आने के पहिले ही किसी ने पहुंच कर आप लोगों को छुड़ा दिया।

देवी०। कोई दूसरा नहीं आया, दोनों कुमारों ने स्वयं अपनी अपनी हथकड़ी तोड़ डाली, जंगलों का पींखचा खैंच कर बाहर निकल आये और हम लोगों को भी कैद से छुड़ाया, इसके बाद दीवार तोड़ कर हम लोग अभी थोड़ी देर हुई इधर आये हैं।

कमलिनी०। (हंस कर) बहादुर हैं, यह न ऐसा करेंगे तो दूसरा कौन करेगा!

इन्द्र०। हम एक बात तुमसे और पूछा चाहते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलिनी० । आपका मतलब मैं समझ गई । (लाडिली की तरफ देख कर) शायद इसके बारे में आप कुछ पूछेंगे !

इन्द्रजीत० । हां ठीक है, क्योंकि इन्हें हमने उसके पास बैठे देखा था जिसके फरेब ने हमारी यह दशा की है, और लोगों की बातों से यह भी मालूम हुआ कि उसका नाम मायारानी है ।

कमलिनी० । बहुत दिनों तक साथ रहने पर भी आपको मेरा भेद कुछ मालूम नही हुआ मगर इस समय मैं इतना कह देना उचित समझती हूं कि यह मेरी छोटी बहिन है और मायारानी बड़ी बहिन है । हम तीनों बहिनें हैं लेकिन अनबन होने के कारण मैं उससे अलग हो गई और आज इसने भी उसका साथ छोड़ दिया । आज से पहले वह मेरी ही दुश्मन थी मगर आज से इसकी भी जिसका नाम लाडिली है जान की प्यासी हो गई मगर इतना सुनने पर भी मैं समझती हूं कि आप मुझे अपना दुश्मन न समझते होंगे ।

इन्द्रजीत० । नहीं नहीं कदापि नहीं, मैं तुम्हें अपना हमदर्द समझता हूं, तुमने मेरे साथ बहुत कुछ नेकी की है ।

कमलिनी० । आप लोगों को छुड़ाने के लिए तेजसिंह भी यहां आये थे मगर गिरफ्तार हो गये ।

इन्द्र० । क्या तेजसिंह भी गिरफ्तार हो गये ? लेकिन वे उस कैदखाने में नहीं लाये गये जहां हम लोग थे !

कमलिनी० । वह दूसरी जगह रक्खे गये थे । मैंने उन्हें भी कैद से छुड़ाया है, अब थोड़ी ही देर में आप उनसे मिला चाहते हैं ।

आनन्दसिंह चुपचाप इन दोनों की बातें सुन रहे थे और छिपी निगाहों से लाडिली के रूप की अलौकिक छटा का भी आनन्द ले रहे थे । लाडिली भी प्रेम की निगाहों से उन्हें देख रही थी । इस बात को कमलिनी ने भी जान लिया मगर वह तरह तरह दे गई । जब आनन्दसिंह ने तेजसिंह का हाल सुना तब चौंके और कमलिनी की तरफ देख कर बोले—

आनन्द० । सुना है कि हमारे माता पिता भी........

कमलिनी० । हां, उन दोनों को भी कम्बख्त मायारानी ने फंसा लिया है ! हाय, मैंने सुना है कि वे दोनों बेचारे बड़े ही संकट में हैं और सहज ही में उन दोनों का छूटना मुश्किल है तथापि उद्योग में विलम्ब न करना चाहिए । अब आप कोई सवाल न कीजिए और यहां से जल्द निकल चलिये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता का हाल सुन कर सब के सब घबड़ा

गये और आगे कुछ सवाल करने की हिम्मत न पड़ी। कुमार कमलिनी के साथ चलने के लिए तैयार हो गए और सभों को साथ लिए हुए कमलिनी फिर उसी तहखाने में उतर गई जहां से आई थी। कुअर इन्द्रजीतसिंह किशोरी का और आनन्दसिंह कामिनी का हाल पूछने के लिए बेचैन थे मगर मौका न समझ कर चुप रह गये।

नीचे जाने पर मालूम हुआ कि वह एक सुरंग का रास्ता था मगर यह सुरंग साधारण न थी। इसकी चौड़ाई केवल इतनी थी कि दो आदमी बराबर मिल कर जा सकते थे। ऊंचाई की यह अवस्था थी कि हर एक मर्द हाथ ऊंचा करके उसकी छत छू सकता था। दोनों तरफ की दीवार स्याह पत्थर की थी जिस पर तरह तरह की खूबसूरत भयानक और कहीं कहीं आश्चर्यजनक तस्वीरें मुसौवरों की कारीगरी का नमूना दिखा रही थीं अर्थात् रंगों से बनी थीं पत्थर गढ़ कर नहीं बनाई गई थीं, परन्तु उन तस्वीरों के रंग की भी यह अवस्था थी कि अभी दो चार दिन की बनी मालूम होती थीं जिन्हें देख हमारे कुमारों और ऐयारों को बहुत ही ताज्जुब मालूम हो रहा था।

कम०। (इन्द्रजीतसिंह से) आप चाहते होंगे कि इन विचित्र तस्वीरों को अच्छी तरह देखें।

इन्द्र०। बेशक ऐसा ही है, इस दौड़ादौड़ में ऐसी उत्तम तस्वीरों के देखने का आनन्द कुछ भी नहीं मिल सकता और यहां की एक एक तस्वीर ध्यान देकर देखने योग्य है परन्तु क्या किया जाय जब से अपने माता पिता का हाल तुम्हारी जुबानी सुना है, जी बेचैन हो रहा है, यही इच्छा होती है कि जहां तक जल्द हो सके उनके पास पहुंचें और उन्हें कैद से छुड़ावें। तुम स्वयं कह चुकी हो कि वह बड़े संकट में पड़े हैं परन्तु यह न जाना गया कि उन्हें किस प्रकार का संकट है।

कम०। आपका कहना बहुत ठीक है, इन तस्वीरों को देखने के लिए बहुत समय चाहिये बल्कि इनका हाल और मतलब जानने के लिए कई दिन चाहिए, और यह समय यहां अटकने का नहीं है, मगर साथ ही इसके यह भी याद रखिये कि आप दो चार या दस घंटे के अन्दर ठिकाने पहुंच कर अपने माता पिता को नहीं छुड़ा सकते। मुझे ठीक ठीक मालूम नहीं कि वह किस कैदखाने में कैद हैं, पहिले तो इसी बात का पता लगाने के लिए कई दिन नहीं तो कई पहर चाहिये।

इन्द्र०। तो क्या तुमने उन्हें अपनी आंखों से नहीं देखा?

कमलिनी०। नहीं मगर इतना जानती हूं कि इस बाग के चौथे दर्जे में किसी ठिकाने वे कैद हैं।

इन्द्र०। क्या इस बाग के कई दर्जे हैं जिसमें मायारानी रहती है और जहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हम लोग बेहोश करके लाये गये थे ?

कम० । हां इस बाग के चार दर्जे हैं । पहिले दर्जे में तो सिपाहियों और नौकरों के ठहरने का ठिकाना है, दूसरे दर्जे में स्वयं मायारानी रहती है, तीसरे और चौथे दर्जे में कोई नहीं रहता, हां यदि कोई ऐसा कैदी हो जिसे बहुत ही गुप्त रखना मंजूर हो तो वहां भेज दिया जाता हैं । तीसरे और चौथे दर्जे को तिलिस्म कहना चाहिए बल्कि चौथा दर्जा तो (कांप कर) ओफ, बड़ी बड़ी भयानक चीजों से भरा हुआ है ।

इन्द्र० । तो उसी चौथे दर्जे में हमारे माता पिता कैद हैं ?

कमलिनी० । जी हां ।

आनन्द० । शायद तुम्हारी छोटी बहिन कुछ जानती हों जो तुम्हारे साथ हैं ?

कमलिनी० । नहीं नहीं, यह बेचारी तीसरे चौथे दर्जे का हाल कुछ भी नहीं जानती ।

लाडिली० । बल्कि तीसरे और चौथे दर्जे का पूरा पूरा हाल मायारानी को भी नहीं मालूम । कमलिनी बहिन को भी कुछ मालूम न था मगर दो ही चार महीनों में न मालूम क्योंकर वहां का विचित्र हाल इन्हें मालूम हो गया । देखिये इसी सुरंग को जिसमें हमलोग जा रहे हैं मायारानी भी नहीं जानती थी और मुझे तो इसका कुछ गुमान भी न था ।

यहां पर कमलिनी के हाथ की वह मोमबत्ती जल कर पूरी हो गई और कमलिनी ने उसे जमीन पर फेंक दिया । अब इस सुरंग में केवल उस कन्दील की रोशनी रह गई जो ये लोग कैदखाने में से लाये थे और इस समय तारासिंह उसे अपने हाथ में लटकाये सभों के पीछे पीछे आ रहे थे । कमलिनी के कहे मुताबिक तारासिंह अब कन्दील लिए हुए आगे आगे चलने लगे । लगभग बीस कदम जाने बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् वहां से चारो तरफ सुरंगें गई हुई थीं । कमलिनी ने रुक कर इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखा और कहा, "अब यहां से अगर हम लोग चाहें तो इस तिलिस्मी मकान के बाहर निकल जा सकते हैं ।"

इन्द्रजीत० । यह सामने वाला रास्ता कहां गया है ?

कमलिनी० । बाग के तीसरे और चौथे दर्जे में जाने के लिए यही रास्ता है और बाईं तरफ वाली सुरंग उस दूसरे दर्जे में गई है जिसमें मायारानी रहती है ।

आनन्द० । और दहिनी तरफ वाले से हम लोग कहां पहुंचेंगे ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलिनी० । इस तिलिस्मी मकान या बाग के बाहर हो जाने के लिए वही राह है ।

इन्द्रजीत० । तो अब तुम हम लोगों को कहां ले जाना चाहती हो ?

कमलिनी० । जहां आप कहिये ।

आनन्द० । अगर मायारानी के बाग में ले चलो तो हम उसे इसी समय गिरफ्तार कर लें, इसके बाद सब काम सहज ही में हो जायगा ।

कमलिनी० । यह काम सहज नहीं है और इसके सिवाय जहां तक मैं समझती हूं मायारानी इस समय अपने कमरे में न होगी या यदि होगी भी तो हर तरह से होशियार होगी । केवल इतना ही नहीं वहां जाने से और भी कई प्रकार का धोखा है । एक तो उस बाग की चहारदीवारी के बाहर कूद कर या कमन्द लगा कर निकल जाना असम्भव है, दूसरे उस बाग की हिफाजत के लिए पांच सौ सिपाही मुकर्रर हैं जो हमेशा मुस्तैद और सहज ही में मायारानी के पास पहुंच जाने के लिए तैयार रहते हैं । मायारानी को गिरफ्तार करके बाग के बाहर ले जाना कठिन है । मेरी समझ में तो आपको एक दफे यहां से बाहर निकल जाना चाहिए ।

इन्द्रजीत० । मगर मैं कुछ और ही चाहता हूं ।

कमलिनी० । वह क्या ?

इन्द्रजीत० । यदि तुमसे हो सके तो हमें किसी ऐसी जगह ले चलो जो इस बाग की सरहद के अन्दर हो और जहां दो तीन रोज तक गुप्त रीति से हम लोग रह भी सकें ।

कमलिनी० । (कुछ सोच कर) हां यह हो सकता है । और इस राय को मैं भी पसन्द करती हूं ।

लाडिली० । (कमलिनी से) तुमने कौन सी ऐसी जगह सोची है !

कम० । ऐसी जगह बाग के तीसरे दर्जे में तो हई है बल्कि चौथे दर्जे में भी है ।

लाडिली० । चौथे दर्जे में जाकर दो तीन दिन तक रहना उचित नहीं क्योंकि वह बड़ी भयानक जगह है, क्या तुम वहां के भेद अच्छी तरह जानती हो ?

कम० । हरे कृष्ण गोविन्द ! वहां का हाल जानना क्या खिलवाड़ है ? हां एक मकान के अन्दर जाने का रास्ता जरूर मालूम है जहां कोई दूसरा नहीं पहुंच सकता ।

इन्द्रजीत० । तो फिर उसी जगह हम लोगों को क्यों नहीं ले चलती हो ?

कम० । (कुछ सोच कर) हां मुझे अब याद आया, इतनी देर से व्यर्थ भटक रही हूं, अच्छा आप लोग मेरे पीछे पीछे चले आइये ।

सभों को साथ लिए हुए कमलिनी रवाना हुई । थोड़ी दूर जाने बाद एक बन्द दर्वाजा मिला । वह दर्वाजा लोहे का था मगर यह नहीं मालूम होता था कि वह किस तरह खुलेगा क्योंकि न तो उसमें कहीं ताली लगाने की जगह थी और न कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जंजीर या कुंडी ही दिखाई देती थी। दर्वाजे के दोनों बगल दीवार में तीन तीन हाथ ऊंचे दो हाथी बने हुए थे। ये हाथी चांदी के थे और इनके धड़ का अगला हिस्सा कुछ आगे की तरफ बढ़ा हुआ था। एक हाथी के सूंड़ में दूसरे हाथी की सूंड़ गुथी थी। इन दोनों हाथियों के अगले एक एक पैर आगे बढ़े और कुछ जमीन की तरफ इस प्रकार मुड़े हुए थे जिसके देखने से मालूम होता था कि दो सुफेद हाथी क्रोध में आकर सूंड़ मिला रहे हैं और लड़ने के लिए तैयार हैं।

कम०। एक ग्रन्थ के पढ़ने से मुझे मालूम हुआ है कि यह दर्वाजा कमानी के सहारे से खुलता और बन्द होता है और इसकी कमानी इन दोनों हाथियों के पेट में है जिस पर दोनों सूंड़ों के दवाने से दवाव पहुंचता है, अस्तु यहां ताकत का काम है। इन दोनों सूंड़ों को जोर के साथ यहां तक झुकाना और दवाना चाहिए कि दर्वाजे के साथ लग जांय। मैं देखा चाहती हूं कि आपके ऐयारों में कितनी ताकत है।

देवी०। अगर किसी आदमी के झुकाये यह झुक सकता है तो पहिले मुझे उद्योग करने दीजिए।

कमलिनी०। आइए आइए, लीजिए मैं हट जाती हूं।

देवीसिंह ने दोनों सूंड़ों पर हाथ रख और छाती से अड़ा कर जोर किया मगर एक बित्ते से ज्यादे न दबा सके और दर्वाजा दो हाथ की दूरी पर था इसलिए दो हाथ दबा कर ले जाने की आवश्यकता थी। आखिर देवीसिंह यह कहते हुए पीछे हटे, "यह राक्षसी काम है।"

इसके बाद और ऐयारों ने भी जोर किया मगर देवीसिंह से ज्यादे काम न कर सके। तब कमलिनी कुमारों की तरफ देख कर हंसी और बोली, "सिवाय आप दोनों के यह काम किसी तीसरे से न हो सकेगा!"

आनन्द०। (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) यदि आज्ञा हो तो मैं भी जोर करूं?

इन्द्रजीत०। क्या हर्ज है, तुम यह काम बखूबी कर सकते हो!

आज्ञा पाते ही कुंअर आनन्दसिंह ने दोनों सूंड़ों पर हाथ रख के जोर किया और पहिले ही जोर में दर्वाजे के साथ लगा दिया। यह हाल देखते ही लाडिली ने जोश में आकर कहा, "वाह वाह! कैद की मुसीबत उठा कर कमजोर होने पर भी यह हाल है!"

दर्वाजे के साथ सूंड़ों का लगना था कि हाथियों के चिंघाड़ने की हलकी आवाज आई और दर्वाजा जो एक ही पल्ले का था सरेसर करता जमीन के अन्दर घुस गया। कमलिनी ने आनन्दसिंह से कहा, "अब सूंड को पीछे की तरफ हटाइए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगर पहिले सूंड़ के नीचे से या उसके ऊपर से लांघ कर दूसरी तरफ निकल गलिए।

हाथ में कंदील लिए हुए पहिले तारासिंह टप गये और दर्वाजे के उस पार जा खड़े हुए, तब इन्द्रजीतसिंह दर्वाजे के उस पार पहुंचे, उसके बाद कुंअर आनन्दसिंह जाया ही चाहते थे कि एक नई घटना ने सब खेल ही बिगाड़ दिया।

दर्वाजे के उस पार एक आदमी न मालूम कब से छिपा बैठा था। उसने फुर्ती से आगे बढ़ कर एक लात उस कंदील में मारी जो तारासिंह के हाथ में थी। कंदील हाथ से छूट कर जमीन पर तो न गिरी मगर बुझ गई और एक दम अंधकार हो गया। यद्यपि यह काम उसने बड़ी फुर्ती से किया तथापि इन लोगों की निगाह उस पर पड़ ही गई, लेकिन उसकी असली सूरत नजर न पड़ी क्योंकि वह काला कपड़ा पहिनें और अपने चेहरे को नकाब से छिपाए हुए था।

अंधेरा होते ही उसने दूसरा काम किया। भुजाली उसके पास थी जिसका एक भरपूर हाथ उसने कुंअर इन्द्रजीतसिंह के सर पर जमाया। अंधेरे के सबब से निशाने में फर्क पड़ गया तो भी कुमार के बायें मोढ़े पर गहरी चोट बैठी। चोट खाते ही कुमार ने पुकार कर कहा, "सब कोई होशियार रहना! दुश्मन के हाथ में हर्बा है और वह मुझे जख्मी भी कर चुका है!"

यह हाल देख और सुन कर कमलिनी ने झट अपने तिलिस्मी खंजर से काम लिया। हम ऊपर लिख आये हैं कि उसके कमर में दो तिलिस्मी खंजर हैं। उसने एक खंजर हाथ में लेकर उसका कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई जिससे कमलिनी के सिवाय जो आदमी वहां थे कोई भी उस चमक को न सह सका और सभों ने अपनी अपनी आंखें बन्द कर लीं।

दर्वाजे के उस पार भी उसी तरह की सुरंग थी। कमलिनी ने देखा कि दुश्मन अपना काम करके सामने की तरफ भागा जा रहा है, मगर खंजर की चमक ने उसे भी चौंधिया दिया था जिसका नतीजा यह हुआ कि कमलिनी बहुत जल्द ही उसके पास जा पहुंची और खंजर उसके बदन से लगा दिया जिसके साथ ही वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। खंजर कमर में रख कर कमलिनी लौटी और उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर एक मोमबत्ती जलाई तथा इतने में हमारे ऐयार लोग भी दर्वाजे के दूसरी तरफ जा पहुंचे।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह के मोढ़े से खून निकल रहा था। यद्यपि कुमार को उसकी कुछ परवाह न थी और उनके चेहरे पर भी किसी प्रकार का रंज न मालूम होता था तथापि देवीसिंह ने [illegible] बांधने का इरादा किया मगर कमलिनी ने रोक कर अपने बटुए में से किसी प्रकार के तेल की एक शीशी निकाली और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने नाजुक हाथों से घाव पर तेल लगाया जिससे तुरंत ही खून बन्द हो गया। इसके बाद अपने आंचल में से थोड़ा कपड़ा फाड़ कर जख्म पर बांधा। उसके एहसान ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह को पहिले ही अपना कर लिया था अब उसकी मुहब्बत और हमदर्दी ने उन्हें अच्छी तरह अपने काबू में कर लिया।

इन्द्रजीत०। (कमलिनी से) तुम्हारे अहसानों के बोझ से मैं दबा ही जाता हूं। (मुस्कुरा कर और धीरे से) देखना चाहिये सिर उठाने का दिन भी कभी आता है या नहीं।

कमलिनी०। (मुस्कुरा कर) बस रहने दीजिये, बहुत बातें न बनाइये।

आनन्द०। मालूम होता है वह शैतान भाग गया ?

कमलिनी०। नहीं नहीं मेरे सामने से भाग कर निकल जाना जरा मुश्किल है, आगे चल कर आप उसे जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ देखेंगे।

इन्द्रजीत०। इस समय तो तुमने वह काम किया जिसे करामात कहना चाहिये!

कमलिनी०। मैं बेचारी क्या कर सकती हूं, इस समय तो (खंजर की तरफ इशारा करके) इसने बड़ा काम किया।

इन्द्रजीत०। बेशक यह अनूठी चीज है, इसकी चमक ने तो आंखें बन्द कर दीं, कुछ देख भी न सके कि तुमने क्या किया ?

कमलिनी०। यह तिलिस्मी खंजर है और इसमें बहुत से गुण हैं:

इन्द्रजीत०। मैं सुना चाहता हूं कि इस खंजर में क्या क्या गुण है। बल्कि और कई बातें पूछा चाहता हूं मगर यकायक दुश्मन के पहुंचने से....

कमलिनी०। खैर ईश्वर की मर्जी, मैं खूब जानती हूं कि सिवाय इस शैतान के और कोई यहां तक नहीं आ सकता, तिस पर भी इस दर्वाजे को खोलने की इसे सामर्थ न थी इसी से चुपचाप दबका हुआ था। मगर फिर भी इसका यहां तक पहुंच जाना ताज्जुब मालूम होता है।

इन्द्रजीत०। क्या तुम उसे पहिचानती हो ?

कमलिनी०। हां कुछ कुछ शक तो होता है मगर निश्चय किये बिना कुछ नहीं कह सकती।

इन्द्रजीत०। जो हो मगर अब हम लोगों को यहां से निकल चलने के लिए जल्दी करना चाहिये।

कमलिनी०। पहिले इस दर्वाजे को बन्द कर लीजिये नहीं तो इस राह से दुश्मन के आ पहुंचने का डर रहेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दर्वाजे के दूसरी तरफ भी उसी प्रकार के दो हाथी बनेहुए थे। कमलिनी के

कहे मुताबिक आनन्दसिंह ने जोर से सूंड़ को दर्वाजे की तरफ हटाया जिससे उस तरफ वाले हाथियों की सूंड़ ज्यों की त्यों सीधी हो गई और दर्वाजा भी बंद हो गया।

इन्द्रजीत०। मालूम होता है कि अगर इस तरफ से कोई दर्वाजा खोलना चाहे तो इन हाथियों की सूंड़ों को जो इस समय दर्वाजे के साथ लगी हुई हैं अपनी तरफ खेंच कर सीधा करना पड़ेगा और ऐसा करने से उस तरफ के हाथियों की सूंड़ें दर्वाजे के पास आ लगेंगी।

कमलिनी०। आपका सोचना बहुत ठीक है, वास्तव में ऐसा ही है।

इन्द्रजीत०। अच्छा अब यहां से चल देना चाहिए, चलते चलते इस खंजर का गुण भी कहो जिसकी करामात मैं अभी देख चुका हूं।

कमलिनी०। चलते चलते कहने की कोई जरूरत नहीं, मैं इसी जगह अच्छी तरह समझा कर एक खंजर आपके हवाले करती हूं।

उस खंजर में जो जो गुण था उसके विषय में ऊपर कई जगह लिखा जा चुका है, कमलिनी ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह को सब समझाया और इसके बाद खंजर के जोड़ की अंगूठी उनके हाथ में पहिना कर एक खञ्जर उनके हवाले किया जिसे पाकर कुमार बहुत प्रसन्न हुए।

लाडिली०। (कमलिनी से) एक खञ्जर छोटे कुमार को भी देना चाहिए।

कमलिनी०। (मुस्कुरा कर) आपके सिफारिश की कोई जरूरत नहीं, मैं खुद एक खंजर छोटे कुमार को दूंगी।

आनन्द०। कब ?

कमलिनी०। यह दूसरा खञ्जर उसी तरह का मेरे पास है। इसे मैं आपको अभी दे देती मगर इसलिए रख छोड़ा है कि आप ही के लिए इस घर में अभी कई तरह का काम करना है, शायद कभी दुश्मनों के....

आनन्द०। नहीं नहीं, यह खञ्जर जो तुम्हारे पास रह गया है लेकर मैं तुम्हें खतरे में नहीं डाल सकता, कल परसों या दस दिन में जब मौका हो तब मुझे देना।

कमलिनी०। जरूर दूंगी, अच्छा अब यहां से चलना चाहिए।

दोनों कुमारों और ऐयारों को साथ लिए हुए कमलिनी वहां से रवाना हुई और उस ठिकाने पहुंची जहां वह शैतान बेहोश पड़ा हुआ था जिसने कंदील बुझा कर कुमार को जख्मी किया था। चेहरे पर से नकाब हटाते ही कमलिनी चौंकी और बोली, "हैं, यह तो कोई दूसरा ही है! मैं समझे हुए थी कि दारोगा है, किसी तरह राजा वीरेन्द्रसिंह की कैद से छूट कर आ गया होगा, मगर इसे तो मैं बिल्कुल नहीं पहिचानती। (कुछ रुक कर) उसने मेरे साथ दगा तो नहीं की! कौन ठिकाना,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे आदमी का विश्वास न करना चाहिए, मगर मैंने तो उसके साथ....''

ऊपर लिखी बातें कह कमलिनी चुप हो गई और थोड़ी देर तक किसी गम्भीर चिन्ता में डूबी सी दिखाई पड़ी। आखिर कुंअर इन्द्रजीतसिंह से रहा न गया, धीरे से कमलिनी की उंगली पकड़ कर बोले :—

इन्द्रजीत०। तुम्हें इस अवस्था में देख कर मुझे जान पड़ता है कि शायद कोई नई मुसीबत आने वाली है जिसके विषय में तुम कुछ सोच रही हो।

कमलिनी०। हां ऐसा ही है, मेरे कामों में विघ्न पड़ता दिखाई देता है। अच्छा मर्जी परमेश्वर की! आपके लिए कष्ट उठाना क्या जान तक देने को तैयार हूं। (कुछ रुक कर) अब देर करना उचित नहीं, यहां से निकल ही जाना चाहिए।

इन्द्र०। क्या मायारानी के इस अनूठे बाग के बाहर निकलने को कहती हो?

कमलिनी०। हां।

इन्द्र०। मैं तो सोचे हुए था कि माता पिता को छुड़ा कर तभी यहां से जाऊंगा।

कमलिनी०। मैंने भी यही निश्चय किया था परन्तु क्या किया जाय, सब के पहिले अपने को बचाना उचित है, यदि आप ही आफत में फंसे रहेंगे तो उन्हें कौन छुड़ायेगा!

इन्द्रजीत०। यहां की अद्भुत बातों से मैं अनजान हूं इसलिए जो कुछ करने को कहोगी करना ही पड़ेगा, नहीं तो मेरी राय तो यहां से भागने की न थी क्योंकि जब मेरे हाथ पैर खुले हैं और सचेत हूं तो एक क्या पांच सौ से भी डर नहीं सकता। जिस पर तुम्हारा दिया हुआ यह अनूठा तिलिस्मी खंजर पाकर एक दफे साक्षात काल का भी मुकाबला करने से बाज न आऊंगा।

कम०। आपका कहना ठीक है, मैं आपकी बहादुरी को अच्छी तरह जानती हूं, परन्तु इस समय नीति यही कहती है कि यहां से निकल जाओ।

इन्द्रजीत०। अगर ऐसा ही है तो चलो मैं चलता हूं। (धीरे से कान में) तुम्हारी बुद्धिमानी पर मुझे डाह होता है।

कमलिनी०। (धीरे से) डाह कैसा?

इन्द्रजीत०। (दो कदम आगे ले जाकर) डाह इस बात का कि वह बड़ा ही भाग्यशाली होगा जिसके तुम पाले पड़ोगी।

इसके जवाब में कमलिनी ने कुमार को एक हलकी चुटकी काटी और धीरे से कहा, "मुझे तो तुमसे बढ़ कर भाग्यशाली कोई दिखाई नहीं पड़ता मगर....!" आह, कमलिनी की इस बात ने तो कुमार को फड़का दिया लेकिन इस 'मगर' शब्द ने भी बड़ा अंधेर किया जिसका सबब हमारे मनचले पाठक स्वयं समझ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायंगे क्योंकि वे कमलिनी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह की पहली बातें अभी भूले न होंगे जो तालाब के बीच वाले उस मकान में हुई थीं जहां कमलिनी रहा करती थी।

कमलिनी०। (देवीसिंह से) इस आदमी को जो बेहोश पड़ा है उठा के ले चलना चाहिए।

देवी०। हां हां, इसे मैं उठा कर ले चलूंगा।

इन्द्रजीत०। शायद हमलोगों को फिर लौटना पड़े क्योंकि बाहर निकलने का रास्ता पीछे छोड़ आये हैं।

कमलिनी०। हां सुगम रास्ता तो यही था मगर अब मैं उधर न जाऊंगी, कौन ठिकाना हाथी वाले दर्वाजे के उस तरफ दुश्मन लोग आ गये हों क्योंकि कैदखाने की दीवार आप तोड़ ही चुके हैं और उधर वाली सुरंग का मुंह खुला रहने के कारण किसी का आना कठिन नहीं है।

इन्द्रजीत०। तब दूसरी राह कौन सी है? क्या उधर चलोगी जिधर से यह दुश्मन आया है।

कमलिनी०। नहीं उधर भी दुश्मनों का गुमान है, आइये मैं एक और ही राह से ले चलती हूं।

आगे आगे कमलिनी और उसके पीछे दोनों कुमार और ऐयार लोग रवाना हुए।

यहां भी दोनों तरफ दीवारों में सुन्दर तस्वीरें बनी हुई थीं। दस बारह कदम आगे जाने बाद बगल की दीवार में एक छोटा सा खुला हुआ दर्वाजा था जिसे देख कर कमलिनी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यह आदमी इसी राह से आया होगा क्योंकि अभी तक दर्वाजा खुला हुआ है, मगर मैं दूसरी ही राह से चलूंगी जो जरा कठिन है।"

कुमार०। मैं तो कहता हूं कि इसी राह से चलो, दर्वाजे पर दस पांच दुश्मन मिल ही जायंगे तो क्या होगा।

कमलिनी०। खैर तब चलिये।

सब कोई उस राह से बाहर हुए और कमलिनी ने उस दर्वाजे को जो एक खटके के सहारे खुलता और बन्द होता था बन्द कर दिया। उस तरफ भी थोड़ी दूर सुरंग में ही चलना पड़ा। जब सुरंग का अन्त हुआ तो छोटी छोटी सीढ़ियां ऊपर चढ़ने के लिए मिलीं। कमलिनी ने ऊपर की तरफ देखा और कहा, "यहां का दर्वाजा तो खुला है।" सबके आगे कमलिनी और फिर दोनों कुमार और ऐयार लोग ऊपर चढ़े। ये सीढ़ियां घूमती हुई ऊपर गई थीं, मालूम होता था कि किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुर्ज पर चढ़ रहे हैं।

जब सीढ़ियों का अन्त हुआ तो एक चक्कर पहिए को तरह बना हुआ दिखाई दिया जिसे कमलिनी ने चार पांच दफे घुमाया। खटके की आवाज के साथ पत्थर की एक चट्टान अलग हो गई और सभी लोग उस राह से निकल कर बाहर मैदान में दिखाई देने लगे। बाहर सन्नाटा देख कर कमलिनी ने कहा, "शुक्र है कि यहां हमारा दुश्मन कोई नहीं दिखाई देता।"

जिस राह से कुमार और ऐयार लोग बाहर निकले वह पत्थर का एक चबूतरा था जिसके ऊपर महादेव का लिंग स्थापित था। चबूतरे के नीचे की तरफ का बगल वाला पत्थर खुल कर जमीन के साथ सट गया था और वही बाहर निकलने का रास्ता बन गया था। लिंग के बगल में तांबे का बड़ा सा नन्दी (बैल) बना हुआ था और उसके मोढ़े पर लोहे का एक सर्प गुड़ेड़ी मारे बैठा था। कमलिनी ने सांप के सिर को दोनों हाथ से पकड़ कर उभाड़ा और साथ ही नन्दी ने मुंह खोल दिया, तब कमलिनी ने उसके मुंह में हाथ डाल कर कोई पेंच घुमाया। वह पत्थर की चट्टान जो अलग हो गई थी फिर ज्यों की त्यों हो गई और सुरंग का मुंह बन्द हो गया। कमलिनी ने सांप के फन को फिर दबा दिया और बैल ने भी अपना मुंह बन्द कर लिया।

इन्द्रजीत०। (कमलिनी से) वह दर्वाजा भी अजब तरह से खुलता और बंद होता है।

कमलिनी०। हां बड़ी कारीगरी से बनाया गया है।

इन्द्रजीत०। इसके खोलने और बन्द करने की तर्कीब मायारानी को मालूम होगी?

कमलिनी०। जी हां बल्कि (लाडिली की तरफ इशारा करके) यह भी जानती है, क्योंकि बाग के तीसरे दर्जे में जाने के लिये यह भी एक रास्ता है जिसे हम तीनों बहिनें जानती हैं, मगर उस हाथी वाले दर्वाजे का हाल जिसे आपने खोला था सिवाय मेरे और कोई भी नहीं जानता।

आनन्द०। यह जगह बड़ी भयानक मालूम पड़ती है!

कमलिनी०। जी हां यह पुराना मसान है और गंगाजी भी यहां से थोड़ी ही दूर पर हैं। किसी जमाने में जब का यह मसान है, गंगाजी इसी जगह पास ही में बहती थीं मगर अब कुछ दूर हट गईं और इस जगह बालू पड़ गया है।

आनन्द०। तो अब क्या करना और कहां चलना चाहिये?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमलिनी०। अब हमको गंगा पार होकर जमानिया में पहुंचना चाहिये।

वहां मैंने एक मकान किराये पर ले रक्खा है जो बहुत ही गुप्त स्थान में है, उसी में दो तीन दिन रह कर कारंवाई करूंगी।

इन्द्रजीत०। गंगा पार किस तरह जाना होगा ?

कमलिनी०। थोड़ी ही दूर पर गंगा के किनारे एक किश्ती बंधी हुई है जिस पर मैं आई थी, मैं समझती हूं वह किश्ती अभी तक वहां ही होगी।

सवेरा होने में कुछ विलम्ब न था। मन्द मन्द दक्षिणी हवा चल रही थी और आसमान पर केवल दस पांच तारे दिखाई पड़ रहे थे जिनके चेहरे की चमक दमक चलाचली की उदासी के कारण मन्द पड़ती जा रही थी जब कि कमलिनी और कुमार इत्यादि सब कोई वहां से रवाना हुए और उसी किश्ती पर सवार होकर जिसका जिक्र कमलिनी ने किया था गंगा पार हो गये।

तीसरा बयान

मायारानी उस बेचारे मुसीबत के मारे कैदी को रञ्ज डर और तरद्दुद की निगाहों से देख रही थी जब कि यह आवाज उसने सुनी, "बेशक मायारानी की मौत आ गई!" इस आवाज ने मायारानी को हद से ज्यादे बेचैन कर दिया। वह घबड़ा कर चारो तरफ देखने लगी मगर कुछ मालूम न हुआ कि यह आवाज कहां से आई। आखिर वह लाचार होकर धनपत को साथ लिए हुए वहां से लौटी और जिस तरह वहां गई थी उसी तरह बाग के तीसरे दर्जे से होती हुई कैदखाने के दर्वाजे पर पहुंची जहां अपने दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह को छोड़ गई थी। मायारानी को देखते ही बिहारीसिंह बोला—

बिहारी०। आप हम लोगों को यहां व्यर्थ ही छोड़ गईं!

माया०। हां अब मैं भी यही सोचती हूं क्योंकि अगर तुम दोनों को अपने साथ ले जाती तो इसी समय टण्टा तै हो जाता। यद्यपि धनपत मेरे साथ थी और तुम लोग भी जानते हो कि यह बहुत ताकतवर है तथापि मेरा हौसला न पड़ा कि उसे बाहर निकालती।

बिहारी०। (चौंक कर) तो क्या आप अपने कैदी को देखने के लिए चौथे दर्जे में गई थी! मगर मैंने जो कुछ कहा वह कुछ दूसरे मतलब से कहा था।

माया०। हां मैं उसी दुश्मन के पास गई थी जिसके बारे में चण्डूल ने मुझे होशियार किया था, मगर तुमने यह किस मतलब से कहा कि आप हमें लोगों को यहां व्यर्थ ही छोड़ गईं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिहारी०। मैंने इस मतलब से कहा कि हम लोग यहां बैठे बैठे जान रहे थे

कि इस कैदखाने के अन्दर ऊधम मच रहा है मगर कुछ कर नहीं सकते थे।

माया०। ऊधम कैसा ?

बिहारी०। इस कैदखाने के अन्दर से दीवार तोड़ने की आवाजें आ रही थी, मालूम होता है कि कैदियों की हथकड़ी बेड़ी किसी ने खोल दी।

माया०। मगर तुम्हारी बातों से यह जाना जाता है कि अभी कैदी लोग इसके अन्दर ही हैं। मैं सोच रही थी कि जब ताली लेकर लाडिली चली गई तो कहीं कैदियों को भी छुड़ा न ले गई हो।

बिहारी०। नहीं नहीं, कैदी बेशक इसके अन्दर थे और आपके जाने बाद कैदियों के बातचीत की कुछ कुछ आवाज भी आ रही थी, कुछ देर बाद दीवार तोड़ने की आहट मालूम होने लगी, मगर अब मैं नहीं कह सकता कि कैदी इसके अन्दर हैं या निकल गये क्योंकि थोड़ी देर से भीतर सन्नाटा सा जान पड़ता है, न तो किसी की बातचीत की आहट मिलती है न दीवार तोड़ने की।

माया०। (कुछ सोच कर) दीवार तोड़ कर इस बाग के बाहर निकल जाना जरा मुश्किल है, मगर मुझे ताज्जुब मालूम होता है कि उन कैदियों की हथकड़ी बेड़ी किसने खोली और दीवार तोड़ने का सामान उन्हें क्योंकर मिला! शायद तुम्हें धोखा हुआ हो।

बिहारी०। नहीं नहीं, मुझे धोखा नहीं हुआ, मैं पागल नहीं हूं!

हरनाम०। क्या हम लोग इतना भी नहीं पहिचान सकते कि यह दीवार तोड़ने की आवाज है ?

माया०। (ऊंची सांस लेकर) हाय, न मालूम मेरी क्या दुर्दशा होगी! खैर कैदियों के बारे में मैं पीछे सोचूंगी पहिले तुम लोगों से एक दूसरे काम में मदद लिया चाहती हूं!

बिहारी०। वह कौन सा काम है ?

माया०। मैंने जिस काम के लिए उसे कैद किया था वह न हुआ और न आशा ही है कि वह कोई भेद बताएगा, अस्तु अब उसे मार कर टण्टा मिटाया चाहती हूं।

बिहारी०। हां आपने उसे जिस तरह की तकलीफ दे रक्खी है उससे तो उसका मर जाना ही उत्तम है। हाय, वह बेचारा इस योग्य न था। हाय, आपकी बदौलत मेरा भी लोक परलोक दोनों बिगड़ गया! ऐसे नेक और होनहार मालिक के साथ आपके बहकाने से जो कुछ मैंने किया उसका दुःख जन्म भर न भूलूंगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया०। और उन नेकियों को याद न करोगे जो मैंने तुम लोगों के साथ की थीं!

बिहारी० । खैर अब इस विषय पर हुज्जत करनी व्यर्थ है, जब लोभ में आकर बुरा काम कर ही चुका तो अब रोना काहे का है ।

हरनाम० । मुझे भी इस बात का बहुत ही दुःख है, देखा चाहिए क्या होता है। आज कल जो कुछ देखने सुनने में आ रहा है उसका नतीजा अवश्य ही बुरा होगा।

माया० । (लम्बी सांस लेकर) खैर जो होगा देखा जायगा मगर इस समय यदि सुस्ती करोगे तो मेरी जान तो जायगी ही तुम लोग भी जीते न बचोगे ।

बिहारी० । यह तो हम लोगों को पहिले ही मालूम हो चुका है कि अब उन बुरे कर्मों का फल शीघ्र ही भोगना पड़ेगा मगर खैर आप यह कहिए कि हम लोग क्या करें ? जान बचाने की क्या कोई सूरत दिखाई पड़ती है ?

माया० । मेरे साथ बाग के चौथे दर्जे में चल कर पहिले उस कैदी को मार कर छुट्टी करो तो दूसरा काम बताऊं ।

हरनाम० । नहीं नहीं नहीं, यह काम मुझसे न हो सकेगा । बिहारीसिंह से हो सके तो इन्हें ले जाइए । मैं उनके ऊपर हर्बा नहीं उठा सकता । नारायण नारायण, इस अनर्थ का भी कोई ठिकाना है ।

माया० । (चिढ़ कर) हरनाम, क्या तू पागल हो गया है जो मेरे सामने ऐसी बेतुकी बातें करता है ? अदब और लेहाज को भी तूने एकदम चूल्हे में डाल दिया ! क्या तू मेरी सामर्थ्य को भूल गया ?

हरनाम० । नहीं मैं आपकी सामर्थ्य को नहीं भूला बल्कि आपकी सामर्थ्य ने स्वयं आपका साथ छोड़ दिया !

बिहारीसिंह और हरनामसिंह की बातें सुन कर मायारानी को क्रोध तो बहुत आया परन्तु इस समय क्रोध करने का मौका न देख कर वह तरह दे गयी। मायारानी बड़ी ही चालबाज और दुष्ट औरत थी, समय पड़ने पर वह एक अदने को बाप बना लेती और काम न होने से किसी को एक तिनके बराबर भी न मानती । इस समय अपने ऊपर सकट आया हुआ जान उसने दोनों ऐयारों को किसी तरह राजी रखना ही उचित समझा ।

माया० । क्यों हरनामसिंह, तुमने कैसे जाना कि मेरी सामर्थ्य ने मेरा साथ छोड़ दिया ?

हरनाम० । वह तो इसी से जाना जाता है कि एक बेबस कैदी की जान लेने के लिए हम लोगों को ले जाया चाहती हो । उस बेचारे को तो एक अदना लड़का भी मार सकता है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिहारी० । हरनामसिंह का कहना ठीक है, बाहर खड़े होकर आपके हाथ

से चलाई हुई एक तीर उसका काम तमाम कर सकती है।

माया०। नहीं, यदि ऐसा होता तो मैं उसे बिना मारे लौट न आती, मेरे कई तीर व्यर्थ गये और नतीजा कुछ भी न निकला!

बिहारी०। (चौंक कर) सो क्यों?

माया०। उसके हाथ में एक ढाल है। न मालूम वह ढाल उसे किसने दी, जिस पर वह तीर रोक कर हंसता है और कहता है कि अब मुझे कोई मार नहीं सकता।

बिहारी०। (कुछ सोच कर) अब अनर्थ होने में कोई सन्देह नहीं, यह काम बेशक चण्डूल का है। कुछ समझ में नहीं आता कि वह कौन कम्बख्त है?

माया०। अब सोच विचार में विलम्ब करना उचित नहीं, जो होना था सो हो चुका, अब जान बचाने की फिक्र करनी चाहिए।

बिहारी०। आपने क्या विचारा?

माया०। तुम लोग यदि मेरी मदद न करोगे तो मेरी जान न बचेगी और जब मुझ पर आफत आवेगी तो तुम लोग भी जीते न बचोगे।

बिहारी०। हां यह तो ठीक है, जान बचाने के लिए कोई न कोई उद्योग तो करना ही होगा।

माया०। अच्छा तो तुम लोग मेरे साथ चलो और जिस तरह हो उस कैदी को यमलोक पहुंचाओ। मुझे विश्वास हो गया कि उस कैदी की जान के साथ हम लोगों की आधी बला टल जायगी और इसके बदले में मैं तुम दोनों को एक लाख रुपया दूंगी।

हर०। काम तो बड़ा कठिन है?

यद्यपि बिहारीसिंह और हरनामसिंह अपने हाथ से उस कैदी को मारा नहीं चाहते थे, तथापि मायारानी की मीठी मीठी बातों से और रुपये की लालच तथा जान के डर से वे लोग यह अनर्थ करने के लिए तैयार हो गये। धनपत्त और दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए मायारानी फिर बाग के चौथे दर्जे की ओर रवाना हुई। सूर्य भगवान के दर्शन तो नहीं हुए थे मगर सवेरा हो चुका था और मायारानी के नौकर नींद से उठ कर अपने अपने कामों में लग चुके थे। लेकिन मायारानी का ध्यान उस तरफ कुछ भी न था, उसने उस बेचारे कैदी की जान लेना ही सब से जरूरी काम समझ रक्खा था!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी ही देर में चारो आदमी बाग के चौथे दर्जे में जा पहुंचे और कूएं के अन्दर उतर कर उस कैदखाने में गये जिसमें मायारानी का वह अनूठा कैदी बन्द

था। मायारानी को उम्मीद थी कि उस कैदी को फिर उसी तरह हाथ में ढाल लिए हुए देखेगी मगर ऐसा न हुआ। उस जंगले वाली कोठरी का दर्वाजा खुला हुआ था और उस कैदी का कहीं पता न था।

वहां की ऐसी अवस्था देख कर मायारानी अपने रंज और गम को सम्हाल न सकी और एकदम 'हाय' करके जमीन पर गिर कर बेहोश हो गई। धनपत और दोनों ऐयारों के भी होश जाते रहे, उनके चेहरे पीले पड़ गए और निश्चय हो गया कि अब जान जाने में कोई कसर नहीं है। केवल इतना ही नहीं बल्कि डर के मारे वहां ठहरना भी वे लोग उचित न समझते थे मगर बेहोश मायारानी को वहां से उठा कर बाग के दूसरे दर्जे में ले जाना भी कठिन था इसलिए लाचार होकर उन लोगों को वहां ठहरना पड़ा।

बिहारीसिंह ने अपने बटुए में से लखलखा निकाल कर मायारानी को सुंघाया और कोई अर्क उसके मुंह में टपकाया। थोड़ी देर में मायारानी होश में आई और पड़े पड़े नीचे लिखी बातें प्रलाप की तरह बकने लगी :—

"हाय, आज मेरी जिन्दगी का दिन पूरा हो गया और मेरी मौत आ पहुंची। हाय, मुझे तो अपनी जान का धोखा उसी दिन हो चुका था जिस दिन कम्बख्त नानक ने दर्बार में मेरे सामने कहा था कि 'उस कोठरी की ताली मेरे पास है जिसमें किसी के खून से लिखी हुई किताब रक्खी है'*। इस समय उसी किताब ने धोखा दिया। हाय, उस किताब के लिए नानक को छोड़ देना ही बुरा हुआ। यह काम उसी हरामजादे का है, लाडिली और धनपत के किए कुछ भी न हुआ। (धनपत की तरफ देख कर) सच तो यों है कि मेरी मौत तेरे ही सबब से हुई। तेरी ही मुहब्बत ने मुझे गारत किया, तेरे ही सबब से मैंने पाप की गठरी सिर पर लादी, तेरे ही सबब से मैंने अपना धर्म खोया तेरे ही सबब से मैं बुरे कामों पर उतारू हुई, तेरे ही सबब से मैंने अपने पति के साथ बुराई की, तेरे ही सबब से मैंने अपना सर्वस्व बिगाड़ दिया। तेरे ही सबब से मैं बीरेन्द्रसिंह के लड़कों के साथ बुराई करने के लिए तैयार हुई, तेरे ही सबब से कमलिनी मेरा साथ छोड़ कर चली गई, और तेरे ही सबब से आज मैं इस दशा को पहुंची। हाय, इसमें कोई सन्देह नहीं कि बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य मिलता है। हाय, मुझ सी औरत जिसे ईश्वर ने हर प्रकार का सुख दे रक्खा था आज बुरे कर्मों की बदौलत ही इस अवस्था को पहुंची। आह, मैंने क्या सोचा था और क्या हुआ? क्या बुरे कर्म करके भी कोई सुख भोग सकता है। नहीं नहीं, कभी नहीं, दृष्टान्त के लिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* देखिए चौथा भाग, सातवां बयान।

स्वयं मैं मौजूद हूं !"

मायारानी न मालूम और भी क्या क्या बकती मगर एक आवाज ने उसके प्रलाप में विघ्न डाल दिया और उसके होश हवास दुरुस्त कर दिए। किसी तरफ से यह आवाज आई—"अब अफसोस करने से क्या होता है, बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा !"

बहुत कुछ विचारने और चारो तरफ निगाह दौड़ाने पर भी किसी के समझ में न आया कि बोलने वाला कौन था कहां है। डर के मारे सभों के बदन में कंपकंपी पैदा हो गई। मायारानी उठ बैठी और धनपत तथा दोनों ऐयारों को साथ लिए और कांपते हुए कलेजे पर हाथ रक्खे वहां से अपने स्थान अर्थात् बाग के दूसरे दर्जे की तरफ भागी।

चौथा बयान

कमलिनी की आज्ञानुसार बेहोश नागर की गठरी पीठ पर लादे हुए भूतनाथ कमलिनी के उस तिलिस्मी मकान की तरफ रवाना हुआ जो एक तालाब के बीचोबीच में था। इस समय उसकी चाल तेज थी और वह खुशी के मारे बहुत ही उमंग और लापरवाही के साथ बड़े बड़े कदम मारता जा रहा था। उसे दो बातों की खुशी थी, एक तो उन कागजों को वह अपने हाथ से जला कर खाक कर चुका था जिनके सबब से वह मनोरमा और नागर के आधीन हो रहा था और जिनका भेद लोगों पर प्रकट होने के डर से अपने को मुर्दे से भी बदतर समझे हुए था, दूसरे उस तिलिस्मी खञ्जर ने उसका दिमाग आसमान पर चढ़ा दिया था, और ये दोनों बातें कमलिनी की बदौलत उसे मिली थीं, एक तो भूतनाथ पहिले ही भारी मक्कार ऐयार और होशियार था, अपनी चालाकी के सामने किसी को कुछ गिनता ही न था, दूसरे आज उस खंजर का मालिक बन के खुशी के मारे अन्धा हो गया। उसने समझ लिया कि अब न तो उसे किसी का डर है और न किसी की परवाह।

अब हम उसके दूसरे दिन का हाल लिखते हैं जिस दिन भूतनाथ नागर की गठरी पीठ पर लादे कमलिनी के मकान की तरफ रवाना हुआ था। भूतनाथ अपने को लोगों की निगाहों से बचाए हुए आबादी से दूर दूर जंगल मैदान पगडंडी और पेचीले रास्ते पर सफर कर रहा था। दोपहर के समय वह एक छोटी सी पहाड़ी के नीचे पहुंचा जिसके चारों तरफ मकोय और बेर इत्यादि कटीले और झाड़ी वाले पेड़ों ने एक प्रकार का हलका सा जंगल बना रक्खा था। उसी जगह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक छोटा सा 'चूआ'* भी था और पास ही में जामुन का एक छोटा सा पेड़ था। थकावट और दोपहर की धूप से व्याकुल भूतनाथ ने दो तीन घंटे के लिए वहां आराम करना पसन्द किया। जामुन के पेड़ के नीचे गठरी उतार कर रख दी और आप भी उसी जगह जमीन पर चादर बिछा कर लेट गया। थोड़ी देर बाद जब सुस्ती जाती रही तो उठ बैठा, कूएं के जल से हाथ मुंह धोकर कुछ मेवा खाया जो उसके बटुए में था और इसके बाद लखलखा सुंघा नागर को होश में लाया। नागर होश में आकर उठ बैठी और चारो तरफ देखने लगी। जब सामने बैठे भूतनाथ पर नजर पड़ी तो समझ गई कि कमलिनी की आज्ञानुसार यह मुझे कहीं लिए जाता है।

नागर०। यह तो मैं समझ ही गई कि कमलिनी ने मुझे गिरफ्तार कर लिया और उसी की आज्ञा से तू मुझे लिए जाता है, मगर यह देख कर मुझे ताज्जुब होता है कि कैदी होने पर भी मेरे हाथ पैर क्यों खुले हैं और मेरी बेहोशी क्यों दूर की गई?

भूत०। तेरी बेहोशी इसलिए दूर की गई कि जिसमें तू भी इस दिलचस्प मैदान और यहां की साफ हवा का आनन्द उठा ले। तेरे हाथ पैर बंधे रहने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब मैं तेरी तरफ से होशियार हूं, तू मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, दूसरे तेरे पास वह अंगूठी भी अब नहीं रही जिसके भरोसे तू फूली हुई थी तीसरे (खंजर की तरफ इशारा करके) यह अनूठा खंजर भी मेरे पास मौजूद है, फिर किसका डर है? इसके इलावे उन कागजों को भी मैं जला चुका जो तेरे पास थे और जिनके सबब से मैं तुम लोगों के आधीन हो गया था।

नागर०। ठीक है, अब तुझे किसी का डर नहीं है, मगर फिर भी मैं इतना कहे बिना न रहूंगी कि तू हमलोगों के साथ दुश्मनी करके फायदा नहीं उठा सकता और राजा बीरेन्द्रसिंह तेरा कसूर कभी माफ न करेंगे।

भूत०। राजा बीरेन्द्रसिंह अवश्य मेरा कसूर माफ करेंगे और जब मैं उन कागजों को जला ही चुका तो मेरा कसूर साबित भी कैसे हो सकता है?

नागर०। ऐसा होने पर भी तुझे सच्ची खुशी इस दुनिया में नहीं मिल सकती और राजा बीरेन्द्रसिंह के लिए जान दे देने पर भी तुझे उनसे कुछ विशेष लाभ नहीं हो सकता।

भूत०। सो क्यों? वह कौन सच्ची खुशी है जो मुझे नहीं मिल सकती?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* चूआ—छोटा सा (हाथ दो हाथ का) गड़हा जिसमें से पहाड़ी पानी धीरे धीरे दिन रात बारहो महीना निकला करता है।

नागर० । तेरे लिए सच्ची खुशी यही है कि तेरे पास इतनी दौलत हो कि तू बेफिक्र होकर अमीरों की तरह जिन्दगी काट सके और तेरे पास तेरी वह प्यारी स्त्री भी हो जो काशी में रहती थी और जिसके पेट से नानक पैदा हुआ है ।

भूत० । (चौंक कर) तुझे यह कैसे मालूम हुआ कि वह मेरी ही स्त्री थी ।

नागर० । वाह वाह, क्या मुझसे कोई बात छिपी रह सकती है ? मालूम होता है नानक ने तुझसे वह सब हाल नहीं कहा जो तेरे निकल जाने बाद उसे मालूम हुआ था और जिसकी बदौलत नानक को उस जगह का पता लग गया जहां किसी के खून से लिखी हुई किताब रक्खी हुई थी ?

भूत० । नहीं, नानक ने मुझसे वह सब हाल नहीं कहा, बल्कि वह यह भी नहीं जानता कि मैं ही उसका बाप हूं, हां खून से लिखी किताब का हाल मुझे जरूर मालूम है ।

नागर० । शायद वह किताब अभी तक नानक ही के कब्जे में है ।

भूत० । उसका हाल मैं तुझसे नहीं कह सकता ।

नागर० । खैर मुझे उसके विषय में कुछ जानने की इच्छा भी नहीं है ।

भूत० । हां तो मेरी स्त्री का हाल तुझे मालूम है ?

नागर० । बेशक मालूम है ।

भूत० । क्या अभी तक वह जीती है ?

नागर० । हां जीती है मगर अब पांच चार दिन के बाद जीती न रहेगी ।

भूत० । सो क्यों ? क्या बीमार है ?

नागर० । नहीं बीमार नहीं है, जिसके यहां वह कैद है उसी ने उसके मारने का विचार किया है ।

भूत० । उसे किसने कैद कर रक्खा है ?

नागर० । यह हाल तुझसे मैं क्यों कहूं ? जब तू मेरा दुश्मन है और मुझे कैदी बना कर लिए जाता है तो मैं तेरे साथ नेकी क्यों करूं ?

भूत० । इसके बदले में मैं भी तेरे साथ कुछ नेकी कर दूंगा ।

नागर० । बेशक इसमें कोई सन्देह नहीं कि तू हर तरह से मेरे साथ नेकी कर सकता है और मैं भी तेरे साथ बहुत कुछ भलाई कर सकती हूं, सच तो यों है कि तुझ पर मेरा दावा है ।

भूत० । दावा कैसा ?

नागर० । (हंस कर) उस चांदनी रात में तेरी चुटिया के साथ फूल गूंथने का दावा ! उस मसहरी के नीचे रूठ जाने का दावा ! नाखून के साथ खून निका-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लने का दावा ! और उस कसम की सचाई का दावा जो रोहतासगढ़ जाते समय नर्मी लिए हुए कठोर पिन्डी पर....! क्या और कहूं ?

भूत० । बस बस बस, मैं समझ गया, विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं है । वह सब कारवाई तुम्हीं लोगों की तरफ से हुई थी । जरूर नानक की मां के गायब होने बाद तू ही उसकी शक्ल बन के बहुत दिनों तक मेरे घर रही और तेरे ही साथ बहुत दिनों तक मैंने ऐश किया ।

नागर० । और अन्त में वह 'रिक्तगन्थ' तुमने मेरे ही हाथ में दिया था ।

भूत० । ठीक है ठीक है, तो तेरा दावा मुझ पर उतना ही हो सकता है जितना किसी बेईमान और बेमुरौवत रंडी का अपने यार पर ।

नागर० । खैर उतना ही सही, मैं रंडी तो हूं ही, मुझे चालाक और अपने काम का समझ कर मनोरमा ने अपनी सखी बना लिया और इसमें भी कोई सन्देह नही कि उसकी बदौलत मैंने बहुत कुछ सुख भोगा ।

भूत० । खैर तो मालूम हुआ कि यदि तू चाहे तो मेरी स्त्री को मुझसे मिला सकती है ?

नागर० । वेशक ऐसा ही है मगर इसके बदले में तू मुझे क्या देगा ?

भूत० । (खंजर की तरफ इशारा करके) यह तिलिस्मी खंजर छोड़ कर जो मांगे सो तुझे दूं ।

नागर० । मैं तेरा खंजर नहीं चाहती, मैं केवल इतना ही चाहती हूं कि तू बीरेन्द्रसिंह की तरफदारी छोड़ दे और हम लोगों का साथी बन जा । फिर तुझे हर तरह की खुशी मिल सकती है । तू करोड़ो रुपये का धनी हो जायगा और दुनिया में बड़ी खुशी से अपनी जिन्दगी बितावेगा ।

भूत० । यह मुश्किल बात है,ऐसा करने से मेरी सख्त बदनामी ही नहीं होगी बल्कि मैं बड़ी दुर्दशा के साथ मारा जाऊंगा ।

नागर० । तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा, मैं खूब जानती हूं कि इस समय जिस सूरत में तुम हो वह तुम्हारी असली सूरत नहीं है और कमलिनी से तुम्हारी नई जान पहिचान है, जरूर कमलिनी तुम्हारी असली सूरत से वाकिफ न होगी इसलिए तुम सूरत बदल कर दुनिया में घूम सकते हो और कमलिनी तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकती ।

भूत० । (हंस कर) कमलिनी को मेरा सब भेद मालूम है और कमलिनी के साथ दगा करना अपनी जान के साथ दुश्मनी करना है क्योंकि वह साधारण औरत नहीं है । वह जितनी ही खूबसूरत है उतनी ही बड़ी चालाक धूर्त विद्वान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और ऐयार भी है और साथ ही इसके नेक और दयावान भी। ऐसे के साथ दगा करना बुरा है। ऐसा करने से दूसरों की क्या कहूं खास मेरा लड़का नानक ही मुझ पर घृणा करेगा।

नागर०। नानक जिस समय अपनी मां का हाल सुनेगा बहुत ही प्रसन्न होगा बल्कि मेरा अहसान मानेगा, रहा तुम्हारा कमलिनी से डरना तो यह बहुत बड़ी भूल है, महीने दो महीने के अन्दर ही तुम सुन लोगे कि कमलिनी इस दुनिया से उठ गई, और यदि तुम हम लोगों की मदद करोगे तो आठ ही दस दिन में कमलिनी का नाम निशान मिट जायगा। फिर तुम्हें किसी तरह का डर नहीं रहेगा और तुम्हारे इस खंजर का मुकाबिला करने वाला भी इस दुनिया में कोई न रहेगा। तुम विश्वास करो कि कमलिनी बहुत जल्द मारी जायगी और तब उसका साथ देने से तुम सूखे ही रह जाओगे। मैं तुम्हें फिर समझा कर कहती हूं कि हमलोगों की मदद करो। तुम्हारी मदद से हम लोग थोड़े ही दिनों में कमलिनी, राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके दोनों कुमारों को मौत की चारपाई पर सुला देंगे। तुम्हारी खूबसूरत प्यारी जोरू तुम्हारे बगल में होगी, करोड़ों रुपये की सम्पत्ति के तुम मालिक होगे और मैं भी तुम्हारी रंडी बन कर तुम्हारी बगल गरम करूंगी क्योंकि मैं तुम्हें दिल से चाहती हूं, और ताज्जुब नहीं कि तुम्हें विजयगढ़ का राज्य दिला दूं। मैं समझती हूं कि तुम्हें मायारानी की ताकत का हाल मालूम होगा।

भूत०। हां हां मैं मशहूर मायारानी को अच्छी तरह जानता हूं, परन्तु उसके गुप्त भेदों का हाल कुछ कुछ सिर्फ कमलिनी की जुबानी सुना है अच्छी तरह नहीं मालूम।

नागर०। उसका हाल मैं तुमसे कहूंगी, वह लाखों आदमियों को इस तरह मार डालने की कुदरत रखती है कि किसी को कानों कान मालूम न हो। उसके एक जरा से इशारे पर तुम दीन दुनिया से बेकार कर दिये गये, तुम्हारी जोरू छीन ली गई, और तुम किसी को मुंह दिखाने लायक न रहे। कहो जो मैं कहती हूं वह ठीक है या नहीं?

भूत०। हां ठीक है मगर इस बात को मैं नहीं मान सकता कि वह गुप्त रीति से लाखों आदमियों को मार डालने की कुदरत रखती है, अगर ऐसा ही होता तो बीरेन्द्रसिंह इत्यादि तथा मुझे मारने में कठिनता ही काहे की थी?

नागर०। यह कौन कहता है कि बीरेन्द्रसिंह इत्यादि के मारने में उसे कठिनता है! इस समय बीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों कुमार, किशोरी, कामिनी और तेजसिंह इत्यादि कई ऐयारों को उसने कैद कर रक्खा है, जब चाहे तब मार डाले, और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें तो वह ऐसा समझती है जैसे तुम एक खटमल हो, हां कभी कभी उसके ऐयार धोखा खा जाय तो यह बात दूसरी है। यही सबब था कि रिक्तगन्थ हमलोगों के हाथ में आकर इत्तिफाक से निकल गया, परन्तु क्या हर्ज है, आज ही कल में वह किताब फिर मायारानी के हाथ में दिखाई देगी। यदि तुम हमारी बात न मानोगे तो कमलिनी तथा वीरेन्द्रसिंह इत्यादि के पहिले ही मारे जाओगे। हम तुमसे कुछ काम निकालना चाहते हैं इसलिए तुम्हें छोड़े जा रहे हैं। फिर जरा सी मदद के बदले में क्या तुम्हें दिया जाता है इस पर भी ध्यान दो और यह मत सोचो कि कमलिनी ने मुझे और मनोरमा को कैद कर लिया तो कोई बड़ा काम किया, इससे मायारानी का कुछ भी न बिगड़ेगा और हम लोग भी ज्यादे दिन तक कैद में न रहेंगे। जो कुछ मैं कह चुकी हूं उस पर अच्छी तरह विचार करो और कमलिनी का साथ छोड़ो नहीं पछताओगे और तुम्हारी जोरू भी बिलख बिलख के मर जायगी। दुनिया में ऐश व आराम से बढ़ कर कोई चीज नहीं है सो सब कुछ तुम्हें दिया जाता है, और यदि यह कहो कि तेरी बातों का मुझे विश्वास क्योंकर हो तो इसका जवाब अभी से यह देती हूं कि मैं तुम्हारी दिलजमई ऐसी अच्छी तरह से कर दूंगी कि तुम स्वयं कहोगे कि हां मुझे विश्वास हो गया। (मुस्कुरा कर और नखरे के साथ भूतनाथ की अंगुली दबा कर) मैं तुम्हे चाहती हूं इसलिये इतना कहती हूं नहीं तो मायारानी को तुम्हारी परवाह न थी, तुम्हारे साथ रह कर मैं भी दुनिया का कुछ आनन्द ले लूंगी।

नागर की बातें सुन कर भूतनाथ चिन्ता में पड़ गया और देर तक कुछ सोचता रह गया। इसके बाद वह नागर की तरफ देख कर बोला, "खैर तुम जो कुछ कहती हो मैं करूंगा और अपनी प्यारी स्त्री के साथ तुम्हारी मुहब्बत की भी कदर करूंगा!"

इतना सुनते ही नागर ने झट भूतनाथ के गले में हाथ डाल दिया और दोनों प्रेमी हंसते हुए उस छोटी सी पहाड़ी के उपर चढ़ गये।

पांचवां बयान

दिन दोपहर से ज्यादे चढ़ चुका है मगर मायारानी को खाने पीने की कुछ भी सुध नहीं है। पल पल में उसकी परेशानी बढ़ती ही जाती है। यद्यपि बिहारीसिंह हरनामसिंह और धनपत ये तीनों उसके पास मौजूद हैं परन्तु समझाने बुझाने की तरफ किसी का भी ध्यान नहीं। उसे कोई भी नहीं दिलासा देता, कोई धीरज नहीं बंधाता और कोई भी यह विश्वास नहीं दिलाता कि तुझ पर आई हुई बला टल जायेगी, यहां तक कि किसी के मुंह से यह भी नहीं निकलता कि सब्र कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमलोग ऐयारी के फन में होशियार हैं, कोई न कोई काम अवश्य करेंगे।

ऊपर के बयानों को पढ़ कर पाठक समझ ही गये होंगे कि मायारानी की तरह उसकी धनपत और उसके दोनों ऐयार बिहारीसिंह तथा हरनामसिंह भी किसी भारी पाप के बोझ से दबे हुए हैं और ऊपर की घटनाओं ने उन तीनों को भी जान सुखा दी है। ये तीनों ही बदहोश और परेशान भी रहे हैं, इन तीनों को भी अपनी अपनी फिक्र पड़ी है, और इस समय इन तीनों के अतिरिक्त कोई चौथा आदमी मायारानी के सामने नहीं है, फिर उसे कौन समझावे बुझावे ? इनके सिवाय कोई चौथा आदमी उसके भेदों को जानता भी नहीं और न वह किसी को अपना भेद बताने का साहस कर सकती है। मायारानी की उदासी से चारों तरफ उदासी फैली हुई है। लौंडियों नौकरों और सिपाहियों को भी चिन्ता ने आकर घेर लिया और कोई भी नहीं जानता कि क्या हुआ या क्या होने वाला है।

बहुत देर तक चुप रहने बाद बिहारीसिंह ने सिर उठाया और मायारानी की तरफ देख कर कहा—

बिहारी०। एक तो बीरेन्द्रसिंह के ऐयार स्वयं धुरंधर हैं जिनका मुकाबला कोई कर नहीं सकता, दूसरे कमलिनी की मदद से उन लोगों का साहस और भी बढ़ गया है।

धनपत०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज कल जो खराबी हो रही है वह सब कमलिनी ही की बदौलत है जिसका हमलोग कुछ भी नहीं बिगड़ सकते।

माया०। अफसोस, वह कम्बख्त इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आकर अपना काम कर जाय और किसी को कानोकान खबर न हो! हाय, न मालूम हमलोगों की क्या दुर्दशा होने वाली है! क्या करूं, कहां भाग कर जाऊं, अपनी जान बचाने के लिए क्या उद्योग करूं।

धनपत०। अभी एक दम से हताश न हो जाना चाहिए बल्कि देखना चाहिए कि इस मुनादी का क्या असर रिआया के दिल पर होता है।

माया०। हां मुझे जरा फिर से समझा के कह तो सही कि मुनादी वाले को क्या कह के पुकारने की आज्ञा मेरी तरफ से दी गई है ? उस समय मैं आपे में बिल्कुल न थी इससे कुछ समझ में न आया।

धनपत०। आपकी तरफ से मैंने दीवान साहब को हुक्म दिया जिसका बन्दोबस्त उन्होंने पूरा पूरा किया। मेरे सामने ही उन्होंने चार डुग्गी वालों को तलब किया और समझा कर कह दिया कि वे लोग शहर भर में पुकार कर इस बात की मुनादी कर दें कि 'सरकारी ऐयारों को मालूम हुआ है कि बीरेन्द्रसिंह का एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐयार राजा गोपालसिंह की सूरत बन कर शहर में आया है, जिन्हें बैकुण्ठ पधारे पांच वर्ष के लगभग हो चुके हैं, और रिआया को भड़काया चाहता है। जो कोई उस कम्बख्त का सिर काट कर लावेगा उसे एक लाख रुपया इनाम दिया जायगा'।

माया०। ठीक है, मगर देखा चाहिए इसका नतीजा क्या निकलता है।

बिहारी०। दो दिन के अन्दर ही अन्दर कुछ काम न चला तो समझ लेना चाहिये कि इस मुनादी का असर उलटा ही होगा।

माया०। खैर जो कुछ नसीब में लिखा है भोगूंगी, इस समय बदहवास होने से तो काम नहीं चलेगा। मगर यह तो कहो कि तुम दोनों ऐयार ऐसी अवस्था में मेरी सहायता किस रीति से करोगे?

बिहारी०। मेरे किये तो कुछ न होगा। मैं खूब समझ चुका हूं कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों तथा कमलिनी का मुकाबला मैं किसी तरह नहीं कर सकता। देखो तेजसिंह ने मेरा मुंह ऐसा काला किया कि अभी तक रंग साफ नहीं होता। न मालूम उसे कैसे कैसे मसाले याद हैं। इसके अतिरिक्त तुम्हें अपने लिए शायद कुछ उम्मीद हो मगर मैं तो बिल्कुल ही नाउम्मीद हो चुका हूं और अब एक घंटे के लिए भी यहां ठहरना बुरा समझता हूं।

माया०। क्या तुम वास्तव में वैसा ही करोगे जैसा कह चुके हो?

बिहारी०। हां बेशक मैं अपनी राय पक्की कर चुका हूं, मैं इसी समय यहां से चला जाऊंगा और फिर मेरा पता कोई भी न लगा सकेगा।

माया०। (हरनामसिंह की तरफ देख के) और तुम्हारी क्या राय है?

हर०। मेरी भी वही राय है जो बिहारीसिंह की है।

माया०। खूब समझ बूझ कर मेरी बातों का जवाब दो।

हरनाम०। जो कुछ समझना था समझ चुका।

माया०। (कुछ सोच कर) अच्छा मैं एक तर्कीब बताती हूं, अगर उससे कुछ काम न चले तो फिर जो कुछ तुम्हारी समझ में आवे करना या जहां जो चाहे जाना।

बिहारी०। अब उद्योग करना वृथा है, मेरे किए कुछ भी न होगा!

माया०। नहीं नहीं घबराओ मत, तुम जानते हो कि मैं इस तिलिस्म की रानी हूं और इस तिलिस्म में बहुत सी अद्भुत चीजें हैं। मैं तुम दोनों को एक चीज देती हूं जिसे देख कर और जिसका मतलब समझ कर तुम दोनों स्वयम् कहोगे कि 'कोई हर्ज नहीं, अब हम लोग बात की बात में लाखों आदमियों की जान ले सकते हैं'।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरनाम०। बेशक तुम इस तिलिस्म की रानी हो और तुम्हारे अधिकार में

बहुत सी अनमोल चीजें हैं परन्तु जब तक हम लोग उस वस्तु को देख नहीं लें जिसके विषय में तुम कह रही हो तब तक किसी तरह का वादा नहीं कर सकते।

माया०। मैं भी तो यही कह रही हूं, तुम दोनों मेरे साथ चलो और उस चीज को देख लो, फिर अगर मन भरे तो मेरा साथ दो नहीं तो जहां जी चाहे चले जाओ।

हरनाम०। खैर पहिले देखें तो सही वह कौन सी अनूठी चीज है जिस पर तुम्हें इतना भरोसा है।

माया०। हां मेरे साथ चलो मैं अभी वह चीज तुम दोनों के हवाले करती हूं।

मायारानी उठ खड़ी हुई और धनपत तथा दोनों ऐयारों को साथ लिए हुए वहां से रवाना हुई। बाग में घूमती हुई वह उस बुर्ज के पास गई जो बाग के पिछले कोने में था और जिसमें लाडिली और कमलिनी की मुलाकात हुई थी। उस बुर्ज के बगल ही में एक और कोठरी स्याह पत्थर से बनी हुई थी मगर यह मालूम न होता था कि उसका दर्वाजा किधर से है क्योंकि पिछली तरफ तो बाग की दीवार थी और बाकी तीनों तरफ वाली कोठरी की स्याह दीवारों में दर्वाजे का कोई निशान न था। मायारानी ने बिहारी से कहा, "कमन्द लगाओ क्योंकि हम लोगों को इस कोठरी की छत पर चलना होगा।" बिहारीसिंह ने वैसा ही किया। सबके पहिले मायारानी कमन्द के सहारे उस कोठरी पर चढ़ गई और उसके बाद धनपत और दोनों ऐयार भी उसी छत पर जा पहुंचे।

ऊपर जाकर दोनों ऐयारों ने देखा कि छत के बीचोबीच में एक दर्वाजा ठीक वैसा ही है जैसा प्रायः तहखानों के मुंह पर रहता है। वह दर्वाजा लकड़ी का था मगर उस पर लोहे की चादर मढ़ी हुई थी और उसमें एक साधारण ताला लगा हुआ था। मायारानी ने हरनामसिंह से कहा, "यह ताला मामूली है, इसे किसी तरह खोलना चाहिए।"

बिहारीसिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लोहे की एक टेढ़ी सलाई निकाली और उसे ताले के मुंह में डाल कर ताला खोल डाला, इसके बाद दर्वाजे का पल्ला हटा कर किनारे किया। मायारानी ने दोनों ऐयारों को अन्दर जाने के लिए कहा मगर बिहारीसिंह ने इनकार किया और कहा, "पहिले आप इसके अन्दर उतरिये तब हम लोग इसके अन्दर जायंगे क्योंकि यहां की अद्भुत बातों से हम लोग बहुत डर गये हैं।" लाचार हो कर मायारानी कमन्द के सहारे उस कोठरी के अन्दर उतर गई और इसके बाद धनपत और दोनों ऐयार भी नीचे उतर गए।

ऊपर का दर्वाजा खुला रहने से कोठरी के अन्दर चांदना पहुंच रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कोठरी लगभग बीस हाथ के चौड़ी और इससे कुछ ज्यादे लम्बी थी। यहां की जमीन लकड़ी की थी और उस पर किसी तरह का मसाला चढ़ा हुआ था। कोठरी के बीचोबीच में एक छोटा सा सन्दूक पड़ा हुआ था। धनपत का हाथ पकड़े मायारानी एक किनारे खड़ी हो गई और दोनों ऐयारों की तरफ देख कर बोली, "तुम दोनों मिल कर इस सन्दूक को मेरे पास लाओ।"

हुक्म के मुताबिक दोनों ऐयार उस सन्दूक के पास गये, मगर सन्दूक का कुन्डा पकड़ के उठाने का इरादा किया ही था कि उस जमीन का एक गोल हिस्सा जिस पर दोनों ऐयार खड़े थे किवाड़ के पल्ले की तरह एक तरफ से अन्दर की तरफ यकायक धंस गया और वे दोनों ऐयार जमीन के अन्दर जा रहे, साथ ही एक आवाज ऐसी आई जिसके सुनने से धनपत को मालूम हो गया कि दोनों ऐयार नीचे जल की तह तक पहुंच गये।

इसके बाद जमीन का वह हिस्सा जो लकड़ी का था फिर बराबर हो गया और सन्दूक भी उसी तरह दिखाई देने लगा।

यह हाल देख धनपत डर के मारे कांपने लगी और मायारानी की तरफ देख के बोली, "क्या यह कोई कूआं है?"

माया०। हां यह कूआं है और ऐसे नमकहरामों को सजा देने के लिए बनाया गया है। दोनों बेईमान ऐयार मेरा साथ छोड़ के अपनी जान बचाया चाहते थे हरामजादे पाजी नालायक, अब अपकी सजा को पहुंचे।

धन०। इतने दिनों तक आपके साथ रहने पर भी इस कूएं का हाल मुझे मालूम न था।

माया०। यहां के बहुत से भेद अभी तुम्हें मालूम नहीं, खैर अब यहां से चलना चाहिये।

धनपत को साथ लिए मायारानी उस कोठरी के बाहर निकली और दर्वाजा बन्द करने बाद कमन्द के सहारे उतर कर अपने खास सोने वाले कमरे में चली आई। मायारानी की लौंडियों ने मायारानी को दोनों ऐयारों और धनपत के साथ उस कोठरी की तरफ जाते देखा था मगर अब केवल धनपत को साथ लिये लौटते देख उनको ताज्जुब हुआ लेकिन डर के मारे कुछ पूछ न सकीं।

संध्या का समय हो गया। मायारानी अपने कमरे में जाकर मसहरी पर लेट गई। उस समय बहुत सी लौंडियां उसके सामने थीं मगर इशारा पाकर सब बाहर चली गईं केवल धनपत वहां रह गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धनपत०। आपने बहुत जल्दी की, बेचारे ऐयारों की जान व्यर्थ ही गई।

माया०। वे दोनों कमीने इसी लायक थे। इसीलिए मैं उनसे बार बार पूछ रही थी, जब देख लिया कि वे अपने विचार पर दृढ़ हैं तो लाचार.......

धन०। खैर जो कुछ हुआ सो अच्छा हुआ लेकिन अब क्या करना चाहिए? अफसोस यह है कि ऐसे समय में बेचारी मनोरमा भी नहीं है।

माया०। (लम्बी सांस लेकर) हाय, बेचारी मनोरमा मेरी सच्ची सहायक थी पर उसे भी तेजसिंह ने गिरफ्तार कर लिया। इसी खबर के साथ नागर ने कहला भेजा था कि भूतनाथ के कागजात अपने साथ लेकर उसे छुड़ाने जाती हूं, मगर उस बात को भी बहुत दिन बीत गये और अभी तक मालूम न हुआ कि नागर के जाने का क्या नतीजा निकला। तेजसिंह ने उसे भी गिरफ्तार कर लिया हो तो ताज्जुब नहीं, सच तो यह है कि भूतनाथ के मारने में मनोरमा ने बड़ी जल्दी की।

धन०। बेशक भूतनाथ के मारने में उसने भूल की, भूतनाथ से बहुत कुछ काम निकलने की आशा थी!

इतने ही में बाहर से आवाज आई, "थी नहीं बल्कि है!" मायारानी ने दर्वाजे की तरफ देखा तो नागर पर निगाह पड़ी।

माया०। आह इस समय तेरा आना बहुत ही अच्छा हुआ, आ मेरे पास बैठ जा।

नागर०। (मायारानी के पास बैठ कर) मैं देखती हूं कि आज आपकी अवस्था बिल्कुल बदली हुई है, कहिये मिजाज तो अच्छा है?

माया०। अच्छा क्या है बस दम निकलने की देर है।

नागर०। (घबड़ा कर) सो क्या?

माया०। अब आई है तो सब कुछ सुन ही लेगी पर पहिले अपना हाल तो कह कि मेरी प्यारी सखी मनोरमा को छुड़ा लाई या नहीं और चौखटे के अन्दर पैर रखते ही तैंने यह क्या कहा कि 'थी नहीं बल्कि है'! क्या भूतनाथ मारा नहीं गया? क्या वह खबर झूठ थी?

नागर०। हां वह खबर झूठ थी, मनोरमा ने भूतनाथ की जान नहीं ली और न उसे तेजसिंह ने गिरफ्तार किया है बल्कि वह कमलिनी की कैदी है।

माया०। तो वह औरत जो मनोरमा की खबर लेकर तेरे पास आई थी झूठी थी?

नागर०। वह स्वयं कमलिनी थी, मनोरमा को कैद कर चुकी थी और मुझे भी गिरफ्तार किया चाहती थी, वह तो असल में भूतनाथ के कागजात ले लेने का बन्दोबस्त कर रही थी बल्कि यों कहना चाहिए कि मैं उसके धोखे में आ भी गई। उसने मुझे गिरफ्तार कर लिया और भूतनाथ के बिल्कुल कागजात भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझसे लेकर जला दिये।

माया०। यह बहुत ही बुरा हुआ, अब भूतनाथ बिल्कुल हम लोगों के कब्जे से बाहर हो गया, खैर जीता है यही बहुत है। यह कह कि तेरी जान कैसे बची?

इसके बाद नागर ने अपना पूरा पूरा हाल मायारानी के सामने कहा और उसने बड़े गौर से सुना। अन्त में नागर ने कहा, "इस समय भूतनाथ को अपने साथ ले आई हूं जो जी जान से हम लोगों की मदद करने के लिए तैयार है।"

यह सुन कर कि भूतनाथ अब हम लोगों का पक्षपाती हो गया और नागर के साथ आया है मायारानी बहुत ही खुश हुई और उसे एक प्रकार की आशा बंध गई। उसने धनपत की तरफ देख कर कहा, "ताज्जुब नहीं कि अब वह बला मेरे सिर से टल जाय जिसके टलने की आशा न थी।"

नागर०। आपने अपना हाल तो कुछ कहा ही नहीं! यह जानने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है कि आप क्यों उदास हो रही हैं और आप पर क्या बला आई है?

माया०। थोड़ी देर में तुझे सब कुछ मालूम हो जायगा, पहिले भूतनाथ को मेरे पास बुला ला, मैं स्वयं उससे कुछ बात किया चाहती हूं!

नागर०। नहीं नहीं, पहिले आप अपना कुल हाल मुझसे कहिये क्योंकि मेरी तबीयत घबड़ा रही है।

मायारानी ने अपना बिल्कुल हाल अर्थात् तेजसिंह का पागल बन के जाना, उन्हें बाग के तीसरे दर्जे में कैद करना, चण्डूल का यकायक पहुंचना और उसकी अद्भुत बातें तथा लाडिली का दगा दे जाना आदि नागर से कहा मगर अपने पुराने कैदी के छूटने का और दोनों ऐयारों के मार डालने का हाल छिपा रक्खा, हां उसके बदले में इतना कहा कि 'बीरेन्द्रसिंह का एक ऐयार मेरे पति की सूरत बन कर आया है जिन्हें मरे पांच वर्ष के लगभग हुए, उसी को गिरफ्तार करने के लिए बिहारीसिंह और हरनामसिंह गये हैं।'

नागर०। मगर यह तो कहिए कि चण्डूल ने आपके तथा बिहारीसिंह और हरनामसिंह के कान में क्या कहा।

माया०। बहुत पूछने पर भी बिहारीसिंह और हरनामसिंह ने नहीं बताया कि चण्डूल ने उनके कान में क्या कहा था।

नागर०। और आपके कान में उसने क्या कहा?

माया०। मेरे कान में तो उसने केवल इतना ही कहा था कि 'आठ दिन के अन्दर ही यह राज्य [illegible]सिंह का हो जायगा और तू मारी जायगी।' [illegible] और जो होगा देखा जायगा अब भूतनाथ को यहां ले आ, उससे मिलने की बहुत जरूरत है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नागर० । बहुत अच्छा, तो क्या इसी जगह बुला लाऊं ?

माया० । हां हां इसी जगह बुला ला। वह तो ऐयार है, उससे पर्दा काहे का।

नागर कुछ सोचती विचारती वहां से रवाना हुई और भूतनाथ को जिसे बाग के फाटक पर छोड़ गई थी साथ लेकर बाग के अन्दर घुसी। पहरे वालों ने किसी तरह का उज्र न किया और भूतनाथ इस बाग की हर एक चीज को अच्छी तरह देखता और ताज्जुब करता हुआ मायारानी के पास पहुंचा। नागर ने मायारानी की तरफ इशारा करके कहा, "यही हम लोगों की मायारानी हैं।" और भूतनाथ ने यह कह कर कि 'मैं वखूबी पहिचानता हूं'। मायारानी को सलाम किया।

मायारानी ने भूतनाथ की उतनी ही खातिरदारी और चापलूसी की जितनी कोई खुदगर्ज आदमी उसकी खातिरदारी करता हैं जिससे कुछ मतलब निकालने की आवश्यकता होती है।

माया० । तुम्हारी स्त्री तुम्हें मिल गई ?

भूत० । जी हां मिल गई और यह उस इनाम का पहिला नमूना है जो आपकी तावेदारी करने पर मुझे मिलने की आशा है।

माया० । नागर ने जो कुछ प्रतिज्ञा तुमसे की है मैं अवश्य पूरी करूंगी बल्कि उससे बहुत ज्यादे इनाम हर एक काम के बदले में दिया करूंगी।

भूत० । मैं दिलोजान से आपके काम में उद्योग करूंगा और कमलिनी को बुरा धोखा दूंगा। वह जितना मुझ पर विश्वास रखती है उतना ही पछतायेगी, परन्तु आपको भी कई बातों का ख्याल रखना चाहिए।

माया० । वह क्या ?

भूत० । एक तो जाहिर में मैं कमलिनी का दोस्त बना रहूंगा जिसमें उसे मुझ पर किसी तरह का शक न हो, यदि आपका कोई जासूस मेरे विषय में आपको इस बात का सबूत दे कि मैं कमलिनी से मिला हुआ हूं तो आप किसी तरह की चिन्ता न कीजियेगा।

माया० । नहीं नहीं, ऐसी छोटी छोटी बातें मुझे समझाने की जरूरत नहीं है, मैं खूब जानती हूं कि बिना उससे मिले किसी तरह पर काम न चलेगा।

भूत० । बेशक बेशक, और इसी वजह से मैं बहुत छिप कर आपके पास आया करूंगा।

माया० । ऐसा होना ही चाहिए, और दूसरी बात कौन सी है ?

भूत० । दूसरे यह कि मुझसे आप अपना भेद न छिपाया कीजिये क्योंकि ऐयारों का काम बिना ठीक ठीक भेद जाने नहीं चल सकता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया० । मुझे तुम पर पूरा भरोसा है इसलिए मैं अपना कोई भेद तुमसे न छिपाऊंगी।

भूत० । अच्छा अब एक बात मैं आपसे और कहूंगा।

माया० । कहो।

भूत० । नागर की जुबानी यह तो आपको मालूम ही हुआ होगा कि काशी में मनोरमा के तिलिस्मी मकान के अन्दर किशोरी के रखने का हाल कमलिनी जान गई है।

माया० । हां नागर वह सब हाल मुझसे कह चुकी है।

भूत० । ठीक है, तो आपने यह भी विचारा होगा कि किशोरी को उस मकान से निकाल कर किसी दूसरे मकान में रखना चाहिये।

माया० । हां मेरी तो यही राय है।

भूत० । मगर नहीं, आप किशोरी को उसी मकान में रहने दीजिये, इस बात की खबर मैं किशोरी के पक्षपातियों को दूंगा जिसे सुन कर वे लोग किशोरी को छुड़ाने की नीयत से अवश्य उस मकान के अन्दर जायंगे, उस समय उन लोगों को ऐसे ढंग से फंसा लूंगा कि किसी को पता न लगेगा और न इसी बात का शक किसी को होगा कि मैं आपका तरफदार हूं।

माया० । तुम्हारी यह राय बहुत अच्छी है, मैं इसे पसन्द करती हूं और ऐसा ही करूंगी।

भूत० । अच्छा तो अब आप यह बताइये कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह के साथ आपने क्या बर्ताव किया जो आपके यहां कैद हैं ?

माया० । (ऊंची सांस लेकर) अफसोस, कमलिनी उन लोगों को यहां से छुड़ा ले गई और मेरी छोटी बहिन लाडिली भी मुझे धोखा दे गई जिसका खुलासा हाल मैं तुमसे कहती हूं।

मायारानी ने अपना कुल हाल जो नागर से कहा था भूतनाथ को कह सुनाया मगर अपने पुराने कैदी का हाल और यह बात कि चण्डूल ने उसके कान में क्या कहा था भूतनाथ से भी छिपा रक्खा और उसके बदले में वह कहा जो नागर से कहा था, मगर भूतनाथ ने उस जगह मुस्कुरा दिया जिससे मायारानी समझ गई कि भूतनाथ को मेरी बातों में कुछ शक हुआ।

माया० । जो कुछ मैं कह चुकी हूं उसमें एक बात झूठ थी और एक मैंने छिपा लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत० । (हंस कर) वह बात शायद मुझसे कहने योग्य नहीं है!

माया० । हां मगर अब तो मैं वादा कर चुकी हूं कि तुमसे कोई बात न छिपाऊंगी इसलिये यद्यपि उस बात का भेद अभी तक मैंने नागर को भी नहीं दिया मगर तुमसे जरूर कहूंगी, परन्तु इसके पहिले एक बात तुमसे पूछूंगी क्योंकि बहुत देर से उसके पूछने की इच्छा लगी है पर बातों का सिलसिला दूसरी तरफ हो जाने के कारण पूछ न सकी ।

भूत० । खैर अब पूछ लीजिए ।

माया० । मनोरमा को कमलिनी की कैद से छुड़ाने के लिए तुमने क्या विचारा है ?

भूत० । मनोरमा को यद्यपि मैं सहज ही में छुड़ा सकता हूं परन्तु उसे भी इस ढंग से छुड़ाया चाहता हूं कि कमलिनी को मुझ पर शक न हो, अगर उसे जरा भी शक हो जायगा तो वह सम्हल जायगी क्योंकि वह बड़ी ही धूर्त और शैतान है ।

माया० । सो तो ठीक है मगर कोई बन्दोबस्त तो करना ही चाहिये ।

भूत० । हां हां, उसका बन्दोबस्त बहुत जल्द किया जायगा ।

माया० । अच्छा तो अब वह भेद की बात भी तुमसे कहती हूं जिसे मैं अभी तक बड़ी कोशिश से छिपाये हुए थी यहां तक कि अपनी प्यारी सखी मनोरमा को भी उस विषय में आज तक मैंने कुछ नहीं कहा था । (नागर की तरफ देख कर) लो तुम भी सुन लो ।

मायारानी दो घण्टे तक अपने गुप्त भेद की बात भूतनाथ से कहती रही और वह बड़े गौर से सुनता रहा और अन्त में मायारानी को कुछ समझा बुझा कर और इनाम में हीरे की एक माला पाकर वहां से रवाना हुआ ।

छठवां बयान

रात आधी जा चुकी है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, हवा भी एक दम बन्द है यहां तक कि किसी पेड़ की एक पत्ती भी नहीं हिलती । आसमान में चांद तो नहीं दिखाई देता मगर जंगल मैदान में चलने वाले मुसाफिरों को तारों की रोशनी जो अब बहुतायत से दिखाई दे रहे हैं काफी है । ऐसे समय में गंगा के किनारे किनारे दो मुसाफिर तेजी के साथ जमानिया की तरफ जा रहे हैं । जमानिया अब बहुत दूर नहीं है और ये दोनों मुसाफिर शहर के बाहरी प्रान्त में पहुंच चुके हैं।

अब वे दोनों आदमी शहर के पास पहुंच गये मगर शहर के अन्दर न जाकर बाहर ही बाहर मैदान के उस हिस्से की तरफ जाने लगे जिधर पुराने जमाने की आबादी का कुछ कुछ निशान मौजूद था । यहां बहुत से टूटे फूटे मकानों के कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई हिस्से बचे हुए थे जो बदमाशों तथा चोरों के काम में आते थे। यहां की निस्बत शहर के कमजोर दिमाग वालों और डरपोक आदमियों में तरह तरह की गप्पें उड़ा करती थीं। कोई कहता था कि वहां किसी जमाने में बहुत से आदमी मारे गये हैं और वे लोग भूत होकर अभी तक मौजूद हैं और उधर से आने जाने वालों को सताया करते हैं, कोई कहता था कि उस जमीन में जिन्नों ने अपना घर बना लिया है और जो कोई उधर से जाता है उसे मार कर अपनी जात में मिला लिया करते हैं, इत्यादि तरह तरह की बातें लोग करते थे मगर उन दोनों मुसाफिरों को जो इस समय उसी तरफ कदम बढ़ाये जा रहे हैं इन बातों की कुछ परवाह न थी।

थोड़ी ही देर में ये दोनों आदमी जिनमें से एक बहुत ही कमजोर और थका हुआ जान पड़ता था उस हिस्से में जा पहुंचे और खड़े होकर चारों तरफ देखने लगे। पास ही में एक पुराना मकान दिखाई दिया जो तीन हिस्से से ज्यादे टूट चुका था और उसके चारों तरफ जंगली पेड़ों और लताओं ने एक भयानक सा दृश्य बना रक्खा था। उसी जगह एक आदमी टहलता हुआ नजर आया जो उन दोनों को देखते ही पास आया और बोला, "हमारे साथियों ने उस नियत जगह पर ठहरना उचित न जाना और राय पक्की हुई कि एक नाव पर सवार होकर सब लोग काशी की तरफ रवाना हो जांय और उसी जगह से अपनी कारंवाई करें। वे लोग नाव पर सवार हो चुके हैं और कमलिनीजी यह कह कर मुझे इस जगह छोड़ गई हैं कि तेजसिंह राजा गोपालसिंह को साथ लेकर आवें तो उन्हें लिए हुए बालाघाट की तरफ जहां हम लोगों की नाव खड़ी होगी बहुत जल्द चले आना।"

पाठक समझ ही गये होंगे कि ये दोनों मुसाफिर तेजसिंह और राजा गोपालसिंह (मायारानी के पुराने कैदी) थे, हां उस आदमी का परिचय हम दिये देते हैं जो उन दोनों को इस भयानक स्थान में मिला था। वह तेजसिंह के प्यारे दोस्त देवीसिंह थे।

देवीसिंह की बात सुन कर तेजसिंह अपने साथी राजा गोपालसिंह को साथ लिए हुए वहां से रवाना हुए और थोड़ी देर में गंगा के किनारे पहुंच कर उस नाव पर जा सवार हुए जिस पर कमलिनी लाडिली इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह तारासिंह भैरोसिंह और शेरसिंह सवार थे। वह किश्ती बहुत छोटी तो न थी मगर हल्की और तेज जाने वाली थी। मालूम होता है कि उसको उन लोगों ने खरीद लिया था क्योंकि उस पर कोई मल्लाह न था और केवल ऐयार लोग खेकर ले जाने के लिए तैयार थे। तेजसिंह को और राजा गोपालसिंह को देखते ही सब उठ खड़े हुए। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने खातिर के साथ राजा गोपालसिंह को अपने पास बैठा कर किश्ती किनारे से हटाने की आज्ञा दी और बात की बात में नाव किनारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़ कर दूर दिखाई देने लगी।

इन्द्र०। (राजा गोपालसिंह से) मैं इस समय आपको अपने पास देख कर बहुत ही प्रसन्न हूं, ईश्वर ही ने आपकी जान बचाई।

गोपाल०। मुझे अपने बचने की कुछ भी आशा न थी, यह तो बस आपके चरणों का प्रताप है कि कमलिनी वहां गई और उसे इत्तिफाक से मेरा हाल मालूम हो गया।

कमलिनी०। मुझे आशा थी कि आपको साथ लिए तेजसिंह सूर्य निकलने के साथ ही हम लोगों से आ मिलेंगे मगर दो दिन की देर हो गई और यह दो दिन का समय बड़ी मुश्किल से बीता क्योंकि हम लोगों को बड़ी चिन्ता इस बात की थी कि आपके आने में देर क्यों हुई। अब सबके पहिले इस विलम्ब का कारण हम लोग सुना चाहते हैं।

गोपाल०। तेजसिंह जिस समय मुझे कैद से छुड़ा कर उस तिलिस्मी बाग के बाहर हुए उस समय उन्होंने राजा बीरेन्द्रसिंह का जिक्र किया और कहा कि हरामजादी मायारानी ने राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को भी इस तिलिस्म में कहीं पर कैद कर रक्खा है जिनका पता नहीं लगता। यह सुनते ही मैं उन्हें साथ लिए हुए फिर उसी तिलिस्मी बाग में चला गया। जहां जहां मैं जा सकता था जाकर अच्छी तरह पता लगाया क्योंकि कैद से छूट जाने पर मैं बिल्कुल ही लापरवाह और निडर हो गया था।

इन्द्र०। यह काम आपने बहुत ही उत्तम किया! हां तो उनका कहीं पता लगा?

गोपाल०। (सिर हिला कर) नहीं वह खबर बिल्कुल झूठी थी। उसने आप लोगों को धोखा देने के लिए अपने ही दो आदमियों को राजा बीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता की सूरत में रंग के कैद कर रक्खा है।

कमलिनी०। यह आपको कैसे निश्चय हुआ?

गोपाल०। हमने स्वयं उन दोनों को अच्छी तरह आजमा कर देख लिया।

इन्द्र०। यह खबर सुन कर हम लोगों को हद से ज्यादे खुशी हुई, अब हमलोग उनकी तरफ से निश्चिन्त हो गये और केवल किशोरी और कामिनी की फिक्र रह गई।

तेज०। बेशक हम लोग उनकी तरफ से निश्चिन्त हो गये। (राजा गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इनके साथ दो दिन तक उस बाग में रहने और गुप्त स्थानों में घूमने का मौका मिला। ऐसी ऐसी चीजें देखने में आईं कि होश उड़ गये। यद्यपि राजा बीरेन्द्रसिंह के साथ विक्रमी तिलिस्म में मैं बहुत कुछ तमाशा देख चुका हूं परन्तु अब यही कहते बन पड़ता है कि इस तिलिस्म के आगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसकी कोई हकीकत न थी।

कमलिनी०। यह उस तिलिस्म के राजा ही ठहरे, फिर इनसे ज्यादे वहां का हाल कौन जान सकता था और किसकी सामर्थ्य थी कि दो दिन तक उस बाग में आपको रख कर घुमाये ? वहां का जितना हाल ये जानते हैं उसका सोलहवां हिस्सा मायारानी नहीं जानती। ये बेचारे बड़े नेक और धर्मात्मा हैं पर न मालूम क्योंकर उस कमबख्त के धोखे में पड़ गये।

आनन्द०। बेशक इनका किस्सा बहुत ही दिलचस्प होगा।

गोपाल०। मैं अपना अनूठा किस्सा आपसे कहूंगा जिसे सुन कर आप अफसोस करेंगे। (लाडिली की तरफ देख के) क्यों लाडिली तू अच्छी तरह से तो है?

लाडिली०। (गद्गद स्वर से) इस समय मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं। क्या स्वप्न में भी गुमान हो सकता था कि इस जिन्दगी में पुनः आपको देखूंगी? यह दिन आज कमलिनी बहिन की बदौलत देखने में आया।

गोपाल०। बेशक बेशक, और ये पांच वर्ष मैंने किस मुसीबत में काटे हैं सो बस मैं ही जानता हूं (कमलिनी की तरफ देख कर) मगर तुझे उस तिलिस्मी बाग के अन्दर घुसने का साहस कैसे हुआ ?

कमलिनी०। 'रिक्तगन्थ' मेरे हाथ लग गया इसी से मैं इतना काम कर सकी।

गोपाल०। ठीक है, तब तो तू मुझसे भी ज्यादे वहां का हाल जान गई होगी।

इन्द्रजीत०। (चौंक कर और कमलिनी की तरफ देख कर) क्या 'रिक्तगन्थ' तुम्हारे पास है ?

कमलिनी०। (हंस कर) जी हां, मगर इससे यह न समझ लीजिएगा कि मैंने आपके यहां चोरी की थी ?

तेज०। नहीं नहीं, मैं खूब जानता हूं कि 'रिक्तगन्थ' का चोर कोई दूसरा ही है, आपको नानक की बदौलत वह किताब हाथ लगी।

कमलिनी०। जी हां, जिस समय तिलिस्मी बाग में नानक अपना किस्सा आपसे कह रहा था मैं छिप कर सुन रही थी।

इन्द्रजीत०। नानक का किस्सा कैसा है ?

तेज०। मैं आपसे कहता हूं जरा सब्र कीजिए।

इस समय उस किश्ती पर जितने आदमी थे सभी खुश थे, केवल इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को किशोरी और कामिनी का ध्यान था। तेजसिंह ने अपने पागल बनने का हाल और उसी बीच में नानक का किस्सा जितना उसकी जुबानी सुना था कह सुनाया। तेजसिंह के पागल बनने का हाल सुन कर सभों को हंसी आ गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों कुमारों ने नानक का बाकी हाल कमलिनी से पूछा जिसके जवाब में कमलिनी ने कहा—"यद्यपि नानक का कुछ हाल मुझे मालूम है मगर मैं इस समय कुछ भी न कहूंगी क्योंकि उसका हाल उसी की जुबानी सुनने में आपको मजा मिलेगा और उसका किस्सा सुने बिना इस समय कोई हर्ज भी नहीं, हां इस समय थोड़ा सा अपना हाल मैं आपसे कहूंगी।"

कमलिनी ने भूतनाथ का, मनोरमा और नागर का तथा अपना हाल जितना हम ऊपर लिख आये हैं सभों के सामने कहना शुरू किया। अपना हाल कहते कहते जब कमलिनी ने मनोरमा के मकान का अद्भुत हाल कहना शुरू किया तो सभों को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और किशोरी की अवस्था पर इन्द्रजीतसिंह को रुलाई आ गई। उनके दिल पर बड़ा ही सदमा गुजरा मगर तेजसिंह के लिहाज से जिन्हें चाचा के बराबर समझते थे अपने को सम्हाला। गोपालसिंह ने दिलासा देकर कहा, "आप लोग घबड़ाइए नहीं, कम्बख्त मनोरमा के मकान का पूरा पूरा भेद मैं जानता हूं इसलिए मैं बहुत जल्द किशोरी को उसकी कैद से छुड़ा लूंगा।"

लाडिली०। कामिनी भी उसी के मकान में भेज दी गई है।

गोपाल०। यह और अच्छी बात है, 'एक पंथ दो काज' हो जायेगा!

इन्द्रजीत०। (कमलिनी से) अब यह 'रिक्तगन्थ' मुझे कब मिलेगा?

कमलिनी०। वह मेरे पास है, उसी की बदौलत मैं आपको उस कैदखाने से छुड़ा सकी और उसी की बदौलत आपको तिलिस्म तोड़ने में सुगमता होगी, मैं बहुत जल्द वह किताब आपके हवाले करूंगी।

गोपाल०। (चारो तरफ देख के कमलिनी से) ओफ बात की बात में हम-लोग बहुत दूर निकल आये! क्या तुम्हारा इरादा काशी चलने का है?

कमलिनी०। जी हां हमलोगों ने तो यही इरादा कर लिया है कि काशी चल कर किसी गुप्त स्थान में रहेंगे और उसी जगह से अपनी कार्रवाई करेंगे?

गोपाल०। मगर मेरी राय तो कुछ दूसरी है।

कम०। वह क्या? मुझे विश्वास है कि आप बनिस्बत मेरे बहुत अच्छी राय देंगे।

गोपाल०। यद्यपि मैं इस शहर जमानिया का राजा हूं और इस शहर को फिर कब्जे में कर सकता हूं परन्तु पांच वर्ष तक मेरे मरने की झूठी खबर लोगों में फैली रहने के कारण यहां की रिआया के मन में बहुत कुछ फर्क पड़ गया होगा। यदि ऐसा न भी हो तो भी मैं अभी अपने को जाहिर नहीं किया चाहता और न मायारानी को ही अभी जान से मारूंगा क्योंकि यदि वह मर ही जायगी तो अपने किये का यथार्थ फल मेरे देखते कौन भोगेगा? इसलिए मैं थोड़े दिनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक छिपे रह कर उसे सजा देना उचित समझता हूँ।

कम० । जैसी मर्जी।

गोपाल० । (कमलिनी से) इसलिए मैं चाहता हूं कि कुंअर साहब अपना एक ऐयार मुझे दें, मैं उसे साथ लेकर काशी जाऊंगा और किशोरी तथा कामिनी को जो मनोरमा के मकान में कैद हैं बहुत जल्द छुड़ा लाऊंगा, तब तक तुम दोनों कुमारों और लाडिली को अपने साथ लेकर मायारानी के उस तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाकर देवमन्दिर में रहो। वहां खाने के लिए मेवों की बहुतायत है और पानी का चश्मा भी जारी है। मायारानी को तुम लोगों का हाल मालूम न होगा क्योंकि उसे वह स्थान मालूम नहीं है और न वहां तक जा ही सकती है। उसी जगह रह कर दोनों कुमारों को एक दो दफे 'रिक्तगन्थ' शुरू से आखीर तक अच्छी तरह पढ़ जाना चाहिए, जो बातें इनकी समझ में न आवें तुम समझा देना और इसी बीच में वहां की बहुत सी अद्भुत बातें भी ये देख लें इसलिए कि इनको बहुत जल्द वह तिलिस्म तोड़ना होगा, जैसा कि हम बुजुर्गों की लिखी किताबों में देख चुके हैं वह इन्हीं लोगों के हाथ से टूटेगा।

कम० । बेशक बेशक।

गोपाल० । और एक ऐयार को रोहतासगढ़ भेज दो कि वहां जाकर महाराज वीरेन्द्रसिंह को कुमारों के कुशल मंगल का हाल कहे और थोड़ी सी फौज अपने साथ ले आकर जमानिया के मुकाबिले में लड़ाई शुरू कर दे, मगर वह लड़ाई जोर के साथ शीघ्र बखेड़ा निपटाने की नीयत से न की जाय जब तक कि हमलोग दूसरा हुक्म न दें। बस इसके बाद जब मैं अपना काम करके अर्थात् किशोरी और कामिनी को छुड़ा कर लौटूंगा और तुमसे मिलूंगा तो जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा। हां देवमन्दिर में रह कर मौका मिले तो मायारानी को गुप्त रूप से छेड़ती रहना।

कम० । आपकी राय बहुत ठीक है मगर आप कैद की तकलीफ उठाने के कारण बहुत ही सुस्त और कमजोर हो रहे हैं, इतनी तकलीफ क्योंकर उठा सकेंगे।

गोपाल० । तुम इसकी चिन्ता मत करो! (कुमारों की तरफ देख कर) आप लोग मेरी राय पसन्द करते हैं या नहीं?

कुमार० । बेशक आपकी राय उत्तम है।

कमलिनी० । अच्छा तो अपना तिलिस्मी खंजर जिसका गुण आपसे कह चुकी हूं, आपको देती हूं, यह आपकी बहुत सहायता करेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोपाल० । हां बेशक यह खंजर ऐसी अवस्था में मेरे साथ रहने योग्य है। परन्तु वह जब तक तुम्हारे पास है तुम्हें किसी तरह का खतरा नहीं पहुंच सकता

इसलिए खंजर को मैं तुमसे जुदा न करूंगा।

इन्द्रजीत०। उस खंजर का जोड़ा जो कमलिनी ने मुझे दिया है मैं आपको देता हूं, आप इसे अवश्य अपने साथ रखें।

गोपाल०। नहीं नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं।

इन्द्रजीत०। आपको मेरी यह बात अवश्य माननी पड़ेगी।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने वह खंजर जबर्दस्ती गोपालसिंह के हवाले किया और किश्ती किनारे लगाने का हुक्म दिया।

गोपाल०। अच्छा तो मेरे साथ कौन ऐयार चलेगा?

इन्द्रजीत०। जिसे आप पसन्द करें! केवल तेजसिंह चाचा को मैं अपने पास रखना चाहता हूं, इसलिए कि उनकी जुबानी उन घटनाओं का हाल सुनूंगा जो आपको कैद से छुड़ाने के समय हुई होंगी।

गोपाल०। (हंस कर) बेशक वे बातें सुनने योग्य हैं।

देवी०। आपके साथ मैं चलूंगा।

गोपाल०। अच्छी बात है।

इन्द्र०। भैरोसिंह को रोहतासगढ़ भेजता हूं!

गोपाल०। बहुत मुनासिब, मगर तेजसिंह के अतिरिक्त और दोनों ऐयारों को अर्थात् तारासिंह और शेरसिंह को अपने साथ मत फंसाये रहिएगा?

इन्द्रजीत०। नहीं नहीं, उन दोनों को अपने रहने का ठिकाना दिखा कर छोड़ देंगे, ये दोनों चारो तरफ घूम घूम कर खबर लगाते रहेंगे।

गोपाल०। और मैं भी यही चाहता हूं। (कमलिनी की तरफ देख कर) बाग के चौथे दर्जे में जो देवमन्दिर है वहां जाने का रास्ता तुझे अच्छी तरह मालूम है या नहीं?

कमलिनी०। 'रिक्तगन्थ' की बदौलत वहां का रास्ता मैं अच्छी तरह जानती हूं।

इतने में किश्ती किनारे लगी और सब कोई उतर पड़े।

सातवां बयान

राजा गोपालसिंह और देवीसिंह को काशी की तरफ और भैरोसिंह को रोहतासगढ़ की तरफ रवाना करके कमलिनी अपने साथियों को साथ लिए हुए माया रानी के तिलिस्मी बाग की तरफ रवाना हुई। इस समय रात नाम मात्र को बाकी थी। प्रातः सुबह की चलने वाली हवा ... खुशबूदार फूलों की कलियों में से अपने हिस्से की सबसे पहिली खुशबू लिए हुए अठखेलियां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती सामने से चली आ रही थी। हमारे बहादुर कुमार और ऐयार लोग भी धीरे धीरे उसी तरफ जा रहे थे। यद्यपि मायारानी का तिलिस्मी बाग यहां से बहुत दूर था मगर वह खूबसूरत बंगला जो चश्मे के ऊपर बना हुआ था और जिसमें पहिले पहल नानक और बाबाजी (मायारानी के दारोगा) से मुलाकात हुई थी, थोड़ी ही दूर पर था बल्कि उसकी स्याही दिखाई दे रही थी। हमारे पाठक इस बंगले को अभी भूले न होंगे और उन्हें यह बात भी याद होगी कि नानक रामभोली को ढूंढ़ता हुआ चश्मे के किनारे चल कर इसी बंगले में पहुंचा था और इसी जगह से बेबस करके मायारानी के दर्बार में पहुंचाया गया था।

इन्द्र०। (कमलिनी से) सूर्योदय के पहिले ही हम लोगों को अपना सफर पूरा कर लेना चाहिए क्योंकि दूसरे के राज्य में बल्कि यों कहना चाहिए कि एक दुश्मन के राज्य में लापरवाही के साथ घूमना उचित नहीं है।

कम०। ठीक है, मगर हमें अब बहुत दूर जाना भी नहीं है। (हाथ का इशारा करके) वह जो मकान दिखाई देता है बस वहीं तक चलना है।

लाडिली०। वह तो दारोगा वाला बंगला है!

कम०। हां, और मैं समझती हूं कि जब से कम्बख्त दारोगा कैद हो गया है तब से वह खाली ही रहता होगा?

लाडिली०। हां वह मकान आजकल बिल्कुल खाली पड़ा है। यहां से एक सुरंग मायारानी के बाग तक गई है मगर उसका हाल सिवाय दारोगा के और किसी को मालूम नहीं है और दारोगा ने आज तक उसका भेद किसी से नहीं कहा।

कम०। ठीक है मगर मुझे उस सुरंग से कोई मतलब नहीं, उस मकान के पास ही चश्मे के दूसरी तरफ एक टीला है, मैं वहां चलूंगी क्योंकि आज दिन भर उसी टीले पर बिताना होगा।

लाडिली०। यदि मायारानी का कोई आदमी मिल गया तो?

कम०। एक नहीं अगर दस भी हों तो क्या परवाह!

थोड़ी ही देर में यह मण्डली उस मकान के पास जा पहुंची जिसमें दारोगा रहा करता था। कमलिनी ने चाहा कि उस मकान के बगल से हो कर चश्मे के पार चली जाय और उस टीले पर पहुंचे जहां जाने की आवश्यकता थी, मगर बंगले के बारामदे में एक लम्बे कद के आदमी को टहलते देख वह रुकी और उसी तरफ गौर से देखने लगी। कमलिनी के रुकने से दोनों कुमार और ऐयार लोग भी रुक गये और सभों का ध्यान उसी तरफ जा रहा। सबेरा तो हो चुका था मगर इतना साफ नहीं हुआ था कि सौ क़दम की दूरी से कोई किसी को पहिचान सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस आदमी ने भी कुंअर इन्द्रजीतसिंह की मण्डली को देखा और तेजी से इन लोगों की तरफ बढ़ा। कुछ पास आते ही कमलिनी ने उसे पहिचाना और कहा, "यह तो भूतनाथ है!" भूतनाथ का नाम सुनते ही शेरसिंह कांप उठा मगर दिल कड़ा करके चुपचाप खड़ा रह गया।

कम०। (भूतनाथ से) वाह वाह वाह! तुम्हारे भरोसे पर अगर कोई काम छोड़ दिया जाय तो वह बिल्कुल ही चौपट हो जाय!!

भूत०। (हाथ जोड़ कर) माफ कीजिएगा, मुझसे एक भूल हो गई और इसी सबब से मैं आज्ञानुसार काशी में आपसे मिल न सका।

कम०। भूल कैसी?

भूत०। नागर को लिए हुए मैं आपके मकान की तरफ जा रहा था। एक दिन तो बखूबी चला गया, दूसरे दिन जब बहुत थक गया तो एक पहाड़ी के नीचे घने जंगल में उसकी गठरी रख कर सुस्ताने के लिए जमीन पर लेट गया, यकायक कम्बख्त नींद ने घर दबाया और मैं सो गया। जब आंख खुली तो नागर को अपने पास न देख कर घबरा गया और उसे चारो तरफ ढूंढ़ने लगा मगर कहीं पता न लगा।

कम०। अफसोस!

भूत०। कई दिन तक ढूंढ़ता रहा, आखिर भेष बदल जब काशी में आया तो खबर लगी कि नागर अपने मकान में मौजूद है। इसके बाद मैं गुप्त रीति से मायारानी के तिलिस्मी बाग के चारो तरफ घूमने लगा, वहां पता लगा कि दोनों कुमार और उनके ऐयारों को जिन्हें मायारानी ने कैद कर रक्खा था कोई छुड़ा कर ले गया, मैं उसी समय समझ गया कि यह काम आपका है, बस तभी से आपको ढूंढ़ रहा हूं, इस समय इत्तिफाक से इधर आ निकला।

कम०। (कुछ सोच कर) तुम अपने को बड़ा होशियार लगाते हो मगर वास्तव में कुछ भी नहीं हो! खैर हम लोगों के साथ चले आओ।

भूतनाथ को भी साथ लिए हुए कमलिनी वहां से रवाना हुई और चश्मे के पास से होकर उस टीले के पास पहुंची जिसके ऊपर जाने का इरादा था। कमलिनी जब अपने साथियों को पीछे पीछे आने के लिए कह कर टीले के ऊपर चढ़ने लगी तब शेरसिंह ने टोक दिया और कहा, "यदि कोई हर्ज न हो तो मेरी एक बात पहिले सुन लीजिये।"

कम०। आप जो कुछ कहेंगे मैं पहिले ही समझ गई, आप बेखटके कीजिये और चले आइये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेर०। ठीक है, मगर जब तक मैं कुछ कह न लूंगा जी न मानेगा।

कम०। (हंस कर) अच्छा कहिये।

शेरसिंह को अपने साथ आने का इशारा करके कमलिनी टीले के दूसरी तरफ चली और दोनों कुमार, तेजसिंह तारासिंह लाडिली और भूतनाथ को टीले के ऊपर धीरे धीरे चढ़ने के लिए कह गई। टीले के पीछे निराले में पहुंचने पर शेरसिंह ने अपने दिल का हाल कहना शुरू किया—

शेर०। चाहे आप भूतनाथ को कैसा ही नेक और ईमानदार समझती हों, मगर मैं इतना कहे बिना नहीं रह सकता कि आप उस बेईमान शैतान पर भरोसा न कीजिये।

कम०। मैं पहिले ही समझ गई थी कि आप यही बात मुझसे कहेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि भूतनाथ ने जो कुछ काम किये हैं वह उसकी नेकनामी ईमानदारी और ऐयारी में बट्टा लगाते हैं परन्तु आप कोई तरद्दुद न कीजिए, मैं बड़े बड़े बेईमानों से अपना मतलब निकाल लेती हूं, मेरे साथ वह अगर जरा भी दगा करेगा तो उसे बेकाम करके छोड़ दूंगी।

शेर०। मैं समझती हूं कि आप उसका पूरा पूरा हाल नहीं जानतीं।

कम०। भूतनाथ यद्यपि तुम्हारा भाई है मगर मैं उसका हाल तुमसे भी ज्यादे जानती हूं। तुम्हें अगर डर है तो इसी बात का न कि यदि कुमारों को मालूम हो जायगा कि वह तुम्हारा भाई है तो तुम्हारी तरफ से उनका दिल मैला हो जायगा या भूतनाथ अगर कोई बुराई कर बैठेगा तो मुफ्त में तुम भी बदनाम किये जाओगे।

शेर०। हां हां, बस इसी सोच में मैं मरा जाता हूं!

कम०। तो तुम निश्चिन्त रहो, तुम्हारे सिर कोई बदनामी न आवेगी, जो कुछ होगा मैं समझ लूंगी।

शेर०। अख्तियार आपको है, मुझे जो कुछ कहना था कह चुका।

दोनों कुमार और उनके साथी लोग टीले पर चढ़ चुके थे, इसके बाद शेरसिंह को अपने साथ लिए हुए कमलिनी भी वहां जा पहुंची। टीले के ऊपर की अवस्था देखने से मालूम होता था कि किसी जमाने में वहां पर जरूर कोई खूबसूरत मकान बना हुआ होगा मगर इस समय तो एक कोठरी के सिवाय वहां और कुछ भी मौजूद न था। यह कोठरी बीस पचीस आदमियों के बैठने योग्य थी। कोठरी के बीचोबीच पत्थर का एक चबूतरा बना हुआ था और उसके ऊपर पत्थर ही का शेर बैठा था। कमलिनी ने उसी जगह सभों को बैठने के लिए कहा और भूतनाथ की तरफ देख कर बोली, "इसी जगह से एक रास्ता मायारानी के तिलिस्मी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाग में गया है। तुम्हें छोड़ सब लोगों को लेकर मैं वहां जाऊंगी और कुछ दिनों तक उसी बाग में रह कर अपना काम करूंगी। तब तक के लिये एक दूसरा काम तुम्हारे सुपुर्द करती हूं, आशा है कि तुम बड़ी होशियारी से उस काम को करोगे।

भूत०। जो कुछ आज्ञा हो मैं करने के लिए तैयार हूं मगर इस समय सबके पहिले मैं दो चार बातें आपसे कहा चाहता हूं, यदि आप एकान्त में सुन लें तो ठीक है।

कम०। कोई हर्ज नहीं, तुम जो कुछ कहोगे मैं सुनने के लिए तैयार हूं।

इतना कह कर भूतनाथ को साथ लिए कमलिनी उस कोठरी के बाहर निकल आई और दूसरी तरफ एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर भूतनाथ से बातचीत करने लगी। दो घड़ी से ज्यादा दोनों में बातचीत होती रही जिसे इस जगह लिखना हम मुनासिब नहीं समझते। अन्त में भूतनाथ ने अपने बटुए में से कलम दावात और कागज का टुकड़ा निकाल कर कमलिनी के सामने रख दिया। कमलिनी ने एक चीठी अपने बहनोई राजा गोपालसिंह के नाम लिखी और उसमें यह लिखा कि 'भूतनाथ को यह चीठी देकर हम तुम्हारे पास भेजते हैं। इसे बहुत ही नेक और ईमानदार समझना और हर एक काम में इसकी राय और मदद लेना। यदि यह किसी जगह ले जाय तो बेखटके चले जाना और यदि अपनी इच्छानुसार कोई काम करने के लिये कहे तो उसमें किसी तरह का शक न करना। मैं इससे अपना भेद नहीं छिपाती और इसे अपना विश्वासपात्र समझती हूं'। इसके बाद हस्ताक्षर और एक निशान करके वह चीठी भूतनाथ के हवाले की और कहा कि 'बस तुम इसी समय मनोरमा के मकान की तरफ चले जाओ और राजा गोपाल-सिंह से मिल कर काम करो या जो मुनासिब हो करो मगर देखो, खूब होशियारी से काम करना, मामला बहुत नाजुक है और तुम्हारे ईमान में जरा सा फर्क पड़ेगा तो मैं बहुत बुरी तरह पेश आऊंगी'!

"आप हर तरह से बेफिक्र रहिए!" कह कर भूतनाथ टीले के नीचे उतर आया और देखते देखते सामने के जंगल में घुस कर गायब हो गया।

आठवां बयान

अपनी बहिन लाडिली ऐयारों और दोनों कुमारों को साथ लेकर कमलिनी राजा गोपालसिंह के कहे अनुसार मायारानी के तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाकर देवमन्दिर में कुछ दिन रहेगी। वहां रह कर ये लोग जो कुछ करेंगे उसका हाल पीछे लिखेंगे, इस समय भूतनाथ का कुछ हाल लिख कर हम अपने पाठकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के दिल में एक प्रकार का खुटका पैदा करते हैं ।

भूतनाथ कमलिनी से बिदा होकर सीधे काशीजी की तरफ नहीं गया बल्कि मायारानी से मिलने के लिए उसके खास बाग (तिलिस्मी बाग) की तरफ रवाना हुआ और दो पहर दिन चढ़ने के पहिले ही बाग के फाटक पर जा पहुंचा। पहरे वाले सिपाहियों में से एक की तरफ देख कर बोला, "जल्द इत्तिला कराओ कि भूतनाथ आया है।" इसके जवाब में उस सिपाही ने कहा, "आपके लिए रुकावट नहीं है आप चले जाइए, जब दूसरे दर्जे के फाटक पर जाइएगा तो लौंडियों से इत्तिला कराइयेगा।"

भूतनाथ बाग के अन्दर चला गया। जब दूसरे दर्जे के फाटक पर पहुंचा तो लौंडियों ने उसके आने की इत्तिला की और वह बहुत जल्द मायारानी के सामने हाजिर किया गया।

माया०। कहो भूतनाथ, कुशल से तो हो? तुम्हारे चेहरे पर खुशी की निशानी पाई जाती है, इससे मालूम होता है कि कोई खुशखबरी लाये हो और तुम्हारे शीघ्र लौट आने का भी यही सबब है। तुम जो चाहो कर सकते हो! हां क्या खबर लाये?

भूत०। अब तो मैं बहुत कुछ इनाम लूंगा क्योंकि वह काम कर आया हूं जो सिवा मेरे दूसरा कोई कर ही नहीं सकता था।

माया०। बेशक तुम ऐसे ही हो, भला कहो तो सही क्या कर आये?

भूत०। यह बात ऐसी नहीं है कि किसी के सामने कही जाय।

माया०। (लौंडियों को चले जाने का इशारा करके) बेशक मुझसे भूल हुई कि इन सभों के सामने तुमसे खुशी का सबब पूछती थी। हां अब तो सन्नाटा हो गया।

भूत०। आपने अपने पति गोपालसिंह के लिए जो उद्योग किया था वह तो बिल्कुल ही निष्फल हुआ। मैं अब कमलिनी के पास से चला आ रहा हूं। उसे मुझ पर पूरा भरोसा और विश्वास है और वह मुझसे अपना कोई भेद नहीं छिपाती। उनकी जुबानी जो कुछ मुझे मालूम हुआ है उससे जाना जाता है कि गोपालसिंह अभी किसी के सामने अपने को जाहिर नहीं करेगा बल्कि गुप्त रह कर आपको तरह तरह की तकलीफें पहुंचावेगा और अपना बदला लेगा।

माया०। (कांप कर) बेशक वह मुझे तकलीफ देगा। हाय, मैंने दुनिया का सुख कुछ भी नहीं भोगा! खैर तुम कौन सी खुशखबरी सुनाने आये हो सो तो कहो।

भूत०। कह तो रहा हूं—पर आप स्वयं बीच में टोक देती हैं तो क्या करूं। हां तो इस समय आपको सताने के लिए बड़ी बड़ी कार्रवाइयां हो रही हैं और रोहतासगढ़ से फौज चली आ रही है क्योंकि गोपालसिंह और तेजसिंह ने कुमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की दिलजमई करा दी है कि राजा वीरेन्द्रसिंह और रानी चन्द्रकान्ता को मायारानी ने कैद नहीं किया बल्कि धोखा देने की नीयत से दो आदमियों को नकली चन्द्रकान्ता और वीरेन्द्रसिंह बना कर कैद किया है। अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह के दो ऐयारों को साथ लेकर गोपालसिंह किशोरी और कामिनी को छुड़ाने के लिए मनोरमा के मकान में गये हैं।

माया०। विना बोले रहा नहीं जाता! मैं न तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह या उनके ऐयारों से डरती हूं और न रोहतासगढ़ की फौज से डरती हूं, मैं अगर डरती हूं तो केवल गोपालसिंह से बल्कि उसके नाम से, क्योंकि मैं उसके साथ बुराई कर चुकी हूं और वह मेरे पंजे से निकल गया है। खैर यह खबर तो तुमने अच्छी सुनाई कि वह किशोरी और कामिनी को छुड़ाने के लिये मनोरमा के मकान में गया है। मैं आज ही यहां से काशीजी की तरफ रवाना हो जाऊंगी और जिस तरह होगा उसे गिरफ्तार करूंगी!

भूत०। नहीं नहीं, अब आप उसे कदापि गिरफ्तार नहीं कर सकतीं, आप क्या बल्कि आप सी अगर दस हजार एक साथ हो जायं तो भी उसका कुछ नहीं विगड़ सकती हैं।

माया०। (चिढ़ कर) सो क्यों?

भूत०। कमलिनी ने उसे एक ऐसी अनूठी चीज दी है कि वह जो चाहे कर सकता है और आप उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकतीं।

माया०। वह कौन ऐसी अनमोल चीज है?

इसके जवाब में भूतनाथ ने उस तिलिस्मी खंजर का हाल और गुण बयान किया जो कमलिनी ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह को दिया था और कुंअर साहब ने गोपालसिंह को दे दिया था। अभी तक उस खंजर का पूरा हाल मायारानी को मालूम न था इसलिये उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह कुछ देर तक सोचने के बाद बोली—

माया०। अगर ऐसा खंजर उसके हाथ लग गया है तो उसका कोई भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता। बस मैं अपनी जिन्दगी से निराश हो गई। परन्तु मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा तिलिस्मी खंजर कहीं से कमलिनी के हाथ लगा हो। यह असम्भव है, बल्कि ऐसा खंजर हो ही नहीं सकता। कमलिनी ने तुमसे झूठ कहा होगा।

भूतनाथ०। (हंस कर) नहीं नहीं, बल्कि उसी तरह का एक खंजर कमलिनी ने मुझे भी दिया है। (कमर से खंजर निकाल कर और हर तरह पर दिखा कर) देखिये यही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया० । (ताज्जुब से) हां हां अब मुझे याद आया । नागर ने अपना और तुम्हारा हाल बयान किया था तो ऐसे खंजर का जिक्र किया था और मैं इस बात को बिल्कुल भूल गई थी । खैर तो अब मैं उस पर किसी तरह फतह नहीं पा सकती।

भूत० । नहीं घबड़ाइये मत, उसके लिये भी मैं बन्दोबस्त करके आया हूं।

माया० । वह क्या ?

भूतनाथ ने वह कमलिनी वाली चीठी बटुए में से निकाल कर मायारानी के सामने रक्खी जिसे पढ़ते ही वह खुश हो गई और बोली, "शाबाश भूतनाथ, तुमने बड़ा ही काम किया ! अब तो तुम उस नालायक को मेरे पंजे में इस तरह फंसा सकते हो कि कमलिनी को तुम पर कुछ भी शक न हो ।

भूत० । बेशक ऐसा ही है मगर इसलिए अब हम लोगों को अपनी राय बदल देनी पड़ेगी अर्थात् पहिले जो यह बात सोची गई थी कि किशोरी को छुड़ाने के लिए जो कोई वहां जायेगा उसे फंसाते जायंगे सो न करना पड़ेगा ।

माया० । तुम जैसा कहोगे वैसा ही किया जायगा, बेशक तुम्हारी अक्ल हम लोगों से तेज है । तुम्हारा ख्याल बहुत ठीक है, अगर उसे पकड़ने की कोशिश की जायगी तो वह कई आदमियों को मार कर निकल जायगा और फिर कब्जे में न आवेगा और ताज्जुब नहीं कि इसकी खबर भी लोगों को हो जाय जो हमारे लिए बहुत बुरा होगा ।

भूतनाथ० । हां, अस्तु आप एक चीठी नागर के नाम की लिख कर मुझे दीजिए और उसमें केवल इतना ही लिखिए कि किशोरी और कामिनी को निकाल ले जाने वाले से रोक टोक न करें बल्कि तरह दे जांय और उस मकान के तहखानों का भेद मुझे बता दें, फिर जब ये दोनों किशोरी और कमलिनी को ले जायंगे तो उसके बाद मैं उन्हें धोखा देकर दारोगा वाले बंगले में जो नहर के ऊपर है ले जाकर झट फंसा लूंगा । वहां के तहखानों की ताली आप मुझे दे दीजिये । कमलिनी की जुबानी मैंने सुना है कि वहां का तहखाना बड़ा ही अनूठा है, इसलिए मैं समझता हूं कि मेरा काम उस मकान से बखूबी चलेगा । जब मैं गोपालसिंह को वहां फंसा लूंगा तो आपको खबर दूंगा, फिर आप जो चाहे कीजियेगा ।

माया० । बस बस, तुम्हारी यह राय बहुत ठीक है, अब मुझे निश्चय हो गया कि मेरी मुराद पूरी हो जायगी ।

मायारानी ने दारोगा वाले बंगले तथा तहखाने की ताली भूतनाथ के हवाले करके उसे वहां का भेद बता दिया और भूतनाथ के कहे बमूजिब एक चीठी भी नागर के नाम की लिख दी । दोनों चीजें लेकर भूतनाथ वहां से रवाना हुआ और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशीजी की तरफ तेज़ी के साथ चल निकला ।

नौवां बयान

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है । काशी में मनोरमा के मकान के अन्दर फर्श पर नागर बैठी हुई है और उसके पास ही एक नौजवान खूबसूरत आदमी छोटे छोटे तीन चार तकियों का सहारा लगाये अधलेटा सा पड़ा जमीन की तरफ देखता हुआ कुछ सोच रहा है । इन दोनों के सिवाय कमरे में कोई तीसरा नहीं है ।

नागर० । मैं फिर भी तुम्हें कहती हूं कि किशोरी का ध्यान छोड़ दो क्योंकि इस समय मौका समझ कर मायारानी ने उसे आराम के साथ रखने का हुक्म दिया है ।

जवान० । ठीक है मगर मैं उसे किसी तरह की तकलीफ तो नहीं देता फिर उसके पास मेरा जाना तुमने क्यों बन्द कर दिया ?

नागर० । बड़े अफसोस की बात है कि तुम मायारानी की तरफ कुछ भी ध्यान नहीं देते ! जब भी तुम किशोरी के सामने जाते ही वह जान देने के लिये तैयार हो जाती है । तुम्हारे सबब से वह सूख कर कांटा हो गई है । मुझे निश्चय है कि दो तीन दफे अगर तुम और उसके सामने आओगे तो वह जीती न बचेगी क्योंकि उसमें अब बात करने की भी ताकत नहीं रही, और उसका मरना माया-रानी के हक में बहुत ही बुरा होगा । जब तक किशोरी को यह निश्चय न होगा कि तुम इस मकान से निकाल दिए गए तब तक वह मुझसे सीधी तरह बात भी न करेगी । ऐसी अवस्था में मायारानी की आज्ञानुसार मैं उसे कैद रखने की अवस्था में भी क्योंकर खुश रख सकती हूं ?

जवान० । (कुछ चिढ़ कर) यह बात तो तुम कई दफे कह चुकी हो फिर घड़ी घड़ी क्यों कहती हो ?

नागर० । खैर न सही, सौ की सीधी एक ही कहे देती हूं कि किशोरी के बारे में तुम्हारी मुराद पूरी न होगी और जहां तक जल्द हो सके तुम्हें मायारानी के पास चले जाना पड़ेगा ।

जवान० । यदि ऐसा ही है तो लाचार होकर मुझे मायारानी के साथ दुश्मनी करनी पड़ेगी । मैं उसके कई ऐसे भेद जानता हूं कि जिन्हें प्रकट करने में उसकी कुशल नहीं है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नागर० । अगर तुम्हारी यह नीयत है तो तुम अभी यहमपुरी में भेज दिये जाओगे ।

जवान० । तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकतीं, मैं तुम्हारी जहरीली अंगूठी से डरने वाला नहीं हूं !

इतना कह कर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और कमरे के बाहर निकला ही चाहता था कि सामने का दर्वाजा खुला और भूतनाथ आता हुआ दिखाई दिया। नागर ने जवान की तरफ इशारा करके भूतनाथ से कहा, "देखो इस नालायक को मैं पहरों से समझा रही हूं मगर कुछ भी नहीं सुनता और जान बूझ कर मायारानी को मुसीबत में डालना चाहता है !" इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा, "हां मैं भी पिछले दर्वाजे की तरफ खड़ा खड़ा इस हरामजादे की बातें सुन रहा था !"

'हरामजादे' का शब्द सुनते ही उस नौजवान को क्रोध चढ़ आया और वह हाथ में खंजर लेकर भूतनाथ की तरफ झपटा। भूतनाथ ने चालाकी से उसकी कलाई पकड़ ली और कमरबन्द में हाथ डाल के ऐसी अड़ानी मारी कि वह धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। नागर दौड़ी हुई बाहर चली गई और एक मजबूत रस्सी ले आई जो उस नौजवान के हाथ पैर बांधने के काम में आई। भूतनाथ उस नौजवान को घसीटता हुआ दूसरी कोठरी में ले गया और नागर भी भूतनाथ के पीछे पीछे चली गई।

आधे घण्टे के बाद नागर और भूतनाथ फिर उसी कमरे में आये और दोनों प्रेमी मसनद पर बैठ कर खुशी खुशी हंसी दिल्लगी की बातें करने लगे। अन्दाज से मालूम होता है कि ये दोनों उस नौजवान को कहीं कैद कर आये हैं।

थोड़ी देर तक हंसी दिल्लगी होती रही, इसके बाद मतलब की बातें होने लगीं। नागर के पूछने पर भूतनाथ ने अपना हाल कहा और सब के पहिले वह चीठी नागर को दिखाई जो राजा गोपालसिंह के लिए कमलिनी ने लिख दी थी इसके बाद मायारानी के पास जाने और बातचीत करने का खुलासा हाल कह के वह दूसरी चीठी भी नागर को दिखाई जो मायारानी ने नागर के नाम की लिख कर भूतनाथ के हवाले की थी। यह सब हाल सुन कर नागर बहुत खुश हुई और बोली, "यह काम सिवाय तुम्हारे और किसी से नहीं हो सकता था और यदि तुम मायारानी की चीठी न भी लाते तो भी तुम्हारी आज्ञानुसार काम करने को मैं तैयार थी।"

भूतनाथ० । सो तो ठीक है, मुझे भी यही आशा थी, परन्तु यों ही एक चीठी तुम्हारे नाम की लिखा ली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नागर० । पर ताज्जुब है कि राजा गोपालसिंह और देवीसिंह आज के पहिले से इस शहर में आए हुए हैं मगर अभी तक इस मकान के अन्दर उन दोनों के

आने की आहट नहीं मिली । न मालूम वे दोनों कहां और किस धुन में हैं ! खैर जो होगा देखा जायगा, अब यह कहिये कि आप क्या करना चाहते हैं ?

भूतनाथ० । (कुछ देर तक सोच कर) अगर ऐसा है तो मुझे स्वयं उन दोनों को ढूंढ़ना पड़ेगा । मुलाकात होने पर दोनों को गुप्त रीति से इस मकान के अन्दर ले आऊंगा और किशोरी कामिनी को छुड़ा कर यहां से निकल जाऊंगा, फिर धोखा देकर किशोरी और कामिनी को अपने कब्जे में कर लूंगा अर्थात् उन्हें कोई दूसरा काम करने के लिये कह कर किशोरी और कामिनी को रोहतासगढ़ पहुंचाने का वादा कर ले जाऊंगा और उस गुप्त खोह में जिसे मैं अपना मकान समझता हूं और तुम्हें दिखा चुका हूं अपने आदमियों के सुपुर्द करके गोपालसिंह से आ मिलूंगा और फिर उसे कैद कर के मायारानी के पास पहुंचा दूंगा जिसमें वह अपने हाथ से उसे मार कर निश्चिन्त हो जाय ।

नागर० । बस बस, तुम्हारी राय बहुत ठीक है, अगर इतना काम हो जाय तो फिर क्या चाहिये । मायारानी से मुंहमांगा इनाम मिले क्योंकि इस समय वह राजा गोपालसिंह के सबब से बहुत ही परेशान हो रही है, यहां तक कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह के हाथ से तिलिस्म को बचाने का ध्यान तक भी उसे बिलकुल ही जाता रहा । यदि वह गोपालसिंह को मार के निश्चिन्त हो जाये तो अपने से बढ़ कर भाग्यवान दुनिया में किसी को नहीं समझेगी जैसा कि थोड़े दिन पहिले समझती थी ।

भूतनाथ० । जो मैं कह चुका हूं वही होगा इसमें कोई सन्देह नहीं । अच्छा अब तुम इस मकान का पूरा पूरा भेद मुझे बता दो जिसमें किसी तहखाने कोठरी रास्ते या चोर दर्वाजे का हाल मुझसे छिपा न रहे ।

नागर० । बहुत अच्छा चलिए उठिए, जहां तक जल्द हो सके इस काम से भी निपट हो लेना चाहिए ।

नागर ने उस मकान का पूरा पूरा भेद भूतनाथ को बता दिया, हर एक कोठरी तहखाना रास्ता और चोरदर्वाजा तथा सुरंग दिखा दिया और उनके खोलने और बन्द करने की विधि भी बता दी । इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ नागर से बिदा हुआ और राजा गोपालसिंह तथा देवीसिंह की खोज में चारो ओर घूमने लगा ।

दसवां बयान

दूसरे दिन आधी रात जाते जाते भूतनाथ फिर उसी मकान में नागर के पास पहुंचा । इस समय नागर आराम से सोई न थी बल्कि न मालूम किस धुन और फिक्र में मकान की पिछली तरफ नजरबाग में टहल रही थी । भूतनाथ को देखते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही वह हंसती हुई पास आई और बोली।

नागर०। कहो कुछ काम हुआ ?

भूत०। काम तो बखूबी हो गया, उन दोनों से मुलाकात भी हुई और जो जो कुछ मैंने कहा दोनों ने मंजूर भी किया। कमलिनी की चीठी जब मैंने गोपालसिंह के हाथ में दी तो वे पढ़ कर बहुत खुश हुए और बोले, "कमलिनी ने जो कुछ लिखा है मैं उसे मंजूर करता हूं। वह तुम पर विश्वास रखती है तो मैं भी रखूंगा और जो तुम कहोगे वही करूंगा।"

नागर०। बस तब काम बखूबी बन गया, अच्छा अब क्या करना चाहिये ?

भूत०। अब वे दोनों आते ही होंगे, तुम टहलना बन्द करो और कमरे में जाकर किवाड़ बन्द करके सो रहो और सिपाहियों को भी हुक्म दे दो कि आज कोई सिपाही पहरा न दे बल्कि सब आराम से सो रहें यहां तक कि अगर किसी को इस बाग में देखें भी तो चुपके हो रहें।

नागर "बहुत अच्छा" कह कर अपने कमरे में चली गई और भूतनाथ के कहे मुताबिक सिपाहियों को हुक्म देकर अपने कमरे का दर्वाजा बन्द करके चारपाई पर लेट रही। भूतनाथ उसी बाग में घूमता फिरता पिछली दीवार के पास जहां एक चोरदर्वाजा था जा पहुंचा और उसी जगह बैठ कर किसी के आने की राह देखने लगा।

आधे घण्टे तक सन्नाटा रहा, इसके बाद किसी ने दर्वाजे पर दो दफे हाथ से थपकी लगाई। भूतनाथ ने उठ कर झट दर्वाजा खोल दिया और दो आदमी उस राह से आ पहुंचे। बंधे हुए इशारे के होने से मालूम हो गया कि ये दोनों राजा गोपालसिंह और देवीसिंह हैं। भूतनाथ उन दोनों को अपने साथ लिए हुए धीरे धीरे कदम रखता हुआ नजरबाग के बीचोबीच आया जहां एक छोटा सा फौवारा था।

गोपाल०। (भूतनाथ से) कुछ मालूम है कि इस समय किस तरफ पहरा पड़ रहा है ?

भूत०। कहीं भी पहरा नहीं पड़ता चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। इस मकान में जितने आदमी रहते हैं सभों को मैंने बेहोशी की दवा दे दी है और सब के सब उठने के लिए मुर्दों से बाजी लगा कर पड़े हैं।

गोपाल०। तब तो हमलोग बड़ी लापरवाही से अपना काम कर सकते हैं ?

भूत०। बेशक !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोपाल०। अच्छा मेरे पीछे पीछे चले आओ। (हाथ का इशारा करके) हम इस समय उस हम्माम की राह तहखाने में घुसा चाहते हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि

इस समय किशोरी और कामिनी किस तहखाने में कैद है।

भूत०। हां जरूर मालूम है। किशोरी और कामिनी दोनों एक ही साथ 'वायु-मण्डप' में कैद हैं।

गोपाल०। तब तो हम्माम में जाने की कोई जरूरत नहीं, अच्छा तुम ही आगे चलो।

भूतनाथ आगे आगे रवाना हुआ और उसके पीछे राजा गोपालसिंह और देवीसिंह चलने लगे। तीनों आदमी उत्तर तरफ के दालान में पहुंचे जिसके दोनों तरफ दो कोठरियां थीं और इस समय दोनों कोठरियों का दर्वाजा खुला हुआ था। तीनों आदमी दाहिने तरफ वाली कोठरी में घुसे और अन्दर जाकर कोठरी का दर्वाजा बन्द कर लिया। बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और देखा कि सामने दीवार में एक आलमारी है जिसका दर्वाजा एक खटके पर खुला करता था। भूतनाथ उस दर्वाजे को खोलना जानता था इसलिए पहिले उसी ने खटके पर हाथ रक्खा। दर्वाजा खुल जाने पर मालूम हुआ कि उसके अन्दर सीढ़ियां बनी हुई हैं। तीनों आदमी उस सीढ़ी की राह से नीचे तहखाने में उतर गये और एक कोठरी में पहुंचे जिसका दूसरा दर्वाजा बन्द था। भूतनाथ ने उस दर्वाजे को भी खोला और तीनों आदमियों ने दूसरी कोठरी में पहुंच कर देखा कि एक चारपाई पर बेचारी किशोरी पड़ी हुई है, सिर्हाने की तरफ कामिनी बैठी धीरे धीरे उसका सिर दबा रही थी। कामिनी का चेहरा जर्द और सुस्त था मगर किशोरी तो वर्षों की बीमार जान पड़ती थी। जिस चारपाई पर वह पड़ी थी उसका बिछावन बहुत मैला था, और उसी के पास एक दूसरी चारपाई बिछी हुई थी जो शायद कामिनी के लिए हो। कोठरी के एक कोने में पानी का घड़ा लोटा गिलास और कुछ खाने का सामान रक्खा हुआ था।

किशोरी और कामिनी देवीसिंह को बखूबी पहिचानती थीं मगर भूतनाथ को केवल कामिनी ही पहिचानती थी, जब कमला के साथ शेरसिंह से मिलने के लिए कामिनी तिलिस्मी खंडहर में गई थी तब उसने भूतनाथ को देखा था और यह भी जानती थी कि भूतनाथ को देख कर शेरसिंह डर गया था मगर इसका सबब पूछने पर भी उसने कुछ न कहा था। इस समय वह फिर उसी भूतनाथ को यहां देख कर डर गई और जी में सोचने लगी कि एक बला में तो फंसी ही थी यह दूसरी बला कहां से आ पहुंची, मगर उसी के साथ देवीसिंह को देख उसे कुछ ढाढ़स हुई और किशोरी को तो पूरी उम्मीद हो गई कि ये लोग हमको छुड़ाने ही आये हैं। वह भूतनाथ और राजा गोपालसिंह को पहिचानती न थी मगर सोच लिया कि शायद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये दोनों भी राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार होंगे। किशोरी यद्यपि बहुत ही कमजोर बल्कि अधमरी सी हो रही थी मगर इस समय यह जान कर कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह के ऐयार हमें छुड़ाने आ गये हैं और अब शीघ्र ही इन्द्रजीतसिंह से मुलाकात होगी उसकी मुरझाई हुई आशालता हरी हो गई और उसमें जान आ गई। इस समय किशोरी का सिर कुछ खुला हुआ था जिसे उसने हाथ से ढंक लिया और देवीसिंह की तरफ देख कर बोली—

किशोरी०। मैं समझती हूं आज ईश्वर को मुझ पर दया आई है इसी से आप लोग मुझे यहां से छुड़ा कर ले जाने के लिए आए हैं।

देवी०। जी हां, हम लोग आपको छुड़ाने के लिए आये हैं मगर आपकी दशा देख कर रुलाई आती है। हाय, क्या दुनियां में भलों और नेकों को यही इनाम मिला करता है!!

किशोरी०। मैंने सुना था कि राजा साहब के दोनों लड़कों और ऐयारों को मायारानी ने कैद कर लिया है?

देवी०। जी हां, उन कैदी ऐयारों में मैं भी था परन्तु ईश्वर की कृपा से सब कोई छूट गए और अब हमलोग आपको और (कामिनी की तरफ इशारा करके) इनको छुड़ाने आये हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप बहुत कुछ मुझसे पूछा चाहती हैं और मेरे पेट में भी बहुत सी बातें कहने योग्य भरी हैं परन्तु यह अमूल्य समय बातों में नष्ट करने योग्य नहीं हैं इसलिए जो कुछ कहने सुनने की बातें हैं फिर होती रहेंगी, इस समय जहां तक जल्द हो सके यहां से निकल चलना ही उत्तम है।

"हां ठीक है" कह कर किशोरी उठ बैठी। उसमें चलने फिरने की ताकत न थी परन्तु इस समय की खुशी ने उसके खून में कुछ जोश पैदा कर दिया और वह इस लायक हो गई कि कामिनी के मोढ़े पर हाथ रख के तहखाने से ऊपर आ सके और वहां से बाग की चहारदीवारी के बाहर जा सके। कामिनी यद्यपि भूतनाथ को देख कर सहम गई थी मगर देवीसिंह के भरोसे से उसने इस विषय में कुछ कहना उचित न जाना, दूसरे उसने यह सोच लिया कि इस कैदखाने से बढ़ कर और कोई दुःख की जगह न होगी अतएव यहां से तो निकल चलना ही उत्तम है।

किशोरी और कामिनी को लिए हुए तीनों आदमी तहखाने से बाहर निकले। इस समय भी उस मकान के चारों तरफ तथा नजरबाग में सन्नाटा ही था इसलिए ये लोग बिना रोक टोक उसी दर्वाजे की राह यहां से बाहर निकल गये जिससे राजा गोपालसिंह बाग के अन्दर आये थे। थोड़ी दूर पर तीन घोड़े और एक रथ जिसके बास्ते दो घोड़े जुते हुए थे मौजूद था। रथ पर किशोरी और कामिनी को सवार कराया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया और तीनों घोड़ों पर राजा गोपालसिंह देवीसिंह और भूतनाथ ने सवार होकर रथ को तेजी के साथ हांकने के लिए कहा। बात की बात में वे लोग शहर के बाहर हो गये बल्कि सुबह की सुफेदी निकलने के पहिले ही लगभग पांच कोस दूर निकल जाने के बाद एक चौमुहानी पर रुक कर विचार करने लगे कि अब रथ को किस तरफ ले चलना या रथ की हिफाजत किसके सुपुर्द करना चाहिये !

ग्यारहवां बयान

ऊपर के बयान में जो कुछ लिख आये हैं उस बात को कई दिन बीत गये, आज भूतनाथ को हम फिर मायारानी के पास बैठे हुए देखते हैं। रंग ढंग से जाना जाता है कि भूतनाथ की कार्रवाइयों से मायारानी बहुत ही प्रसन्न है और वह भूतनाथ को कद्र और इज्जत की निगाह से देखती है। इस समय मायारानी के सामने सिवाय भूतनाथ के कोई दूसरा आदमी मौजूद नहीं है।

माया०। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुमने मेरी जान बचा ली।

भूतनाथ०। गोपालसिंह को धोखा देकर गिरफ्तार करने में मुझे बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आज दो दिन से केवल पानी के सहारे मैं जान बचाये हूं। अभी तक तो कोई ऐसी बात नहीं हुई जिसमें कमलिनी या राजा बीरेन्द्रसिंह के पक्ष वाले किसी को मुझ पर शक हो। राजा गोपालसिंह के साथ केवल देवीसिंह था जिसको मैंने किसी जरूरी काम के लिए रोहतासगढ़ जाने की सलाह दे दी और उसके जाने बाद गोपालसिंह को बातों में उलझा कर दारोगा वाले मकान में ले जाकर कैद कर दिया।

माया०। तो उसे तुमने खतम ही क्यों न कर दिया ?

भूत०। केवल तुम्हारे विश्वास के लिये उसे जीता रख छोड़ा है।

माया०। (हंस कर) केवल उसका सिर ही काट लाने से मुझे पूरा विश्वास हो जाता! पर जो हुआ सो हुआ अब अब उसके मारने में विलम्ब न करना चाहिये!

भूत०। ठीक है, जहां तक हो अब इस काम में जल्दी करना ही उचित है क्योंकि अबकी दफे यदि वह छूट जायगा तो मेरी बड़ी दुर्गति होगी।

माया०। नहीं नहीं, अब वह किसी तरह नहीं बच सकता। मैं तुम्हारे साथ चलती हूं और अपने हाथ से उसका सिर काट कर सदैव के लिए टंटा मिटाती हूं। घण्टे भर और ठहर जाओ, अच्छी तरह अंधेरा हो जाने पर ही यहां से चलना उचित होगा, बल्कि तब तक कुछ भोजन भी कर लो क्योंकि दो दिन के भूखे हो। यह तो कहो कि किशोरी और कामिनी को तुमने कहां छोड़ा ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत०। किशोरी और कामिनी को मैं एक ऐसी खोह में रख आया हूं जहां से सिवाय मेरे कोई दूसरा उन्हें निकाल ही नहीं सकता। बहुत दिनों से मैं स्वयं उस खोह में रहता हूं और मेरे आदमी भी अभी तक वहां मौजूद हैं। अब केवल एक बात का खुटका मेरे जी में लगा हुआ है।

माया०। वह क्या ?

भूत०। यदि कमलिनी मुझसे पूछेगी कि किशोरी और कमलिनी को कहां रख आये तो मैं क्या जवाब दूंगा। यदि यह कहूंगा कि रोहतासगढ़ या तुम्हारे तालाब वाले मकान में रख आया हूं तो बहुत जल्द झूठा बनूंगा और सब भंडा फूट जायगा।

माया०। हां सो तो ठीक है, मगर तुम चालाक हो, इसके लिए भी कोई न कोई बात जरूर सोच लोगे।

भूत०। खैर जो होगा देखा जायगा। अब कहिये कि आपका काम तो मैंने कर दिया, अब इसका इनाम क्या मिलता है ? आपका कौल है कि जो मांगोगे वही मिलेगा।

माया०। हां हां, जो कुछ तुम मांगोगे वही मिलेगा। जरा दारोगा वाले मकान में चल कर उसे मार कर निश्चिन्त हो जाऊं तो तुम्हें मुंहमांगा इनाम दूं। अच्छा यह तो कहो कि तुम चाहते क्या हो ?

भूत०। दारोगा वाला मकान मुझे दे दीजिये और उसमें जो अजायबघर है उसकी ताली मेरे हवाले कर दीजिए।

माया०। (चौंक कर) उस अजायबघर का हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

भूत०। कमलिनी की जुबानी मैंने सुना था कि वह भी तिलिस्म ही है और उसमें बहुत अच्छी अच्छी चीजें भी हैं ?

माया०। ठीक है मगर उसमें बहुत सी ऐसी चीजें हैं जो यदि मेरे दुश्मनों के हाथ लगें तो आफत ही हो जाय।

भूत०। मैं उस जगह को अपने लिए चाहता हूं किसी दूसरे के लिए नहीं, मेरे रहते कोई दूसरा आदमी उस मकान से फायदा नहीं उठा सकता।

माया०। (देर तक सोच कर) खैर मैं दूंगी क्योंकि तुमने मुझ पर भारी एहसान किया है, मगर उस ताली को बड़ी हिफाजत से रखना। यद्यपि उसका पूरा पूरा हाल मुझे मालूम नहीं है तथापि मैं समझती हूं कि वह कोई अनूठी चीज है, क्योंकि गोपालसिंह उसे बड़े यत्न से अपने पास रखता था हां अगर तुम अजायबघर की ताली मुझसे न लो तो मैं बहुत ज्यादा दौलत तुम्हें देने के लिए तयार हूं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत०। आप तरद्दुद न कीजिये, उस चीज को आपका कोई दुश्मन मेरे कब्जे

से नहीं ले जा सकता और आप देख लेंगी कि महीने भर के अन्दर ही अन्दर मैं आपके दुश्मनों का नाम निशान मिटा दूंगा और खुल्लमखुल्ला अपनी प्यारी स्त्री को लेकर उस मकान में रह कर आपकी बदौलत खुशी से जिन्दगी बिताऊंगा।

माया० । (ऊंची सांस लेकर) अच्छा दूंगी ।

भूत० । तो अब उसके देने में विलम्ब क्या है ?

माया० । बस उस काम से निपट जाने की देर है ।

भूत० । वहां भी केवल आप ही के चलने की देर है ।

माया० । मैं कह चुकी हूं कि तुम भोजन कर लो, तब तक अंधेरा भी हो जाता है।

मायारानी ने घण्टी बजाई जिसकी आवाज सुनते ही कई लौंडियां दौड़ी हुई आईं और हाथ जोड़ कर सामने खड़ी हो गईं । मायारानी ने भूतनाथ के लिए भोजन का सामान ठीक करने को कहा और यह बहुत जल्द हो गया । भूतनाथ ने भोजन किया और अंधेरा होने पर मायारानी के साथ दारोगा वाले मकान में चलने के लिए तैयार हुआ । मायारानी ने धनपत को भी साथ लिया और तीनों आदमी चेहरे पर नकाब डाले घोड़े पर सवार हो वहां से रवाने हुए तथा बात की बात में दारोगा वाले मकान के पास जा पहुंचे*। पेड़ों के साथ घोड़ों को बांध तीनों आदमी उस मकान के अन्दर चले । हम ऊपर लिख आये हैं कि मायारानी ने इस मकान की ताली भूतनाथ को दे दी थी और मकान का भेद भी उसे बता दिया था इसलिये भूतनाथ सबके आगे हुआ और उसके पीछे धनपत और मायारानी जाने लगीं । भूतनाथ उस मकान के दाहिनी तरफ वाले दालान में पहुंचा जिसमें एक कोठरी बन्द दर्वाजे की थी मगर यह नहीं जान पड़ता था कि यह दर्वाजा क्योंकर खुलेगा या ताली लगाने की जगह कहां है । दर्वाजे के पास पहुंच कर भूतनाथ ने अपने बटुए में से एक ताली निकाली और दर्वाजे के दाहिनी तरफ की दीवार में जो लकड़ी की बनी हुई थी पैर से धक्का देना शुरू किया । चार पांच ठोकर के बाद लकड़ी का एक छोटा सा तख्ता अलग हो गया और उसके अन्दर हाथ जाने लायक सूराख दिखाई दिया । ताली लिए हुए उसी छेद के अन्दर भूतनाथ ने हाथ डाला और किसी गुप्त ताले में ताली लगाई । कोठरी का दर्वाजा तुरत खुल गया और तीनों अन्दर चले गये । भीतर जाकर वह दर्वाजा पुनः बन्द कर लिया जिससे वह लकड़ी का टुकड़ा भी ज्यों का त्यों बराबर हो गया जिसके अन्दर हाथ डाल कर भूतनाथ ने ताला खोला था ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* इस मकान का जिक्र कई दफे आ चुका है, [illegible] बाबाजी से मिला था ।

कोठरी के अन्दर बिल्कुल अंधेरा था इसलिये भूतनाथ ने अपने बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई। अब मालूम हुआ कि कोठरी के बीचोबीच में लोहे का एक गोल तख्ता जमीन में जड़ा हुआ है जिस पर लगभग चार या पांच आदमी खड़े हो सकते थे। उस तख्ते के बीचोबीच में तीन हाथ ऊंचा लोहे का एक खम्भा था और उसके ऊपर एक चर्खी लगी हुई थी। तीनों आदमी उस खम्भे को थाम कर खड़े हो गये और भूतनाथ ने दाहिने हाथ से चर्खी को घुमाना शुरू किया, साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज आई और खम्भे के सहित वह लोहे का टुकड़ा जमीन के अन्दर घुसने लगा यहां तक कि लगभग बीस हाथ के नीचे जाकर जमीन पर ठहर गया और तीनों आदमी उस पर से उतर पड़े। अब ये तीनों एक लम्बी चौड़ी कोठरी के अन्दर घुसे। कोठरी के पूरब तरफ दीवार में एक सुरंग बनी हुई थी, पश्चिम तरफ कूआं था, उत्तर तरफ चार सन्दूक पड़े हुए थे और दक्खिन तरफ एक जंगलेदार कोठरी बनी हुई थी जिसके अन्दर एक आदमी जमीन पर औंधा पड़ा हुआ था और पास की जमीन खून से तरबतर हो रही थी। उसे देखते ही भूतनाथ चौंक कर बोला—

भूत०। ओफ, मालूम होता है कि इसने सिर पटक कर जान दे दी (मायारानी की तरफ देख के) क्योंकि तुम्हारा सामना करना इसे मंजूर न था!

माया०। शायद ऐसा ही हो! आखिर मैं भी तो इसे मारने ही को आई थी, अच्छा हुआ इसने अपनी जान आप ही दे दी, मगर अब यह क्योंकर निश्चय हो कि यह अभी जीता है या मर गया?

धनपत०। (गौर से गोपालसिंह को देख कर) सांस लेने की आहट नहीं मालूम होती, जहां तक मैं समझती हूं इसमें अब दम नहीं है।

भूत०। (मायारानी से) आप इस जंगले में जाकर इसे अच्छी तरह देखिये, कहिये तो ताला खोलूं।

माया०। नहीं नहीं मुझे अब भी इसके पास जाते डर मालूम होता है, कहीं नकल न किये हो! (गोपालसिंह को अच्छी तरह देख के) वह तिलिस्मी खंजर इसके पास नहीं दिखाई देता?

भूत०। वह खंजर देवीसिंह ने एक सप्ताह के लिए इससे मांग लिया था और इस समय उसी के पास है।

माया०। तब तो तुम बेखौफ इसके अन्दर जा सकते हो अगर जीता भी होगा तो कुछ न कर सकेगा क्योंकि इसका हाथ खाली है और तुम्हारे पास तिलिस्मी खंजर है।

भूत०। बेशक मैं इसके पास जाने में नहीं डरता!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस जंगले के दर्वाजे में एक ताला लगा हुआ था जिसे भूतनाथ ने खोला और अन्दर जाकर राजा गोपालसिंह की लाश को सीधा किया, तब मायारानी की तरफ देख कर कहा, "अब इसमें दम नहीं है, आप बेखौफ चली आवें और इसे देखें।" मायारानी धनपत का हाथ थामे हुए उस कोठरी के अन्दर गई और अच्छी तरह गोपालसिंह को देखा। सिर फट जाने और खून निकलने के साथ ही दम निकल जाने से गोपालसिंह का चेहरा कुछ भयानक सा हो गया था। माया-रानी को जब निश्चय हो गया कि इसमें दम नहीं है तब वह बहुत खुश हुई और भूतनाथ की तरफ देख कर बोली, "अब मैं इस दुनिया में निश्चिन्त हुई। मगर इस लाश का भी नाम निशान मिटा देना ही उचित है।"

भूत०। यह कौन बड़ी बात है। इसे ऊपर ले चलिए और जंगल में से लक-ड़ियां बटोर कर फूंक दीजिए।

माया०। नहीं नहीं रात के वक्त जंगल में विशेष रोशनी होने से ताज्जुब नहीं कि किसी को शक हो या राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार ही इधर आ निकले और देख ले।

भूत०। खैर जाने दीजिए, इसकी भी एक सहज तरकीब बताता हूं।

माया०। वह क्या ?

भूत०। इसे ऊपर ले चलिए और टुकड़े टुकड़े कर नहर में डाल दीजिए, बात की बात में मछलियां खा जायेंगी।

माया०। हां यह राय बहुत ठीक है, अच्छा इसे ले चलो।

भूतनाथ ने उस लाश को उठा कर उस लोहे के तख्ते पर रक्खा और तीनों आदमी खम्भे को थाम कर खड़े हो गए। भूतनाथ ने उस चर्खी को उल्टा घुमाना शुरू किया। बात की बात में वह तख्ता ऊपर की जमीन के साथ बराबर मिल गया। भूतनाथ ने अन्दर से कोठरी का दर्वाजा खोला और उस लाश को बाहर दालान में लाकर पटक दिया, इसके बाद उस कोठरी का दर्वाजा जिस तरह पहिले खोला था उसी तरह बन्द कर दिया। मायारानी के इशारे से धनपत ने कमर से खंजर निकाल कर लाश के टुकड़े किए और हड्डी और मांस नहर में डालने बाद नहर से जल लेकर जमीन धो डाली। इसके बाद हर तरह से निश्चिन्त हो अपने अपने घोड़े पर सवार होकर तीनों आदमी तिलिस्मी बाग की तरफ रवाना हुए, और आधी रात जाने के पहिले ही वहां पहुंच कर भूतनाथ ने कहा, "बस लाइए अब मेरा इनाम दे दीजिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया०। हां हां लीजिए, इनाम देने के लिये मैं तैयार हूं। (मुस्कुरा कर)

लेकिन, भूतनाथ, अगर इनाम में अजायबघर की ताली मैं तुम्हें न दूं तो तुम क्या करोगे ? क्योंकि मेरा काम तो हो ही चुका है !

भूत० । करें क्या, बस अपनी जान दे दें !

माया० । अपनी जान दे दोगे तो मेरा क्या बिगड़ेगा ?

भूत० । (खिलखिला के हंसने बाद) क्या तुम समझती हो कि मैं सहज ही में अपनी जान दे दूंगा ? नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता । पहिले तो मैं कमलिनी के पास जाकर अपना कसूर साफ साफ कह दूंगा, इसके बाद तुम्हारे सब भेद खोल के दूंगा जो तुमने मुझे बताये हैं । इतना ही नहीं बल्कि तुम्हारी जान लेकर तब कमलिनी के हाथ से मारा जाऊंगा । इस बाग का, दारोगा वाले मकान का, और मनोरमा के मकान का, रत्ती रत्ती भेद मुझे मालूम हो चुका है और तुम समझ सकती हो कि मैं कहां तक उपद्रव मचा सकता हूं ! तुम यह भी न सोचना कि इस समय इस बाग में रहने के कारण मैं तुम्हारे कब्जे में हूं क्यों कि वह...

माया० । बस बस बस, बहुत जोश में न आओ, मैं तो दिल्लगी के तौर पर इतना कह गई और तुम सच ही समझ गये । इस बात का पूरा पूरा विश्वास रखना कि मायारानी वादा पूरा करने से हटने वाली नहीं है और इनाम देने में भी किसी से कम नहीं है, बैठो मैं अभी अजायबघर की ताली ला देती हूं ।

भूत० । लाइए और मुझे भी अपने कौल का सच्चा ही समझिये, ऐसे ऐसे काम कर दिखाऊंगा कि खुश हो जाइएगा और ताज्जुब कीजियेगा ।

माया० । देखो रंज न होना, मैं तुमसे एक बात और पूछती हूं ।

भूत० । (हंस कर) पूछिये पूछिये ।

माया० । अगर मैं धोखा देकर कोई दूसरी चीज तुम्हें दे दूं तो तुम कैसे समझोगे कि अजायबघर की ताली यही है ?

भूत० । भूतनाथ को निरा मौलवी न समझ लेना । उस ताली को जो किताब की सूरत में है और जिसे दोनों तरफ से भौंरों ने घेरा हुआ है भूतनाथ अच्छी तरह पहिचानता है ।

माया० । शाबाश, तुम बहुत ही होशियार और चालाक हो, किसी के फरेब में आने वाले नहीं, मालूम होता है कि इतनी जानकारी तुम्हें उसी कम्बख्त कमलिनी की बदौलत....

भूत० । जी हां, बेशक ऐसा ही है, मगर हाय, जिस कमलिनी ने मेरी इतनी इज्जत की मैं अपने लिए उसी के साथ दुश्मनी कर रहा हूं और सो भी केवल इसी अजायबघर की ताली के लिए !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया० । अजायबघर की ताली तो, तुम्हारी इच्छानुसार तुम्हें देती ही हूं इसके बाद इससे भी बढ़ कर एक चीज तुम्हें दूंगी जिसे देख कर तुम भी कहोगे कि मायारानी ने कुछ दिया ।

भूत० । बेशक, मुझे आपसे बहुत कुछ उम्मीद है ।

भूतनाथ को उसी जगह बैठा कर मायारानी कहीं चली गई, मगर आधे घण्टे के अन्दर हाथ में एक जड़ाऊ डिब्बा लिए हुए आ पहुंची और वह डिब्बा भूतनाथ के सामने रख कर बोली, "लीजिये वह अनोखी चीज हाजिर है ।" भूतनाथ ने डिब्बा खोला । उसके अन्दर गुटके की तरह एक छोटी सी पुस्तक थी जिसे उलट पुलट कर भूतनाथ ने अच्छी तरह देखा और तब कहा, "बेशक यही है । अच्छा अब मैं जाता हूं, जरा कमलिनी से मिल कर खबर लूं कि उधर क्या हो रहा है?"

भूतनाथ अजायबघर की ताली लेकर मायारानी से बिदा हुआ और तिलिस्मी बाग के बाहर होकर खुशी खुशी उत्तर की तरफ चल निकला मगर थोड़ा ही दूर जा कर खड़ा हो गया और इधर उधर देखने लगा । पेड़ की झाड़ में से दो आदमी निकल कर भूतनाथ के सामने आये और एक ने आगे बढ़ कर पूछा, "टेम गिन चाप* ?" इसके जवाब में भूतनाथ ने कहा, "चेह !"† इतना सुन कर उस आदमी ने भूतनाथ को गले लगा लिया । इसके बाद तीनों आदमी एक साथ आगे की तरफ रवाना हुए ।

बारहवां बयान

आज से आठ दस दिन के पहिले मायारानी कैसी परेशान और घबराई हुई थी कि जिसका कुछ हिसाब नहीं । वह जीते जी अपने को मुर्दा समझने लगी थी । राजा गोपालसिंह के छूट जाने के डर चिन्ता बेचैनी और घबराहट ने चारो तरफ से उसे घेर लिया था, यहां तक कि राजा बीरेन्द्रसिंह के पच्छ वालों और कमलिनी का ध्यान भी उसके दिल से जाता रहा था जिनके लिये सैकड़ों ऊटक नाटक उसे रचने पड़े थे और ध्यान था केवल गोपालसिंह का । कहीं ऐसा न हो कि गोपालसिंह का असल भेद रिआया को मालूम हो जाय इसी सोच ने उसे बेकार कर दिया था । मगर आज वह भूतनाथ की बदौलत अपने को हर तरह से बेफिक्र मानती है, आई हुई बला को टला समझती है, और उसे विश्वास है कि अब कुछ दिन तक चैन से गुजरेगी । अब उसे केवल यही फिक्र रह गई कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के हाथ से तिलिस्म टूटने न पावे और कमलिनी को जो यहां का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

* (टेम गिन चाप) मिली वह ताली ? † (चेह) हां ।

बहुत कुछ हाल जानती है और उन दोनों कुमारों से मिली हुई है किसी न किसी तरह गिरफ्तार करना या मार डालना चाहिये जिसमें तिलिस्म तोड़ने में वह दोनों कुमारों को मदद न पहुंचा सके। वह समझती है कि इस समय केवल इस तिलिस्म की बदौलत ही हर एक पर मैं अपना रुआब जमा सकती हूं और बड़े बड़े महाराजों के दिल में डर पैदा कर सकती हूं, इतना ही नहीं बल्कि जो चाहे कर सकती हूं, और जब तिलिस्म ही न रहेगा तो मैं एक मामूली जमींदार के बराबर भी न समझी जाऊंगी, इत्यादि।

वास्तव में मायारानी का सोचना बहुत ठीक था, लेकिन फिर भी आज उसका दिमाग फिर आसमान पर चढ़ा हुआ है। भूतनाथ ऐसा ऐयार पाकर वह बहुत प्रसन्न है और उसे निश्चय है कि मैं जो चाहूंगी कर गुजरूंगी, हां लाडिली के चले जाने का उसे जरूर बहुत बड़ा रञ्ज है।

जिस समय अजायबघर की ताली लेकर भूतनाथ उससे बिदा हुआ उस समय रात बहुत कम बाकी थी और मायारानी रात भर की थकी और जागी हुई थी इसलिये चारपाई पर जाते ही सो गई और पहर भर दिन चढ़े तक सोई रही। जब धनपत ने आकर जगाया तो उठी और मामूली कामों से छुट्टी पाकर हंसी दिल्लगी में उसके साथ समय बिताने लगी। दिन तो हंसी दिल्लगी में बीत गया मगर रात को उसने आश्चर्यजनक घटना देखी जिससे वह बहुत परेशान और दुखी हुई।

आधी रात जा चुकी है। मायारानी अपने कमरे में जो कीमती चीजों से भरा था खूबसूरत जड़ाऊ पावों की मसहरी पर गाढ़ी नींद में सोई हुई है। कमरे के बाहर हाथ में नंगी तलवार लिए नौजवान और कमसिन लौंडियां पहरा दे रही हैं। जिस समय सोने के इरादे से पलंग पर जाकर मायारानी ने आंखें बन्द कीं उस समय केवल एक बिल्लौरी हांडी के अन्दर खुशबूदार तेल से भरे हुए बिल्लौरी गिलास में हलकी रोशनी हो रही थी और कमरे का दर्वाजा भिड़काया हुआ था मगर इस समय न जाने वह रोशनी क्यों गुल हो गई थी और कमरे के अन्दर अंधकार हो रहा था।

मायारानी यद्यपि रानी नौजवान और हर तरह से सुखिया थी मगर उसकी नींद बहुत ही कच्ची थी। जरा खुटका पाने ही से वह उठ बैठती थी। इस समय भी यद्यपि वह गहरी नींद में सोई थी मगर शीशे के एक शमादान के टूटने की झन्नाटे की आवाज आने से चौंक कर उठ बैठी। कमरे में अन्धकार देख वह चारपाई से नीचे उतरी और टटोलती हुई दर्वाजे के पास पहुंची मगर दर्वाजा खोलना चाहा तो मालूम हुआ कि उसमें ताला लगा हुआ है। यह अद्भुत मामला देख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत घबराई और डर के मारे उसका कलेजा धक धक करने लगा। "हैं ऐसा क्यों हुआ! इस कमरे के अन्दर कौन आया, जिसने दर्वाजे में ताला लगा दिया? क्या बाहर पहरा नहीं पड़ता है! जरूर पड़ता होगा, फिर बिना इत्तिला किये इस कमरे के अन्दर आने का साहस किसको हुआ! अगर कोई आया है तो अवश्य ही इस कमरे के अन्दर ही है क्योंकि दर्वाजे में अभी तक ताला बन्द है। क्या यह काम धनपत का तो नहीं है! मगर इतना बड़ा हौसला वह नहीं कर सकती!"

ऐसे ऐसे सोच विचार ने मायारानी को घबड़ा दिया। वह यहां तक डरी कि मुंह से आवाज निकलना मुश्किल हो गया और वह अपनी लौंडियों को पुकार भी न सकी। अन्त में वह लाचार होकर दर्वाजे के पास ही बैठ गई और आंखों से आंसू की बूंदें टपकाने लगी। इतने ही में पैर की आहट जान पड़ी। मालूम हुआ कि कोई आदमी इस कमरे के अन्दर टहल रहा है। अब मायारानी और भी डरी और दर्वाजे से कुछ हट कर दीवार के पास चपक गई। साफ मालूम होता था कि कोई आदमी पैर पटकता हुआ कमरे में घूम रहा है।

मायारानी यद्यपि दीवार के साथ दुबकी हुई थी मगर पैर पटक कर चलने वाला आदमी पल पल में उसके पास होता जाता था। अन्त में एक मजबूत हाथ ने मायारानी की कलाई पकड़ ली। मायारानी चिल्ला उठी और इसके साथ ही उस आदमी ने जिसने कलाई पकड़ी थी मायारानी के गाल में जोर से एक तमाचा मारा जिसकी तकलीफ वह बर्दाश्त न कर सकी और बेहोश होकर जमीन की ओर झुक गई।

उस आदमी ने अपने बगल से चोर लालटेन निकाली जिसके आगे से ढक्कन हटाते ही कमरे में उजाला हो गया। इस समय यदि मायारानी होश में आ जाती तो भी उस आदमी को न पहिचान सकती क्योंकि वह अपने मुंह पर नकाब डाले हुए था। इस कमरे के चारों तरफ की दीवार आबनूस की लकड़ी से बनी हुई थी और उस पर उत्तम रीति से पालिश की हुई थी। पलंग के पायताने की तरफ दीवार में एक आदमी के घुसने लायक रास्ता हो गया था अर्थात् लकड़ी का तख्ता पल्ले की तरह घूम कर बगल में हट गया था। उस आदमी ने बेहोश मायारानी को धीरे से उठा कर उसकी चारपाई पर डाल दिया, इसके बाद कमरे के दर्वाजे में जो ताला लगा हुआ था खोल कर अपने पास रक्खा और फिर पायताने की तरफ जाकर उसी दरार की राह दीवार के अन्दर घुस गया। उसके जाने के साथ ही लकड़ी का तख्ता भी बराबर हो गया।

घण्टे भर के बाद मायारानी होश में आई और आंख खोल कर देखने लगी, मगर अभी तक कमरे में अंधेरा ही था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाथ से टटोलने और जांच करने से मालूम हो गया कि वह चारपाई पर पड़ी हुई है। डर के मारे देर तक चारपाई पर पड़ी रही, जब किसी के पैर की आहट न मालूम हुई तो जी कड़ा कर के उठी और दर्वाजे के पास आई। कुंडी खुली हुई थी, झट दर्वाजा खोल कर कमरे के बाहर निकल आई। कई लौंडियों को नंगी तलवार लिए दर्वाजे पर पहरा देते पाया। उसने लौंडियों से पूछा, "कमरे के अन्दर कौन गया था!" जिसके जवाब में उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा, "कोई नहीं।"

लौंडियों के कहने का विश्वास मायारानी को न हुआ, वह देर तक उन लोगों पर गुस्सा करती और बकती झकती रही। उसे शक हो गया कि इन लोगों ने मेरे साथ दगा की और कुल लौंडियां दुश्मनों से मिली हुई हैं, मगर कसूर साबित किये बिना उन सभों को सजा देना भी उसने उचित न जाना।

डर के मारे मायारानी उस कमरे के अन्दर न गई, बाहर ही एक आराम कुर्सी पर बैठ कर उसने बची हुई रात बिताई। रात तो बीत गई मगर सुबह की सुफेदी ने आसमान पर अपना दखल अभी नहीं जमाया था कि एक मालिन का हाथ पकड़े धनपत आ पहुंची और मायारानी को बाहर बैठे हुए देख ताज्जुब के साथ बोली, "इस समय आप यहां क्यों बैठी हैं?"

माया०। (घबड़ाई हुई आवाज में) क्या कहूं, आज ईश्वर ने ही मेरी जान बचाई नहीं तो मरने में कुछ बाकी न था!

धनपत०। (ताज्जुब के साथ चौंक कर) सो क्या?

माया०। पहिले यह तो कहो कि इस मालिन को कैदियों की तरह पकड़ कर यहां लाने का क्या सबब है?

धनपत०। नहीं मैं पहिले आपका हाल सुन लूंगी तो कुछ कहूंगी।

मायारानी ने धीरे धीरे अपना पूरा हाल विस्तार के साथ धनपत से कहा जिसे सुन कर धनपत भी डरी और बोली, "इन लौंडियों पर शक करना मुनासिब नहीं है, हां जब इस कम्बख्त मालिन का हाल आप सुनेंगी जिसे मैं गिरफ्तार कर लाई हूं तो आपका जी अवश्य दुःखेगा और इस पर शक करना बल्कि यह निश्चय कर लेना अनुचित न होगा कि यह दुश्मनों से मिली हुई है। ये लौंडियां जिनके सुपुर्द पहरे का काम है और जिन पर आप शक करती हैं बहुत ही नेक और ईमानदार हैं, मैं इन लोगों को अच्छी तरह आजमा चुकी हूं।"

माया०। खैर मैं इस विषय में अच्छी तरह सोच कर और इन सभों को आजमा कर निश्चय करूंगी, तुम यह कहो कि इस मालिन ने क्या कसूर किया है। यह तो अपने काम में बहुत तेज और होशियार है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धनपत०। हां बाग की दुरुस्ती और गुलबूटों के संवारने का काम तो यह बहुत ही अच्छी तरह जानती है मगर इसका दिल नुकीले और विषैले कांटों से भरा हुआ है। आज रात को नींद न आने और कई तरह की चिन्ता के कारण मैं चारपाई पर आराम न कर सकी और यह सोच कर बाहर निकली कि बाग में टहल कर दिल बहलाऊंगी। मैं चुपचाप बाग में टहलने लगी मगर मेरा दिल तरह तरह के विचारों से खाली न था, यहां तक कि सिर नीचे किये टहलते मैं हम्माम के पास जा पहुंची और वहां अंगूर की टट्टी में पत्तों की खड़खड़ाहट पा कर घबरा के रुक गई। थोड़ी ही देर में जब चुटकी बजाने की आवाज मेरे कान में पड़ी तब तो मैं चौंकी और सोचने लगी कि बेशक यहां कुछ दाल में काला है।

माया०। उस समय तू अंगूर की टट्टी से कितनी दूर और किस तरफ थी?

धनपत०। मैं टट्टी के पूरब तरफ पास ही वाली चमेली की झाड़ी तक पहुंच चुकी थी, जब पत्तों की खड़खड़ाहट सुनी तो रुक गई और जब चुटकी की आवाज कानों में पड़ी तो झट झाड़ी के अन्दर छिप गई और बड़े गौर से अंगूर की टट्टी की तरफ ध्यान देकर देखने लगी। यद्यपि रात अंधेरी थी मगर मेरी आंखों ने चुटकी की आवाज के साथ ही दो आदमियों को टट्टी के अन्दर घुसते देख लिया।

माया०। चुटकी बजाने की आवाज कहां से आई थी?

धनपत०। अंगूर की टट्टी के अन्दर से।

माया०। अच्छा तब क्या हुआ?

धनपत०। मैं जमीन पर लेट कर धीरे धीरे टट्टी की तरफ घसकने लगी और उसके बहुत पास पहुंच गई, अन्त में किसी की आवाज भी मेरे कान में पड़ी और मैं ध्यान देकर सुनने लगी। बातें धीरे धीरे हो रही थीं मगर मैं बहुत पास पहुंच जाने के कारण साफ साफ सुन सकती थी। सबसे पहिले जिसकी आवाज मेरे कानों में पड़ी वह यही कम्बख्त मालिन थी।

माया०। हां! अच्छा इसने क्या कहा?

धनपत। इसने केवल इतना कहा कि 'मैं बड़ी देर से तुम लोगों की राह देख रही हूं'। इसके जवाब में आये हुए दोनों आदमियों में से एक ने कहा, "बेशक तूने अपना वादा पूरा किया जिसका इनाम मैं इसी समय तुझे दूंगा, मगर आज किसी कारण से कमलिनी यहां न आ सकी, हम लोग केवल इतना ही कहने आए हैं कि कल आधी रात को आज ही की तरह फिर चोर दर्वाजा खोल दीजियो, तुझे आज से ज्यादे इनाम दिया जायगा।" यह कम्बख्त बहुत अच्छा कह कर चुप हो गई और फिर किसी के बातचीत की आवाज न आई। थोड़ी ही देर में उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों आदमियों को अंगूर की टट्टी से निकल कर दक्खिन की तरफ जाते हुए मैंने देखा, उन्हीं के पीछे पीछे यह मालिन भी चली गई और मैं चुपचाप उसी जगह पड़ी रही।

माया०। तुमने गुल मचा कर उन दोनों को गिरफ्तार क्यों न किया?

धनपत०। मैं यह सोच कर चुप हो रही कि यदि दोनों आदमी गिरफ्तार हो जायेंगे तो कल रात को इस बाग में कमलिनी का आना न होगा।

माया०। ठीक है, तुमने बहुत अच्छा सोचा, हां तब क्या हुआ?

धनपत०। थोड़ी देर बाद मैं वहां से उठी और पीछे की तरफ लौट कर बाग में होशियारी के साथ टहलने लगी। आधी घड़ी न बीती थी कि यह मालिन लौट कर आपके डेरे की तरफ जाती हुई मिली। मैंने झट इसकी कलाई पकड़ ली और यह देखने के लिए दर्वाजे की तरफ गई कि इसने दर्वाजा बन्द कर दिया या नहीं। वहां पहुंच कर मैंने दर्वाजा बन्द पाया, तब इस कमीनी को लिए हुए आपके पास आई।

माया०। (मालिन की तरफ देख कर) क्यों रे! तुझ पर जो कुछ दोष लगाया गया है वह सच है या झूठ?

मालिन ने मायारानी को बात का कुछ जवाब न दिया। तब मायारानी ने पहरा देने वाली लौंडियों की तरफ देख के कहा, "आज रात को तुम लोगों की मदद से अगर कमलिनी गिरफ्तार हो गई तो ठीक है नहीं तो मैं समझूंगी कि तुम लोग भी इस मालिन की तरह नमकहराम होकर दुश्मनों से मिली हुई हो।"

पहरा देने वाली लौंडियों ने मायारानी को दण्डवत् किया और एक ने कुछ आगे बढ़ कर और हाथ जोड़ कर कहा, "बेशक आप हम लोगों को नेक और ईमानदार पावेंगी! (धनपत की तरफ इशारा करके) आपकी बात से निश्चय होता है कि आज रात को कमलिनीजी इस बाग में जरूर आवेंगी। अगर ऐसा हुआ तो हम लोग उन्हें गिरफ्तार किए बिना कदापि न रहेंगे!!"

मायारानी ने कहा, "हां ऐसा ही होना चाहिए! मैं खुद भी इस काम में तुम लोगों का साथ दूंगी और आधी रात के समय अपने हाथ से चोर दर्वाजा खोल कर उसे बाग के अन्दर आने का मौका दूंगी। देखो होशियार और खबरदार, यह बात किसी के कान में न पड़ने पावे!"

॥ आठवां भाग समाप्त ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२० वां संस्करण] १९७८ ई० [२२०० प्रति

भूतनाथ

चन्द्रकान्ता सन्तति का एक पात्र भूतनाथ बड़ा ही कातिल और दबंग ऐयार था। बड़े बड़े राजा महाराजा इसके नाम से कांपते थे और इसने बड़ी बड़ी काली करतूतें कीं, पर यकायक ही इसे नेकनाम बनने की इच्छा हुई और तब बड़ी कोशिश करके यह खास राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार बन गया।

जिल्ददार तथा अजिल्द

दोनों प्रकार के संस्करणों में प्राप्त।

लहरी बुक डिपो, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri